गाधी-साहित्य—२

प्रार्थना-प्रवचन

दूसरा खंड

•

दिल्लीकी प्रार्थना-सभाओमे दिये गए
२७ अक्तूबर १९४७ से २९ जनवरी १९४८ तकके
महात्मा गाधीके प्रवचन

१९४९

सस्ता साहित्य मंडल • नई दिल्ली

प्रकाशक

मार्तण्ड उपाध्याय, मन्त्री

सस्ता साहित्य मंडल

नई दिल्ली

पहली बार जनवरी १९४९

मूल्य

अजिल्द २) सजिल्द २॥)

मुद्रक

जे० के० शर्मा

इलाहाबाद लॉ जर्नल प्रेस

इलाहाबाद

प्रकाशककी ओरसे

पूज्य गांधीजी आगा खां-महलके कारावाससे मुक्त होनेके बादसे संध्याकी प्रार्थना-सभामें नियमित-रूपसे प्रवचन किया करते थे। यह परंपरा उनके महानिर्वाणके एक दिन पहले यानी २९ जनवरी १९४८ तक बराबर चलती रही।

दिल्लीकी सभाओंमें दिये गये १ अप्रैल १९४७ से २६ अक्तूबर १९४७ तकके प्रवचन पहले खंडमें प्रकाशित हो चुके हैं। २७ अक्तूबर १९४७ से २९ जनवरी १९४८ तकके प्रवचन इस संग्रहमें दिये जा रहे हैं।

ये गांधीजीके अंतिम उद्गार हैं और जिन समस्याओंपर व्यक्त किये गये हैं उनमेंसे बहुत-सी आज भी मौजूद हैं। इन प्रवचनोंमें गांधीजीने संक्षेपमें सर्वसाधारणके समझने-योग्य भाषामें बहुत कामकी बातें कही हैं और बहुत जगह तो अपनी हार्दिक वेदना जनताके सामने रखी है। गांधीजीके अन्य लेखों और भाषणोंसे इनका एक अलग और महत्त्वका स्थान है।

अधिकांश प्रवचन गांधीजीकी भाषामें ही हैं। 'हिंदुस्तान'के उप-संपादकोंने समय-समयपर 'हिंदुस्तान'के लिए उनकी रिपोर्ट ली थी। बादके प्रवचनोंके रेकार्ड 'आल इंडिया रेडियो'ने लिये थे। उनमेंसे कुछ प्रवचन 'भाइयो और बहनो'के नामसे चार छोटी-छोटी पुस्तिकाओंमें सरकारकी ओरसे छपे हैं। इस संग्रहमें इन तथा जिन अन्य आधारोंकी सहायता ली गई है, उनके हम विशेष कृतज्ञ हैं।

(बापूके प्रार्थना-प्रवचनकी आवृत्ति, जो आपने प्रकाशित की है, देखी । अल्प मोली और बहुगुणी है । बापूके विचार लोगोमे फैलानेका उत्तम उपाय उनके साहित्यको, उन्हीकी भाषामे और बिना किसी भाष्यके, प्रगट करना है । और वही आपने किया है । यह आपने एक भगवद् उपासना की है ।)

भाइयो और वहनो !

प्रार्थना-प्रवचन

दूसरा खंड

: १३० :

सोमवार, २७ अक्तूबर १९४७

(लिखित संदेश)

मेरे पास बराबर इस बातकी शिकायतें आ रही हैं कि यूनियनके मुसलमानोंको अपने बाप-दादाओंके घरोंको छोड़नेपर और पाकिस्तान जानेके लिए मजबूर किया जा रहा है। यह कहा जाता है कि उनको तरह-तरहकी तरकीबोंसे अपने घरोंको छुड़वाकर कैंपोंमें रहनेपर मजबूर किया जा रहा है, जहांसे उन्हें रेलद्वारा अथवा पैदल भेज दिया जाय। मुझे विश्वास है कि मन्त्रिमंडलकी यह नीति नहीं है। जब मैं शिकायत करनेवालोंको यह बात सुनाता हूं तो वह हंसते हैं और जवाबमें कहते हैं कि या तो मेरी जानकारी गलत है या कर्मचारी उस नीतिके अनुसार चलते नहीं हैं। मैं जानता हूं कि मेरी जानकारी बिलकुल नहीं है। तब क्या कर्मचारी बेवफा हैं? मुझे उम्मीद है कि ऐसा नहीं है। फिर भी यह शिकायत आम है। कही जानेवाली बेवफाईके मुतल्लिक कारण दिये जाते हैं। जो कारण सबसे संभव हो सकता है वह यह है कि फौज और पुलिसका अधिकांश रूपमें फिर्केवाराना बटवारा किया गया है और वह मौजूदा द्वेषभावमें बह जाते हैं। मैंने अपनी राय दे दी है कि अगर ये कर्मचारी जिनपर शांति और कानूनको कायम रखनेका भार निर्भर है, फिर्केवाराना प्रभावमें पड़ जायं तो सुसंगठित हकूमतकी जगह बदअमनी आ जाना लाजमी है

और यदि यह चलती रहे तो समाज नष्टप्राय हो जायगा। यह उच्च कर्मचारियोका कर्तव्य है कि वह फिर्केवाराना जहनियतसे ऊपर उठे और फिर अपनेसे नीचे तबकेके कर्मचारियोको भी उसी सद्भावनासे प्रभावित करे।

यह जोरके साथ कहा जाता है कि देशमे जनताद्वारा सरकारे कायम की गई है उनको वह वकार[1] हासिल नही हुआ है जो विदेशी हकूमतको अपनी तलवारके जरिये हिंदुस्तानी कर्मचारियोको डराकर अपने कावूमे रखनेके लिए हासिल था। यह कुछ हदतक ही ठीक है। क्योकि अवाम[2]की हकूमतके हाथमे एक नैतिक शक्ति है जो विदेशी हकूमतके शक्ति-वलसे, जिसे वह अपनी मददके लिए वरत सकती थी, निस्सदेह ऊचे दर्जेकी है। इस नैतिक शक्तिके लिए यह पहलेसे माना जाता है कि अवामकी राय हकूमतके साथ है।

आज इसकी कमी हो सकती है। हमारे पास इसकी परीक्षाका और कोई साधन नही है सिवा इसके कि केंद्रीय सरकार इस्तीफा दे दे। इस जगह हम खास तौरपर यह जाच रहे है कि केंद्रीय शासनकी क्या हालत है। इसे किसी हालतमे भी कमजोर न वनना चाहिए और न कभी कमजोर लगना चाहिए। उसे तो अपनी शक्तिका अहसास[3] होना चाहिए। इसलिए यदि इसमे कुछ भी सचाई है कि कर्मचारी पूरी तरह आज्ञाका पालन नही करते है तो ऐसे नाफरमाबरदारोको[4] तुरत निकल जाना चाहिए या मिनिस्ट्री अथवा सबधित मत्रीको त्यागपत्र देकर ऐसी शक्तिको स्थान देना चाहिए जो सफलताके साथ कर्मचारियोकी नाफरमाबरदारीको दूर कर सके। जब कि मै उन शिकायतोको, जो मेरे पास आती रहती है, सकोचके साथ आपको सुनाता हू, मुझे यह आशा रखनी चाहिए कि इसकी तहमे कुछ नही है और यदि कुछ है भी तो उच्च अधिकारी यथाशक्ति कामयावीके साथ उनको ठीक कर लेगे।

यूनियनके उन नागरिकोका, जो इसके प्रभावमे आते है, क्या फर्ज है? यह साफ बात है कि ऐसा कोई कानून नही है जो किसी नागरिकको अपना मकान छोडनेपर मजबूर करे।

---

[1] प्रभाव [2] जनता [3] अनुभव [4] आज्ञा न पालनेवाले।

अधिकारियोंको खास अधिकार अपने हाथमे लेने पड़गे ताकि वह ऐसे हुक्म निकाल सकें, जैसा कि कहा जाता है, वे निकालते है। जहां-तक मुझे पता है, किसीको कोई लिखित हुक्म नही दिया गया है। कहा जाता है कि मौजूदा मामलेमे हजारोंको जबानी हुक्म दिया गया है। इसे लोगोंकी मदद करनेका कोई साधन नही है जो डरके मारे किसी भी वावर्दी[1] व्यक्तिके हुक्मके सामने अपना सर झुका दे। ऐसे सब लोगोंको मेरी जोरके साथ यह सलाह है कि वह लिखित हुक्म मागे और यदि सबसे उच्च अमलदार भी उसको संतोष न दे सके तो जरूरी हालतमें वह अदालतसे उस हुक्मकी सचाई मालूम करे। आम जनताको, जो इस मामलेमे बहुसंख्यावाली है, अपनेको सख्तीके साथ कानूनको हाथमे लेनेसे रोकना चाहिए। अगर वह ऐसा नही करेंगे तो वह अपने पैरोंमे खुद कुल्हाडी मारेंगे। यह ऐसी गिरावट होगी जिससे उठना कठिन हो जायगा। ईश्वर करे जल्द-से-जल्द उनको समझ आ जाय। उनको बुरी घटनाओंकी खबरसे, चाहे वह सच ही हो, प्रभावित न होना चाहिए। उनको अपने चुने हुए मंत्रियोंपर भरोसा रखना चाहिए कि वह इन्साफके लिए, जो जरूरी होगा वह सब करेंगे।

: १३१ :

२८ अक्तूबर १९४७

भाइयो और बहनो,

दिल्लीके एक भाई खतमे लिखते है, "मैंने शरणार्थियोंके लिए थोड़े खेमे और कनात वगैरा एक मुसलमान भाईसे लिये थे। वह तो यहासे चले गए। अब उनको कहा रखना चाहिए?" ये कोई शरीफ आदमी है, इसीलिए पूछते है कि उनका क्या करना है। और बात भी ठीक है कि वह अगर यहासे चले गए, तो क्या हम इनको हज्म

---

[1] वरदी वाले।

करके बैठ जाए? लेकिन मेरे पास तो कोई इतजाम है नही कि जो मै रख सकू। यह तो होम डिपार्टमेट[१] की वात है। सरदारजीसे पूछ लेना चाहिए या और कोई जो इस कामको करता है, उससे या नियोगी साहव जो नियुक्त हो गये है, उनसे पूछ लेना चाहिए। अगर उनको उस मुसलमान भाईका पता लग जायगा तो यह या इसकी कीमत उसको पहुचा देनी होगी।

अलीगढमे जो यूनिवर्सिटी है उसका एक लडका मेरे पास आया था। वहा पश्चिमी पजाव और सरहदी सूवेके भी कुछ विद्यार्थी पढते है। वे वहासे वापस नही पहुच पाए और जो यहा है वे जा नही सकते। वे क्यो न वहा जाए और आए? आखिर जो पाकिस्तान होना था वह तो हो गया। फिर आपस-आपसमे झगडा कैसा? क्यो यहाके इतने मुसलमान पाकिस्तानमे जाय और वहाके हिंदू और सिख यहा आए? लेकिन उनका यह इरादा है कि हम मुसलमानोके पाससे कवल वगैरा लेकर उन हिंदू और सिख शरणार्थियोको दे जो परेशान होकर कैंपोमे रह रहे है। अच्छा है, उनको इसकी दरकार भी है और अगर उनको मिल जाय तो इससे उनकी मोहब्वत तो प्रकट होगी। लेकिन सच्चा काम तो यह है कि वे पाकिस्तानमे मुसलमानोसे जाकर कहे कि हिंदू और सिखोको वहासे आना ही क्यो पडता है? मेरे पास तो ढेर पडा है कागजोका, जिनमे शिकायते ही भरी है। वे झूठी तो है नही। हा, उनमे कुछ अतिशयोक्ति हो सकती है, ऐसा मुझको लगता है। लेकिन अतिशयोक्ति होने पर भी, उसमे जो मूल है, वह तो ठीक है। वे क्यो वहासे भागे, उनको वापस वुलाओ, वे क्यो न अपने घरोमे आकर रहे? ऐसा अगर वे कर सके तो हम सारी दुनियाको यह वता सकेगे कि हम आपस-आपसमे कभी लडे ही नही। पीछे जो आज हमारी नाक कट गई है, वह कल फिर सावुत हो जायगी। ऐसा मैने उन लडकोको कहा है। उन्होने इसको मान भी लिया और पीछे कैसा वे करते है, यह तो ईश्वर ही जानता है।

लेकिन आज जो वात मै कहना चाहता हू, वह तो एक वडी वात है। मेरा ख़याल है कि मै जव विहारमे वैठा था तव वहा ऐसा

---

[१] गृह-विभाग।

चलता था कि लोगोंने यह सोच लिया कि चलो, स्वराज्य तो अब मिल ही गया, तो फिर रेलमें बैठकर जानेमें टिकटकी क्या दरकार है? यही नही, वे कभी-कभी तो बडी ज्यादती और जबर्दस्ती भी करते है। उस जमानेमें हम आपस-आपसमें तो नही लडते थे, लेकिन ऐसा मान लिया कि जब स्वराज्य मिल गया तो पीछे और क्या चाहिए? उसपर मैंने काफी लिखा, उसका असर हुआ और बादमें वहा वह बद भी हो गया। लेकिन अभी कुछ दिनोंमें तो ऐसा हो गया है कि सारे हिंदुस्तानमें या कहो कि सारी यूनियनमें काफी लोग रेलोंमें बगैर टिकट चलते है। बडे-बडे लोग भी यह सोचते है कि चलो, अब तो रेलें हमारी हो गई है। रेलें तो हमारी हो गई है, इसमें तो कोई शक नही, लेकिन इस तरहसे करनेका नतीजा यह हुआ है कि हमारा ८ करोड रुपया बर्बाद हो गया है। ८ करोड रुपया किसको कहते है? एक करोड भी किसको कहते है? जब कांग्रेसमें हमें एक करोड रुपया इकट्ठा करना था तो कितनी परेशानी हम लोगोंको हुई थी और कितने लोगोंको निकलना पडा था। मैं भी घर-घर घूमकर इकट्ठा करता था, और लोगोंको भी अपने साथ ले जाता था। तब जाकर बडी मुश्किलसे वह हुआ था। ऐसे हम गरीब लोग इस देशमें है। आज तो हम एक करोड रुपया खर्च कर लेते है और मिल गया है तो कुछ पता भी नही चलता। किस तरहसे हम उसको खर्च करें यह तो हम अभी जानते ही नही। लेकिन चूंकि काम ऊपर आ पडा है इसलिए कर रहे हैं। लोग अगर यह सोच लें कि चलो, रेलोंमें मुफ्त सैर करें या कही काममें भी जाय तो उसमें किराया क्या देना, तो यह बडी ज्यादती है। मेरे हिसाबसे तो यह बिलकुल लूट है। इस तरहसे तो हिंदुस्तान कगाल हो जायगा और न हमारे पास रेलगाडिया रहेगी और न कुछ और होगा। पीछे हम लोग रोएगे कि अब कैसे कही जाय। आठ करोड रुपया कोई कम थोडे ही होता है। पहले जो हमें रेलोंमें मिलता था उससे तो रेलवे कपनीको अपने रुपयेका ब्याज भी मिल जाता था। करोडो लोग रेलोंमें सफर करते है। अगर सब पैसा दें तो खासी कमाई हो सकती है। बिना टिकट तो लोग उस जमानेमें भी जाते थे, लेकिन आजकी तरह कोई हजारोंकी तादादमें

नही जाते थे। गाडियोमे इस्पेक्टर रहते थे और बाकायदा सारा हिसाब चलता था। आज तो ऐसा हो गया है कि गार्ड है तो उसको मारो और ड्राइवर आता है तो उसको मारो। रोज बरोज पैसेका खर्च बढता ही जाता है। कोई रेलगाडिया तो मुफ्त चल नही सकती। उनमे जो नौकर लोग काम करते है वे ऐसा थोडे ही मान लेगे कि मुसाफिर बिना पैसा दिये सफर करते है तो वे भी अपने वेतन न ले, अगर वे ऐसा सोचे तो खाएगे क्या? इसलिए रेलोमे करोडो रुपएका खर्च है और करोडोकी कमाई है। पहले तो इसमे नुक्सान होता नही था। तीसरे दर्जे-के मुसाफिरोसे काफी पैसे मिल जाते थे, क्योकि उनपर खर्च तो कम होता था और आमदनी अधिक थी। इसलिए कुछ पैसे नफेमे बच जाते थे। लेकिन कल जो मैने ८ करोड रुपएका घाटा सुना तो मुझको बडा दर्द हुआ। इस तरहसे अगर हर तरफसे लूट-ही-लूट रही तो हमारा भला नही हो सकता। इसपर भी हम आपस-आपसमे लडे, एक-दूसरेको कत्ल करे और लूटे, क्योकि इसमे भी तो हमे कोई फायदा तो होता नही, करोडोका खर्च ही होता है। जब लोगोको उनके घर छुडवाकर पाकिस्तान भेजनेके लिए कहा जाता है तो वे कोई मुफ्त थोडे ही चले जाते है। उनको खाना खिलाना और पहननेके लिए कपडा देना पडता है। यह सब खर्च मुफ्तमे हमे करना पडता है। हिंदुस्तान कोई धनिकोका मुल्क तो हे नही कि जो यह सब करता ही चला जाय। वह तो हो नही सकता। इसलिए अगर एक भी आदमी रेलमे मुसाफिरी करता है तो बिना पैसा दिये न करे। उसको पैसे देने ही चाहिए। जब अग्रेजी हकूमत चलती थी तब पुलिसके सिपाही या दूसरे अमलदार भी काफी पैसे खा जाते थे। मै चूकि तीसरे दर्जेमे मुसाफिरी करता हू इसलिए मुझको इसका पता तो चल जाता था। हरिद्वारमे कुभ-मेलेके समय जब मै गया था तो उस जमानेमे वहाके स्टेशनमास्टरको, पीछे तो बदलते रहते है, ऊपरके पैसे दिये बिना कोई जा नही सकता था। इस तरहसे हजारो रुपए रिश्वतमे उठ जाते थे। अब तो मेरे दिलमे ऐसा है कि हम सब शरीफ बन गए है। जो स्टेशनमास्टर, सिगनलर, इस्पेक्टर या गार्ड लोग है, उन सबको अपने हक और सचाईसे जो

पैसा मिलता है, वही खाकर अपना जीवन बसर करना चाहिए। उन्हें लोगोंके पाससे पैसे नही छीनने चाहिए। जो मुसाफिर है, उन्हे रेलोको अपनी चीज समझकर इस्तेमाल करना चाहिए। वे रेलोको साफ-सुथरी रखे, उनमे थूके नही, बीडी न फूके, बिना जरूरत जजीर न खीचे और पैसे दिये बिना एक भी मुसाफिर न चले। तब तो मैं कह सकता हू कि हमे सच्ची आजादी मिली है। मेरी बातको सुननेवाले कोई हजारो लोग तो यहा है नही और फिर रेलोमे तो लाखो लोग सफर करते है, तो उनको कौन सुनाएगा? अगर मै रेलवे मैनेजर या रेलवे मिनिस्टर होता तो मेरे मातहत जितने लोग काम करते, उनको यह हुक्म देता कि जितने लोग रेलोमे तुम्हारे सामने चलते है उनको यह कह दो कि हम मारपीट तो करेंगे नही, रेल आपकी है, हम आपके नौकर है, लेकिन बिना पैसा दिये हम आपको ले जा नही सकते। अगर रेल जगलमे भी जा रही है तो उसे रोककर वही खडी कर दे। अगर फिर भी वे न माने तो एजिन ड्राइवरको यह हुक्म देना चाहिए कि वह एजिनको गाडीसे अलग करके ले जाय। तब न किसीको गाली देना है और न किसीको मजबूर करना है, सिर्फ गाडीको वही खडी रहने दे। जब-तक लोग मुफ्तमे सफर करे तबतक यही करना चाहिए। आखिर यह कोई शराफत नही है कि आप मुफ्त गाडीमे बैठ जाए, मारपीट करे और जहा चाहा वही उसको रोक ले। यह तो मैने आपको यहाकी बात सुनाई। लेकिन मैने सुना है कि पाकिस्तानमे भी लोग ऐसे ही मुफ्त रेलोमे घूमते है। वहा भी क्यो न लोग मुफ्त चले? आखिर हम एक ही हवामे पैदा हुए है, एक ही-जैसा नमक खाते है, तो पीछे वहा भी क्यो न वही हो जो यहा होता है। अगर यही हाल जारी रहा तो दोनो दिवालिया हो जायगे। इस तरहसे किराया न देकर रेलोमे सफर करे, जहा रिश्वत खाना है वहा रिश्वत खाए और जिसको मारना है उसको मारे, तो पीछे हम बिल्कुल लुटेरे लोग बन जायेगे। आजादीके आनेसे हमारी जो कीमत बढ गई थी, वह कीमत बिलकुल चली जायगी। इसलिए जितने लोग सुन सकते है, वे सुने और मिनिस्टर भी सुन ले, क्योकि एक जानकार आदमीकी हैसियतसे मै कह रहा हू कि अगर यह सिलसिला न रुका तो आपको गाडिया बद करनी होगी। गाडिया चलेगी नही और जो चलेगी उसमे कोई आदमी मुफ्त जा नही सकता।

: १३२ :

२९ अक्तूबर १९४७

भाइयो और बहनो,

आपने आजका बहुत मीठा भजन तो सुना। जिन्होने हमको यह मीठा भजन सुनाया उन्हे आप लोग सब जानते तो होगे नही। उनका नाम दिलीपकुमार राय है। उन्होने हर जगहका भ्रमण किया है। उनके कठका माधुर्य जैसा है वैसा हिंदुस्तानमे तो कम लोगोके पास है। मै तो कहता हू कि शायद सारी दुनियामे भी बहुत कम लोगोके पास है। मेरे पास ये दोपहरको आ गए थे। तब कोई अधिक समय तो मेरे पास था नही, सिर्फ १० मिनट थे। उस वक्त उन्होने 'वन्देमातरम्' सुनाया, जिसको उन्होने अपने मधुर स्वरमे बिठाया। क्योकि वे बगाली है इसलिए तो उन्हे जानना ही चाहिए। चूकि वे मुझको सुनाना चाहते थे, इसलिए सुन लिया। लेकिन मै कोई सगीत-शास्त्री तो हू नही। उनको मुझसे मुहब्बत है, जो एक दूसरेके साथ बन जाती है। पीछे उन्होने इकबालका 'सारे जहासे अच्छा' भजन सुनाया। उसको भी उन्होने एक नए स्वरमे बिठाया हैं। मुझको यह बडा अच्छा लगा। वे ऋषि अरविंदके आश्रममे, जो पाण्डूचेरीमे है, कई वर्षोसे रहते है। वहा कोई तालीम तो उन्होने ली नही। जब वहा गए तब भी वे सगीत-शास्त्री थे। पीछेसे अपनी कलाको बढाते रहते है।

इस भजनका रहस्य तो यही है न, कि कबीर कहते है कि तुम्हारे पास तो यह हाथी, घोडे तथा करोडोकी दौलत पडी है, लेकिन मेरे पास तो केवल मुरारीका ही नाम है। मै तो उसीसे धनपति हू और तुम्हारे पास जो इतना धन पडा है वह निकम्मा है। वह आज है कल चला जायगा, लेकिन मेरे पास जो धन है, वह कभी जा नही सकता। राम-नामकी महिमा कितनी बडी है, यही इसमे बताया गया है। और जो चीजे भजनमे है वे तो आपने सुन ही ली। लेकिन अरविंदका आश्रम क्या चीज है यह भी तो आपको जानना चाहिए। यो तो वहा लोगोकी एक धारा चल रही है। वहा हमेशा काफी लोग जाते है।

उनके काफी भक्त है, हिंदू क्या, मुसलमान क्या किसीके लिए वहा घृणा तो है ही नही। सर अकबर हैदरी, अब तो वह मर गए, प्रतिवर्ष वहा जाते थे, उसका तो मै गवाह हू। श्रीअरविंद तो दीनभक्त है, किसीसे मिलते नही है। ऊपरसे उनका दर्शन हुआ तो हुआ, नही हुआ तो नही, लेकिन लोग जाते थे। उनके पास यह रहते है। इनके दिलमे भी ऐसी कोई घृणा नही है। तो इतना तो हम सीख ले कि हमारे दिलमे क्यो घृणा होनी चाहिए।

लेकिन मै तो आज काश्मीरमे जो हो रहा है उसके बारेमे कहना चाहता हू। और कहना भी चाहिए। अखबारोमे तो आप देख ही रहे है। वह तो एक अजीब बात है। तीन दिनकी बात है। किसीको पता नही था। मुझको भी पता नही था कि क्या होने वाला था। लेकिन वह एक युगकी बात हो गई ऐसा हम कह सकते है। अभी कहते तो ऐसा है कि वहा अफ्रीदी और दूसरे लोग बदूकोके साथ घुस गए है और कोई तो यह भी कहते है कि यह तो पाकिस्तानकी कारस्तानी है। वह हो, उससे तो मुझे कोई वास्ता नही है। मै तो जो वहा हो रहा है उसको देख रहा हू। एक तरफ तो वे पुछ तक चले गए और वहामे भी आगे, श्रीनगरसे २२ मीलतक के फासलेतक पहुच गए। वहासे तो सीधी सडक पडी है। कोई रुकावट हो नही सकती है।

जब काश्मीरके महाराजाने यह देखा तो उन्होने कहा कि मै भारतीय सघमे आ जाता हू। महाराजाने लार्ड माउटबैटनको खत लिखा, जिसका उन्होने जवाब दिया कि आप आ सकते है। पीछे जब आ गए तो शरणागत बने और उनकी रक्षा होनी चाहिए। लेकिन रक्षा करे कहासे? रास्तेसे तो जा नही सकते, हवाई जहाजसे ही जा सकते है। लेकिन हवाई जहाजसे कितना लश्कर जा सकता है, चद आदमी आ-जा सकते है। उनको अपने हथियार ले जाने है, खुराक ले जानी है, कपडे भी ले जाने है और मोटे कपडे भी होने चाहिए। एक रतल वजन हो गया तो वजन बढ गया। ऊपर पक्षीके माफिक चलना है तो कितने लोग जा सकते है। शायद आज भी कुछ गये है। कुल १००० गये होगे, ज्यादा-

से-ज्यादा १५०० गये होगे। एक ओर तो ये १५०० आदमी और दूसरी तरफ कवाइली इलाकेसे वहुतसे लोग आ गये है। वे भी तो लडनेवाले है, वे लडते है। उसमे आप क्या सोचे और मै क्या सोचू। आखिर मेरा जीवन तो ऐसे ही काममे चला गया है। मै तो शस्त्र-युद्धको माननेवाला नही हू, लेकिन मुझको समझना तो चाहिए कि वह क्या वात है। एक ओर तो वे १५०० आदमी और दूसरी तरफ इतने अफ्रीदी और दूसरे लोग। फिर वहा शेख अब्दुल्ला साहव है। शेरे काश्मीर उसको कहते है। याने बाघ है, सिह है। वह वडा तगडा है। आपने उसका चित्र तो देखा ही होगा। मै तो उसको पहचानता भी हू। उसकी वेगमको भी पहचानता हू। बेगम तो आज यहा पडी है। तो एक आदमीसे जितना हो सकता है वह वे कर रहे है। वे कोई लडनेवाले तो है नही। यो तो काश्मीरमे तगडे मुसलमान पडे है, तगडे हिंदू भी पडे है, राजपूत और सिख भी पडे है। तो उसने तय कर लिया है कि जितना हो सकता है वह करूगा। वह तो मुसलमान है। काश्मीरमे मुसलमानोकी वडी आवादी है। यहासे तो ये लोग वदूक लेकर जाते है, लेकिन वहाके मुसलमान क्या करे और क्या न करे। माना कि हम तो यहा जाहिल वन गए है, यहा कहो या पाकिस्तानमे कहो, कोई पागलपन बाकी नही रखा है। क्या वहा वे लोग भी जाहिल वन जाय और जिनको काटना है उनको काटे, औरतोको काटे, वच्चोको काटे, इस बुरे हालसे मरे यह हाल काश्मीरका हो। तो प० जवाहरलाल नेहरू और मत्रिमडलके सभी सदस्योने सोचा कि कुछ-न-कुछ तो किया जाय, तो इतने आदमी भेज दिये। वे क्या करे? इतना ही करे कि आखिरी दमतक लडते रहे और लडते-लडते मर जाय। जो लडनेवाले या शस्त्रधारी होते है उनका यही काम होता है कि वे आगे वढते है और हमला करने-वालोको रोक लेते है। वे मर जाते है, लेकिन पीछे तो कभी हटते नही है। इसका क्या परिणाम होगा, वह तो ईश्वर ही जानता है। जैसा भजनमे वताया गया है। हमारा धन तो मुरारी ही है। करोडोकी दौलत हमारा धन नही है। शस्त्र है, वह भी हमारी दौलत नही है। जो कुछ करना है वह मुरारी ही करता है, लेकिन पुरुषार्थ करना तो

[illegible] नाम है। [illegible]। तो इन १५०० आदमियाने पुरुषार्थ किया। लेकिन अब, जब वे श्रीनगरको बचानेमें मारे-के-मारे कट जाते हैं। पीछे श्रीनगरके साथ काश्मीर भी बच जायगा। उसके बाद क्या होगा?

यही होगा न कि काश्मीर काश्मीरियोंका होगा। शेख अब्दुल्ला जो कहते हैं वह तो मैं पूर्णतया मानता हूं कि काश्मीर काश्मीरियोंका है, महाराजाका नहीं। लेकिन महाराजाने इतना तो कर लिया है कि उन्होंने शेख अब्दुल्लाको सब कुछ दे दिया और कह दिया है कि तुमको जो कुछ करना है सो करो। काश्मीरको बचाना है तो बचाओ। आखिर महाराजा तो काश्मीरको बचा नहीं सकते। अगर काश्मीरको कोई बचा सकता है तो वहां जो मुसलमान हैं, काश्मीरी पंडित हैं, राजपूत हैं और सिख हैं वे ही बचा सकते हैं। उन सबके साथ शेख अब्दुल्लाकी मोहब्बत है, दोस्ती है। हो सकता है कि शेख अब्दुल्ला काश्मीरका बचाव करते-करते मर जाते हैं, उनकी जो बेगम है वह मर जाती है, उनकी लड़की भी मर जाती है और आखिरमें काश्मीरमें जितनी औरतें पड़ी हैं वे सब मर जाती हैं, तो एक भी बूंद पानी मेरी आंखोंमेंसे आनेवाला नहीं है। अगर लड़ाई होना ही हमारे नसीबमें है तो लड़ाई होगी। दोनोंको ही लड़ना है या किस-किसके बीच होगी, यह तो भगवान ही जानता है, हमलावरोंकी पीठपर अगर पाकिस्तानका बल नहीं है या पाकिस्तानका उसमें कोई उत्तेजन नहीं है, तो वे वहां कैसे टिक सकते हैं, यह मैं नहीं जानता। लेकिन माना कि पाकिस्तानकी उत्तेजना नहीं है, तो नहीं होगी। जब काश्मीरके लोग लड़ते-लड़ते सब मर जायंगे तो काश्मीरमें कौन रह जायगा? शेख अब्दुल्ला भी चले गए, क्योंकि उनका सिंहपन, बाघपन तो इसीमें है कि वे लड़ते-लड़ते मर जाते हैं और मरने दमतक उन्होंने काश्मीरको बचाया, वहांके मुसलमानोंको तो बचाया ही, उसके साथ वहांके सिख और हिंदुओंको भी। वे ठेठ मुसलमान हैं। उनकी बीबी भी नमाज पढ़ती है। उन्होंने मधुर कंठसे मुझे 'औज अबिल्ला' सुनाया था। मैं तो उनके घरपर भी गया हूं। वे मानते हैं कि जो हिंदू और सिख यहां हैं वे पहले मरें और मुसलमान पीछे, यह हो नहीं सकता। वहां हिंदू और सिखकी तादाद कम है,

तो भी क्या हुआ। अगर शेख अब्दुल्ला ऐसे है और उनका असर मुसलमानोपर है तो हमारा सबका क्षेम है। आज जो जहर हममे फैल गया है वह होना नही चाहिए और काश्मीरके मारफत हमारा यह जहर भी चला जायगा। अगर उस जहरको मिटानेके खातिर काश्मीरमे इतनी कुरबानी हो जाती है तो उससे पीछे उनकी आखे भी खुल जायगी। जो कबाइली लोग है, उनका काम तो मारना ही है। वे चले तो गए, वहा अपनी शक्ति भी बता दी। वहा उनके साथ कौन-कौन है, उसका तो मुझे पता है, लेकिन उसका नतीजा तो यह आता है कि काश्मीरमे जितने हिदू-मुसलमान पडे है अगर वे सब-के-सब शहीद हो जाते है तो हमारी भी आखे खुल जाती है। हम समझगे कि सब मुसलमान पाखडी और पाजी नही है, उनमे भले भी रहते है। इसी प्रकार हिदू और सिखो में भी सब अच्छे या फरिश्ते है, यह भी झूठ है, या सब निकम्मे है या काफिर है, वह भी गलत बात है। इसीपर मेरा तो खयाल है कि जो लोग भले है वे हिदू-मुसलमान-सिख सभीमे है और इन्ही भले आदमियोपर दुनिया चलती है, न कि हथियार रखनेवालो पर।

यह जो मधुर कठमे हमने भजन सुना है उसका भी निचोड यही है। काश्मीरमे अगर सारे लोग भी रक्षा करते-करते मर जाय तो मै नाचनेवाला हू। मेरे दिलमे तो कोई रज नही होनेवाला है। दुनियाका काम चलता ही रहता है। यह तो सब ईश्वरका खेल है। लेकिन पुरुषार्थ तो है और वह यही कि हम सच्चा काम करते हुए मर जाय।

: १३३ :

३० अक्तूबर १९४७

(आज सायकाल प्रार्थना-सभाके समय कुरान-शरीफकी आयत पढे जानेपर एक व्यक्तिद्वारा आपत्ति की गई जिसके कारण प्रार्थना न हो सकी। लोगोने आपत्ति करनेवालेको अपना विरोध वापस ले लेनेको समझाया, लेकिन बाहर जाकर वह फिर भीतर आ जाया करता

था। इसलिए गाधीजीको प्रार्थना-सभाके लिए आते समय तीन वार लौटना पडा। अतमे जव वह आदमी चला गया तव लोगोके अनुरोध करनेपर गाधीजीने थोडे समयके लिए भाषण करते हुए कहा—)

भाइयो और वहनो,

यहा क्या हो रहा था यह मुझे पता चलता रहता था। इससे मुझे दु ख हुआ। मै आज तो यह वता देना चाहता हू कि यह एक निजी आदमीका घर[1] है। यहा गोलमाल नही होना चाहिए। जो लोग वाहरसे यहा आ जाते है वे आए, लेकिन आनेके वाद शिकायत करना यह सभ्यता नही है। आज एक भाई कहते है कि आज प्रार्थना नही होने दूगा। तव मुझे विचार करना पडा कि इस हालतमे मुझे प्रार्थना करनी चाहिए या नही। शिकायत करनेवालेको आपने कहा तो वे चले गए, फिर आए, फिर चले गए, फिर आए। यह मेरे लिए अच्छा नही है। इसका मतलव यह है कि उसका दिल दु खित होता है। यो तो मै समझता हू कि आप लोगोमेसे काफी लोग दु खित होगे कि प्रार्थनामे कुरान-का एक टुकडा होता है। लेकिन मै लाचार हू, क्योकि वह मेरी प्रार्थना-का एक अविभाज्य अग है। यहा प्रार्थना नही होगी, तो क्या मै प्रार्थना नही करूगा? एक तरफ धर्म वताता है कि मै प्रार्थना करू। मै यहां प्रार्थना नही करूगा, इसलिए घरमे प्रार्थना न करू ऐसी वात नही है। दुनियामे मेरे साथ कोई भी न रहे तो भी प्रार्थना करूगा। दिलमे ही प्रार्थना हो सकती है। मुझको यहा अहिंसाकी दृष्टिसे सोचना पडता है। उसी निगाहसे देखना चाहिए कि मेरा धर्म क्या है? यदि वह भाई चला जाता है तो मै प्रार्थना करू, यह मुझे अच्छा नही लगता। मै आज प्रार्थना तो करना नही चाहता हू, वहस भी नही करना चाहता हू, तो भी कहूगा, क्योकि समय भी नाजुक पडा है। इसलिए लोग सुनना चाहते है कि गाधी क्या कहता है। मै भी कहना चाहता हू कि लोग मुझे समझ तो ले कि मै क्या कहना चाहता हू। लेकिन मै लाचार वन गया, इसलिए वहस नही करूगा।

---

[1] विडला-भवन।

मुझे सोचना है कि मै जो प्रार्थना करता हू उसे वद कर दू और क्या वहसमे ही रहू ? यह वडा प्रश्न है। इस प्रश्नपर मुझे सोचना पडेगा। आज मै कहना नही चाहता और वहस भी नही करना चाहता। वहस ही करू तो प्रार्थना छोड दू। मै इसके वारेमे एक प्रेस-वक्तव्य निकाल दूगा।

जव देखा कि आप लोग है तो मै आ गया। मेरी सभ्यता और अहिंसा वताती है कि मै अपना दिल खोलकर आपके सामने रख दू और वता दू कि मै कौन हू। मेरे पास इस जगतमे सत्य और अहिंसाके सिवा कोई दूसरी चीज नही है। आप सत्य और अहिंसाको पहचान ले तो दुनियामे वडे-वडे काम हो सकते है। मै कोई लवी-चौडी वात नही करना चाहता। दुनियामे वडी-वडी वाते होती है, लेकिन ईश्वरका जो नियम है उसे कौन फेर सकता है और दुनियामे जो वडे-वडे नियम है उन्हे ईश्वर फेर नही सकता। मै समझता हू कि हम अभिमानमे पडे है, अज्ञानमे पडे है, इसलिए यह मान लेते है कि सत्य तो इतनी वडी चीज है कि वह व्यापारमे कैसे चल सकती है ? व्यवहारमे कैसे चल सकती है ? अहिंसा चलेगी कैसे ? मुझे लोग गाली देते है तो लोग कहते है कि जव कोई मुझे दो गाली देता है तो मै एक गाली तो दू। गालीके सामने थप्पड़ क्यो न लगा दू। इसके पीछे क्या होता है कि हम आगे नही वढते है। लेकिन हमको तो आगे वढना ही है, नही मै समझता हू कि जन्म लेनेके मानी है। मै स्थिर रह नही सकता हू। स्थिर तो एक ईश्वर है, लेकिन स्थिर होते हुए उपनिषदमे वताया गया है कि वह स्थिर भी है और 'गतिमान भी है। हमेशा गति करता है—ऐसा जो गति करता है वह स्थिर है, ऐसा लगता है। हम कहा जानते थे कि सूर्य स्थिर है और पृथ्वी अस्थिर है, लेकिन अव हम सीख गए कि गति-सी जो लगती है वह स्थिर है। ईश्वरकी ऐसी माया वन गई है। जो स्थिर और अस्थिर है, वह ईश्वर ही है। हममे स्थिरता-जैसी कोई चीज नही है, गति है, गति है तो हमको वढना है। हम माके पेटसे निकले और वढे। आगे जाते-जाते वृद्ध होते है। ऐसा काम दुनियामे चलता है। जो जन्मता है उसको आगे वढना है, वह वढता ही है। कुछ

लोग वृद्धावस्थाको गिरना मानते है। लेकिन मै वैसा नही मानता। वृद्धा-वस्था पका हुआ फल है। तो शरीर छूटता है, आत्मा थोडे छूटता है। वह न मरता है और न गिरता है। आत्माकी गति बढती ही रहती है लेकिन दुनियामे सत्य और अहिसाके बिना काम नही चलता। मै अब भी दावेके साथ कहता हू कि सत्य और अहिसा ऐसी चीज है जिसे बच्चेको भी सीखना चाहिए। इसे अगर माता सीख लेती है तो अपने बच्चेको सिखा सकती है। माता आज-के-आज तो सीख नही सकती है, लेकिन कहते है कि हम तो आदिकालसे, करोडो सालसे है तो उस विकासको देखना है। इसके लिए हममे धैर्य तो होना ही चाहिए। मै इसके बारेमे अधिक तो कहना नही चाहता, लेकिन सिवा सत्य और अहिसाके कुछ नही हो सकता। हम विकास नही कर सकते।

मै आज बहस तो करना नही चाहता। आप कल भी आएगे। यदि कल भी किसीको कुरानकी आयत पढे जानेपर आपत्ति होगी तो उसपर मै सोचूगा कि मुझको बहस करना है या नही। यदि किसीको शिकायत होगी तो बोलेगा कि शिकायत है, नही तो बोलेगे कि हम प्रार्थना सुनना चाहते है और बहस भी। लोगोको समझ लेना चाहिए कि हम गुस्सेमे नही आयगे। हा पीछे कोई ठान ले कि हम किसीको सुनने न देगे और चीखे तो मै कहूगा कि आपकी हिसाकी कसौटी हो जायगी और मेरी अहिसाकी परीक्षा हो जायगी? यह भी मालूम हो जायगा कि आप कहातक जाते है? यदि आप मेरे साथ सत्य और अहिसाका साथ देगे तो अहिसाके सामने हिसा रह नही सकती, ऐसा मै दावेके साथ कह सकता हू। लेकिन शर्त यह है कि मै जैसा कहू वैसा आप करे। आप कहे कि हम अकुशमे रहनेवाले है, निग्रहमे रहेगे और दिलमे गुस्सा न करेगे। वह भाई अज्ञानी है जो कुरानकी आयतपर आपत्ति करता है। कुरानशरीफने क्या गुनाह किया है? यहाके मुसलमान बिगडे, इसलिए कुरान बिगडे यह बात नही है। वह तो बुलद है, सनातन है, अरबीमे है। जो उससे घृणा करता है उससे अधिक अज्ञानी मै और किसीको नही समझता। इसी तरहसे शिकायत करनेवालेको आप समझा दे। हा, अगर कोई कहे कि वह प्रार्थना सुनना ही नही चाहता तो मै प्रार्थना

करूगा और वहस भी। लेकिन मै प्रार्थना बद करता हू, इसके लिए किसीको आप मारे यह मै वर्दाश्त नही कर सकता। यदि मै अकेला रहू और पाच आदमी आवे और कहे कि हम आपको मार डालेगे तो मै कहूगा कि मेरा सिर आपके सामने है। मै कहूगा कि पाच क्यो मारे, एक ही आदमी गला काट सकता है। लेकिन तो भी मै प्रार्थना करूगा। जव आपका दिल ऐसा हो जायगा तव आप न किसीको मारेगे और न किसीपर गुस्सा करेगे। शिकायत करनेवाला, जिसे हम असभ्य कह सकते है, अगर चीख-चीखकर भी शिकायत करेगा तो भी हम प्रार्थना करेगे। कल प्रार्थना होगी और वहस भी। यदि कल कोई शिकायत करे तो वह शिकायत करके चला जाय। उसके पीछे मै ख्वार नही होना चाहता। मै गुस्सेको कावूमे रखू, धीरज रखू तव मेरी गाडी आगे चल सकती है। मै आज इतना ही सुनाना चाहता हू। अव आप शातिसे घर जाइए और वहस न करे। घर जाकर इसपर विचार कीजिए।

: १३४ :

३१ अक्तूबर १९४७

(आज सायकाल भी गाधीजीकी प्रार्थना-सभामे कुरानकी आयत पढी जानेपर दो आदमियोने आपत्ति की। फलस्वरूप प्रार्थना आरभ करनेसे पहल गाधीजीने इस वारेमे कहा—)

भाइयो और वहनो,

मेरे विचारसे दो या तीन आदमियोकी खातिर वाकी करीव ३०० आदमियोको निराश करना भी एक तरहकी हिंसा है। इन आदमियोको विरोध करनेका तो हक है, लेकिन सभ्यता और शिष्टाचार कहता है कि उन्हे अपने इस हकको इस जगहपर, जो कि विडलाजीकी निजी मिल्कियत है, इस्तेमाल नही करना चाहिए। लेकिन अगर वे करते है तो कौन रोक सकता है? तो फिर सभाके शेष लोगोको चाहिए कि वे वर्दाश्त करे, अपने दिलोमे गुस्सा न करे और जो लोग विरोध करते

है, उनको यहा और बाहर भी कुछ न कहे। अगर आप लोग ऐसा करेंगे तो मै अपनी प्रार्थना करूगा और उसमे कुरानशरीफकी आयत भी रहेगी। आप लोग, जो बहुमतमे है, ऐसा न सोचे कि चूकि हम इतनी बडी तादादमे है, इसलिए विरोध करनेवालोकी दरकार ही नही है। यदि आप ऐसा सोचे तो वह हिंसा हो जाती है। जो अल्पमतमे है उनकी हमे ज्यादा दरकार होनी चाहिए, यही तालीम मै अबतक देता आया हू। आगे भी मै ज्यादा-से-ज्यादा यही तालीम दूगा कि अहिंसा किस तरहसे काम करती है।

सत्य और अहिंसाके जो मौलिक सिद्धात है उनमे कोई खास गुत्थी नही रहती। उनको सीखनेके लिए कोई खास डिग्री लेनेकी जरूरत नही होगी। अंग्रेजी तो क्या उसके लिए मादरी जबान[१] भी सीखनेकी जरूरत नही होगी। उनको जानने लायक चीज तो हम बचपनमे अपने मा-बापसे सीख लेते है। उसपर अमल करना तो इससे भी आसान है। इसलिए अगर आप लोगोमे उनका विरोध बर्दाश्त करनेकी शक्ति है तो मै उनका विरोध होते हुए भी प्रार्थना करूगा। सभ्यताका नियम तो यह है कि जिन लोगोको कुरानशरीफकी आयतपर आपत्ति है वे अपना विरोध प्रकट करके चले जाए और बादमे मुझको समझाए कि मै इससे किस प्रकारसे हिंदू-धर्मको नुकसान पहुचाता हू। मै समझदार आदमी हू। इसलिए अगर वे मुझे समझा सकेंगे तो मै उनकी बात मान लूगा। मै तो समझता हू कि मैने इसमे हिंदू-धर्मको फायदा ही पहुचाया है। यह मै आजसे थोडे ही करता हू—एक अर्सेसे मै ऐसा कर रहा हू और मै समझता हू कि उससे हिंदू-धर्मको कोई धब्बा नही लगा। उसके द्वारा जो मुसलमान मेरे दोस्त है उनको मै और अधिक अपना सका हू। यह तो मैने कोई बुरा नही किया। इसी तरहसे मै अगर सारी दुनियाको अपना सकू और कोई मेरा दुश्मन या विरोधी न हो तो कितना अच्छा हो। लेकिन ऐसा तो कहासे मै परिपूर्ण आदमी हू कि जिससे मेरा कोई विरोध न कर सके, लेकिन जो विरोध करते है उनको

---

[१] मातृभाषा।

मैं वर्दाश्त करना तो सीख लू। अगर आप लोग भी उनका विरोध वर्दाश्त कर ले तो वे लोग भी सोचेंगे कि ये तो सब शरीफ आदमी है—हमको कोई कुछ कहता ही नही, सब सद्भावनासे हमको अपनाते है। अगर हम सब ऐसा कर सके तो हिंदुस्तानकी शक्ल बदलनेवाली है, इसमे कुछ शक नही है। इसलिए मैं आपको पूछता हू कि क्या आप इसे वर्दाश्त कर लेगे? पुलिस भी उनको कुछ न कहे।

(गाधीजीके यह पूछनेपर सब लोगोने रजामदी प्रकट की। तब प्रार्थना हुई। प्रार्थनाके वाद गाधीजीने भाषण करते हुए सबसे पहले शाति रखनेके लिए हार्दिक धन्यवाद दिया और उन्होने सभाके वाकी लोगोको भी उन दो व्यक्तियोके विरोधको वर्दाश्त करनेपर वधाई दी।)

अगर ऐसा ही चलता रहा तो उसका परिणाम हमको अच्छा ही मिलनेवाला है। 'मन-मदिरमे प्रीति वसा ले'—श्रीदिलीपकुमार रायक, जिन्होने इस भजनको आजकी प्रार्थना-सभामे गाया है, कठमे जो माधुर्य है और उनके गानेमे जो कला है, वह मुझको मीठे लगे। वैसे तो यह नामूली चीज है, लेकिन उसे जिस ढगसे सुदर वनाया गया, इसीका नाम कला है। इस भजनमे यह चीज है कि अपने मनको मदिर वनाओ और उस मदिरमे प्रीति वसाओ। तो इसमे भी अहिसाका शिक्षण है। इस भजनका कवि आदमीको कहता है कि तू मूर्ख और भोलाभाला क्यो वनता है! अगर तू केवल अपने मन-मदिरमे ज्योति जगा लेगा तो तेरा सारा काम बन जायगा। उसके वाद तो सारी दुनियामे ज्योति या प्रकाश ही दीखेगा। अधेरा कही रहेगा ही नही। इसी तरहका चमत्कार सत्य और अहिंसामे भरा है। यह वडी सीधी-सादी चीज है, लेकिन अगर हम इतनी चीज भी सीख लें तो दुनियामे हमारा सारा व्यवहार सरल हो जाता है।

नवाखालीमे मैंने देखा कि वहाके अमीर लोग गरीबोको वही छोडकर भाग गए। वहाके देहातोमे वे लोग, जिनको कि हम मूर्खता-वश अछूत कहते है भरे पडे है। क्योकि मै उधर घूमा हू, इसलिए मैंने देखा कि वे लोग वडे परेशान थे। वहाकी स्त्रिया चूडिया पहनना तथा माथेपर सिंदूर लगानातक भूल गई थी। पजाव या दूसरे स्थानोसे जो लोग

यहा आ रहे है उनमें भी मैं देखता हू कि धनी लोग तो कुछ-न-कुछ अपना धधा कर ही लेते है। उनके पास पैसे होते है और दोस्त भी मिल जाते है। लेकिन गरीब क्या करे? वे कहा जाय? नवाखालीमें तो हिंदू ही थे, लेकिन बिहारमे मैंने देखा कि मुसलमान परेशान पडे थे। मैंने उनको कहा कि आपमेंसे जो मर गए, वे मर गए और बाकी जो धनी है और वे जो बाहर जाना चाहते है वे चले जाय, लेकिन गरीबोंका बेली[1] परमेश्वर ही है। परतु ईश्वरको अपने हाथ या मुहसे तो काम करना नही है, वह तो दूसरोको प्रेरणा देता है और उनकी मारफत अपना काम करा लेता है। लेकिन क्या धनिक लोग इतने कठोर और नास्तिक बन जाय कि ईश्वरको भी भूल जाय और अपने धनको ही परमेश्वर मानकर बैठ जाय? लेकिन धनिक लोग तो वहासे भाग गए और वहा जो गरीब लोग रह गए वे मुझको लिखते है कि हमारा कुछ तो करो। चूकि मैं कई वर्षोंसे गरीबोका काम करता आया हू, इसलिए वे मेरी ओर देखते है। लेकिन मैं क्या कर सकता हू? मेरे पास न तो कोई ताकत है और न सत्ता है। चूकि वे मुझे लिखते है, इसलिए मुझे उनका ज्ञान तो हो जाता है।

अभी हमारे यहा दिल्लीमें जो शिविर चलते है उनमें भी काफी गरीब लोग पडे है। धनी भी है और उन धनी व्यक्तियोमे कुछ अच्छे भी है जो गरीबोंको खाना खिलाकर खाना खाते है। इसलिए मैं कहता हू कि जो लोग यहा आ गए है वे अपने अदर धनी और गरीबका भेद नही करें। अगर अमीर गरीबोको घृणासे देखेंगे तो वह धर्म नही अधर्म हो जायगा। इसलिए मैं साफ कहूगा कि जो धनी लोग है वे गरीबोको अपने साथ लेकर चले। तभी हम सगठित रूपमे रह सकते है।

अभी हालमे दो यूरोपियनोने, जो पति-पत्नी थे, हमारे कुछ शिविरो-को देखा। वे उनको देखकर खुश हुए। उन्होने कहा कि गरीब और अमीरके विभाग तो है, लेकिन फिर भी सब लोग अच्छी

---

[1] सहायक।

तरहसे रहते है। वे यहां सेवा करनेके ही उद्देश्यसे आये है। अगर हम सब लोग ईश्वरका नाम लेकर काम करे तो जैसे दूधमे शक्कर मिल जाती है वैसे ही पजाबके शरणार्थी भी दिल्लीके लोगोमे मिल जायगे।

दिल्लीमे अभी काफी मुसलमान पडे है। मैने आज एक फेहरिस्त देखी है, जिसमे अगर अतिशयोक्ति नही है तो मालूम होता है कि यहा सैकडो मुसलमानोको जबरन हिंदू या सिख बनाया गया है। जिन लोगोका इस तरहसे धर्म-परिवर्तन किया गया है, उनको मै कहना चाहता हू कि अगरचे आपकी मुसलमानी शक्ल बदल दी है, लेकिन अगर खुदा सचमुच आपके दिलमे बैठा है तो आपको न तो दाढी मुडानेकी जरूरत है न चोटी रखनेकी। जो लोग स्वेच्छासे गीताजीको पढना चाहे खुशीसे पढ सकते है, जैसे मै कुरानशरीफ को पढता हू और मेरी आत्मा खुश होती है। लेकिन अगर कोई मुझको हुक्म करे कि तुम्हे कुरानशरीफ पढनी ही होगी, नही तो हम मार डालेगे तो मै कहूगा कि मुझे आपकी कुरानशरीफ नही चाहिए, भले ही उसमे रत्न भरे हो। इसलिए जो मुसलमान हिंदू या सिख बन गए है उनसे कहूगा कि उन्हे अपने धर्मपर कायम रहना है। अगर हम उनके साथ जबरदस्ती करते है तो हम हिंदू-धर्मका नाश करते है। हिंदुस्तानमे ऐसा हमेशा हो नही सकता है और अगर होता है तो हम गिर जाएगे और जो आजादी हमने ली है उसको हम खो देगे। वह स्वप्नकी तरह हो जायगी, इसमे मुझे कोई शक नही है। इसलिए जितने मुसलमान यहा है उनको निडर होकर रहना चाहिए। जिन्होने धर्म-परिवर्तन कर लिया है वे कहे कि तब तो हम डर गये थे, लेकिन अब हम समझ गये है कि जो खुदापरस्त या ईश्वर-भक्त होते है वे किसीसे नही डरते, अगर किसीसे डरते है तो केवल ईश्वरसे। ईश्वरसे डरना तो अच्छी बात है, क्योकि वह प्रेमका धाम है, दयाका सागर है। उससे डरनेसे तो हम कृतार्थ हो जाते है। लेकिन इन्सानसे कभी नही डरना है। इसलिए वे कह देगे कि हम धर्म-परिवर्तन करनेसे तो मरना अच्छा समझेगे। चाहे तो आप हमे पाकिस्तान भेज दे,

लेकिन पाकिस्तानके जानेके लिए भी कोई मजबूर नही कर सकता।

लियाकतअली साहब और हमारे प्रधान मन्त्रीमे भी यही समझौता हुआ है न, कि जो पाकिस्तान जाना चाहे वे पाकिस्तान चले जाय, लेकिन लियाकतअली साहब, सरदार और जवाहरलाल भी किसीको मजबूर नही कर सकते। कोई कानून नहीं है। इसलिए जो मुसलमान यहा रहते है उनको हमे प्रेमसे रखना चाहिए। अगर मै जिदा रहू तो इसके सिवा कोई दूसरा दृश्य देखना नही चाहता। पहले मै १२५ वर्ष जिदा रहनेकी बात सोचता था, लेकिन अब वह भूल गया हू। अगर हिंदुस्तानके नसीब खराब है तो मुझको तो ईश्वर उठा ले। और अगर उसका नसीब बुलद है और पल्टा होनेवाला है और होना तो चाहिए तो तू मुसलमानके दिलको बदल दे और उनका दिल तेरेमे ही भर दे। खुदाका नाम तो वे लेते है, लेकिन खुदाका काम नही करते। इसी तरहसे हिंदू भी अगर कृष्ण या रामका नाम तो ले, लेकिन पीछे कत्ल करे और एक दूसरेको काटे तो वह रामका काम नही कहा जा सकता।

कुछ लोग कहते है कि लडाई तो छिड गई है, काश्मीरमे क्या होगा? मै कहता हू कि कुछ नही होगा। काश्मीरमे जो लोग है वे बहादुर है। वहा हिंदू, मुसलमान और सिख सब एक-सा रहते है। जो हमला करने गये है उनको वे कह दे कि अपने घर वापस जाओ, अगर हमला करोगे तो हमारी लाशपर खडा होना है, श्रीनगर आपको वैसे नही मिल सकता। पीछे हमारा जो लश्कर वहा गया है उसको कोई छूएगा नहीं। अगर वे मर जाते है तो वे अमर हो जायगे तब हम नाचकर गा सकते है और अगर किसी वक्त यहा भी ऐसा मौका आ गया तो श्रीदिलीपकुमार रायसे कहूगा कि ऐसा भजन सुनाओ कि जिससे लोग नाचने लगे, क्योकि जो लोग मर गये वे तो अमर हो गये और जो बचे है वे तो मृतप्राय है। मुझको तो इसका कोई दर्द नही होगा। हा, दर्द तब होगा जब लोग पागल बने और पाकिस्तान भी पागल बने। जो अफ्रीदी लोग है वे भी तो हमारे भाई है और जो कबायली इलाका है वह भी हमारा ही है, तो वे

क्यों ऐसा काम करे ? उनको इमदाद[1] कौन देता है यह समझनेकी बात है। मै तो कहूगा कि उन सबमे ईश्वरका वास हो और मन-मदिरमे प्रीतिकी ज्योति हो। तो हमारा अधेरा मिट जाता है और सब जगह प्रकाश-ही-प्रकाश दिखता है। यही मेरी प्रार्थना है और आप लोग भी मेरी इस प्रार्थनामे शामिल हो कि सारे हिदुस्तान और पाकिस्तानमे ऐसा प्रकाश पैदा हो जाय जिससे आपस-आपसमे मोहब्बतसे रहे। पीछे हम खुराक और कपडा पैदा करनेमे लग जाय, जिसकी आज देशमे कमी है। और हम भूल जाय कि हममे दुश्मनी थी, और दोस्त बन जाय। बस यही मै चाहता हू कि हम सब इस काममे लग जाय।

: १३५ :

१ नवबर १९४७

(आज भी गाधीजीकी प्रार्थना-सभामे उसी व्यक्तिने कुरानशरीफकी आयत पढनेपर आपत्ति की जिसने कल और परसो की थी। इसलिए प्रार्थना आरभ करनेसे पहले गाधीजीने कहा—)

भाइयो और बहनो,

मुझको ब्रजकिशनजी कहते है कि जिस भाईने कल विरोध किया था उसीका आज भी विरोध है। उनका विरोध तो मुझे अच्छा लगता है और बुरा भी। अच्छा तो इसलिए कि कल जिस शाति और सभ्यतामे उन्होने विरोध किया वैसा विरोध तो बराबर रह सकता है। जब उनके दिलमे विरोध है तब उसे बाहर क्यो न प्रकट कर दे। आप लोग भी यहा और बाहर, दोनो जगह शात रहे और उनको कुछ नही कहा। इस लिहाजसे तो मुझे अच्छा लगा, लेकिन दुःख इसलिए होता है कि जिस विनय और दृढतासे मैने कल समझाया था उसको उन्होने नही समझा। वह कोई गभीर बात तो थी नही,

---

[1] मदद।

एक साधारण बुद्धि भी उसे ग्रहण कर सकती थी। मगर जब आदमीके दिलमे रोष हो जाता है तो मुझे प्रिय लगता है कि वे उस रोषको शातिसे जाहिर करते है। इसलिए मुझे दुख होता है और सुख भी। मै समझ लेता हू कि जैसे आप लोगोने कल उत्साह बताया था और दिलमे उनके प्रति कोई रोष न रखते हुए मोहब्बत ही बताई, वैसे ही मुझको उम्मीद है कि आज भी आप वही करेगे। तब तो मै अपनी प्रार्थना शुरू करूगा। अगर इस सभ्यतासे विरोध करे तब तो उसमें मै कोई हानि नही समझता हू। उससे तो हमे शातिका ही पाठ मिलेगा और बुलद अहिंसा कैसे काम करती है उसे हम सीख लेंगे। अगर ऐसा ही करते रहे तो हम समझ जायगे कि इसमे कितना चमत्कार भरा है।

(इसके बाद प्रार्थना शातिपूर्वक हुई और श्रीदिलीपकुमार रायने यह भजन गाया—'हम ऐसे देशके वासी है जहा शोक नही और आह नही।' बादमे गाधीजीने कहा—)

आज भी आपने उसी मधुर कठमे मधुर भजन सुना। उसमे तो यही कहा गया है न कि 'हम ऐसे देशके वासी है, जहा शोक नही और आह नही।' पीछे उसमे और भी कहा है कि 'वहा मोह नही, लोभ नही' और भी हमारे जो इस प्रकारके रिपु है वे वहा नही है। लेकिन वैसा देश कहा हो सकता है? पहले जब सुचेतादेवीने यह भजन सुनाया था तब मैने उस प्रार्थना-सभामे उसके दो अर्थ समझाए थे। एक तो मैने यह बताया कि वह देश कविने हिंदुस्तानको कहा। उसकी एक इच्छा थी, स्वप्न था कि हमारा देश ऐसा हो, लेकिन आज तो वैसा है नही। वह भजन तो १५ अगस्तके पहलेका लिखा हुआ है, लेकिन उस वक्त भी देश तो ऐसा नही था। वहा शोक, लोभ, राग, मद, मोह, मत्सर, ये जो ६ हमारे दुश्मन माने गये है, सब वहा थे। इन छहोमे और भी सब दुश्मन आ जाते है। तब तो उसमे भूख भी थी, भीख भी थी, कपडे भी नही थे—ये सब विपत्तिया उस समय भरी हुई थी, लेकिन कविको तो ऐसी आशा थी न, कि हमारा देश ऐसा बने। कैसे बने, इसमे दूसरा अर्थ आ जाता है। यह भी तो देश है न, कि भगवद्गीतामें जिसको कुरुक्षेत्र

भी कहा गया है और धर्मक्षेत्र भी। अगर मनमे भगवानका मदिर है तव तो वह धर्मक्षेत्र हुआ और अगर मन स्वेच्छाचारी हो जाता है तव वह कुरुका धाम वन जाता है। कौरवरूपी दुश्मन तो कितने ही है, जिनके पिता अधे है, लेकिन धर्मक्षेत्र तो युधिष्ठिरके रूपमे ही है न, इसलिए युधिष्ठिरका नाम धर्मराज हुआ। ऐसा जो हमारा देश है उसमे न आह है, न शोक है। वैसे हम सव हो सकते है, लेकिन शर्त भी वताई है न। तव हमारा देश कौन-सा है, जिसमे भगवान भरा है। कविने उसे पीछे स्वदेश भी कहा और स्वराज भी कहा। ठीक कहा उसने। जव हम स्वराज पा लेते है तव पीछे हिंदुस्तान ऐसा वन जायगा जिसमे न आह होगी, न शोक होगा। लेकिन देश आज जितना कगाल है उतना तो मैने कभी नही पाया। मैने जो वचपनसे कुछ इतिहास पढा है उसमे भी उसको ऐसा नही वताया गया है जैसा आज है। उस चीजको मिटानेके लिए ही यह भजन है। उसमे वताया गया है कि अगर हम अपने मनको मदिर वना ले और उसमे भगवानकी प्रतिष्ठा कर ले तो सव खैर हो जाती है।

आज एक तरफ तो लोग भूखो मर रहे है और नगे है। यहा तो हम सव कपडे पहने हुए वैठे है। ठड न लगे इसलिए मैने भी चादर ओढ लिया। आज मेरे पास वेचारी एक डाक्टरनी आ गई। वह आज कुरुक्षेत्रसे आई थी। वह पजावमे वडा काम कर रही थी। वहा वह हिंदू, मुसलमान, सिख सवकी शुश्रूषा करती थी। वहासे उसको भागना पडा। वहासे निराश्रित होकर आ गई थी। सुशीलाजीने उनको कहा कि जव और कोई काम नही तव कुरुक्षेत्रमे काम करो तो वह उनको वहा अपने साथ ले गई। आज थोडा वहाका हाल सुनानेके लिए यहा आ गई थी। आज हमारे मुशीजी यहा है। उनकी लडकी भी डाक्टर वन गई है। वह कहती है कि मै कुछ तो करू, खामखा यहा खाली वैठे क्या करूगी। वह भी वहा चली गई। उस डाक्टरनीने आज मुझे यह भी सुनाया कि वहा लोगोकी शुश्रूषा तो होती है, लेकिन डाक्टर काफी नही है। वहा इतने लोग भरे है, इतनी आपत्ति और व्याधि भरी है की जो दो-तीन महिला डाक्टर है वे काफी नही है। वहा

काफी डाक्टरोंकी जरूरत है। अगर डाक्टर जाते है तो वे सेवा कर सकते है—कोई मेरे-जैसे नीम-हकीम तो है नही, उनके पास तो विलायती दवा होनी चाहिए, क्योकि वे विलायती डाक्टर होते है। उनके पास पूरी दवा नही है, लेकिन वह उन्हे मिल जानी चाहिए। औरतें पडी है, बच्चे पडे है। वे हमेशा भिखारिन तो थी नही। ऐसी भी औरते है कि उनका एक बच्चा भीतर है और एक गोदमे। ऐसे हमारे हाल है।

इनमे हम किनको क्या दोष दे? कोई ऐसा कहे कि हकूमत नालायक है, लेकिन हकूमत क्या जानती थी कि इतनी परेशानी होगी। हमने तो कभी हकूमत चलाई नही थी। अभी तो हकूमतको चलाते दो ही महीने हुए। जब ऐसी आपत्ति आ पडती है तो हम कैसे उसको पहुच सकते थे। इसको तो हमे बर्दाश्त करना ही है, लेकिन इसे बर्दाश्त करते हुए हम पागल बन जाय, रोषको कम न करें और कहे कि वहा उन्होने एक मुक्का मारा तो हम दो मारेगे, दो मारे तो हम चार लगायगे, चार मारे तो आठ मारेगे। तब तो यह सिलसिला कही मिटना ही नही है। पीछे हमको यह भजन गानेका अधिकार नही रहता है। अगर गाय तो सच्चे दिलमे गाना चाहिए। अगर हमारा मधुर कठ है तो वह केवल मधुर गानेके लिए नही होना चाहिए। उसको भगवानकी भक्तिके लिए इस्तेमाल किया जाय। अगर उस माधुर्यमे किसीके दिलमे भगवान बैठ जाय और वहा उसकी प्रतिष्ठा हो जाती है तो ठीक है।

एक तरफ तो हमारा यह हाल है और दूसरी तरफ काश्मीरका मामला है। यहासे जितने हवाई जहाज जा रहे है, उनमे मुझको ऐसा लगता है कि फौजके आदमी ले जा रहे है। वहासे कुछ लोग जो डरपोक है, भाग-कर आ रहे है। उनको भागना क्या था! और भाग कर जायगे कहा? वे क्यो न वही बहादुरीसे मर जाय? इस तरहसे सारा काश्मीर भी जमीदोज[1] हो जाय तो मुझपर कुछ असर होनेवाला नही है। मै तो हँसते-हँसते आपको यही सुनानेवाला हू कि उसपर आप

[1] धराशायी।

सब नाचे। लेकिन शर्त यह है कि वहा सब लोग बहादुरीसे मर जाते है---बूढे और बच्चे भी। अगर कोई कहे कि बच्चे क्यो, तो मैं कहूगा कि वे बच्चे कहा जाएगे? आखिर वे अपने मा-बापके साथ रहते है। तो वे सब वहा पडे है, लेकिन उन सबको हथियार कहासे दे? मेरे-जैसेको तो हथियारकी दरकार नही रहती। आखिर जान है तो सब चीजपर फिदा करना है। तब तो हम कह सकते है कि हमारी जो आत्मा है वह अमर है। अगर हम ऐसा नही करते तो उसका मतलब यह है कि हम शरीरको ही आत्मा मान लेते है। और उसकी पूजा करते है, लेकिन शरीरको भी एक दिन तो मरना है ही। चूकि बच्चा माकी गोदमे रहता है, इसलिए अगर मा मर जाती है, तो बच्चेको भी मर जाना है। मरना ही है तब खुशीसे मरना चाहिए। वे कहे कि अगर अफरीदी लोग तबाह करने आए है तो हम खुद अपने-आप तबाह हो जाते है। जितने लश्करके लोग वहा गए है वे भी नाचते-नाचते मरेगे। मरनेके लिए तो वे वहा गये ही है। जिंदा कब रहेगे? तब जब कि यह मालूम हो जाय कि अब यहा खैर है, काश्मीरपर कोई चढाई नही करता है, पूर्ण शाति हो गई है। अब तो काश्मीर शेख अब्दुल्लाके हाथमे पडा है। वह हिंदू, मुसलमान, सिख, सबको भाई-जैसा समझता है। बाहरसे भी जो लोग काश्मीरमे आकर रहते है, और अग्रेज भी जो वहा जाते है, उन सबका वह दोस्त है। वह तो सबको बुलाता है कि आओ, और यहाकी खूबिया देखो, यहाके फल खाओ। वहाकी कारीगरी तो बहुत ही सुदर है। लोग हाथसे बहुत खूबसूरत कपड़ा बुनते है और पेट भरके उसका दाम लेते है। ले क्यो नही, क्योकि काश्मीर तो आखिर इसीपर जिंदा है। तो अब शेख अब्दुल्ला काश्मीरका मालिक बन गया है। महाराजा तो है, लेकिन उनके नामपर ही वह मालिक बना है। महाराजाने ही उनको कहा है कि कुछ करना है तो करो, अगर काश्मीरको रहना है तो रहेगा, और जाता है तो जायगा।

एक तरफ तो कुरुक्षेत्रमे, दूसरी तरफ काश्मीरमे क्या हो रहा है और तीसरी तरफ देखो तो हमको यहा इन चीजोको भी बर्दाश्त करना

पड रहा है। पाकिस्तानमे इतने मुसलमान भाग गए है, जो विना सवव भागते है वे जाय, उनको कौन रोक सकता है। लेकिन कुछ हमारे डरसे भी जाते है। कुछ मुसलमान भाई मेरे पास आते है तो मुझे शर्म आती है। वे कहते है कि हम अव खडे नही रह सकते, पता नही कव मार दिये जायगे। डरने उनके हृदयमे इस तरहसे प्रवेश कर लिया है। मुझको यह बुरा लगता है। इसी तरहसे एक औरत आती है और कहती है कि मुझे डर लगता है, वहा पठान मेरे पीछे पडा है। यह सुन कर मेरा हृदय रोता है। मै कहता हू कि जिसके पीछे भगवान है तो पठान या कोई भी हो, उसकी उसको परवाह क्या? लेकिन यह तभी हो सकता है जब उसको यह पता हो कि मेरे पास भगवान है। अगर कोई वदमाश आता है, चाहे वह पठान हो, हिंदू हो या सिख हो, क्योकि वदमाशी पठानका ही क्षेत्र हो ऐसा थोडा ही है, वदमाश तो सव जगह पडे है, वे भी ऐसे वदमाश और व्यभिचारी हो सकते है तो पतिव्रता स्त्री उसे देखकर काप उठेगी। लेकिन वह क्यो काप उठे? आप तो यह मानते ही है कि सीताजी कभी नही डरी। रावणके कब्जेपर रहते हुए भी वह नही डरी। तव भी उसको सुनाती थी कि राम मेरा पति है, वह मेरे पास पडा है। तो राम तो भगवान ही था न, इसलिए वह सुनाती थी कि खवरदार, यदि तूने मुझे छुआ तो भस्म हो जायगा। वह छोटी-सी लडकी थी, लेकिन उसमे पवित्रता थी, जिसकी वजहसे वह डरी नही। पवित्रता सवसे वडा हथियार होता है। अगर हम इस वलासे मुक्ति पाना चाहते है तो जैसा कि अभी भजनमें कहा है वैसा हम सव वन जाय। हर एक स्त्री और पुरुष जो प्रार्थनामें आते है वे अगर सव ऐसे वन जाय तो वह गुलावकी खुशबू-की मानिंद सारे हिंदुस्तानमे फैल जायगा। तो आज जो हम पागल-से वन गये है और जो विपत्ति आ गई है, वह पवित्रताके आनेसे कचरेकी तरहसे साफ हो जायगी। मै तो ईश्वरसे यही प्रार्थना करूगा कि हम अच्छे वने, काश्मीरमे जो हो रहा है उस भयसे मुक्त हो जाय और लोग जो निराधार होकर आ गये है, उनका भी भला हो।

कुरुक्षेत्रमें तो, जैसे डाक्टरनी मुझे वताती है, कुछ वदमाश आदि

भी आ गये है। जब एक दफा एक आदमीको कम्बल मिल गया तो वही आदमी दूसरी तरहसे कम्बल लेने आता है। वे इतना नही जानते कि सब लोगोको ओढने और पहननेको तो मिला ही नही। बहुत-सी औरते ऐसी है जो वहासे जो कपडे पहनकर आई है वही उनके शरीरपर अबतक है। मुझको तो सुनकर भी यह बर्दाश्त नही होता—देखनेके पीछे न जाने क्या होगा? तो वे डाक्टरनी कहती है, अतिशयोक्ति तो वे कर नही सकती, कि मैने अपनी आखोसे देखा है] कि यह सब इसी तरहसे चलता है। इतनी बाते उसने मुझको सुनाई।

मै तो इतना ही कहता हू कि हम समझ जाय कि हमारा अधर्म हमे कहा ले जा रहा है? हम कहीपर स्थिर होते है या नही और तब हम पीछे सोचे कि हम ऐसे देशके वासी है या नही कि जहा न आह है, न शोक है।

: १३६ :

२ नवबर १९४७

(प्रार्थना-सभामे आज कई लोगोने कुरानशरीफकी आयत पढे जानेपर आपत्ति की। फलस्वरूप गाधीजीने प्रार्थना आरभ करनेसे पहले कहा—)

भाइयो और बहनो,

कुरानशरीफके कुछ टीकाकारोने जो अर्थ लगाए है वे सही नही है। मै तो उसे पढकर हिंदू-धर्मसे नीचे नही गिरता हू, ऊचा ही जाता हू। मै दावा करता हू कि हिंदुस्तानमे या उससे बाहर भी सबसे आला दर्जेका जो हिंदू है उससे मै कम नही हू, क्योकि मै वेदको माननेवाला हू, गीताको पढता हू और उसमे जो लिखा है उसपर अमल करता हू। मुझको तो बचपनसे ही यह सिखाया गया है कि दुनियामे कोई ऐसी जगह नही है जहा ईश्वर न हो।

ब्रजकिशनजी सुनाते है कि विरोध करनेवालोका सघ आज कुछ

बड़ा है। वे कहते है कि हमको विरोध तो है, किंतु चूकि मुझको सुनना चाहते हैं, इसलिए बर्दाश्त कर लेते है। मै कहता हू कि इसको बर्दाश्त क्या करना था। इससे न तो आपको फायदा होगा, न मुझको। अगर आपको मेरे साथ बैठकर प्रार्थना करना है तब तो उस विरोधको बर्दाश्त करना ठीक है। आप इसलिए बर्दाश्त न करे कि मै महात्मा हू या मैंने हिंदुस्तानकी सेवा की है। आप मेरा दर्शन करना चाहते है। इसलिए मै पूछता हू कि क्या आप दिलमे प्रार्थना करना चाहते है।

(सब लोगोद्वारा रजामदी प्रकट करनेपर प्रार्थना आरभ हुई और प्रार्थना शातिसे हुई। प्रार्थनाके बाद गाधीजीने भाषण करते हुए कहा—)

आप लोगोने तो अखबारोमे देखा ही होगा, लेकिन मुझको भी कुछ पता चल जाता है कि काश्मीरमे क्या हो रहा है। अब तो वहा खैर है, यही कहना चाहिए। खैरके माने यह कि काश्मीरमे श्रीनगर अबतक साबित पड़ा है। लुटेरे लोग अबतक उसपर कब्जा नही ले पाए और पीछे तो दिन-प्रतिदिन कब्जा करना उनके लिए मुश्किल ही होना चाहिए। लुटेरे जो होते है वे लड़ाकू तो होते नही। क्योकि वे कोई हकसे तो वहा गये नही। इसलिए जगतमे उनकी निंदा ही होनेवाली है। ज्यो-ज्यो दिन जाते है त्यो-त्यो उनका दबदबा क्षीण होता जाता है। जो लश्कर जाता है उसको सुभीता रहता है, वक्त मिल जाता है। और वह वक्त मिल रहा है। हवाई जहाजसे अधिक लश्कर तो जा नही सकता, बहुत मुसीबत होती है, लेकिन हकूमतकी सब मदद कर रहे है ऐसा मै सुनता हू। वे सब शौकसे मदद करते है, इसलिए आरामसे सब हवाई जहाज जाते है। हवाई जहाज हकूमतके तो है नही, वे सब अपनी-अपनी निजी कपनियोके है और अच्छा काम समझकर अपने हवाई जहाज हकूमतको दे देते है।

एक बात और है—वह यह है कि जो आजाद हिंद फौज सुभाष बाबूने बनाई थी और उसके लिए हम सब सुभाष बाबूकी होशियारी, बहादुरीकी तारीफ करते है और तारीफ करनेकी बात है, क्योकि जब वह हिंदुस्तानसे बाहर था तब उसने सोचा कि चलो,

थोडा फौजी काम भी कर लू। वह कोई लडवैया तो था नही। एक मामूली हिंदुस्तानी था। जैसे दूसरे वकील, बैरिस्टर रहते है वैसे सुभाष बावू भी थे। फौजकी कोई तालीम तो पाई नही थी, हा, सिविल सर्विसमे जैसा आमतौरपर होता है, थोडी घुडसवारी सीख ली होगी। लेकिन पीछे उन्होने फौजी-शास्त्र थोडा पढ लिया होगा। इस प्रकार उनके मातहत जो सेना बनी थी, मै सुनता हू कि उसके दो बडे अफसर, जिनसे मै जेलमे तथा उसके बाहर भी मिला था, काश्मीरपर हमला करनेवालोसे मिले हुए है, यह मुझको बहुत चुभता है। ये सुभाष बावूके मातहत खास काम करनेवाले थे और हमेशा उनके साथ रहा करते थे। सुभाष बावू लश्करसे कोई बात छिपाकर रख तो सकते नही थे क्योकि उन्हे उनके मारफत काम लेना पडता था। वे आज लुटेरोके सरदार होकर जाते है तो मुझको चुभता है। अगर उनको अखबार मिलते है या जो मै कहता हू उसको वे सुन ले तो मै अपनी यह नाकिस[1] आवाज उनको पहुचाता हू कि आप इसमे क्यो पडते है और सुभाष बावूके नामको क्यो डुबाते है ? आप ऐसा क्यो करते है कि हिंदूका पक्ष ले या मुसलमानका पक्ष ले, आपको तो जातिभेद करना नही चाहिए। सुभाष बावू तो ऐसे थे नही, उनके साथ हिंदू, मुसलमान, सिख, पारसी, ईसाई, हरिजन आदि सब रहते थे। वहा न हरिजनका भेद था न इतर जनका। वहा तो हिंदुस्तानियोमे जातपातका कोई भेदभाव था ही नही। यो तो सब अपने धर्मपर कायम थे, कोई धर्म तो छोड बैठे थे नही। लेकिन सुभाष बावूने कब्जा कर लिया था, उनके चित्तका हरण कर लिया था, शरीरका हरण नही किया था। ऐसा तो चलता नही था कि अगर आजाद हिंद फौजमे शामिल नही होता है तो काटो। लोगोको इस तरह काटकर वे हिंदुस्तानको रिहाई दिलानेवाले नही थे। इस तरहसे वडे हुए और वडप्पन पाया। तव आप इतने छोटे क्यो बनते है, और इस छोटे काममे क्यो पडते है। अगर कुछ करना ही है तो सारे हिंदुस्तानके लिए करो। वहा जो मुसलमान है, अफरीदी है उनको

[1] अकिंचन।

कहे कि यह जाहिलपन क्यो करना ? लोगोको लूटना और देहातोको जलाना क्या ? चलो महाराजासे मिले, शेख अब्दुल्लासे मिले, उनको चिट्ठी लिखे कि हम आपसे मिलना चाहते है, हम यहा कोई लूट करने तो आए नही है। आप इस्लामको दवाते है, इसलिए आपको वताने आए है, यह तो मै समझ सकता हू। तव तो आप सुभाष वावूका नाम उज्ज्वल करेगे और उन अफरीदी लोगोके सच्चे शिक्षक वनेगे। अफरीदी लोग कैसे रहते है, उनमे भी लुटेरे है या नही है, यह मै नही जानता हू। लेकिन मेरी निगाहमे वे भी इन्सान है। उनके दिलमे भी वही ईश्वर या खुदा है, इसलिए वे सव मेरे भाई है। अगर मै उनमे रहू तो उनसे कहूगा कि लूट क्या करना, एक दूसरेपर गुस्सा क्या करना। मै यह तो कहता नही कि तुम्हारे पास जो वदूक या तलवारे है, उन्हे छोड दो। उनको रखो, लेकिन जो दूसरे लोग डरे हुए है, मुफलिस है, औरते है, वच्चे है उनको वचानेके लिए। उसमे क्या है, चाहे वे हिंदू हो या मुसलमान। तो मै कहूगा कि ये जो दो अफसर है, जिनका नाम मैने सुन लिया है, वे सुभाष वावूका नाम याद करे। वे तो मर गए, लेकिन उनका नाम नही मरा, काम तो नही मरा।

अव मेरा दिल आगे वढता है कायदे आजम जिन्नाकी तरफ। उनको मै पहचानता हू। मै तो उनके घर जाता था और एक दफा तो १८ वार गया था। मै उसको तपश्चर्या मानता हू। वादमे भी उन्होने और मैने एक चीजमे दस्तखत किये थे और उसमे भी हम दोनो हिस्सेदार वन गये थे। तव भी उनके साथ मीठी वाते होती थी। इसलिए मै तो उनसे, लियाकतअली साहवसे और उनके मन्त्रिमडलसे कहूगा कि यह क्या वात है कि आप जवाहरलाल-जैसे आदमीको कहते है कि आप धोखेवाजी करते है। जवाहरलाल और उनकी सरकारको इसमे धोखेवाजी क्या करनी थी ! मै कहूगा कि जवाहर तो किसीसे भी धोखा करनेवाला नही है, जैसा उसका नाम है वैसा उसका गुण है। उनकी सरकारमे सरदार या जो दूसरे आदमी है उनको भी मै पहचानता हू। वे भी कोई धोखेवाज नही है। अगर वे काश्मीरसे मशविरा करना चाहते हैं तो उसका यह मतलव नही है कि वे फुसला रहे है। जवाहरलाल

तो पहले भी उनसे बात करता था और अकेला शेख अब्दुल्लाके लिए उनसे लडता था। तो उसको इसमे धोखा क्या करना था? धोखेवाजी करनेसे हिंदुस्तान या कोई और मुल्क बच थोडे सकता है। तव वे ऐसा क्यो कहते है ? तो काश्मीरमे जो अफरीदी लोग चले गये है, उनको कुछ-न-कुछ उत्तेजना तो पाकिस्तानसे मिलती ही होगी तभी तो वे कोई काम कर सकते है, नही तो वे कैसे कर सकते थे? अगर मै पाकिस्तानमे होता तो मै उनको ऐसा काम करनेसे रोक देता। पाकिस्तानके उदासीन रहनेपर तो वे ऐसा काम कर नही सकते थे, लेकिन यहा तो उदासीन ही नही उससे ज्यादा है।

मेरे पास दो हिंदू—एक कराचीसे और दूसरे लाहौरसे, आये है। मुझको सुनाते है कि कराचीमे वुरा तो हुआ, लेकिन अव दिन-प्रति-दिन अच्छा होता जाता है। तव क्या तुम वहाके लोगोसे कुछ कहोगे कि वे क्यो घवराते है ? वहा जो सिंधी मुसलमान है, वे हिंदुओके साथ मिल-जुलकर रहे है, वाज दफा झगडा तो हुआ है, लेकिन उसके वाद फिर दोस्त वन गये है, उसका तो मै गवाह हू। वहा सव कुछ ठीक हो गया है, ऐसी वात नही है। लेकिन मन्त्रिगण ऐसा चाहते है। दूसरे सज्जन वताते है कि लाहौरमे जितनी वडी-वडी हवेलिया थी वे सव वेकार हो गई है। वहा हिंदू तो कोई ज्यादा है नही—केवल मुट्ठीभर रहे है। लेकिन जो मन्त्रिमडल है, वह चाहता है कि हिंदू-सिख सव रहे। हा, सिखोके रहनेपर तो कुछ एतराज है, लेकिन तो भी वे काफी वहा है। मैने वहा खूवीकी वात यह सुनी कि लाहौरमे एक मुसलमान, जो शरीफ आदमी है, किसी सिखको अपने यहा रखा हुआ है। तो उन्होने जो आखो देखा है वह सुनाया कि उसी मुसलमानके घरमे एक कमरा है, जहा उन्होने गुरुग्रथ साहव खोलकर रखा है और वडी अदवसे उसको रखता है। चूकि वह मुसलमान उस सिखका दोस्त है, इसलिए उसको वचा लिया। यह मुझको अच्छा लगता है। पीछे एक सिख ही मुझको सुना गये है कि ऐसा वहुत जगह हुआ है, जहा मुसलमान दोस्तोने हमे अपने घरोमे रखा। दोनो ही जगहोसे मुझे ऐसी ही खबरे मिली है। तो पीछे क्या वजह है कि यहासे, इतनी वडी

सख्यामे मुसलमानोको पाकिस्तान भगाया जाय ? क्या वजह है कि हिंदू और सिख वहासे भागकर यहा आते है ? इसका क्या नतीजा आना है ? यही न कि हम सब बरबाद होते है। जब लोग अपना घर-बार छोडकर जाय तब ऐश-आरामसे तो वे रह नही सकते। ऐश-आराम तो अपने घरमे ही रहकर मिल सकता है। घर छोडनेके बाद न तो अच्छा खाना मिलता है और न पहननेको मिलता है। अभी शिविरोमे ठडमे पडे रहकर लोग थरथर कापते है। तो वे कहते है कि हमारे साथ यह क्या हुआ ? हमारी हकूमतने यह क्या किया ? हमने क्या गुनाह किया कि जिस कारणसे हमे इस परेशानीमे पडना पडा है। उनको तो ऐसा लगता है कि वहा तो इर्दगिर्दमे मुसलमान पडे है और यहा इर्दगिर्दमे हिंदू पडे है। तब यह बर्बादी कहातक चले और कबतक चले। इसका क्या नतीजा निकलेगा ? नतीजा तो भगवान ही निकाल सकता है, लेकिन मुझको तो यह बुरा ही लगता है।

पाकिस्तानके कायदे आजम ऐसा क्यो कहते है कि हिंदू और सिख तो हमारे दुश्मन है। मैले आदमी तो हिंदू, सिख, मुसलमान सबमे ही पडे है, लेकिन सारी जातिको दुश्मन कहना बहुत बुरी बात है। मै तो बडे अदबसे सारे मत्रिमडल और लोगोको कहूगा कि अगर आप चाहते है कि हिंदुस्तान बर्बाद न हो और वह दूसरोके हाथोमे न चला जाय तो पीछे आपको शरीफ बनना है।

जिन आदमियोने आज कुरानशरीफकी आयत पढनेपर जिस शराफतसे विरोध किया उसके लिए मै उनको जितना धन्यवाद दू उतना कम है। इससे वे भी अहिसासे काम लेना सीख लेगे। उन्होने ठीक ही कहा कि हमको कुरानशरीफकी आयत तो पसद नही है, लेकिन प्रार्थना निर्विरोध चलने दी, यह मुझे अच्छा लगा। इस तरहसे हम हिंदुस्तानके वास्ते दैवी शक्ति पैदा कर रहे है, आहिस्ता-आहिस्ता हो रहा है, छूमतर करनेसे तो पैदा हो नही जाती, लेकिन आखिरमे यह शक्ति पैदा हो जायगी। मै ईश्वरसे प्रार्थना करता हू कि आजाद हिंद फौजके उन दो बडे अफसरोको सद्‌बुद्धि दे। और हिंदुस्तानका जहाज, जो आज डावाडोल हो रहा है, वह सीधे-सादे शात पानीमे चले।

: १३७ :

३ नवबर १९४७

(लिखित सदेश)

यदि एक जहर दूसरे जहरसे मिल जाय तो इस बातका निश्चय कौन करेगा कि उनमे पहले कौन-सा डाला गया था। और यदि इस बातका निश्चय हो भी जाय तो इससे फायदा क्या होगा? लेकिन हम यह जानते है कि यह जहर तमाम पश्चिमी पाकिस्तानमे फैल गया है, लेकिन वहाकी हकूमतने शायद इसमे जहर नही माना है। ईश्वर करे कि यह जहर महदूद[1] रहे और कावूमे रहे। तब हम इस बातकी आशा कर सकेगे कि समय आनेपर यह जल्दी ही दोनो हिस्सोसे निकाल दिया जायगा।

डा० राजेंद्रप्रसादजीने प्रातीय प्रधानो या उनके प्रतिनिधियो तथा और लोगोकी जो मीटिंग उनको खुराक-कट्रोलक मसलेपर मशवरा देने के लिए बुलाई है, मै समझता हू कि आज मुझे उसी बहुत जरूरी मामलेपर कुछ कहना चाहिए।

अबतक जो कुछ मैंने इन दिनोमे सुना है उससे मै तिलभर भी अपनी इस रायमे नही हटा हू कि कट्रोल जल्द बिल्कुल हट जाने चाहिए और यदि वह रहे भी तो छ माहसे अधिक तो हरगिज न रहे। एक दिन भी नही गुजरता जो मेरे पास तार या पत्र न आते हो और उनमे बाज-बाजमे तो बहुत प्रतिष्ठित व्यक्तियोके होते है, जो यह बडे जोरके साथ कहते है कि दोनो कट्रोल हटा देने चाहिए। मै फिल-हाल दूसरे कट्रोल अर्थात् कपडेके कट्रोलको छोड देना चाहता हू। कट्रोलसे धोखा बढता है, सत्यका दमन होता है, काला बाजार बढता रहता है और बनावटी कमी बनी रहती है। सबसे ज्यादा तो यह लोगोको कमजोर बना देता है, वह निरुत्साही हो जाते है, और उनमे अपने पैरोपर खडे रहनेकी शिक्षा जिसे एक पीढीसे वह सीखते आये है,

---

[1] सीमित।

भुला वैठते है। वह सदा दूसरोके मुहकी ओर ताकते रहते है। इस दुर्घटनासे वढकर, यदि कोई दूसरी हो सकती है तो वह है, मौजूदा भाई-भाईका कतल, जो एक वडे पैमानेपर चल रहा है, और पागलपनसे तवादला[1]-आवादी, जिसके कारण विला जरूरत मौते, भूखो मरना, रिहायश[2] और कपडेका न मिलना—खासकर इस आनेवाले जाडेके मौसममे—हो रहा है शायद कट्रोलकी दुर्घटना इसके वरावर हो।

दूसरी दुर्घटना देखनेमे वढी-चढी मालूम होती है, लेकिन हमे पहलीको भी भूलना नही चाहिए, जो इतनी दिखाई नही देती।

यह खुराकका कट्रोल हमे पिछली वडी लडाईकी खतरनाक विरासतमे मिला है। उस वक्त कट्रोल शायद जरूरी था, क्योकि अनाज और दूसरी खुराक वहुत वडी मिकदारमे वाहर देशोमे भेजी जाती थी। इस गैर-कुदरती निर्यातका परिणाम यह आना जरूरी था कि अनाजकी कमी हो जाय, और वहुत-सी वुराइयोके होनेपर भी राशनिंग जारी करना पडा। अव अगर हम चाहे तो निर्यातको वद कर सकते है। दुनियाके उन भूखे प्रदेशोकी हम मदद कर सकते है, यदि हम वाहरसे हिदुस्तानके लिए अनाज आनेकी उम्मीद छोड दे, क्योकि इतना अनाज उनके लिए वच जाता है। मैने अपने जीवनमे, जिसकी दो पीढी गुजर गई, कई कुदरती दुष्काल देखे है, लेकिन मुझे याद नही आता कि कभी राशनिंगका खयाल भी आया हो।

ईश्वरकी कृपा है कि इस वक्त वरसात ठीक-ठीक हुई है। इसलिए खुराककी सच्ची कमी नही है। हिदुस्तानके देहातोमे काफी अनाज, दाले और तेलके वीज मौजूद है। कीमतोपर जो वनावटी कट्रोल होता है अनाज पैदा करनेवाले उसे समझ ही नही सकते, इसलिए वह खुशीसे अपना अनाज जिसकी कीमत खुले वाजारमे उनको अधिक मिल सकती है, देना पसद नही करते। इस हकीकतको सव लोग जानते है। इसके लिए जरूरी नही है कि कोई ऐदाद-ओ-शुमार[3] जमा किये

---

[1] परिवर्तन; [2] स्थान; [3] सख्या और अक।

जाए या इसको साबित करनेके लिए कि अनाजकी कमी है, लबे-लबे लेख और मजमून लिखे जाए। इतनी उम्मीद रहती है कि हमे कोई आबादी बढ जानेका भूत दिखाकर नही डरायगा।

हमारे मत्री जनताके है और जनतामेसे है। उनको इस बातका अभिमान नही करना चाहिए कि उनका ज्ञान उन अनुभवी लोगोसे अधिक है जो हकूमतकी गद्दियोपर नही बैठे है, लेकिन जिनका दृढ विश्वास है कि कट्रोल जितनी जल्दी हटे उतना अच्छा होगा। एक वैद्यका कहना है कि खूराकके कट्रोलके कारण, वे लोग जो राशनपर रहते है उनके लिए यह नामुमकिन कर दिया है कि खाने लायक अनाज उनको मिल सके, और इसलिए ये लोग गैर-जरूरी तौरपर ऐसी बीमारियोके शिकार हो रहे है, जो सडे अनाजके खानेसे पैदा होती है। बजाय कट्रोलवाली खूराकके सरकार बडी आसानीसे उन्ही गोदामोको अच्छा अनाज बेचनेके काममे ला सकती है जिसे वह खुले बाजारमे खरीद सकेगी। ऐसा करनेसे कीमते अपने-आप ठीक हो जाएगी और जो अनाज, दाले तथा तेलके बीज छुपे पडे है सब बाहर निकल आएगे। क्या सरकार अनाज बेचने और पैदा करनेवालोका विश्वास नही करेगी?

जमहूरियतमे[1] अगर लोगोको मध्य हकूमतकी रस्सीमे बाधा जाय तो टूट पडेगे। वे एतबार करनेसे ही बढ सकते है।

अगर लोग इस कारणसे मरने लगेगे कि वे मेहनत नही करना चाहते और एक दूसरेको धोखा देते है तो ऐसे लोगोके मरनेका स्वागत किया जाय। फिर लोग काहिल[2] और खुद-गर्ज रहनेके पापको नही दोहराएगे।

---

[1] जनतत्र; [2] आलसी।

: १३८ :

४ नवबर १९४७

भाइयो और बहनो,

आज तो सिर्फ हमारे पुराने सभ्य मित्रने ही कुरानकी आयत पढनेपर एतराज उठाया है। इसलिए मै एक पजाबी हिंदू निराश्रितके दर्दभरे खतकी चर्चा करूगा। उन्होने पजाबमे बहुत कुछ सहा है। कुरानकी आयत पढनेका उन्होने विरोध किया है। मै नही जानता कि वे भाई यहा मौजूद है या नही। वे यहा हो या न हो, लेकिन मै उस खतकी उपेक्षा नही कर सकता। वह गहरे दर्दसे लिखा गया है। उसमे काफी अच्छी दलीले दी गई है। लेकिन वह अज्ञानसे भरा हुआ है, जो गुस्सेकी उपज है। उसकी हर लाइनमे गुस्सा भरा हुआ है। आजकल करीब-करीब मेरा सारा समय हिंदू या सिख निराश्रितो या दिल्लीके दुखी मुसलमानोकी दर्दभरी कहानिया सुननेमे ही जाता है। मेरी आत्माको भी उतना ही दुख और उतनी ही चोट पहुचती है। लेकिन अगर मै रोने लगू और उदास बन जाऊ, तो वह अहिंसाका सच्चा रूप नही होगा। अगर मै अहिंसासे इतना कोमल बन जाऊ, तो दिन-रात रोता ही रहू और मुझे ईश्वरकी उपासना करने, खाने-पीने या सोनेका भी समय न मिले। लेकिन मैने तो बचपनसे ही अहिंसक होनेके नाते दुखोको देख-सुनकर, रोनेकी नही, बल्कि दिलको कठोर बना लेनेकी आदत डाल ली है, ताकि मै दुखोका मुकाबला कर सकू। क्या पुराने ऋषि-मुनियोने हमे यह नही बताया है कि जो आदमी अहिंसाका पुजारी है, उसका दिल फूलसे भी कोमल और पत्थरसे भी कठोर होना चाहिए? मैने इस उपदेशके मुताबिक जीनेकी कोशिश की है। इसलिए जब इस खतकी शिकायतो-जैसी शिकायते मेरे पास आती है, या जब मै अपने मुलाकातियोके मुहसे गुस्से और रजभरी कहानिया सुनता हू, तो मै अपने दिलको कडा बना लेता हू। सिर्फ इसी तरह मै मौजूदा सवालोका सामना कर सकता हू। वह खत उर्दू लिपिमे लिखा है। इसलिए मैने श्रीब्रजकिशनजीसे कहा कि उस खतकी खासखास बाते मुझे लिख दे।

खतमे पहला इलजाम मुझपर अपना वचन तोडनेका लगाया गया है। उन्होने लिखा है, 'क्या आपने यह नही कहा है कि आपकी प्रार्थना-सभामे अगर एक भी आदमी कुरानकी आयत पढनेपर एतराज उठाएगा, तो आप उसका मान रखेगे और उस शामको प्रार्थना नही करेगे ?' यह आधा सच है, और पूरे झूठसे ज्यादा खतरनाक है। जब मैने पहले-पहल एतराज उठानेपर अपनी प्रार्थना बद की थी, तब मैने यह जाहिर किया था कि मै प्रार्थना इस डरसे बद करता हू कि सभाके इतनी बडी तादादवाले लोग विरोध करनेवालेपर गुस्सा होकर उसके साथ मारपीटतक कर सकते है। यह कई महीने पहलेकी बात है। तबसे लोगोने अपनेपर काबू रखनेकी कला सीख ली है। और, जब लोगोने मुझे इस बातका वचन दिया कि विरोध करनेवालेके खिलाफ न तो वे अपने मनमे गुस्सा रखेगे और न किसी तरहका वैर, तो मैने फिर आम प्रार्थना करनेकी बात मान ली। और जैसा कि मै जानता हू, इसका नतीजा अच्छा ही हुआ है। विरोध करनेवालोका बरताव बिलकुल सभ्यताका होता है और अपना विरोध दर्ज करानेके सिवा वे प्रार्थनामे किसी तरहकी रुकावट नही डालते। इसलिए मै आशा करता हू कि खत लिखनेवाले भाई यह देखेगे कि मैने अपना वचन भग नही किया है, और विरोध करनेपर भी प्रार्थना चालू रखनेका नतीजा अभीतक बिलकुल अच्छा ही रहा है। मै आप लोगोको यकीन दिलाता हू कि जहातक मै अपने बारेमे जानता हू, मैने जन-सेवकके नाते अपनी इतनी लबी जिदगीमे दिया हुआ वचन तोडनेका कभी अपराध नही किया है।

खत लिखनेवाले भाईने मुझपर दूसरा यह इलजाम लगाया है कि 'जब आप कुरानकी आयते पढते है और यह भी कहते है कि सब धर्म समान है, तब आप जपजी और बाइबिलमेसे क्यो नही पढते ?' इस बातसे भी लिखनेवाले भाईका अज्ञान जाहिर होता है। वे मेरे उस बयानको नही जानते, जिसमे मैने बताया था कि पूरी भजनावली किस तरह तैयार हुई। आश्रम-भजनावलीमें बाइबिल और ग्रथसाहिबमेसे भी काफी भजन लिये गए है।

उन भाईकी तीसरी शिकायत यह है कि 'आपके बडे-बडे काग्रेसी नेता पश्चिमी पजाब या पश्चिमी पाकिस्तानके दूसरे किसी हिस्सेको छोडकर यहा आए है। लेकिन यूनियनमे वे निराश्रितोकी तरह रहकर दूसरे निराश्रितोकी कठिनाइयो और मुसीबतोमे साथ नही देते। पाकिस्तानमे उनके पास जैसी हवेलिया थी, उनसे ज्यादा अच्छी हवेलिया उन्होने यहा ले ली है और उनमे मौजसे रहते है। ये काग्रेसी नेता उन निराश्रितोसे बिलकुल अलग रहते है, जिनके पास न तो रहनेको मकान है न सर्दीसे बचनेके लिए गरम कपडे। गरम कपडोकी बात तो दूर रही, बहुतसोके पास बदलनेके दूसरे कपडे ही नही है, न उन्हे अच्छा खाना मयस्सर[1] होता है।' अगर यह शिकायत सच है, तो यह हालत शर्मनाक है। मैने तो अपनी प्रार्थना-सभाओमे साफ शब्दोमे उन धनी निराश्रितोकी निंदा की है, जो गरीब निराश्रितोके साथ मुसीबते उठानेके बजाय उनका साथ छोडकर मौज मारते है। यह धर्म नही, अधर्म है। धनियोको अपने गरीब भाइयोके सुख-दुखमे साथ देना चाहिए।

इसके बाद उन भाईने मुझे यह ताना मारा है कि आप पाकिस्तान जानेका इरादा रखते थे, लेकिन अभीतक गए नही। यहा दिल्लीमे आपका क्या काम है? आप दुखी हिंदुओ और सिखोकी मदद करनेके लिए पाकिस्तान जानेके बजाय अपने मुसलमान दोस्तोकी मदद करना क्यो ज्यादा पसद करते है? लेकिन शिकायत करनेवाले भाई यह नही जानते कि दिल्लीके अपने फर्जको भुलाकर मै पाकिस्तानके हिदुओ और सिखोके दुखोको कम करनेकी आशासे पाकिस्तान नही जा सकता। मै कबूल करता हू कि मै मुसलमानो और दूसरोका दोस्त हू, क्योकि मै हिदुओ और सिखोका भी वैसा ही दोस्त हू। अगर मै किसी आदमीकी सेवा करता हू, तो इसी भावनासे प्रेरित होकर करता हू कि वह सिर्फ हिदुस्तानका या किसी एक धर्मका ही नही, बल्कि सारी मनुष्य-जातिका अग है। दिल्लीके हिदू और सिख

[1] प्राप्त।

निराश्रितो और दूसरोको यहाके मुसलमानोके दोस्त बनकर यह साबित कर दिखाना है कि दिल्लीमे मेरे रहनेकी कोई जरूरत नही है। तब मै इस पूरे विश्वासके साथ पाकिस्तानकी तरफ दौड जाऊगा कि मेरा वहाका दौरा बेकार नही जायगा।

शिकायत करनेवाले भाईने कस्तूरबा-फडको भी नही छोडा। उन्होने पूछा है कि कस्तूरबा-फडका कैसे इस्तेमाल किया जा रहा है और उसे निराश्रितोको राहत पहुचानेके काममे क्यो नही खर्च किया जा सकता? पहली बात तो यह है कि वह फड एक खास मकसदसे[1], तब इकट्ठा किया गया था जब मै जेलमे था। यानी वह हिंदुस्तानके गावोकी औरतो और बच्चोकी सेवाके लिए जमा किया गया था। उसका एक ट्रस्टी-मडल है। हमेशा सावधान रहनेवाले ठक्कर बापा उसके सेक्रेटरी है। और उसका पाई-पाईका हिसाब रखा जाता है, जिसे जनता देख सकती है। इसलिए लिखनेवाले भाईके सुझावके मुताबिक वह फड निराश्रितोकी सेवामे नही खर्च किया जा सकता। और ऐसा करनेकी जरूरत भी नही है। निराश्रितोकी राहतके लिए उदारतासे पैसा दिया जा रहा है और सब जानते है कि मेरी कबलोकी अपीलका जनताने कितनी उदारतासे स्वागत किया है। सरदार पटेलने इस बारेमे एक खास अपील निकाली है। लोगोने उदारतासे उसका स्वागत किया और आज भी किया जा रहा है।

खत लिखनेवाले भाईकी आखिरी शिकायत है 'जब पाकिस्तानमे सूअरोके कतलपर रोक लगा दी गई है, तब यूनियनमे गो-हत्या क्यो नही बद की जा सकती?' मुझे इसकी जानकारी नही है कि पाकिस्तानमे सूअरके कतलपर कानूनी रोक लगाई गई है। अगर शिकायत करनेवाले भाईकी सूचना सच है, तो मुझे दुःख है। मै जानता हू कि इस्लाममे सूअरका गोश्त खानेकी मनाही है। लेकिन ऐसा होनेपर भी मै इसे ठीक नही मानता कि गैर-मुस्लिमोको भी सूअरका गोश्त खानेमे रोका जाय।

क्या कायदे आजमने यह नही कहा है कि पाकिस्तान ईश्वरशाही

---

[1] उद्देश्य।

राज नही है और उसमे धर्मको कानूनका रूप नही दिया जायगा ? लेकिन वदकिस्मतीसे यह विलकुल सच है कि इस दावेको हमेशा अमलमे सच सावित नही किया जाता। क्या हिंदुस्तानी सघ ईश्वरशाही राज वनेगा और क्या हिंदू-धर्मके उसूल गैर-हिंदुओपर लादे जायगे ? मुझे यह आशा नही है। ऐसा हुआ तो हिंदुस्तानी सघ आशा और उजले भविष्यका देश नही रह जायगा। तव वह ऐसा देश नही रह जायगा जिसकी तरफ सारी एशियाई और अफ्रीकी जातिया ही नही, वल्कि सारी दुनिया आशाभरी नजरसे देखती है। दुनिया यूनियन या पाकिस्तानके रूपमे हिंदुस्तानसे ओछेपन और धार्मिक पागलपनकी उम्मीद नही करती। वह हिंदुस्तानसे वडप्पन, भलाई और उदारताकी आशा करती है, जिससे सारी दुनिया सवक ले सके और आजके फैले हुए अधेरेमे प्रकाश पा सके।

मै गायकी भक्ति और पूजामे किसीसे पीछे नही हू, लेकिन वह भक्ति और श्रद्धा कानूनके जरिये किसीपर लादी नही जा सकती। वह मुसलमानो और दूसरे सारे गैर-हिंदुओके साथ दोस्ती वढाने और सही वरताव करनेसे पैदा हो सकती है। गुजराती और मारवाडी लोग गायकी रक्षा करनेमे सवमे आगे माने जाते है। लेकिन वे हिंदू-धर्मके उसूलोको इतने भूल गए है कि दूसरो पर तो वे खुशीसे पावदिया लगाएगे और खुद गाय और उसकी सतानके साथ वहुत वुरा वरताव करेगे। आज दुनियामे हिंदुस्तानके मवेशी ही सवसे ज्यादा उपेक्षित क्यो है ? जैसा कि माना जाता है, वे दुनियामे सवसे कम दूध देनेके कारण देशपर वोझ क्यो वन गए है ? वोझ ढोनेवाले जानवरोके नाते वैलोके साथ इतना वुरा वरताव क्यो किया जाता है ?

हिंदुस्तानके पिंजरापोल ऐसे नही है जिनपर गर्व किया जाय। उनमे वहुत पैसा लगाया जाता है, लेकिन वहा पशुओका साइसी और वुद्धिमानी-भरा पालन-पोषण शायद ही किया जाता हो। ये पिंजरापोल हिंदुस्तानके जानवरोको नया जन्म कभी नही दे सकते। वे मवेशियो-के साथ हमदर्दी और दयाका वरताव करके ही ऐसा कर सकते

है। मेरा यह दावा है कि मुसलमानोके साथ दोस्ती बढा सकनेके कारण मैने, कानूनकी मदद लिये बिना, दूसरे किसी हिंदूके बनिस्बत ज्यादा गायोको कसाईके छुरेसे बचाया है।

: १३६ :

५ नवबर १९४७

भाइयो और बहनो,

आज तो मुझे आप लोगोसे कुरानशरीफकी आयतके विरोधके बारेमे कुछ कहना नही है। यह मै हमारी धन्य घडी मानता हू। एक भाईको आपत्ति है ही, लेकिन वे तो हमारे मित्र बन गए है। वे विरोध तो करते है, लेकिन सभ्यतासे। उसके बाद वे बिलकुल खामोश रहते है, इसको मै विरोध मानता ही नही। ऐसा सब लोग भी विरोध करे तो हम कुछ खोते नही है। विरोध रहते हुए भी वे पीछे प्रार्थनामे मग्न रहते है ऐसा मैने उनकी जबानसे सुना है। तो यह अच्छा ही है।

आज आपने जो भजन सुना है वह एक हरिजन बालकका है। उसका कठ मधुर है यह तो आपने सुन ही लिया। रामधुन भी उसने अच्छी तरह चलाई। यह मेरा एक ही अनुभव नही है। मै तो हरिजनोके बीचमे रहता हू और सारे हिदुस्तानमे तो मैने बहुत दफा यात्रा की है और सारे देशके हरिजनोके सपर्कमे आया हू। अगर हम खुद नही जानते हो और हमको कोई परिचय न दे तब तो हम हरिजनको किसी तरह पहचान नही सकते। जो गुण दूसरे इन्सानमे है वे सब उनमे भी है। कुछ दुर्गुण भी है, लेकिन वे उन्हीमे हो ऐसा थोडा ही है। और लोगोमे भी है। सद्गुण और दुर्गुण आखिर सबमे भरे है। लेकिन हरिजनोमे मुझको एक विशेषता तो लगती है, और वह यह है कि अगर किसी हरिजन बालकको थोडा सगीत-शिक्षण देते है तो वह आगे बढ जाता है। चूकि हमने उनको अबतक गिराकर रखा है, इसलिए अब अगर उनमे कोई मोहब्बतसे बात करता है और

मोहब्बतसे काम मिखाता है तो पीछे वे ध्यान रखकर मेहनत करते हुए आगे बढ जाते है। धनी लडके तो गुमानमे पडे रहते है और यह सोचकर कि हमारे मा-बापके पास काफी पैसा है, अपने काममे ध्यान नही देते। लेकिन चूकि हरिजन लोग आमतौरपर गरीब है और उनको अछूत मानते है, कोई उनको अपने नजदीक नही बैठने देता तब अगर कोई उनको अपने पास बिठाते है, साथ ही खाते-पीते है और सब कुछ करते है तब उनका हृदय भर जाता है। सब तो ऐसे नही है—मैंने ऐसे लापरवाह हरिजनोको भी पाया है कि उनके लिए चाहे जितना करो, उसकी कोई कीमत ही नही करते। ऐसे दूसरे भी पडे है—सब कोई ऐसे हरिजन थोडे है। उनको हिंदू-धर्मने सैकडो वर्षोसे गिरानेकी कोशिश की है, लेकिन तो भी वे अपने धर्मपर कायम रहते है और दूसरोकी निस्बत[1] उनमे अधिक गुण पाये जाते है।

पढरपुरका नाम तो आपने नही सुना होगा। महाराष्ट्रमे वह यात्राका एक स्थान है। वहा जो मूर्तिया है उनके लिए इतनी दंत-कथा भरी है कि मै उन सबको सुनाना नही चाहता हू। तो वहाका मदिर हरिजनोके लिए खुलता नही था। इसपर साने गुरुजी वहा जाकर बैठ गए और मदिरके ट्रस्टियोसे कहा कि जब सब जगहके मदिर खुल गए है तो यह क्यो न खुले? जब नही खुला तब उन्होने उपवास शुरू कर दिया। साने गुरुजी तो भक्त पुरुष था, तो वे उसको कैसे मरने देते? उनके दिलमे ज्ञान आया, रहम आया, लेकिन कहा कि हम क्या करे, कैसे खोले, उसमे काफी टेकनिकल रुकावटे है, जिन्हे दूर करना होगा। पीछे मावलकरजी वहा पहुचे और उनके कहने-सुनने-पर उन्होने उपवास छोड दिया, लेकिन इस शर्तपर कि अगर वह नही खुला तो उनका फाका फिर चलेगा। अब मेरे पास तार आया कि जो बिल बननेवाला था वह बना लिया और वह मदिर हरि-जनोके लिए खुल गया। सबने राजी होकर खोला और हजारोकी

---

[1] अपेक्षा।

तादादमे लोग वहा गए—कोई विरोध नही हुआ—एक-दोका रहा होगा शायद हजारोमे। तो पढरपुरका इतना भारी मदिर इतनी मेहनतके बाद आखिर खुलकर रहा। जितनी ज्यादतिया हमने हरिजनोपर की है अगर वे हट जाय तो सारा हिंदुस्तान बहुत ऊचे चला जाता है। लेकिन आज तो हम गिरते जा रहे है, क्योकि हममे वैमनस्य भर गया है। हिंदुस्तान कोई हमेशाके लिए तो दीवाना बना नही रहेगा, ऐसी उम्मीद करके मै बैठा हू—आगे भगवान जाने।

मेरे पास दो-चार प्रश्न आ गए है—वैसे तो वे अलग-अलग खतोमे है, लेकिन उनको इकट्ठा कर लिया गया है। पहले प्रश्नमे तो एक मुसलमान भाई पूछते है। जैसा कि कल बताया था कि हम गोमास छुडवानेके वास्ते किसीको मजबूर नही कर सकते, उनसे विनय कर सकते है और समझा सकते है। अगर उनकी समझमे आ जाय और उसको छोड दे, फिर चाहे वे हमारे प्रति मोहब्बत दिखानेके लिए करते हो तो वह बडी अच्छी बात है। लेकिन ऐसे भी हिंदू बहुतसे है जो मास खाते है चाहे वह मछली हो या और कोई दूसरा मास हो। ऐसे तो बहुत थोडे हिंदू है जो धर्म समझकर मास नही खाते। तो क्या आप उनको मजबूर करेगे और कहेगे कि अगर मास खाना नही छोडते तो हिंदुस्तानको छोडो नही तो मार डाले जाओगे? अगर ऐसा नही हो सकता तो मुसलमानोने क्या गुनाह किया? उनको क्यो मजबूर किया जाय? मै जानता हू कि ऐसे पागल हिंदू भी पडे है जो मुसल्मानोको मजबूर करते है। मै तो कहूगा कि यह अत्याचार है जिससे हमे बचना चाहिए।

दूसरा प्रश्न एक और है जिसमे एक हिंदू लिखते है कि यह तो ठीक है कि सब हिंदू तो वैमनस्यसे नही भरे है लेकिन तुम बात तो करते हो कि मुसलमानोको अपने घर नही छोडने चाहिए, अगर मरना है तो मर जाय। ऐसी ज्ञान-वार्ता तो तुम सुनाते हो, लेकिन इससे सबको ज्ञान तो नही मिल जाता है। एक तरफ तो यह ज्ञान-वार्ता चलती रहे और दूसरी तरफ मुसलमानोको यहातक परेशान किया जाय कि वे अपने घरोमे बाहर कही जा नही सकते—उनको ये धमकिया

तो वह है न। पूछने लायक है और नही भी। "तुमने तो अपनी यह अहिंसा अंग्रेजोको भी बताई थी जब वे हार रहे थे और उनको हथियारोंसे लड़ाई न लड़कर अहिंसक होनेकी सलाह दी थी। वहा तो तुमने इतनी जुर्रत की, लेकिन यहाकी हुकूमतको अहिंसाकी लडाई लडनेको क्यो नही कहते।" मैने तो बता दिया कि मै हू कहा, और कौन मेरी मानता है। कहते तो है कि सरदारजी तो तुम्हारे है, पडितजी तुम्हारे नही है तो कौन है, मौलाना भी तुम्हारे है। मेरे है भी और नही भी है। मैने तो अपनी अहिंसा छोडी नही है। मै तो उसको सीखता ही आया हू और वह तबतक चली जबतक आजादी नही मिली थी। अब वे कहते है कि अहिंसासे कारोबार कैसे चला सकते है, तो पीछे लश्कर तो है ही, और उस लश्करको लेकर बैठ गए है। अब मेरी कीमत नही रही है। जब मेरी कीमत ही नही है तब मै लोगोमे क्यो पडा हू। लेकिन इसी आशासे कि शायद लोग मेरी सुन ले। आखिर आप-जैसे थोडेसे लोग तो आते ही है और सभ्यतासे बैठकर मेरे साथ प्रार्थना करते है। जैसे आप है ऐसे शायद दूसरे भी हो जाय और पीछे सबमे ज्ञान हो जाय। मेरी बातका कुछ असर हो जाय। इसी लालचके वशमे पडा हू और इतना कर रहा हू। मै नही जानता कि कहातक ईश्वर मुझसे काम कराना चाहता है। वह चाहे तो आज भी मुझको बद कर सकता है। अब अगर यहा बैठे-बैठे सास उडा दे तो मै खत्म हो जाता हू। इसलिए जो चीज मैने हिटलर-मुसोलिनी, चर्चिल तथा जापानको कही थी उसी चीजपर मै आज भी कायम हू और अपनी हकूमतको भी वही कहता हू। लेकिन काश्मीरमे तो शेख अब्दुल्ला है जो बडी बहादुरीसे लड रहे है—बहादुरीकी मैने हमेशा तारीफ की है। यह ठीक है कि वे हिंसा करते है, लेकिन उसमे बहादुरी तो है, उसकी तारीफ तो मै करूगा। मै तो सुभाष बाबूकी भी तारीफ करता हू, कोई इसलिए थोडे करता हू कि मुझे उनकी हिंसा पसद थी। जो आजाद हिंद फौज बनाई वह मेरेसे थोडे बन सकती थी। जब मै अच्छी चीज देखता हू और अच्छीको अच्छी न बताऊ तो मै अहिंसक नही हो सकता। अगर शेख अब्दुल्ला वहा आखिर-

तक लडता रहे और हिंदुओ और सिखोको साथ रखे तो वह बुलद काम हो जायगा। जो लोग यहा पडे है उनपर भी इसका बडा असर होनेवाला है इसमे मुझे जरा भी शक नही है। लेकिन अगर मेरी अहिसा चले और सब मेरी बात माने तो जो लश्कर हम भेजते है वे भी न भेजे। अगर भेजे तो वे भी अहिंसक लश्कर भेजे। वे वहा जाते है, अगर अफरीदी लोग मार डालते है और वे खुशीसे मर जाय तो वह अहिसक युद्ध हो जायगा, क्योकि वे अहिसक होकर मरते है। शेख अब्दुल्ला भी उन अफरीदियोसे कहेगा कि आप श्रीनगर ले सकते है, लेकिन तब, जब हम सब मर जाय। किंतु वे तो हथियारोसे लडनेवाले है और बहादुरीसे लडते है। तब वे भी अहिसक बन सकते है, हाला कि वह अहिसाका रूप नही होता। मान लीजिए कि एक लाख अफरीदियोका दल यहा आ जाता है और उन सबके पास हथियार है और मुट्ठीभर लोग मासूम बच्चो और स्त्रियोकी रक्षाके लिए हथियार लेकर उनसे लडते है और लडते-लडते मर जाते है तब हथियारबद होते हुए भी अहिसक-जैसे बन जाते है। लेकिन मै किसको बताऊ? आज तो आपस-आपसमे जहर फैल गया है और एक-दूसरेको बुरी तरहसे वहशियाना तौरसे काटते है। उसमे भी मै यह अहिसाका सरल पाठ नही बता सकता हू। उस वक्त चर्चिल साहब तो नही कह सकते थे लेकिन आज शेख अब्दुल्ला तो कह सकते है और जो लश्कर गया है वह भी कह सकता है कि अगर तुम्हारी अहिसा दिल्लीमे काम नही कर सकती, वहा तो वहशियाना काम हो रहा है, लेकिन हम जो करते है वह वहशियाना भी नही है तब उनको यह कहनेका हक मिल जाता है और मै उसको कबूल करता हू। अगर मै यहाके सब हिंदू, मुसलमान, सिखोको अपनी अहिसा समझा दू तो पीछे वे मुझको कुछ कह नही सकते। तब तो मै खुद एक अहिसक सेना लेकर काश्मीरमे या कहो पाकिस्तानमे या हर जगह जा सकता हू और मेरा काम बहुत सरल हो जाता है और उस अहिसाका प्रभाव इतना पडे कि वह देखने लायक हो। लेकिन ऐसा अवसर कहासे आए? मेरी अगर आप लोग सुने और

जो कहता हू उसपर अमल करे, मेरे शब्दोमे ज्यादा शक्ति, हृदयमे ज्यादा वल हो, मेरी तपश्चर्या चाहे वह कितनी भी है और उससे भी आगे बढ जाय, और मेरे एक-एक शब्दोमे इतनी शक्ति हो कि वह सारे हिंदुस्तानको पकड ले तो मेरा काम वन जाय। लेकिन आज तो मै लाचार-सा हू। अगर आप लोग भी ईश्वरसे प्रार्थना करें कि वे मेरे शब्दोंमे प्रभाव डालें और जहातक मुझे लाया है उससे भी आगे ले जाय और इस शरीरसे और भी ज्यादा काम करा ले तो हिंदुस्तानका प्रभाव सारे जगतपर पड सकता है।

इन दिनो जो एशियाई प्रादेशिक श्रम-सम्मेलन हो रहा है उसमे इग्लैड, चीन, अमरीका तथा पाकिस्तानके प्रतिनिधि आए थे और कहते थे कि तुमने तो वडा काम किया है। उनकी यह तारीफ मुझे चुभती थी। आज तो मै दिवालिया वन गया हू—आज तो मै कुछ सुना नही सकता और कल सुनाया था उसकी अव कोई कीमत नही। आज तो मै तारीफके लायक तभी वन सकता हू जव लोगोपर मेरा प्रभाव पडे, लेकिन वह दिन तो आज है ही नही, मै तो आज लाचारीका प्रदर्शन आपके सामने कर रहा हू।

: १४० :

६ नववर १९४७

(प्रार्थनाके बाद गाधीजीने एक दोस्तद्वारा भेजी हुई अखवारोकी दो कतरनोका जिक्र करते हुए कहा—)

भाइयो और वहनो,

मै लेखकका नाम जानता हू। लेकिन मै न तो उनका नाम वताना चाहता और न उन लेखोका व्योरा ही देना चाहता हू। मै सिर्फ इतना ही कहना चाहता हू कि वे लेख हिंदू-धर्मकी सेवा करनेके ख्यालसे लिखे गए है। लेकिन उनमे जान-बूझकर झूठी वाते कही गई है। जव नई वाते नही कही जाती, तो हकीकतोको तोड-मरोड-

कर पेश किया जाता है। लेकिन मै यह कहनेकी हिम्मत करता हू कि ऐसा करनेसे कोई मकसद पूरा नही होता—धर्मका तो बिलकुल नही। जब इलजामोकी बुनियाद सचाईपर नही बल्कि झूठपर होती है, तब जिनपर इलजाम लगाया जाता है उन्हे कोई चोट नही पहुचती। इसलिए मै जनताको चेतावनी देता हू कि वह ऐसे अखबारोका समर्थन न करे, भले उसके लेखक कितने ही मशहूर क्यो न हो।

खुराक-मत्रीने गैर-सरकारी लोगोकी जो कमेटी बनाई थी, उसने अपनी रिपोर्ट उनके सामने पेश कर दी है। उस कमेटीकी सिफारिशोपर कोई फैसला करनेमे डा० राजेद्रप्रसादको मदद देनेके लिए सूबोके जो मत्री या उनके प्रतिनिधि दिल्ली आए थे, उनसे मै मिला था। जब मैने इस मीटिंगके बारेमे सुना, तो मैने डा० राजेद्रप्रसादसे कहा कि वे मुझे उन लोगोके सामने अपनी बात रखनेका मौका दे, ताकि मै उनके शकोको दूर कर सकू। क्योकि मुझे इसका पूरा यकीन है कि अनाजका कट्रोल हटानेकी मेरी राय बिलकुल ठीक है। डा० राजेद्रप्रसादने तुरत मेरा प्रस्ताव मान लिया और मुझे मत्रियो या उनके प्रतिनिधियोके सामने अपने विचार रखनेका मौका मिला। मुझे अपने पुराने दोस्तोसे मिलकर बडी खुशी हुई। मै यह कहता रहा हू कि जहातक साप्रदायिक झगडोके बारेमे मेरी रायका सबध है, आज उसे कोई नही मानता। लेकिन यह कह सकनेमे मुझे खुशी होती है कि खुराकके सवालपर मेरी रायके बारेमे ऐसी बात नही है। जब बगालके गवर्नर मि० कैसीसे मेरी कई मुलाकाते हुई थी, तभीसे मेरी यह राय रही है कि हिंदुस्तानमे अनाज या कपडेपर कट्रोल रखनेकी बिलकुल ज़रूरत नही है। उस समय यह मालूम नही था कि मुझे लोगोका समर्थन प्राप्त है या नही। लेकिन हालकी चर्चाओमे यह जानकर अचरज हुआ कि मुझे जनताके जाने और अनजाने मेबरोका बहुत बडा समर्थन प्राप्त है। अनाजकी समस्याके बारेमे मेरे पास जो बेशुमार खत आते है, उनमे मुझे एक भी खत ऐसा याद नही आता जिसके लेखकने मेरी रायसे अलग राय जाहिर की हो। मै श्री घनश्यामदास बिडला और लाला श्रीराम-जैसे बडे-बडे लोगोकी राय नही जानता, न मैं यही

जानता हू कि इस बारेमे मुझे समाजवादी पार्टीका समर्थन मिलेगा या नही। हा, जब डा० राममनोहर लोहिया मुझसे मिले, तो उन्होंने अनाजका कट्रोल हटा देनेकी मेरी रायका पूरा-पूरा समर्थन किया। मुझे यह कहनेमें कोई हिचकिचाहट नही होती कि आज देशको अनाजकी जिस तगीका सामना करना पड रहा है, उसमे डा० राजेद्रप्रसादकी रहनुमाई[1] उनकी कमेटीके एक या ज्यादा मेबर करे न कि उनका पूरा स्टाफ।

अब मै कपडेके कट्रोलकी चर्चा करूगा। हाला कि अनाजके कट्रोलको हटानेके बनिस्बत कपडेके कट्रोलको हटानेके बारेमे मेरा ज्यादा पक्का विश्वास है, फिर भी मुझे डर है कि कपडेके कट्रोलके बारेमे मुझे उतना समर्थन प्राप्त नही है जितना कि अनाजके कट्रोलके बारेमे है। काग्रेसने मेरी इस रायका खुशीसे समर्थन किया था कि खादी देशी या विदेशी मिलके कपडेकी पूरी जगह ले सकती है। उसने स्व० जमनालालजीके मातहत एक खादी-बोर्ड कायम किया था, जिसे मेरे यरवदा जेलसे रिहा होनेके बाद अखिल भारत-चरखा-सघका विशाल रूप दे दिया गया था। हिंदुस्तानमें ४० करोड लोग रहते है। अगर पाकिस्तानका हिस्सा उसमे अलग कर दिया जाय, तो भी उसमे ३० करोडसे ऊपर लोग बचेगे। उनकी जरूरतकी सारी कपास देशमे पैदा होती है। उनकी कपासको बुनने लायक सूतमें बदलनेके लिए देशमे काफी कातनेवाले मौजूद है। और उनके हाथकते सूतको बुननेके लिए हिंदुस्तानमे जरूरतसे ज्यादा जुलाहे भी है। बहुत बडी पूजी लगाए बिना भी हम देशमे अपनी ज़रूरतके चरखे, करघे और दूसरा जरूरी सामान आसानीसे बना सकते है। इसलिए जरूरत सिर्फ इस बातकी है कि हम अपने-आपमे पक्का विश्वास रखे और खादीके सिवा दूसरा कोई कपड़ा न इस्तेमाल करनेका इरादा कर ले। आप जानते है कि देशमे महीन-से-महीन खादी तैयार की जा सकती है और मिलोसे भी ज्यादा अच्छे डिजाइन बनाए जा सकते है। अब चूकि

---

[1] पथ-प्रदर्शन।

हिंदुस्तान विदेशी जुएसे आजाद हो गया है, इसलिए खादीका ऐसा विरोध नही हो सकता, जैसा कि विदेशी शासकोंके नुमाइदे किया करते थे। इसलिए मुझे यह देखकर सबसे ज्यादा ताज्जुब होता है कि जब हम अपनी मरजीका काम करनेके लिए पूरी तरह आजाद है, तब न तो कोई खादीके बारेमे चर्चा करते है, न खादीकी सभावनाओंमे श्रद्धा रखते है। और, हम हिंदुस्तानको कपडा पूरा करनेके लिए मिलके कपडेके सिवा दूसरी बात ही नहीं सोच सकते। इसलिए मुझे रत्तीभर शक नही कि खादीका अर्थ-शास्त्र ही हिंदुस्तानका सच्चा और फायदेमद अर्थशास्त्र हो सकता है।

: १४१ :

७ नवबर १९४७

(गांधीजी दिल्लीके पास तिहाड नामक गावके मुसलमानोसे मिलने गए थे। वहा उन्हे उम्मीदसे ज्यादा समयतक रुकना पडा। इसलिए वे लौटनेपर सीधे प्रार्थना-सभामे चले गए। प्रार्थनाके बाद गाधीजीने अपने दौरेका जिक्र करते हुए कहा—)

भाइयो और बहनो,

मुझे दुख होता है कि तिहाड और उसके आसपासके मुसलमानोको बिला जरूरत मुसीबते झेलनी पडती है। उनमेसे बहुतसे जमीनोके मालिक है, लेकिन सताए जानेके डरसे वे अपनी जमीने जोत नही पाते। उन्होंने अपने मवेशी, हल और दूसरा सामान बेच डाला है। फौज उनकी रक्षा कर रही है। दो हजारसे ऊपरकी तादादमे जो दुखी लोग मेरे आसपास इकट्ठे हुए थे, उन्होने अपने अगुआकी मारफत मुझसे कहा कि 'हम पाकिस्तान जाना चाहते है, क्योकि यहा जीना असभव हो गया है। हमारे बहुतसे दोस्त और रिश्तेदार पाकिस्तान जा भी चुके है। इसलिए, अगर सरकार हमे जल्दी-से-जल्दी लाहौर भेज दे, तो बडी दया होगी। हमे फौजके लोगोके खिलाफ कोई शिकायत नही है।'

लेकिन आजका समय मैं तिहाडकी सभाका पूरा वयान करनेमे नही दूगा। मैने उन लोगोसे कहा कि मेरे हाथमे कोई सत्ता नही है, लेकिन मैं आपका सदेश खुशीसे प्रधान मत्री और उप-प्रधान मत्री तक, जो गृहमत्री भी है, पहुचा दूगा।

मुझसे कहा गया है कि निराश्रित लोग दिल्लीमे एक समस्या वन गए है। मुझे वताया गया है कि चूकि पाकिस्तानमे निराश्रितोके साथ जुल्म किये गए है इसलिए वे यह मानते है कि उन्हे कुछ खास हक हासिल है। जव वे दुकानपर कोई सामान खरीदने जाते है तो यह आशा करते है कि दुकानदार कभी उन्हे जरूरतकी चीज़े मुफ्त दे दिया करे और कभी काफी कम दामोमे वेचा करे। कभी-कभी तो एक-एक आदमी सैकडो रुपएका सौदा खरीद लेता है। कुछ निराश्रित तागेवालोसे यह उम्मीद करते है कि वे उनसे विलकुल भाडा न ले या मामूलीसे कम भाडा ले। अगर यह रिपोर्ट सच है, तो यह कहना मेरा फर्ज़ है कि निराश्रित लोग वह सवक नही सीख रहे है, जो मुसीवते दुखियोको आम तौरपर सिखाती है। ऐसा करके वे अपने-आपको और देशको नुकसान पहुचाते है और काफी पेचीदा वने हुए सवालको और भी पेचीदा वना रहे है। अगर उनका ऐसा वरताव जारी रहा, तो वे दिल्लीके दुकानदारोकी हमदर्दी जरूर खो देगे।

साथ ही, मैं यह नही समझ पाता कि निराश्रित लोग, जिनके वारेमे यह कहा जाता है कि वे पाकिस्तानमे अपना सव कुछ खो-कर यहा आए है, सैकडो रुपयोका सामान कैसे खरीद सकते है। मैं यह भी चाहूगा कि कोई निराश्रित विरले और जरूरी मौकोको छोड-कर घूमनेके लिए भगवानके दिये हुए पावोके सिवा दूसरी किसी चीजका-उपयोग न करे। इसके अलावा मुझे यह वताया गया है कि दिल्लीमे जवसे लाखो निराश्रित आए है, तवसे तेज शरावोसे होनेवाली आमदनी वहुत ज्यादा वढ गई है। दरअसल उन्हे यह समझना चाहिए कि जव केंद्र और सूवोकी सरकारे काग्रेसकी मागोको पूरा करेगी, तो हिदुस्तानी सघमे न तो तेज शरावे मिलेगी और न अफीम-गाजे-जैसी दूसरी नशीली चीजे देखनेको मिलेगी। यही हाल पाकिस्तानका भी हो सकता

है। क्योकि हमारे मुसलमान दोस्तोको पूरी शराब-बदीका ऐलान करनेके लिए काग्रेसके ठहरावकी जरूरत नही पडेगी। क्या निराश्रित लोग, जिन्होने बडी-बडी मुसीबते सही है, शराब और दूसरी नशीली चीजोके इस्तेमालमे या ऐश-आराममे डूबनेसे अपने-आपको रोक नही सकते? मुझे आशा है कि निराश्रित भाई और बहन मेरी उस सलाहको मानेगे, जो मैने अपने पिछले भाषणोमे उन्हे दी है। वह सलाह यह है कि निराश्रित जहा कही जाय, वहाके लोगोमें दूधमे शक्करकी तरह घुल-मिल जाय और उनपर बोझ न बननेका पक्का निश्चय कर ले। धनी और गरीब निराश्रित एक ही अहाते या कैंपमे साथ-साथ रहे और पूरे सहयोगसे काम करे, ताकि वे आदर्श और स्वावलबी नागरिक बन सके।

: १४२ :

८ नवबर १९४७

(आज हमेशाके विरोध करनेवाले सज्जनके सिवा दूसरे तीन भाइयोने कुरानकी आयत पढनेका विरोध किया। इसलिए प्रार्थना शुरू करनेसे पहले गाधीजीने सभाके लोगोसे पूछा—)

भाइयो और बहनो,

क्या आप लोग इस पहली शर्तको पूरा करेगे कि आप अपने मनमे विरोध करनेवालोके खिलाफ कोई गुस्सा या वैर नही रखेगे और प्रार्थना खत्म होनेतक शाति और खामोशीके साथ एकाग्र मनसे बैठेगे?

(लोगोने तुरत एक आवाजसे कहा कि हम उस शर्तको पूरा करेगे। विरोध करनेवाले पूरी प्रार्थनामे चुप रहे। प्रार्थना बिना किसी रुकावटके हुई। इसपर गाधीजीने अतमे सबको बधाई दी। गाधीजीने बादमे कहा—)

मुझे एक सिख दोस्तका खत मिला है। उन्होने लिखा है कि वे हमेशा प्रार्थना-सभामे आते है और उसे पसद करते

है। वे प्रार्थनाके पीछे रही रवादारीकी[1] भावनाकी तारीफ करते है। खास तौरपर उन्होने मेरी ग्रथ साहव, सुखमणि, जपजी वगैराके वारेमे कही गई वातोकी तारीफ की है। उन्होने लिखा है कि 'अगर आप भजनावलीमे इकट्ठे किये गये सिख-धर्मग्रथके हिस्सोमेसे कुछ चुन ले और अपनी प्रार्थना-सभामे रोज पढे, तो इसका सिखोपर वडा असर पडेगा। मुझे लगता है कि मै यह वात सारी सिख-जातिकी तरफसे कह सकता हू। वे चुने हुए हिस्से मै आपके सामने पढकर सुना सकता हू।' मुझे खत लिखनेवाले भाईकी वह वात मजूर है। लेकिन इस वात पर मै कोई फैसला तभी करूगा, जव मै खुद उन भाईके मुहसे कुछ भजन सुन लू। इसके लिए उन्हे श्री व्रजकिशनजीसे समय ले लेना चाहिए।

मैने एक वार यह वात कही थी कि निराश्रितोको रूई, केलिको (छपा हुआ कपडा) और सुइया मिलनी चाहिए, ताकि वे खुद अपने इस्तेमालके लिए रजाइया वना सके। इससे लाखो रुपए वच सकते है और निराश्रितोको आसानीसे ओढनेके कपडे मिल सकते है। मेरी इस अपीलके जवावमे ववईके रूईके व्यापारियोने लिखा है कि वे ये चीजे देनेके लिए तैयार है। इस तरीकेसे निराश्रित खुद अपनी नजरमे ऊचे उठेगे और वे सुदर सहकारका पहला सवक सीखेगे। लेकिन दिल्लीमे ही कपडेकी मिलोकी कमी नही है। शहरमे कई मिले चलती है, फिर भी मै ववईकी भेटका स्वागत करता हू, क्योकि मै मरजीसे दान देनेवालोपर गैर-जरूरी वोझ नही डालना चाहता। दान देनेवाले जितने ज्यादा होगे, उतना ही निराश्रितो और देशको फायदा होगा। इसलिए मुझे आशा है कि ववई के रूईके व्यापारी जितनी भी गाठे भेज सकेगे जल्दी-से-जल्दी भेजेगे। धनी लोगोका ऐसा सहयोग सरकारके वोझको कम करेगा। जव हम आजाद हो गए है तव तो हर शख्स अपनी इच्छासे देशकी सरकारके काममे भागीदार वन सकता है, वशर्ते वह आजाद देशके नागरिककी पूरी-पूरी जिम्मेदारियोको समझकर अपना फर्ज अदा करे।

---

[1] शुभचितना।

मुझे इसमे कोई शक नही कि जब रुईकी गाठे आ जायगी, तो मै मिल-मालिकोको रजाइयोके लिए काफी छीट देनेके लिए राजी कर सकूगा। रुईकी गाठोकी बातपरसे कपडेका कट्रोल याद आ गया। मेरी रायमे हिंदुस्तानके सारे लोगोके लिए हाथसे काफी खादी तैयार करना सभव है और आसान भी है। इसकी एक शर्त यही है कि देशमे काफी रुई मिल जाय। मै नही जानता कि हिंदुस्तानमे कभी रुईका अकाल पडा हो। हमारे यहा रुईकी तगी हो ही नही सकती, क्योकि हम देशकी जरूरत से हमेशा ज्यादा रूई पैदा करते है। देशके बाहर हजारो-लाखो गाठे भेजी जाती है, फिर भी हिंदुस्तानकी मिलोके लिए कभी रुईकी कमी नही होती। मै पहले ही इस सचाईकी तरफ आप लोगोका ध्यान खीच चुका हू कि हिंदुस्तानमे हाथसे धुनने, कातने और बुननेके सारे जरूरी औजार मिल सकते है। साथ ही, काम करनेवाले भी बडी भारी तादादमे मौजूद है। इसलिए, मै तो यही कह सकता हू कि लोगोके आलसके सिवा दूसरी कोई ऐसी बात नही है जो उन्हे यह सोचनेपर मजबूर करती हो कि देशमे कपडेकी तगी है। आज देशमे कोई भी कपडेका कट्रोल नही चाहता। न मिले, न मिल-मज़दूर और न खरीदार जनता। कट्रोल आलसी लोगोकी फौजको बढाकर देशको बरबाद कर रहे है। ऐसे लोग कोई काम न होनेसे हमेशा दगे-फसादकी जड बने रहते है।

अगर निराश्रितोने अपने-आपको फायदेमद कामोमे लगानेका इरादा कर लिया है, तो पहले वे अपने लिए रजाइया तैयार करेगे, और बादमे सब औरत और मर्द अपना एक-एक पल कपाससे बिनौले निकालने, रुई धुनने, कातने-बुनने वगैरामे खर्च करेगे। लाखो निराश्रितो-द्वारा इस सहकारी काममे लगाई गई ताकत सारे देशमे बिजली-सी पैदा कर देगी। वे लोगोको अपने पीछे चलनेकी और हर फालतू वक्तको ज्यादा अनाज पैदा करने और अपने ही घरोमे खादी बनानेमे खर्च करनेकी प्रेरणा देगे। यह याद रहे कि अगर गाठे बनानेके बजाय कपास सीधे खेतोसे ही पडोसके कातनेवालोके घर पहुचे, तो एक काम कम हो जायगा, रूई बिगडेगी नही, धुननेका काम आसान होगा

और गावोमे बिनौले भी बच रहेगे।

लेडी माउटबैटेन मुझसे मिलने आई थी। वह दयाकी देवी बन गई है। वह हमेशा दोनो उपनिवेशोका दौरा किया करती है, अलग-अलग छावनियोमे निराश्रितोसे मिलती है, बीमारो और दुखियोको देखती है और इस तरह जितना भी ढाढस उन्हे बधा सकती है बधानेकी कोशिश करती है। जब वह कुरुक्षेत्र-छावनी देखने गई, तो उनसे लोगोने पूछा कि गाधीजी कब आएगे। लेडी माउटबैटेनके सामने इतने लोगोने मुझे देखनेकी इच्छा जाहिर की कि उन्हे पूरी उम्मीद हो गई कि मै कुरुक्षेत्र-छावनीका मुआइना करने जरूर जाऊगा। मैने उन्हे यकीन दिलाया कि आपका ऐसी उम्मीद रखना बिलकुल ठीक है। सच पूछा जाय तो मैने पानीपत जानेका बदोबस्त कर लिया है, जहाके हिंदू और मुसलमान दोनो मुझसे मिलनेके लिए बडे उत्सुक है। उसी दौरेमे मैने कुरुक्षेत्रके दौरेको भी शामिल करनेकी बात सोची थी। लेकिन मुझे पता चला है कि पानीपतके दौरेमे कुरुक्षेत्र-छावनीको शामिल नही किया जा सकता। इसलिए ए० आई० सी० सी० (अखिल भारतीय काग्रेस-कमेटी) की अगली मीटिगके खत्म होनेतक कुरुक्षेत्रका दौरा मुलतबी रखना जरूरी हो गया है। फिर भी मुझे यह सुझाया गया है कि कुरुक्षेत्र-जैसे बडे भारी कैंपमे लाउड स्पीकरका बदोबस्त करना कठिन काम है, लेकिन कैंपके लोगोसे रेडियोपर बोलनेमे कोई कठि-नाई नही होगी, बशर्ते जरूरी सबध जोडनेवाली मशीन कैंपमे लगा दी जाय। ऐसा बदोबस्त हो जानेपर मै मगल या बुधको कुरुक्षेत्र-छावनीके लोगोको अपनी बात सुना सकूगा और बादमे उनसे मिलने भी जा सकूगा। इसी बीच उम्मीद है कि मै अपना पानीपतका दौरा खत्म कर लूगा।

: १४३ :

मौनवार, ६ नवबर १६४७

(लिखित सदेश)

"मुझे खेद है कि चूकि मुझे कल पानीपत जाना है, इसलिए मुझे आज मौन जल्दी लेना पडा, ताकि मै वहा पहुचकर हिंदू और मुसलमानोसे बात कर सकू। मेरी आशा है कि मै कल शामकी प्रार्थनाके समयतक वापस लौट आऊगा और आकर बोल सकूगा। अखबारोमे यह समाचार गलत छपा है कि मै कल कुरुक्षेत्र जा रहा हू। मैने यह साफ-साफ बताया था कि मेरा इरादा कुरुक्षेत्र जानेका है लेकिन ए० आई० सी० सी० की मीटिंगके समाप्त होनेसे पहले नही। मेरी उम्मीद है कि मै वहाके शरणार्थियोसे बुधके दिन रेडियोपर बोलूगा। समयकी सूचना दे दी जायगी।

कुछ दिनो पीछे दीवाली आ रही है। एक बहन, जो स्वय शरणार्थिन है, लिखती है—

"सविनय निवेदन है कि इस वर्ष दीपावली मनाई जाय या नही? मै इस विषयमे आपके समुख टूटे-फूटे शब्दोमे अपना विचार प्रकट करना चाहती हू। मै भी पाकिस्तान[१]से आई हुई हू। और हमारा भी सब कुछ वहापर नष्ट हो चुका है, परतु फिर भी हमारे हृदयोमे इस बातका महान् हर्ष है कि हम स्वतत्र है और यह दीपावली स्वतत्र हिंदुस्तानकी पहली दीपावली है। अन इस वर्ष हमे सब कष्टोको भूलकर उत्साह और समारोहके साथ अपनी स्वाधीन मातृभूमिको दीपमालासे अवश्य ही अलकृत करना चाहिए। आपके हम शरणार्थियोके प्रति जो उदार भाव है कि हम दु खित है, इसलिए स्वतत्र भारतकी सब खुशिया हमारे लिए पीछे रख दी जाए इसके लिए हम हृदयसे कोटि कोटि धन्यवाद देते है। अब आप भी सब शरणार्थियोको और यहाके निवासियोको आज्ञा दे कि समस्त इडियामे

---

[१] गुजरावाला।

दीपमाला अवश्य मनाई जाय और जो लोग समर्थ है, वे शरणार्थियोकी सहायता करे। ईश्वर हमे शक्ति दे कि स्वाधीनताका प्रत्येक त्योहार हम उत्साहके साथ मनाकर अपनी स्वतत्र माताकी शोभा बढाए।"

यद्यपि मै इस बहन और उन-जैसे दूसरोकी प्रशसा करता हू, लेकिन मै यह कहे विना नही रह सकता कि वह बहन और दूसरे जो उनके-जैसा विचार रखते है, गलतीपर है। इस बातको हर एक जानता है कि जब किसी घरमे मातम[1] हो जाता है तो जहातक होता है वे लोग किसी मेले-तमाशेमे शरीक नही होते। यह इस बातका एक छोटा-सा नमूना है कि हम सब एक है। कूप-मडूक बनना छोडो तो हिंदुस्तान एक कुटुब बन जाता है, अगर सब बधन गायब हो जाते है तो सारा ससार एक कुटुब बन जाता है, जो वास्तवमे है। इन बधनोको पार न करनेका मतलब यह है कि हम उन सद्भावनाओकी ओरसे, जो मनुष्यको मनुष्य बनाती है, कठोर बन जाते है। हमे अपना ही विचार नही करते रहना चाहिए, नही हमे भावुक बनकर असलियतको भुलाना चाहिए। मै जो खुशी न मनानेकी राय देता हू, उसका मूल कई पक्के विचारोपर निर्भर है। यहा शरणार्थियोकी समस्या हमारे सामने है जिसका प्रभाव लाखो हिंदू, मुसलमान और सिखोपर पड रहा है। इसके अलावा खुराक और कपडेकी कमी, अगरचे यह मनुष्यकी बनाई हुई है, मूल कारण है। उन लोगोकी बेईमानी जो जनताकी रायको निर्माण कर सकते है, पीडितोकी जिद कि अपने कष्टोसे पाठ नही सीखते और इन्सानकी इन्सानके साथ बेरहमी—मै इस मुसीबतमे खुशी मनानेका कोई कारण नही देखता। यदि हम दृढता और अक्लमदीके साथ इस बातका निश्चय कर ले कि हम खुशी नही मनाएगे तो इससे हमे प्रेरणा मिलेगी कि हम अतर्मुख और पवित्र बने। हमे कोई ऐसा काम नही करना चाहिए जिससे हम उस आशीर्वादको फेक दे, जिसे

---

[1] शोक।

हमने इतनी मेहनत और मुसीबतके बाद प्राप्त किया है।

अब मैं अपने उन चद मित्रोका जिक्र करना चाहता हू जो फ्रेंच भारतसे इस सप्ताह मुझसे मिलने आए थे। उनकी यह शिकायत थी कि मैंने चद्रनगरके सत्याग्रहके सबधमे जो कुछ कहा था उसका फ्रेंच भारतकी इन भावनाओको कि वह हिंद यूनियनके नीचे रहते हुए और फ्रेंच सस्कृतिका प्रभाव रखते हुए अपनी स्वतत्रता प्राप्त कर सके, दबानेके लिए गलत इस्तेमाल किया गया है।

उन्होने मुझे यह भी बताया कि अग्रेजी राज्यकी तरह फ्रेंच भारतमे भी पचम स्तभवाले मौजूद है, जो अपने स्वार्थ-साधनके लिए फ्रेंच हकूमतका साथ दे रहे है और वहाकी हकूमत लोगोकी कुदरती भावनाओको दबानेका प्रयत्न कर रही है। यदि फ्रेंच भारतसे आए हुए मित्रोका कहना सही है तो मुझे बडा दुख है। ताहम,[1] मेरी राय साफ है। छोटे-छोटे विदेशी उपनिवेशोके रहनेवालोके लिए यह नामुमकिन है कि उनके करोडो देशवासी ब्रिटिश हकूमतसे आजाद हो जाए और वह गुलाम बने रहे। मुझे आश्चर्य है कि चद्रनगरकी ओर मेरा जो मित्र-भाव है उसका यह गलत अर्थ किया जाय कि मै यह कभी बरदाश्त कर सकता हू कि भारतके इन छोटेसे विदेशी उपनिवेशोका नीचा दर्जा रहे। इसलिए मेरी यह उम्मीद है कि जो खबर मुझे दी गई है उसकी वास्तवमे कोई बुनियाद नही है। और महान् फ्रासीसी जाति इस बातकी कभी हिमायत न करेगी कि लोगोको चाहे वह काले हो या भूरे, हिंदमे हो या और कही, दबाकर रखा जाय।

---

[1] तथापि।

: १४४ :

१० नवबर १९४७

(आज शामकी प्रार्थनामे गाये गए भजन का जिक्र करते हुए गाधीजीने कहा—)

भाइयो और बहनो,

अगर मीराबाईकी तरह हम सिर्फ भगवानके ही सेवक बन जाय, तो हमारी सारी तकलीफोका खात्मा हो जाय। इसके बाद जो कुछ मै कहनेवाला हू उसे सुननेपर आप इस सकेतको समझेगे। आपने अखबारोमे जूनागढके बारेमे सारी बाते पढी होगी। राजकोटसे मेरे पास आए हुए दो तारोसे मुझे सतोष हो गया कि अखबारोमे छपी हुई खबर बिलकुल ठीक है। जूनागढके प्रधान मत्री भूटो साहब और वहाके नवाब साहब कराचीमे है। उप-प्रधान मत्री मेजर हारवे जोन्स जूनागढमे है। जूनागढके हिदुस्तानी सघमे शामिल होनेके काममे इन सबका हाथ है। इसपरसे आप लोगोको यह नतीजा निकालनेका अधिकार है कि इस काममे कायदे आजम जिनाकी भी सम्मति है। अगर यह ठीक है तो आप इस नतीजेपर पहुच सकते है कि काश्मीर और हैदराबादकी मुश्किले भी खत्म हो जायगी। और अगर मै आगे बढू, तो कहूगा कि अब सारी बाते शातिकी तरफ झुकेगी, दोनो उपनिवेश दोस्त बन जायगे और सारे काम मिल-जुलकर करेगे। मै कायदे आजमके बारेमे गवर्नर जनरलकी हैसियतसे नही सोच रहा हू। गवर्नर जनरलके नाते कायदे आजमको पाकिस्तानके कामोमे दखल देनेका कोई कानूनी हक नही है। इस नाते उनकी वही स्थिति है, जो लॉर्ड माउटबेटनकी है, जो सिर्फ एक वैधानिक गवर्नर जनरल है। लॉर्ड माउटबेटन उस व्यक्तिकी शादीमे शामिल होनेके लिए गए है, जो उनके लिए अपने लडकेसे बढकर है और जिसकी इग्लैडकी भावी महारानीसे शादी हो रही है। वे अपनी कैबिनेटकी इजाजत लेकर ही वहा जा सके है, और २४ नवबर १९४७ तक यहा वापस आ जाएगे। इसलिए जिना साहबके बारेमे मेरा खयाल है कि वे

मौजूदा मुस्लिम लीगके बनानेवाले हैं और उनकी जानकारी और इजाजतके बगैर पाकिस्तानके बारेमे कुछ नही किया जा सकता। इस-लिए मै सोचता हू कि अगर जूनागढके हिंदुस्तानी सघमे शामिल होनेके पीछे जिना साहबका हाथ है, तो यह एक अच्छा शकुन है।

आप लोगोको मैं पानीपतके अपने मुआइनेके बारेमे कुछ कहना चाहता हू। इस मुआइनेमे मौलाना अबुल कलाम आजाद मेरे साथ थे। राजकुमारी भी मेरे साथ जानेवाली थी, मगर वह गवर्नमेंट हाउसमे थी और मै अपनी घडीके मुताबिक साढे दस बजेके बाद नही ठहर सकता था। मुझे खुशी है कि मै पानीपत गया था। वहा मैने अस्पतालमे मुसलमान मरीजोको देखा। उनमेसे कुछको बहुत गहरे घाव लगे है, मगर उन-पर जहातक मुमकिन है, पूरा ध्यान दिया जाता है, क्योकि राज-कुमारीने चार डॉक्टर, नर्सें और तबीबी[1] सहायक वहा भेजे हैं। इसके बाद हम मुसलमानो, मुकामी हिंदुओ और निराश्रितोके नुमाइदोसे मिले। वहा निराश्रितोकी तादाद २० हजारसे ऊपर बताई जाती है। हमसे कहा गया कि वे रोजाना ज्यादा-ज्यादा तादादमे आते जा रहे हैं, जिससे वहाके डिप्टी कमिश्नर और पुलिस सुपरिंटेंडेंटको भय मालूम होता है। मुझे यह बतलानेमे खुशी होती है कि इन अफसरोकी हिंदू और मुसलमान दोनो बहुत तारीफ करते हैं, और निराश्रितोका तो कुछ कहना ही नही। वे तो उनसे सतुष्ट हैं ही।

म्युनिसिपल भवनके पास जमा हुए निराश्रितोसे भी हम लोग मिल सके। पाकिस्तानमे और पानीपतके अव्यवस्थित जीवनमे निराश्रितोको भयानक मुसीबते उठानी पडी और उठानी पड रही हैं—उनमेसे कुछको रेलवे स्टेशनके प्लेटफार्मपर रहना पडता है और बहुतोको आसमानके नीचे बिलकुल खुलेमे रहना पड रहा है,—फिर भी उनके मनमे और चेहरोपर जरा भी गुस्सा न देखकर मुझे बडी खुशी हुई। हमारे वहा जानेसे वे लोग बडे प्रसन्न हुए। पानी-पतके डिप्टी कमिश्नर या दूसरे लोगोको पहलेसे सूचना किये बिना इतने

---

[1] चिकित्सक।

निराश्रितोको पानीपतमे इकट्ठे कर देना मुझे अधिकारियोकी बेरहमी मालूम हुई। पानीपतके अफसरोको निराश्रितोकी सच्ची तादाद तब मालूम हुई जब ट्रेने स्टेशनके प्लेटफार्मपर आकर रुकी। यह सबसे बडी बदकिस्मतीकी बात है। पानीपतके निराश्रितोमे औरते, बच्चे और बूढे भी है। मुझे यह बताया गया कि निराश्रितोमे ऐसी औरते भी है, जिन्हे स्टेशनके प्लेटफार्मो पर बच्चे पैदा हुए है।

यह सब पूरबी पजाबमे हो रहा है, जिसके प्रधान मत्री डॉ० गोपीचद है। डॉ० गोपीचद मेरे साथी कार्यकर्ता है। मै उन्हे बहुत मानता हू। मै बरसोसे उन्हे एक योग्य सयोजकके नाते जानता हू, जिनका पजाबियोपर बडा प्रभाव है। उन्होने हरिजन-सेवक-सघ, अखिल भारत-चरखा-सघ और अखिल भारत-ग्रामोद्योग-सघके लिए काफी काम किया है। मुझे यह नही सोचना चाहिए कि पूरबी पजाबका काम उनकी ताकतके बाहर है। लेकिन अगर पानीपत उनकी कार्य-कुशलताका नमूना हो, तो यह उनकी सरकारके लिए बडी बदनामीकी बात है। पहलेसे बिना सूचना दिये इतने निराश्रित पानीपतमे क्यो उतारे गए? उन्हे ठहरानेके लिए वहा नाकाफी बदोबस्त क्यो है? अफसरोको पहलेसे ही यह सूचना क्यो नही दी जानी चाहिए कि कौन और कितने निराश्रित पानीपत भेजे जा रहे है? उसके साथ ही कल मुझे यह भी सूचना मिली है कि गुडगाव जिलेमे तीन लाख ऐसे मुसलमान है, जिन्होने डरकर अपना घर-बार छोड दिया है। आम सडकके दोनो तरफ खुलेमे इस आशासे पडे है कि उन्हे अपने औरत-बच्चो और मवेशियोके साथ पजाबकी कडी सर्दीमे २०० मीलका रास्ता तय करना है। मै इस बातमे विश्वास नही करता। मेरा खयाल है कि मुझे दोस्तोने जो बात सुनाई है उसमे कुछ गलती है। अभी भी मै आशा करता हू कि यह बात गलत है या बढा-चढाकर कही गई है। लेकिन पानीपतमे मैने जो कुछ देखा, उससे मेरा यह अविश्वास डिग गया है। फिर भी मुझे आशा है कि डॉ० गोपीचद और उनकी कैबिनेट समय रहते चेत जायगे और तबतक चैन नही लेगे, जबतक सारे निराश्रितोकी अच्छी देखभालका पूरा इतजाम

नही हो जाता । यह बदोबस्त दूरदेशी[1] और हद दरजेकी सावधानीसे ही किया जा सकता है।

: १४५ :

११ नवबर १९४७

भाइयो और बहनो,

कल मैंने आपको यह खबर सुनाई थी कि जूनागढके प्रधान मत्री और उप-प्रधान मत्रीकी विनतीपर वहाकी आरजी सरकारने जूनागढ रियासतमे प्रवेश किया है। यह खबर सुनाते हुए मुझे अचरज भी हुआ और खुशी भी हुई, क्योकि जूनागढके लोगोकी और उनके तरफसे लडी जानेवाली लडाईके इतने सुख दिखाई देनेवाले अतकी मैंने आशा नही की थी। मैंने यह डर भी जाहिर किया था कि अगर जूनागढके अधिकारियोकी विनतीके पीछे कायदे आजम जिनाकी मजूरी न हुई, तो अभीसे खुशी मनाना ठीक न होगा। इसलिए आपको यह जानकर दुख और अचरज हुए विना न रहेगा कि पाकिस्तानके अधिकारियोने जूनागढकी जनताकी तरफसे आरजी सरकारके जूनागढपर अधिकार करनेका विरोध किया है और यह माग की है कि "हिंदुस्तानी फौजे रियासतकी सीमासे हटा ली जाय, जूनागढका राजकाज वहाकी अधिकारी सरकारको सौप दिया जाय और हिंदुस्तानी सघकी जनताद्वारा रियासतपर किये गए हमले और हिंसाको रोका जाय।" उनका यह भी कहना है कि जूनागढके नवाब या वहाके दीवानको हिंदुस्तानी सघके साथ किसी तरहका अस्थायी या स्थायी समझौता करनेका कानूनी हक नही है। पाकिस्तानकी नजरमे हिंद-सरकारने यह कार्रवाई करके "पाकिस्तानकी सीमाको साफ-साफ लाघा है और इस तरह अतरराष्ट्रीय कानून का भग किया है।"

---

[1] दूरदर्शिता।

कल अखबारोमे जो बयान निकले है, उनको देखते हुए इस मामलेमे न तो मुझे अतरराष्ट्रीय कानूनका भग मालूम होता और न यूनियन सरकारकी रियासतपर कब्जा करनेकी कार्रवाई दिखाई देती है। जहातक मै समझ सकता हू, जूनागढकी जनताकी तरफसे वहाकी आरजी हकूमतने जो आदोलन किया, उसमे मुझे कोई गैर-कानूनी चीज नही दिखाई देती। यह ज़रूर है कि काठियावाडके राजाओकी विनतीपर सारे काठियावाडकी सलामतीके लिए यूनियन सरकारने अपनी फौजकी मदद भेजी। इसलिए मुझे इस सारी कार्रवाईमे कोई गैर-कानूनीपन नही दिखाई देता। इसके खिलाफ जूनागढके दीवानने जाहिरा तौरपर अपनी राय बदलकर जो कुछ किया वह गैर-कानूनी था। इस सारे मामलेको मै इस नजरसे देखता हू—जूनागढके नवाब साहबको अपनी प्रजाकी मजूरीके बिना, जिसमे मुझे बताया गया है कि ८५ फीसदी हिंदू है, पाकिस्तानमे शामिल होनेका कोई हक नही था। गिरनारका पवित्र पहाड और उसके सारे मदिर जूनागढका एक हिस्सा है। उसपर हिंदुओने बहुत पैसा खर्च किया है और सारे हिंदुस्तानसे हजारो यात्री गिरनारकी यात्राके लिए वहा जाते है। आजाद हिंदुस्तानमे सारे देशपर जनताका अधिकार है। उसका जरा-सा भी हिस्सा खानगी तौरपर राजाओका नही है। जनताके ट्रस्टी बनकर ही वे अपना दावा कायम रख सकते है, और इसलिए उन्हे अपने हर एक कामके लिए जनताके समर्थनका सबूत पेश करना होगा। यह सच है कि अभी राजा-नवाबोने यह महसूस नही किया है कि वे प्रजाके ट्रस्टी और प्रतिनिधि है और यह भी सच है कि कुछ रियासतोकी जाग्रत प्रजाको छोडकर बाकी रियासती प्रजाने, कुल मिलाकर, अभीतक यह महसूस नही किया है कि अपने राजकी सच्ची मालिक वही है। लेकिन इससे मेरेद्वारा बताए गए उसूलकी[१] कीमत कम नही होती।

इसलिए अगर दो उपनिवेशोमेसे किसी एकमे शामिल होनेका

---

[१] सिद्धान्त।

किसीको कानूनी हक है, तो वह किसी खास रियासतकी प्रजाको ही है और अगर आरज़ी[1] सरकार किसी भी स्टेजपर जूनागढकी रैयतकी नुमाइदगी[2] नही करती, तो वह अन्यायसे रियासतपर कब्जा करनेवालो-की टोलीमात्र है और उसे दोनो उपनिवेशोद्वारा निकाल दिया जाना चाहिए। अगर कोई राजा अपनी ज़ाती[3] हैसियतसे किसी उप-निवेशमे शामिल होता है, तो वह उपनिवेश दुनियाके सामने इस चीजको न्यायोचित साबित करनेके लिए खडा नही हो सकता। इस अर्थमे मेरा मत है कि जबतक यह साबित न हो जाय कि जूनागढकी प्रजाने नवाबके सघमे शामिल होनेके फैसलेपर अपनी स्वीकृतिकी मोहर लगा दी है, तबतक नवाब साहबका सघमे शामिल होना शुरूसे ही बेबुनियाद है। जूनागढ आखिर किस उपनिवेशमे शामिल हो, इस मामलेमे झगडा खडा होनेपर उसे सिर्फ सारी प्रजाकी रायसे यानी रेफरेडमके जरिए ही सुलझाया जा सकता है। यह काम ठीक तरहसे किया जाय और उसमे कही भी हिसाका या हिसाके दिखावेका उपयोग न किया जाय। पाकिस्तानकी सरकारने और अब जूनागढके प्रधान मत्रीने भी जो रुख अख्तियार किया है, उससे एक अजीब हालत पैदा हो गई है। पाकिस्तान और सघ-सरकारमे से कौन सही और कौन गलत रास्तेपर है इसका फैसला कौन करेगा ? तलवारके जोरसे कोई फैसला करनेकी बात सोची भी नही जा सकती। एकमात्र सम्मानपूर्ण तरीका तो पचोके जरिए फैसला करनेका है। देशमे बहुतसे गैर-तरफदार व्यक्ति मिल सकते है, और अगर सबधित पार्टिया हिदुस्ता-नियोको पच मुकर्रर करनेकी बातपर राज़ी न हो सके, तो कम-से-कम मुझे तो दुनियाके किसी भी हिस्सेके किसी गैर-तरफदार आदमीके चुनावपर कोई एतराज नही होगा।

जो कुछ मैंने जूनागढके बारेमे कहा है, वह काश्मीर और हैदरा-बादपर भी उसी रूपमे लागू होता है। न तो काश्मीरके महाराजा साहब और न हैदराबादके निजामको अपनी प्रजाकी सम्मतिके

---

[1] तात्कालिक, [2] प्रतिनिधित्व; [3] निजी।

वगैर किसी भी उपनिवेशमे शामिल होनेका अधिकार है। जहातक मै जानता हू, यह बात काश्मीरके मामलेमे साफ कर दी गई थी। अगर अकेले महाराजा सघमे शामिल होना चाहते, तो मै उनके ऐसे कामकी कभी ताईद नही कर सकता था। सघ-सरकार काश्मीरको थोडे समयके लिए सघमे शामिल करनेपर सिर्फ इस वजहसे राजी हुई कि महाराजा, और काश्मीर व जम्मूकी जनताकी नुमाइदगी करनेवाले शेख अब्दुल्ला—दोनो यह बात चाहते थे। शेख अब्दुल्ला इसलिए सामने आये कि वे काश्मीर और जम्मूके सिर्फ मुसलमानोके ही नही वल्कि सारी जनताके नुमाइदे होनेका दावा करते है।

मैने लोगोको यह कानाफूसी करते सुना है कि काश्मीरको दो हिस्सोमे बाटा जा सकता है। इनमेसे जम्मू हिंदुओके हिस्से आएगा और काश्मीर मुसलमानोके हिस्से। मै ऐसी बटी हुई वफादारी और हिंदुस्तानी रियासतोके कई हिस्सोमे बटनेकी कल्पना नही कर सकता। इसलिए मुझे उम्मीद है कि सारा हिंदुस्तान समझदारीसे काम लेगा और कम-से-कम उन लाखो हिंदुस्तानियोके लिए, जो लाचार निराश्रित बननेके लिए बाध्य हुए है, तुरत ही इस गदी हालतको टाला जायगा।

: १४६ :

१२ नवबर १९४७

भाइयो और बहनो,

आज दीवालीका दिन है, इसलिए मै आप सबको बधाई देता हू। हमारे हिंदू सालका यह बहुत बडा दिन है। विक्रम-सवत्के मुताबिक नया साल कल गुरुवारसे शुरू होगा। आपको यह समझना चाहिए कि दीवालीका दिन हमेशा रोशनी करके क्यो मनाया जाता है। राम और रावणके बीचकी भारी लडाईमे राम भलाईकी ताकतोके प्रतीक

थे और रावण बुराईकी ताकतोंका। रामने रावणपर विजय पाई, और इस विजयसे हिंदुस्तानमे रामराज्य कायम हुआ।

लेकिन अफसोस है कि आज हिंदुस्तानमे रामराज्य नही है। इसलिए हम दीवाली कैसे मना सकते है? वही आदमी इस विजयकी खुशी मना सकता है, जिसके दिलमे राम है। क्योकि भगवान ही हमारी आत्मा को रोशनी दे सकता है, और ऐसी ही रोशनी सच्ची रोशनी है। आज जो भजन गाया गया, उसमे कविकी भगवान-को देखनेकी इच्छापर जोर दिया गया है। लोगोकी भीड दिखावटी रोशनी देखने जाती है, लेकिन आज हमे जिस रोशनीकी जरूरत है वह तो प्रेमकी रोशनी है। हमारे दिलोमे प्रेमकी रोशनी पैदा होनी चाहिए। तभी सब लोग बधाइया पाने लायक बन सकते है। आज हजारो-लाखो लोग भयानक दुःख भोग रहे है। क्या आप लोगोमेसे हर एक अपने दिलपर हाथ रखकर यह कह सकता है कि हर दुःखी आदमी या औरत—फिर वह हिंदू, सिख या मुसलमान कोई भी हो—मेरा सगा भाई या बहन है? यही आपकी कसौटी है। राम और रावण भलाई और बुराईकी ताकतोके बीच हमेशा चलनेवाली लडाईके प्रतीक है। सच्ची रोशनी भीतरसे पैदा होती है।

पडित जवाहरलाल नेहरू जख्मी काश्मीरको देखकर कैसे दुःखी मनसे अभी-अभी लौटे है। वे कल और आज तीसरे पहरकी वर्किंग कमेटीकी बैठकोमे शामिल नही हो सके। वे मेरे लिए बारामूलासे कुछ फूल लाये है। कुदरतकी यह भेट मुझे हमेशा सुदर मालूम होती है। लेकिन आज लूट-पाट और खूरेजीने[1] उस सुहावनी धरतीकी सारी सुदरता बिगाड दी है। जवाहरलालजी जम्मू भी गए थे। वहाकी हालत भी बहुत अच्छी नही है।

सरदार पटेलको श्री शामलदास गाधी और ढेबरभाईकी विनती-पर जूनागढ जाना पडा, जो उनकी रहनुमाई चाहते थे। जिना साहब और भूटो साहब दोनो नाराज है, क्योकि उन्हे लगता है कि

[1] रक्तपात।

हिंद-सरकारने उन्हे धोखा दिया है और वह जूनागढको यूनियनमे शामिल होनेके लिए दवा रही है।

सारे देशमे शाति और सद्भावना कायम करनेके लिए हर एकका यह फर्ज है कि वह अपने दिलसे नफरत और शकको निकाल दे। अगर आप अपनेमे भगवानकी हस्ती[१] महसूस नही करेगे और अपने सारे छोटे-छोटे आपसी झगडोको नही भूलेगे, तो काश्मीर या जूनागढकी विजय वेकार सावित होगी। जवतक आप डरके मारे यहासे भागे हुए सारे मुसलमानोको वापस हिंदुस्तान नही लाते, तवतक सच्ची दिवाली नही मनाई जा सकती। अगर पाकिस्तानने वहासे भागे हुए हिंदुओ और सिखोके साथ ऐसा ही नही किया, तो वह भी जिंदा नही रह सकेगा।

(इसके वाद गाधीजीने अपने ब्राडकास्ट-भवन जानेका जिक्र किया, जहासे उन्होने रेडियोपर कुरुक्षेत्रके निराश्रितोको सदेश दिया था। काग्रेस वर्किंग कमेटीकी वैठकोके वारेमे गाधीजीने कहा—)

कल मै इनके वारेमे जो मुमकिन होगा, कहूगा। मुझे उम्मीद है कि अगले साल, जो गुरुवारसे शुरू होनेवाला है, आप और हिंदुस्तान, सुखी रहेगे और भगवान आपके दिलोको प्रकाशित करेगा, ताकि आप आपसमे एक दूसरेकी और हिंदुस्तानकी ही नही, वल्कि उसके जरिए सारी दुनियाकी सेवा कर सके।

: १४७ :

१३ नववर १९४७

भाइयो और वहनो,

कल दिवाली थी और आज नए वर्षका पहला दिन है। मैंने सुना है और कल रातको तो और भी ज्यादा सुना कि दिल्लीमे

---

[१] अस्तित्व।

दिवालीके रोज बहुत रोशनी होती है, जैसी बबईमे होती है और शायद उससे भी ज्यादा होती है। बबईमे तो बहुत बडी रोशनी होती है। लेकिन कल मै यह सुनकर खुश हुआ कि लोग समझ गए है कि आज दिवालीका उत्सव मनानेका दिन है ही नही। मगर तो भी एक भ्रमणा[1] पैदा हो गई है कि दिवालीपर कुछ-न-कुछ बत्तिया तो जलानी ही चाहिए, इसलिए किसी-किसी जगहपर थोडे तेलके दीपक जल रहे थे और बिजलीकी बत्तिया भी थी, लेकिन बहुत कम। मै घरसे बाहर तो कही जाता नही, मगर पता तो चल ही जाता है।

आजसे नया वर्ष आरभ होता है। मैने कल इशारा तो किया था, लेकिन अच्छा है कि मै आज फिर दुहरा दू। नए वर्षके दिनमे कोई शुभ-चिंतन या कोई शुभ इरादा कर लेते है और पीछे ईश्वरकी कृपा बनी रहे तो सारे वर्षभर उसपर चलनेकी कोशिश करते है। ऐसा अगर हम करे और आज जो फिजा[2] है, वह बदल जाय और हिंदू-मुसलमान सब भाई-भाई बनकर रहते है, तब दूसरी जो दिवाली हमारे सामने आती है, उस वक्त हमे दिये-बत्तिया जलानेका अधिकार हो जाता है। अगर हम एक-दूसरेको दुश्मन मानकर बैठ जाते है तो पीछे कोई काम बनता नही है। इसलिए मैने कहा कि आज तो बाहरकी दिवाली मनानेका अवसर है ही नही। लेकिन दिलमे जो ज्योति होनी चाहिए उसको प्रकट करनेकी कोशिश हमे करनी है। हमारे दिलमे राम विराजमान है और वहा भी युद्ध चलता है राम और रावणके बीचमे। अगर हृदयमे, उसके बाहर नही, रामपर रावणकी जीत होती है तो उसका मतलब है कि हृदयमे ज्योति नही है, अंधेरा है। अगर रामकी रावणपर जय होती है और रावण बेकार हो जाता है या परास्त हो जाता है, तब हमारे भीतर तो ज्योति है ही, बाहर भी दिये-बत्ती जलानेका हमको हक हो जाता है। इसलिए अगर बाहरकी रोशनी भीतरकी ज्योतिका ही नमूना

---

[1] भ्रमधारण; [2] हालत।

है तब तो खैर है और अगर भीतर अधेरा है और बाहर हम दिये-बत्ती जलाते है और ऐसा मान लेते है कि यह तो सब चलता है, तब हम पाखडी और झूठे बनते है। मेरी उम्मीद है कि हम झूठे तो कभी न बने।

मैने कल आपसे कहा था कि काग्रेस-कार्य-समितिकी जो बैठके हो रही है, उस बारेमे कुछ तो मै आपसे कह सकूगा। कल तो समय नही रहा था, क्योकि १५ मिनटसे ज्यादा तो मै लेना नही चाहता। आज कार्यसमितिकी बैठकका तीसरा दिन है और अभी भी वह बैठी हुई है। एक बात तो जो बहुत बडी मुझको आपसे कहनेका अधिकार है, वह यह कि आज तीन दिनसे काग्रेसके ये लोग, जो कि कार्य-समितिमे है और दूसरे भी जिनको कि आचार्य कृपलानीने विशेष रूपसे बुलाया है, सब बैठे है। यह अच्छी बात है कि सब ऐसा मानते है कि काग्रेसकी, जबसे वह बनी है तबसे, अर्थात् ६० वर्षसे, यही एक नीति रही है कि काग्रेस कोई धर्मका प्रचार करनेवाली सस्था नही है। काग्रेसमे सब धर्मोके माननेवाले है या ऐसा कहो कि सब धर्मियोकी है, इसलिए किसी एक धर्मकी नही है। वह आम लोगोकी सस्था है और जो राज्य-प्रकरण है उसको मद्दे-नजर रखकर ही काग्रेसको चलना है। ऐसे अगर वह चलती है तो पीछे वह धार्मिक सस्था नही रहती। मान लीजिए, राज्य-प्रकरणमे एक चीज यह है कि हमे सबको खाना देना है, तब अगर काग्रेस सच्ची है तो उसे जितने इन्सान यहा रहते है उन सबको खाना देना चाहिए। अगर काग्रेस ऐसा करे कि जो लोग उसके साथ है या ऐसा कहो कि हिदुओ और सिखोको ही खाना दे, क्योकि वे उसमे बडी तादादमे है और बाकी लोग भूखो मरे और ऐसा कहे कि हमको उनकी क्या पर्वाह पडी है, तब वह कहनेमे तो धार्मिक सस्था होगी, लेकिन असलमे अधर्मकी सस्था बन जायगी। अगर वह यह कहे कि जो लोग इसके पीछे है उनकी सेवा करो और दूसरोको काटो, तो वह कोई धर्म नही, बल्कि धर्मके नामपर अधर्म करना हुआ।

लेकिन अगर मै रामका नाम लेता हू, और कोई दूसरा नाम नही

लेता, तो मुझे कोई कानून उसके लिए मजबूर नही कर सकता। यह बात दूसरी है कि मै खुद अपनेको मजबूर करू या अपनेको ऐसा बुज-दिल मानू कि अरे, फला आदमी है, उसके हाथमे तलवार है, अगर मैने ऐसा नही किया तो वह मेरा गला काट देगा। अगर मै बुजदिल नही हू, तो जो यह कहता है कि खबरदार, तू रामका नाम इस जगहपर लेता है, तुझे अल्लाका ही नाम लेना होगा, तब मुझको यह हक होना चाहिए और हक है कि उसको यह कह दू कि मै अल्लाका नही, रामका ही नाम लूगा। तब वह इतना ही कर सकता है न, कि मेरा गला काटे, तो काट डाले। वह धर्मकी बात हो गई, जिसे हम निजी धर्म या व्यक्तिगत धर्म कहते है। इस धर्मको मिटानेवाली कोई ताकत दुनियामे है ही नही। हा, आदमी अपने आप मिटाना चाहे तो मिट सकता है या तब मिटता है जब दिलमे ज्योति न होकर अधेरा-ही-अधेरा होता है। उस हालतमे उसे अपने दिलसे तो कुछ सूझता नही, किसी दूसरेका सहारा ले लेता है, या कोई दूसरा उसको कहता है कि ऐसे चल, इस वक्त चल, तो वैसे ही वह चलता है, क्योकि वह अधेरेमे पडा हुआ होता है। लेकिन जो आदमी धर्मको पकडकर बैठा है, वह तो ईश्वरका ही आदेश मानेगा, किसी दूसरेका नही। ऐसे ही जब कोई सस्था चलती है और लोगोकी भलाईके लिए चलती है तो वह चीज सबके लिए लागू हो सकती है जो धर्म-सगत होती है, कोई दूसरी चीज नही। इस तरहसे वह एक अधर्मकी सस्था नही, धर्मकी सस्था बन जाती है। यही राज्य-प्रकरणका मेरी निगाहमे सच्चा अर्थ है और जबसे काग्रेसका जन्म हुआ है तबसे ही वह ऐसे चली है। इसलिए आपको खुश होना चाहिए, चाहे आप काग्रेस-मे है या नही। मै भी तो काग्रेसमे नही हू, उससे क्या हुआ? आखिर मै काग्रेसका खिदमतगार रहा हू, उसकी सेवा की है। तब चवन्नी नही देता हू तो क्या? मुझको अगर प्रेसिडेट बनना है तो चवन्नी देनी चाहिए, लेकिन वह भी नही। ऐसे अगर आप सब मेरी तरहसे है तो बडी भारी बात है। अगर आपने काग्रेसके दफ्तरमे रजिस्टर करा लिया है तो भी ठीक है, अगर बाहर है, और फिर भी काग्रेसके भक्त है

और उसकी सेवा करते है तो भी ठीक है। तीन दिनसे मै काग्रेस-कार्य-समितिमे बैठा हू। उसमे इख्तलाफ[१] राय है और काफी है। आखिर वे इन्सान है, कोई पत्थर तो है नही, एक एक बात कहता है तो दूसरा दूसरी। विचारका विरोध तो हो सकता है, लेकिन आचारमे विरोध नही होना चाहिए। इसलिए इस विचार-विरोधमे ही उन्होने तीन दिन काटे। लेकिन इतना तो सब चाहते है कि काग्रेस जैसी आजतक रही है, ऐसी ही रहनी चाहिए। ऐसा करनेमे अगर वह मिट भी जाती है, तो मिट जाय। मिट तो नही सकती, हा, अल्पमतमे हो सकती है, और आज वह बहुमतमे है, इसमे मुझको तो शक है। क्योकि अगर वह बहुमतमे होती तो हिंदुस्तानमे जो पाकिस्तान-जैसी चीज बनी, बननी नही चाहिए थी। यहा हिंदुस्तानमे मुसलमानोपर कितनी ज्यादतिया हुई है, उनके मै तो आपको बहुतसे उदाहरण बता सकता हू, लेकिन मै क्या बताऊ ? मुझसे ज्यादा आप खुद जानते है। पाकिस्तानमे हिंदू और सिखोपर क्या कम ज्यादतिया हुई है, इस बातको छोड दो। यह देखना हमारा काम नही है। दुनियाके दूसरे लोग धर्मका पालन नही करते, इसलिए क्या मै भी अपने धर्मका पालन न करू ? इसलिए काग्रेसको जो उसका मौलिक धर्म है, उसपर कायम रहना है, चाहे वह बहुमतमे रहे या अल्पमतमे। उसी निगाहसे वह अपना प्रस्ताव बना रही है। वह सीधी और सच्ची तरहमे बात करना चाहती है। तब सच्ची बात और क्या हो सकती है सिवा इसके, कि हम एक भी मुसलमानको मजबूर करके यहासे बाहर नही भेजना चाहते। मुसलमान भले है या बुरे है, यह बात इसमे नही आती। क्या हम ऐसा कहते है कि हिंदुस्तानमे सब फरिश्ते[२] ही रह सकते है, या फरिश्ते भी न सही, तो क्या जो अच्छे और भले लोग है, केवल वही रह सकते है, तब क्या हिंदुओ और सिखोमे कोई बुरे या बदमाश आदमी है ही नही और अगर है तो उनको आप क्या कहेगे ? क्या यह कहोगे कि यहासे चले जाओ,

---

[१] भिन्नता; [२] देवदूत।

नही तो तलवारसे गला कट जायगा। किसी आदमीको बदमाश मानने या उसका गला काटनेका आपको कोई हक नही है। हमने मुसलमानो-पर ज्यादतिया की। रोज-ब-रोज मेरे पास ऐसी चीजे आती रहती है, उनमे अतिशयोक्ति हो सकती है, लेकिन आखिर निचोड मे यही पाता हू कि वे सब सच्ची बातें है। काग्रेसकी तरफसे जब कोई चीज की जाती है तो फिर काग्रेस महासमितिको बुलाना पडता है। काग्रेसका आम अधिवेशन तो वर्पमे एक बार हुआ करता है। वह तो एक तमाशा-सा होता है, क्योकि वह इतना हजूम[1] होता है कि कोई आदमी ठीक तरहसे सोच भी नही सकता। लेकिन वे लोग जानते है कि काग्रेसकी जो महासमिति बनी है, वह सब सोच-विचारकर ठीक काम ही करती है, इसलिए वे सब उसपर दस्तखत दे देते है। सो काग्रेस महासमिति हमेशा तैयार रहती है और वह परसो यहा मिलनेवाली है। उसके सामने जो कुछ सामान रखना है वह आपकी इस कार्यसमितिको ही रखना है। वह काग्रेस महासमितिकी नौकर है। अगर वह कोई चीज बनाकर उनके सामने नही रखती है तो पीछे वे कह सकते है कि तुमने अच्छा काम नहीं किया है और तब उसको इस्तीफा देना पडता है। काग्रेस महासमिति कार्य-समितिको बना सकती है और मिटा भी सकती है। अगर वह कार्य-समितिकी चीजको बहाल न करे या उसमे कोई बडी तब्दीली[2] कर दे तब भी उसको इस्तीफा देना चाहिए। इसलिए कार्य-समिति कहती है कि हम जो कुछ करना चाहते है वह आपके सामने ही करना है। अगर अपने सामने ही वह कुछ कहती है तो उसका उतना असर नही होता। क्योकि १५ आदमी जमा होकर वह कहते है कि किसी मुसलमानको कत्ल नही करना है तो १५ आद-मियोके माननेसे क्या हुआ? अगर महासमितिके सामने कहते है तो उसका असर बहुत बढता है। इसलिए तीन दिनसे मै तो काग्रेस-कार्यसमिति-को यही सलाह दे रहा हू कि वह बिलकुल साफ-साफ कह दे कि हमको यही करना है। लोग इसमे राजी रहते है या नाराज, इसकी हम

---

[1] भीड़, [2] परिवर्तन।

कोई फिक्र न करे। अगर हम काग्रेसके सच्चे सेवक है तो हमको यही करना चाहिए। अगर काग्रेस महासमिति उसको फेकना चाहे तो फेंक दे। आखिर हमको जगतके सामने खडा होना है और पाकिस्तानको भी। हम वहुत-सी वाते इसलिए करते है कि हमको जगत क्या कहेगा। मै तो कहता हू कि जिस वातको आप सच मानते है वही करे और पीछे जगत भी उसको सच ही कहेगा। जो पच कहता है वह परमेश्वरकी आवाज होती है, ऐसा कहते है। जो जगत है, वह पचके समान है। इसलिए जो जगत कहता है, वही सही तरीकेसे ईश्वर-का न्याय है।

आज कार्यसमिति वैठी हुई है और कल भी वैठनेवाली है। मेरी तो यही प्रार्थना है कि वह काग्रेस महासमितिके सामने ऐसा प्रस्ताव रखे जिससे हिंदुस्तानकी जय हो और सव लोग यहा आरामसे रह सके। इसके यह मानी नही है कि जो देशद्रोही हो उनको भी हम कुछ न कहे। लेकिन हम किसीको देशद्रोही मानकर ही न वैठ जाय। अगर कोई वास्तवमे देशद्रोही सिद्ध होता है तो उसको चाहे कत्ल कर दो, फासीपर चढा दो, गोली मार दो। पर मुसलमान वफादार हो नही सकता और केवल हिंदू व सिखोने ही वफादारीका इजारा ले लिया है, तो मै कहता हू कि यह वडी गुनाहकी वात होगी। काग्रेस तो ऐसा काम नही करेगी, मुझको ऐसा पूरा विश्वास है। आप भी यही प्रार्थना करे कि काग्रेस जो हिदायत करे उससे हम भी ऊचे जाय, सारा हिंदुस्तान ऊचा जाय और उसके साथ दूसरे हिस्सो-को भी ऊचा जाना है। काग्रेस हिंदुस्तानको ऊचा उठानेके लिए ही वनी है, लेकिन काग्रेस किसीसे कुछ छीनकर या किसीका धन लूटकर ऊचे नही जाना चाहती। सारे जगतके लिए काग्रेस मरेगी, मगर वह किसीको मारेगी नही। मै काग्रेसमे आया तवसे ही नही, कई वर्षोसे काग्रेसका यह उद्देश्य रहा है। काग्रेसने हमेशा इस वातकी कोशिश की है कि यूरोपसे जो लोग धन लूटनेके लिए इधर आते है, वह लूट वद हो, ताकि एशिया और अफ्रीकाके लोग चैनसे रह सके। यह काम करनेके लिए ही हिंदुस्तानको जिदा रहना है और

इसी कामके लिए हिंदुस्तानकी आजादी है, किसी दूसरे कामके लिए नही है।

: १४८ :

१४ नवबर १९४७

(आज शामके भजनको ही गाधीजीने अपनी चर्चाका विषय बनाते हुए कहा—)

भाइयो और बहनो,

जब मैं आगाखान महलमे, जिसे मुझे, देवी सरोजिनी नायडू, मीराबेन और महादेवभाईको बद रखनेके लिए कैदखानेका रूप दे दिया गया था, उपवास कर रहा था, तब इस भजनने मुझपर अपना अधिकार कर लिया था। यहा मै उपवासके कारणोमे नही जाना चाहता।

उसके बारेमे मैं सिर्फ इतना ही कहना चाहता हू कि उन २१ दिनोतक मैं जो टिका रहा, उसकी वजह वह पानी नही था, जो मै पीता था, न वह सतरेका रस ही था जो कुछ दिनोतक मैंने लिया था, जो मेरी गैरमामूली डाक्टरी देखरेख हो रही थी, वह भी उसका कारण नही थी, मगर मैंने अपने भगवानको, जिसे मै राम कहता हू, अपने दिलमे बसा रखा था, उसी वजहसे मै टिका रहा। मै इस भजन-की लकीरोपर इतना मोहित था कि मैंने सबधित लोगोसे कहा कि वे तारके जरिए इसके ठीक-ठीक शब्द भेजे, जिन्हे मै उस वक्त भूल गया था। मुझे जवाबी तारसे जब वह पूरा भजन मिला तो बडी खुशी हुई। भजनका भाव यह है कि रामनाम ही सब कुछ है और उसके सामने दूसरे देवताओका कोई महत्त्व नही है। अपने जीवनकी यह उपदेश भरी कहानी मैं आप लोगोको इसलिए सुनाना चाहता हू कि अगले दिन यानी शनिवारको नई दिल्लीमे ए० आई० सी० सी० का जो महत्त्वपूर्ण अधिवेशन होनेवाला है, उसमे उसके मेबर अपने दिलोमे

भगवानको रखकर सारे विचार और सारी चर्चाए करे। यह उन्हे करना ही होगा, क्योकि वे काग्रेसियोके नुमाइदे है। और इसलिए अगर उनके मुखिया काग्रेसी अपने दिलोमे भगवानके वजाय शैतानको रखते है, तो वे अपने नमकके प्रति इन्साफ नही करते।

ए० आई० सी० सी० के सामने रखे जानेवाले प्रस्तावोपर वर्किग कमेटीने पूरे तीन घटोतक चर्चा की। चर्चामे यह सवाल उठा कि किस तरह ऐसा वातावरण तैयार किया जाय जिससे सारे हिंदू और सिख निराश्रित इज्जत और हिफाजतके साथ पश्चिमी पजावमे अपने-अपने घरोको लौटाये जा सके। वे इस नतीजेपर पहुचे कि वुराई पाकिस्तानसे ही शुरू हुई, मगर उन्होने यह भी महसूस किया कि जव वडे पैमानेपर उस वुराईकी नकल की गई और हिदुओ और सिखोने पूरवी पजाव और उसके नजदीकके यूनियनके हिस्सोमे भयकर वदले लिये, तो वुराईकी शुरूआत करनेका वह सवाल फीका पड गया। अगर ए० आई० सी० सी० विश्वासके साथ यह कह सकती कि जहातक यूनियनका ताल्लुक है, पागलपनके दिन वीत गए और यूनियनके एक सिरेसे दूसरे सिरेतक सव लोग समझदार वन गए है, तो कमेटी पूरे विश्वास-के साथ यह भी कह सकती थी कि पाकिस्तान डोमिनियनको हिंदू और सिख निराश्रितोको इज्जत और पूरी हिफाजतके साथ अपने यहा वापस वुलानेके लिए लाचार होना पडेगा। यह हालत सिर्फ तभी पैदा की जा सकती है जव आप लोग और दूसरे हिंदू और सिख रावण या शैतानके वदले राम यानी भगवानको अपने दिलोमे स्थापित करे। क्योकि जव आप शैतानको अपने दिलोसे हटा देगे और मौजूदा पागलपनको छोड देगे, तव हर एक मुसलमान वच्चा भी यहा उतनी ही आजादीसे घूम-फिर सकेगा, जितनी आजादीसे एक हिंदू या सिखका वच्चा घूमता है। इसमे मुझे कोई शक नही है कि तव जो मुसलमान निराश्रित लाचार होकर अपने घर छोड गए है, वे खुशीसे लौटेगे और तव हर एक हिंदू और सिख निराश्रितके हिफाजत और इज्जतके साथ पाकिस्तानमे अपने घर लौटनेका रास्ता साफ हो जायगा।

क्या मेरे शब्द आप लोगोके दिलोमे गूज सकेगे और ए० आई० सी० सी० समझदारी और इन्साफभरा फैसला कर सकेगी ?

: १४६ :

१५ नवबर १९४७

भाइयो और बहनो,

मै महसूस करता हू कि आप लोग स्वभावत यह उम्मीद करेगे कि दोपहरको ए० आई० सी० सी० की बैठकमे मैने जो कुछ कहा है वह आप लोगोको बतलाऊ। मगर मेरी उसे दोहरानेकी इच्छा नही होती। दर असल मैने वहापर वही बात कही थी, जो मै आप लोगोको इतने दिनोमे कहता रहा हू। अगर मुझे पूरी ईमानदारीसे राष्ट्रका पिता कहा जाता है, तो सिर्फ इसी अर्थमे सच है कि सन् १९१५ मे मेरे दक्खिन अफ्रीकासे लौटनेके बाद काग्रेसका जो स्वरूप बना, उसके बनानेमे मेरा बडा हाथ था। इसका मतलब यह है कि देशपर मेरा बडा असर था। मगर आज मै ऐसे असरका दावा नही कर सकता। इससे मुझे चिता नही है, कम-से-कम वह होनी नही चाहिए। सबको सिर्फ अपना फर्ज अदा करना चाहिए और नतीजेको भगवानके हाथोमे छोड देना चाहिए। भगवानकी मर्जीके बगैर कुछ भी नही होता। हमारा फर्ज सिर्फ कोशिश करना है। इसलिए मै तो ए० आई० सी० सी०की बैठकोमे इस फर्जको ध्यानमे रखकर गया था कि अगर बैठककी कार्रवाई शुरु होनेसे पहले मेम्बरोने कुछ कहनेकी मुझे इजाजत मिल गई, तो मै उनके सामने वह बात रख दू जिसे मै सच मानता हू।

आप लोगोमे मै कट्रोलके बारेमे कुछ कहना चाहता हू। ए० आई० सी० सी०की बैठकमे चूकि मै मौजूदा अहमियत[1] रखनेवाले दूसरे

---

[1] महत्त्व।

मामलोपर ज्यादा देरतक बोला, इसलिए कट्रोलके विषयका सिर्फ इशाराभर कर सका।

मै महसूस करता हू कि कट्रोल रखना गुनाह है। कट्रोलका तरीका लडाईके दिनोमे अच्छा रहा होगा। एक फौजी देशके लिए वह आज भी अच्छा हो सकता है। मगर हिंदुस्तानके लिए वह नुकसानदेह है। मुझे विश्वास है कि देशमे अनाज या कपडेकी कोई कमी नही है। इस साल बरसातने हमे धोखा नही दिया है। हमारे देशमे काफी कपास है और चरखे और करघेपर काम करनेवाले काफी लोग है। इसके अलावा, देशमे मिले है। इसलिए मुझे लगता है कि ये दोनो कट्रोल बुरे है। हमारे यहा दूसरे कट्रोल भी है, जैसे पेट्रोल, शक्कर वगैराका कट्रोल। इन चीजोपर कट्रोल रखनेमे मै कोई मौजू[1] कारण नही देखता। इससे लोग आलसी और पराधीन बनते है। आलस और पराधीनता देशके लिए किसी भी दिन बुरी चीजे है। इन कट्रोलोके बारेमे मेरे पास रोजाना शिकायते आती है। मुझे उम्मीद है कि देशके नुमाइदे समझदारी-भरा फैसला करेगे और सरकारको इन घूसखोरी, पाखड और काले बाजारको बढावा देनेवाले कट्रोलोको हटानेकी सलाह देगे।

: १५० :

१६ नवबर १९४७

भाइयो और बहनो,

आज शामको गाये गए भजनमे कहा गया है कि इन्सानका बडे-से-बडा उद्योग भगवानको पानेकी कोशिश करनेमे है। वह मदिरो, मूर्तियो या इन्सानके हाथो बनाई हुई पूजाकी जगहोमे नही मिल सकता और न उसे व्रतो और उपवासोके जरिए ही पाया जा सकता है। ईश्वर सिर्फ प्यारके जरिए मिल सकता है, और वह प्यार लौकिक नही अलौकिक

---

[1] उचित।

होना चाहिए। मीराबाई, जो हर चीजमें भगवानको देखती थीं, ऐसे प्यारकी जिंदगी बिताती थीं। उनके लिए भगवान ही सब कुछ था।

रामपुर स्टेटके शासक मुसलमान हैं, मगर इसका यह मतलब नहीं है कि वह एक मुस्लिम स्टेट है। कई साल पहले मरहूम[1] अलीभाई मुझे वहा ले गए थे और मैं वहा उनके घरमें ठहरा था। मुझे उस वक्तके नवाब साहबसे भी मिलनेका मौका मिला था। क्योंकि वे उस जमानेके मशहूर राष्ट्रीय मुसलमान मरहूम हकीम साहब अजमलखान और मरहूम डॉक्टर अंसारीके दोस्त थे। तब वहा हिंदू और मुसलमान आजके बनिस्बत ज्यादा शांति और मेल-जोलमें रहते थे। मगर पिछले इतवारको जो हिंदू दोस्त वहासे मुझे मिलनेके लिए आए थे, उन्होंने दूसरी ही कहानी सुनाई। उन्होंने कहा कि अगरचे वह स्टेट हिंदुस्तानी सघमें शामिल हो गई है, फिर भी मुस्लिम लीगका छल-कपटभरा असर वहा है। अगर वही एक रुकावट होती, तो उसपर आसानीसे काबू पाया जा सकता था। मगर वहा हिंदू महासभा भी है, जिसे राष्ट्रीय स्वयंसेवक-सघके आदमियोंसे मदद मिलती है, जिनकी इच्छा यह है कि सारे मुसलमानोंको हिंदुस्तानी सघमें निकाल दिया जाय।

सवाल यह है कि जो कांग्रेस-जन अपने कांग्रेसके मकसदके प्रति वफादार हैं, वे अपनी हालत कैसे अच्छी बनावें? क्या वे कामयाबीकी आशासे सत्याग्रह कर सकते हैं? यह जानकर उन लोगोंको खुशी हुई कि कांग्रेस महासमिति कांग्रेसके मकसदपर मजबूतीसे जमी हुई है और ऐसे हिंदुस्तानके बननेसे इन्कार करती है, जिसमें सिर्फ हिंदू ही मालिकों-जैसे रह सकें। कांग्रेसके उसूल और मकसद इतने उदार हैं कि उसमें देशकी सारी जातियां शामिल हो जाती हैं। उसमें ओछी साम्प्रदायिकताके लिए कोई जगह नहीं है। यह सियासी संस्थाओंमें सबसे पुरानी है। लोगोंकी सेवा ही उसका एकमात्र मकसद है। ए० आई० सी० सी० में जो कुछ हो रहा है, उससे उन्हें अपनी तरक्कीके लिए बल

[1] स्वर्गीय।

मिला है। फिर भी, इसके वारेमे वे मेरी राय चाहते थे। मैने कहा कि मै आपके वहाकी हालत नही जानता, इसलिए कोई नियम तो नही वना सकता। न मुझे उन सव वातोका अध्ययन करनेका समय है। लेकिन इतना तो मै विश्वासके साथ कह सकता हू कि सत्याग्रह दुनियामे सबसे वडी ताकत है, जिसके सामने आपका वताया हुआ विरोधी सगठन लवे समयतक टिक नही सकता।

आजकल हथियारवद या दूसरी तरहके किसी भी विरोधको सत्याग्रहका नाम देना एक फैशन-सा हो गया है। इससे समाजको नुकसान होता है। इसलिए अगर आप लोग सत्याग्रहके पूरे अर्थको समझ ले और यह जान ले कि सत्य और प्रेमके रूपमे जीता-जागता भगवान सत्याग्रहीके साथ रहता है, तो आपको यह माननेमे कोई हिचकिचाहट नही होगी कि सत्याग्रहपर कोई विजय नही पा सकता। हिंदू-महासभा और राष्ट्रीय स्वयसेवक-सघके वारेमे मुझे जो कहना पडा है उसका मुझे दु ख है। मुझे अपनी गलती जानकर खुशी होगी। मै राष्ट्रीय, स्वयसेवक-सघके मुखियासे मिला हू। मै इस सघकी एक बैठकमे भी शामिल हुआ था। तवसे मुझे उसकी वैठकमे जानेके लिए डाटा जाता रहा है और मेरे पास राष्ट्रीय स्वयसेवक-सघके वारेमे शिकायतोके कई खत आए है।

हालाकि हम सव अपने देशमे साप्रदायिक झगडेकी आगको वुझानेमे लगे है, तो भी हमे हिदुस्तानके वाहर रहनेवाले अपने भाइयोको नही भूलना चाहिए। आप जानते है कि सयुक्त-राष्ट्र-सघके सामने हमारा हिदुस्तानी प्रतिनिधि-मडल दक्षिण अफ्रीकाके हिदुस्तानियोके अधिकारोके लिए कितनी वहादुरी और एकतासे लड रहा है। आप सव श्रीमती विजयलक्ष्मी पडितको जानते है। वह हिंदुस्तानी नुमाइदा-मडलकी मुखिया इसलिए नही है कि पडित जवाहरलालकी वहन है, वल्कि इसलिए है कि वह इसके लायक है और अपना काम होशियारीसे करती है। उनके साथ वडे अच्छे-अच्छे लोग है और वे सव एक रायसे वहा वोलते है। मुझे सवसे वडी खुशी जफरुल्ला साहव और इस्पहानी साहवके भाषणोसे हुई, जो आजके अखवारोमे छपे

है। उन्होने सयुक्त राष्ट्र-सघके लोगोके सामने साफ-साफ शब्दोमे यह कह दिया कि दक्षिण अफ्रीकामे हिंदुस्तानियोके साथ वही वरताव नही किया जाता जो गोरोके साथ किया जाता है। वहा उनकी वेइज्जती की जाती है और उनके साथ अछूतोकी तरह वरताव करके उनका वहिष्कार किया जाता है। यह सच है कि दक्षिण अफ्रीकाके हिंदुस्तानी कगाल और भूखे नही है। लेकिन आदमी सिर्फ रोटीसे ही नही जी सकता। मानव-अधिकारोके सामने पैसा कोई चीज नही है। और ये हक दक्षिण अफ्रीकाकी सरकार हिंदुस्तानियोको नही देती। हिंदुस्तानके हिंदू और मुसलमान विदेशोमे रहनेवाले हिंदुस्तानियोके सवालोपर दो-राय नही है, जो यह सावित करता है कि दो राष्ट्रोका उसूल गलत है। इससे मैने जो सवक सीखा है, और आप लोगोको मेरे कहनेसे जो सवक सीखना चाहिए, वह यह है कि दुनियामे प्रेम सबसे ऊची चीज है। अगर हिंदुस्तानके वाहर हिंदू और मुसलमान एक आवाजसे वोल सकते है, तो यहा भी वे जरूर ऐसा कर सकते है, वशर्ते उनके दिलोमे प्रेम हो। गलती इन्सानसे होती ही है। लेकिन वह चाहे तो अपनी गलतियोको सुधार भी सकता है। यह भी इन्सानके स्वभावमे है। माफ करना और भूल जाना हमेशा सभव है। अगर आज हम ऐसा कर सके और वाहरकी तरह हिंदुस्तानमे भी एक आवाजसे वोल सके, तो हम आजकी मुसीवतोसे पार हो जायगे। जहातक दक्षिण अफ्रीकाका सवध है, मुझे आशा है कि वहाकी सरकार और वहाके गोरे उस वातसे फायदा उठाएगे जो इस मामलेमे मशहूर हिंदू और मुसलमान एक रायसे साफ-साफ कह रहे है।

: १५१ :

मौनवार, १७ नववर १९४७

(लिखित सदेश)

कल मै रामपुर और अपने उन भाइयोके वारेमे वोला था जो

दक्षिणी अफ्रीकामे है। मुझे लगता है कि आज मुझे इस विषयपर ज्यादा खुलकर कहना चाहिए। मै १८९३ से १९१३ तक, २० साल दक्षिण अफ्रीकामे रहा हू। उस लबे अर्सेमे, जब कि मेरा जीवन घुल रहा था, शायद एक ही साल छूटा होगा, मै हिंदुस्तानियोके साथ ही गहरे सबधमे नही आया, बल्कि उन सफेद लोगोके साथ भी, जो कि इस बडे देशमे आकर बस गए है। तबसे अबतक अगर दक्षिण अफ्रीका आगे बढा है तो हिंदुस्तानने दिन दुगुनी और रात चौगुनी तरक्की की है। जो कल नामुमकिन मालूम होता था वह आज हो गया है। इसके कारणोमे जानेकी आवश्यकता नही। हकीकत यह है कि हिंदुस्तान बर्तानवी[1] कामनवेल्थ (राष्ट्रसमूह) मे आ गया है, याने इसका दर्जा वही है जो दक्षिणी अफ्रीकाका। क्या एक उपनिवेशके लोगोको दूसरे उपनिवेशमे गुलाम माना जाना चाहिए? एक एशियाई कौम बर्तानवी राष्ट्रसमूहके इतिहासमे पहली दफा सब सदस्योकी मर्जीसे शामिल होती है। अब देखिए कि आरेंजियाकी हकूमत या वहाके डाक्टर एस० पी० बर्नार्डने हिंदुस्तानके बर्तानवी राष्ट्रसमूहमे दाखलेके पाच दिन बाद डरबनकी नेटाल इडियन काग्रेसको क्या सदेश भेजा। उन्होने लिखा—"क्योकि आप नए उपनिवेशकी नई आजादी मना रहे है जो आपके नजदीक हिंदुस्तानके इतिहासमे एक बडा दिन है, इसलिए मै आशा करता हू कि दक्षिणी अफ्रीकाके सब हिंदुस्तानी अपने आप नए उपनिवेशमे चले जायगे और वहा जाकर उस सदेश का प्रचार करेगे जो उन्हे दक्षिणी अफ्रीकामे दिया गया है, याने शाति और अनुशासनसे रहना और उन मजहबी झगडोसे बचना जिनकी वजहसे आज हिंदुस्तानमे हजारो मारे जा रहे है।" यह बात खास देखनेकी है। साफ जाहिर है कि डाक्टर बर्नार्डको इसमे शक है कि यह दाखिला एक बडा दिन था और फिर वह नेटाल काग्रेसको बिन-मागी सलाह देते है कि दक्षिणी अफ्रीकाके हिंदुस्तानियोको हिंदुस्तान चला जाना

---

[1] ब्रिटिश।

चाहिए और उस सदेशका प्रचार करना चाहिए जो उन्होने दक्षिणी अफ्रीकामे सीखा है, याने शाति और जब्तसे रहना और मजहवी दगोमे न पडना। मुझे वहुत डर है कि दक्षिणी अफ्रीकाका आम सफेद आदमी इसी तरह सोचता है, इसलिए हमारे देशवालोके रास्तेमे तरह-तरहके अडगे लगाए जाते है। उनका दोष यही है कि वे एशियाके है और उनका रग काला है।

दक्षिणी अफ्रीकाके सवसे आला पश्चिमी लोगोसे मै प्रार्थना करता हू कि वे अपने इस तास्सुवपर[1] फिरसे सोचे जो उन्हे एशिया और काले रगके वरखिलाफ वनाता है। उनके वीचमे हब्शियोकी वहुत वडी आवादी पडी है। कुछ लिहाजसे उनके साथ वर्ताव एशियावालोके साथके वर्तावसे भी वदतर है। मै उन यूरोपियनोसे, जो वहा जाकर वस गए है, जोरसे कहूगा कि वे जमानेको पहचाने। या तो यह तास्सुव हर लिहाजसे गलत है या अग्रेजोने और वर्तानियाके वडे राष्ट्रसमूहके दूसरे सदस्योने एशियाई कौमोको सदस्य वनाकर ऐसी गलती की है, जो माफ नही की जा सकती। वर्मा आजाद होनेको है और लका भी राष्ट्रसमूहका जल्द सदस्य वन जायगा। इसका मतलव क्या है?

मुझे सिखाया जाता है कि राष्ट्रसमूहका सदस्य होना अगर आजादीसे ज्यादा अच्छा नही तो कम-से-कम उसके वरावर है। इन आजाद हकूमतोके जिम्मेदार मर्द और औरतोको इस वातपर खूव सोचना होगा कि आजादी लेनेके वाद वे क्या करेगे। आज वहुत-सी आजाद हकूमते वनानेका आदोलन चल रहा है। यह ठीक और अच्छी चीज है, लेकिन क्या इसका अत यह होगा कि एक और लडाई होगी जो पिछली दो लडाइयोसे, अगर मुमकिन हुआ तो, ज्यादा खतरनाक होगी, या इसका नतीजा यह होगा, जैसा कि होना चाहिए, कि मनुष्य-जातिका भाई-चारा वढेगा? एक उपनिषदका श्लोक है—"मनुष्य जैसा सोचता है वैसा ही वन जाता है।" सियाने

---

[1] पक्षपात पर।

आदमियोका तजर्बा इसकी सचाईकी गवाही देता है। इस तरह दुनिया वैसी ही बनेगी जैसी कि उसके सयाने आदमी सोचते है। एक फालतू विचार कोई विचार नही होता। अगर हम ऐसा कहे कि दुनिया मूढ जनताकी चाहके मुताबिक बनेगी तो बडी भूल होगी। वह कभी सोच नही सकती—वह तो भीडकी तरह पीछे ही चलती है। आजादीका मतलब होना चाहिए लोक-राज। लोक-राजका अर्थ है कि हर शख्सको वृद्धि पानेका मौका मिले। वृद्धिका अर्थ केवल जानकारीसे अलग है। दक्षिण अफ्रीकामे जैसे योग्य सिपाही है वैसे ही अच्छे किसान भी है। उसी तरह वहा बहुतसे वृद्धिमान स्त्री और पुरुष भी है। अगर वे लोग अपने खा जानेवाले वातावरणसे ऊचे न उठे और अगर उन्होने इस समस्यापर कि सफेद लोग सबसे ऊचे है अपने देशको ठीक रास्ता नही दिखाया तो दुनियाके लिए बडे दुखकी बात होगी। क्या यह खेल खेलते-खेलते लोग थक नही गए ?

मै आपको थोडी देर और रोकूगा, ताकि कट्रोलके बारेमे आपसे कहू जिसपर आज खूब बहस हो रही है। क्या उन पडितोके शोरमे, जो दावा करते है कि कट्रोलके फायदोके बारेमे वे सब कुछ जानते है, जनताकी आवाजकी कोई सुनवाई नही होनी चाहिए ? कितना अच्छा हो कि हमारे मत्री जो कि जनतामेसे चुने गए है और जनताके है, जनताकी आवाज सुने, बजाय उन दफ्तरी घिस-घिसके माहिरोकी[1] जिनके बारेमे वे खूब जानते है कि उन्होने सिविल नाफरमानीके वक्त उन्हे खूब नुकसान पहुचाया था। तब इन पडितोने पूरी कडाईसे हकूमत की। क्या आज भी उन्हे ऐसा ही करना चाहिए ? क्या लोगोको कोई मौका नही दिया जायगा कि वे अपनी गलतियोसे सीखे ? क्या मत्री यह नही जानते कि उन नमूनोमेसे जो मै नीचे दे रहा हू (इतना ध्यान रहे कि उनमे सब कट्रोलमे आ जाते है) अगर किसी एक उदाहरणमे कट्रोल हटानेसे जनताको नुकसान पहुचे तो वे इतनी ताकत रखते है कि उसपर फिरसे कट्रोल लगा दे ?

---

[1] तज्ञ।

कंट्रोलोंकी जो फेहरिस्त मेरे सामने है उससे मेरे-जैसा सादा आदमी तो हैरान हो जाता है। मैं तो केवल इतना ही कहता हूं कि अगर कंट्रोलोंके माइने नामकी कोई चीज है तो उनको ठंडे दिलसे जानना होगा। उसके बाद लोगोंको इस बातकी तालीम देनी होगी कि सब चीजोंपर कंट्रोलका क्या मतलब है और खास-खास चीजों-पर कंट्रोलका क्या अर्थ है। जो फेहरिस्त मुझे मिली है उसमेंसे ऐसे ही कुछ नमूने निकालकर नीचे देता हूं—एक्सचेंजपर, रुपया लगानेपर, कैपिटल, इश्योरेंस, बैंकोंकी शाखाएं खोलनेपर, कंपनियोंमें पैसा लगानेपर, मुल्कसे बाहर जाने और अंदर आनेवाली हर किस्मकी चीजोंपर, अनाजपर, चीनीपर, गुड़, गन्ने और शर्बतपर, वनस्पतिपर, पेट्रोल और मिट्टीके तेलपर, सीमेंटपर, फौलादपर, अभ्रकपर, कोयले-पर, चीजोंके इधर-उधर ढोनेपर, मशीनरी लगाने और फैक्टरी खोलनेपर, कुछ सूबोंमें मोटरें बेचनेपर, चायकी पेटीपर, कपड़ेपर, जिसमें गरम कपड़े भी शामिल हैं, पावरपर, अल्कोहलपर, कागजपर।

: १५२ :

१८ नवंबर १९४७

भाइयो और बहनो,

आप लोगोंने तो वे सब प्रस्ताव पढ़े ही होंगे जो अखिल भारतीय कांग्रेस-कमेटीमें पास हो गए हैं। उनमें काफी प्रस्ताव तो ऐसे हैं जो हमारे जीवनमें—और जीवनके बड़े हिस्सेमें, ऐसा कहो—हर एक आदमीके कामके हैं। वे ऐसे नहीं हैं जिनपर सिर्फ हकूमतको अमल करना है। उनपर जवाहरलाल, राजेंद्रप्रसाद—अब तो राजेंद्रबाबू निकल गए—और दूसरोंको भी अमल करना है, जैसे कि कंट्रोल। खानेपर, पहननेपर, हर चीजपर जिनपर कंट्रोल है उन्हें अमल करना है। ऐसे ही हमको भी करना है। अगर हम दगाबाजी करें और कानूनकी पाबंदी न करें तो इसका नतीजा खतरनाक होगा। जब हम एक

गज कपडेसे काम चला सकते है तो क्यो दस गज जमा कर रखे और सोचे कि ले तो ले, घरमे पडा ही रहेगा ? जब हम ऐसे बन जायगे कि हम अपना ही देखे और हिंदुस्तानके न हो तो हम बद-माश हो जायगे ।

अखिल भारतीय काग्रेस-कमेटीके अभीके प्रस्ताव ऐसे है कि मै चाहता था कि एक-एक प्रस्ताव सबको समझाऊ। अभी तो यही हू, मौका मिल गया तो सुना दूगा। लेकिन उनका क्या मतलब है यह तो आज कह दू। जो लोग डरके मारे घर छोडकर दूसरी जगह चले गए है उनको फिर उनके घरोमे बसानेका जो प्रस्ताव है वह हर एक आदमीपर लागू होता है। हम कन्याकुमारीसे लेकर काश्मीरतक जितने रहनेवाले है वे सब हिंदुस्तानके है। हिंदुस्तानके दो टुकडे हो गए तो क्या, हम सब भाई-भाई है, इसलिए हम सबपर जिम्मेदारी आ जाती है। अगर एक ही आदमी अपना पेट भरता जाता है और गरीबीकी परवाह नही करता है, चाहे वह स्वादके लिए ही खाता हो, तो वह चोरी करता है और हिंदुस्तानका गुनहगार बन जाता है। हिदुस्तानको जितना अनाज चाहिए उतना उसके पास नही है तो क्या हुआ ? गरीबोको भी तो अनाज मिलना ही चाहिए। धनी लोगोको अगर एक, दो, चार व छ छटाक मिले और तो भी वे उसीसे ही गुजर करे तब तो मैं समझूगा कि धनी और गरीब सब एक हो गए। दूसरोको छोडकर मै जिस धनीके घर पडा हू उसकी बात तो कहू। आप मुझसे पूछे कि घनश्यामदासको उनका जितना हिस्सा मिलता है, क्या उतनेसे ही उनका गुजर हो जाता है, तो मैं कहूगा कि नही होता। आखिर मुझे सच्ची बात तो कहना ही है। वह धनवान है तो उन्हे हर तरहसे सब मिल जाता है। मुझको पता नही चलता कि जितने लोग यहा आते है उन्हे दूध मिलता है या नही। मुझको दूध मिल जाता है, वह कहासे आता है, कैसे आता है यह मै थोडे देखता हू। एक बकरी रखो, दो बकरी रखो, वह महात्मा है न, तो उसे दूध दो, जितना गेहू चाहिए उतना अच्छा-से-अच्छा गेहू दो, क्योकि वह महात्मा है न! मैं यह थोडे-पूछता हू कि यह

कहासे आता है—महात्माको भाजी चाहिए तो भाजी दो, फल चाहिए तो फल दो। कार्य-समितिके जितने सदस्य आते है उनको कुछ तो देना ही है तो फलका रस दो। करोडोकी जायदाद लेकर बैठे है। ये तो धनी लोगोके हाल है। यह सब करोडपतियोको मिल सकता है। लेकिन तब भी वे भूखे रहे तभी तो कुछ हो सकता है, नही तो गरीब कहासे लाए ? धनी लोग तथा जो तिजारत करते है वे अनुचित मुनाफा न ले और सच्चे व्यापारी बने। वे मुनाफा ले, लेकिन कितना ? जितना पेट भरनेको चाहिए उतना ही ले। अगर सब एक ही तरह मुनाफा ले तो फिर क्या ! अनाजपर कट्रोल क्या ? कोई कट्रोल नही चाहिए। इसी तरहसे सब हो जाय तो अच्छा है।

आला दर्जेकी चीज यह है कि हम तबतक शातिसे नही बैठ सकते जबतक सब शरणार्थी अपने-अपने घर नही लौट जाते। मुसलमान आया तो उसको काट डाले, वह पाकिस्तानसे डरके मारे जायदाद छोडकर भागकर आया है, इसलिए यहासे उसे हटा दे, ऐसा करना पागलपन है। अब तो अखिल भारतीय काग्रेस-कमेटीने हुक्म दिया है कि जो भाई जहा पडे है उनको वही रखना है और आरामसे रखना है और जो लोग खुशीसे घर लौटना चाहते है उन्हे लौटाना है। लोग खूबसूरत घर छोडकर आ गए, लखपति, करोडपति सैकडो और हजारो थे वे घरबार छोडकर आ गए; लेकिन जो बेचारे गरीब थे वे तो अब भी पडे हुए है। मै आज तो सब सुनाना नही चाहता, लेकिन हमारा फर्ज क्या है, वह हमारा प्रस्ताव बताता है। वही आला दर्जेकी चीज है। वे जो मुसलमान रहते है वे निकम्मे है, ऐसा मानकर बैठे तो वह बडा गुनाह हो जाता है। यह सबका परमधर्म हो जाता है कि हम किसीको न निकाले। तीन-चार दिन पहले कार्य-समितिका प्रस्ताव भी लोगोने देखा और अखबारोमे जो इशारा आया था उसे भी देखा। तो भी मुसलमान जा रहे है। लोग कहते है कि तुमने जोर दिया तो काग्रेस महासमितिने उसे मान लिया। उन्हे—मुसलमानोको—तो यहासे चला ही जाना चाहिए, नही तो वे मारे जाएगे। लोग पूछते है कि क्या तुम उन्हे मरने दोगे ? मै क्या करूगा, यह

तो मैंने बता दिया है, मैं करूगा या मरूगा। जब मैं मरनेको तैयार हू तो अगर मुसलमानोको मरना पडे तो वे भी मरे। वे जाडेके दिनोमें ३०० मील चलकर जाए, हम ऐसे निष्ठुर बन गए है! लोग कहते है कि कैंपोमे ज्यादा आदमी नही मरते है—रोज दस-बीस मरते है। अब अगर मानो कि पाच हजार, दस हजार, पचास हजारमे इतने मरे तो इस हिसाबसे हिंदुस्तानमें कितने मरते है, क्या इसकी परवाह नही कि वे कैसे मरते है? किसीको खाना नही मिलता, किसीको हैजा हो जाता है, किसीको पेचिश हो जाती है, किसीको कुछ हो जाता है, इस तरहसे वे मरते है। लेकिन क्यो मरते है, क्या इसकी किसीको परवाह है? हम परवाह करते हैं कि हमारे लिए खाना है कि नही और सब कुछ है कि नही। हम देखते रहते है कि जहासे मुसलमान भाग गया वहा हिंदू और सिखको बसाना है। हा, हर जगह तो ऐसा हुआ नही, तो भी हुआ तो है। इससे मुझको बहुत दु ख पहुचा और मैंने कई बार आप लोगोको बताया भी है। अब तो काग्रेस महासमितिने भी कह दिया कि ऐसा जो हुआ है वह बहुत बुरा हुआ। यह बात करोडोतक पहुचाना है तो यह एक दिनमें तो हो नही सकता। हकूमतमे बडे-बडे पडे है—जवाहर, सरदार, राजेंद्रबाबू, लेकिन अब तो राजेंद्रबाबू नही रहे—उनको क्या नाखुश करना! इसलिए कह दिया कि हा, करेंगे। मैंने सुना है कि अब तो काग्रेसमैन भी ऐसे ही बन गए है कि वे समझते है कि यहा अब मुसलमानोको रहना ही नही चाहिए। वे समझते है कि तभी हिंदू-धर्मका भला हो सकता है, हिंदू-धर्म ऊचा जा सकता है। लेकिन वे जानते नही है कि दिन-ब-दिन हिंदू-धर्म नीचे जा रहा है। अगर वे दिलको नही बदलते है तो यह बहुत खतरनाक बात है। काग्रेस-कमेटीमें जितने प्रतिनिधि आए है वे सारे हिंदुस्तानके प्रतिनिधि है। वे अगर सब एक ही दिलके है, और होना चाहिए, तो हिंदुस्तानकी शक्ल बदल जायगी। उनका यह धर्म हो जाता है कि वे दूसरा होने ही नही देंगे। हिंदुस्तानसे जितने चले गए है, उनको किस तरह लाय यही उनका बडा काम है। हम तबतक परेशान रहेगे जबतक हिंदुस्तानसे जितने मुसलमान

गए है उन्हे यहा ले न आए। ऐसा वातावरण पैदा करना है और यह मुश्किल काम नही है। यह तो खूबीकी वात है कि यहा अभी ३॥ करोड मुसलमान है—कोई जानता नही है कि कितने गए और कितने आनेवाले है। मान लो कि जितने गए है वे सब आ गए तो वे अपने घरमे रहे, उनका घर पडा है, उसमे हमको कोई खर्च तो करना नही पडेगा। उनका जो घर है वह हम दे दे, इतना ही हमारा काम है। लेकिन सब घर खाली कहा है? उनमे तो शरणार्थी घुस गए है। तो भी उनको बसाना तो होगा ही। अगर हम ऊटपटाग बाते कर लेते है, लेकिन दिल साफ नही रखते तो बाहरवाले कहेगे कि जो हिंदुस्तानके नुमाइदे आये थे वे क्या ऐसे खोटे थे? मै समझता हू कि वे ऐसे नही है। वे दिन चले गए जब हम गुस्सा रखते थे कि वे चले जाए। आज हम सबको भाई-भाई समझते है।

मै समझ लू कि दिल्लीके लोग अच्छे हो गए है, गुडगावके लोग अच्छे हो गए है। मै हालहीमे जब पानीपत गया था तब वहा सब ठीक रहते थे, लेकिन अब सुनता हू कि वहा जो शरणार्थी आए है वे मुसलमानोके घरमे चले गए है और अब मुसलमान पाकिस्तान जाना चाहते है। वे कह सकते है कि हम खुशीसे पाकिस्तान तो जाना नही चाहते, क्योकि वहा खीर या पकवान तो पडा नही है, पहननेको अच्छा कपडा भी नही है और यह हो भी कैसे सकता है, जैसे हम यहा है वैसे वे वहा है। और आखिर वहा बहुत इतजाम है और यहा नही, ऐसी बात तो है नही। वहा जो गए है वे लिखते है कि अगर हम हिंदुस्तानमे रहते तो अच्छा था। अब घरबार छोड दिया—कैपोमे पडे है, बडे परेशान है। ऐसा तो होगा ही। तो फिर क्या वजह है कि पानीपतके मुसलमान पाकिस्तान जाना चाहते है? अगर ऐसी बात है तो पानीपत मेरे लिए कसौटी बन जाती है और मुझे भी शायद वहा जाना पड जाय। वह यहासे ५० मील दूरपर तो है। वह दूर नही कहा जा सकता, वह दिल्ली ही-जैसा है। अब अगर वहाके एक भी मुसलमानको पाकिस्तान जाना पडेगा तो मुझे चुभेगा और आपको भी चुभेगा। हा, जब वे रहते है तो उन्हे

जो पैसा मिलता है उसका खाना भी मिलना चाहिए। वे मेहनती है—कमाते है और खाते है। अगर पैसे दे दे और खाना न मिले तब फिर कैसे रहेगे ? अगर ऐसे कारीगरको जो भाई-भाई बनकर रहते है, जाना पडे, क्योकि वहा पजाबसे दूसरे भाई आ गए है, तो इससे और खराब चीज कोई हो ही नही सकती। पानीपतमे जितने शरणार्थी पडे है उनसे मै कहूगा कि वे मुसलमानोका घर छोड दे और मुसलमान भी कहे कि हम रहेगे—हिफाजतके लिए हमे पुलिसकी जरूरत नही है, हम आपसमे रहेगे। पुलिसका यही काम रहे कि जितना अनाज आए उसे सबको दे, कपडा सबको दे, इससे ज्यादा काम करनेकी जरूरत नही। तब मै कहूगा कि काग्रेस महासमितिने जो किया है वह अच्छा किया है और हम भी उसके साथ है। हम सब चाहे चार आनेके सदस्य हो या नही, काग्रेसका अदब करते है। इतने दिनोतक जिस सस्थाने देशकी सेवा की है तो आज भी, जब कि खिलाफ वातावरणमे जान-बूझकर जो चीज वह कह रही है उसकी ताईद करे और अमलमे लाए ? बस, आज मै इतना ही कहूगा।

: १५३ :

१९ नवबर १९४७

भाइयो और बहनो,

कल शामको मैने हिंदू-मुस्लिम-सबधोके बारेमे पास किये गए ए० आई० सी० सी०के खास ठहरावका जिक्र किया था। लेकिन आज ही मुझे मिसाल देकर आपसे यह कहना पडता है कि दिल्लीमे उस ठहरावको कैसे बेकार बनाया जा रहा है। मुझे इस बातकी कल्पना भी नही थी कि जिस शामको मै जनताके बरतावके बारेमे अपना शक जाहिर कर रहा हू, उसी शामको पुरानी दिल्लीके केद्रमे उसे सच साबित करके दिखाया जायगा। कल रात मुझसे कहा गया कि चादनी चौककी एक मुसलमानकी दुकानके सामने हिंदुओ

और सिखोकी बहुत बडी भीड इकट्ठी हुई थी। वह दुकान थी तो मुसलमानकी लेकिन उसका मालिक उसे छोडकर चला गया था। वह इस शर्तपर एक निराश्रितको दी गई थी कि मालिकके लौट आनेपर उसे दुकान छोड देनी होगी। खुशीकी बात है कि दुकानका मालिक लौट आया। वह हमेशाके लिए अपना व्यापार नही छोडना चाहता था। जिस अफसरके हाथमे यह काम था, वह दुकानमे रहनेवाले निराश्रितके पास गया और उसे असल मालिकके लिए दुकान खाली कर देनेको कहा। पहले तो वह निराश्रित कुछ हिचकिचाया, लेकिन बादमे उसने कहा कि आप जब शामको दुकानका कब्जा लेनेके लिए आएगे, तो मै जरूर खाली कर दूगा। अफसर जब शामको दुकान-पर लौटा, तो उसे पता चला कि वहा रहनेवाले निराश्रितने दुकानका कब्जा उसके मालिकको सौपनेके बजाय अपने साथियो और दोस्तोको इस बातकी सूचना कर दी, जो, कहा जाता है कि वहा धमकी दिखाने-के लिए इकट्ठे हो गए थे। चादनी चौकके थोडेसे पुलिसवाले उस भीडको काबूमे न रख सके। इसलिए उन्होने ज्यादा मदद बुलाई। पुलिस या फौजके सिपाही आए और उन्होने हवामे गोली चलाई। डरी हुई भीड बिखर तो गई, लेकिन साथ ही एक राहगीरको छुरेसे घायल भी करती गई। तकदीरसे वह घाव जानलेवा साबित न हुआ। लेकिन फिसादी लोगोके प्रदर्शनका अजीब नतीजा हुआ। वह दुकान खाली नही की गई। मै नही जानता कि आखिरमे उस अफ-सरके आदेशको ठुकरा दिया गया या इस वक्ततक वह दुकान खाली कर दी गई है। फिर भी, मुझे आशा है कि हिंदुस्तानको जो बहुमूल्य आजादी मिली है, उसमे अगर सरकारी सत्ताको सच्ची सत्ता बने रहना है, तो वह अपराधीको अपराधकी सजा दिये बिना न रहेगी। वर्ना सरकारकी सत्ता सत्ता ही न रह जायगी। मुझसे कहा गया है कि हिंदुओ और सिखोकी वह भीड दो हजारसे कम न रही होगी।

यह खबर जिस तरह मुझे मिली, उसे कुछ कम करके ही मैने सुनाया है। अगर फिर भी उसमे सुधारकी कोई गुजाइश हुई और वह मेरे ध्यानमे लाई गई, तो मै खुशीसे आपको बता दूगा।

यही सब कुछ नही है। दिल्लीके दूसरे हिस्सेमे मुसलमानोको अपने घरोसे जबरन निकालनेकी कोशिश की जा रही है, ताकि वहा हिंदू और सिख निराश्रितोको जगह दी जा सके। इसका तरीका यह है कि सिख लोग अपनी तलवारे म्यानसे निकालकर घुमाते है और मुसलमानोको अपने घर न छोडनेपर भयानक बदला लेनेकी धमकी देकर डराते है। मुझसे यह भी कहा गया है कि सिख शराब पीते है, जिसके नतीजोका आसानीसे अदाजा लगाया जा सकता है। वे नगी तलवारे लेकर नाचते है, जिससे रास्ता चलनेवाले लोग डर जाते है। मुझसे यह भी कहा गया है कि चादनी चौकमे और उसके आसपास यह रिवाज है कि मुसलमान कबाब या गोश्तकी बनी दूसरी खानेकी चीजे नही बेचते, लेकिन सिख और शायद दूसरे निराश्रित भी बद की हुई ये चीजे वहा आजादीमे बेचते है। इससे उस मोहल्लेके हिदुओको बडा दु ख होता है। यह बुराई यहातक बढ गई है कि लोगोको चादनी चौकमे खडी भीडमेसे निकलना मुश्किल मालूम होता है। उन्हे डर लगता है कि कही उनके साथ बुरा या असभ्य बरताव न किया जाय। मै अपने निराश्रित दोस्तोसे अपील करता हू कि वे अपने खातिर और अपने देशके खातिर इस तरहकी बाते न करे।

कृपाणोके बारेमे थोडे समयके लिए यह कानून बना दिया गया है कि सिख एक खास नापसे बडी कृपाण नही रख सकते। इस पाबदीके दरमियान बहुतसे सिख दोस्त मेरे पास आते है और मुझसे कहते है कि मै अपना असर डालकर एक खास नापसे बडी कृपाण रखनेपर लगाई पाबदीको हटानेकी कोशिश करू। उन्होने कुछ साल पहले दिया हुआ, प्रिवी कोसिलका वह फैसला मुझे कह सुनाया जिसमे कहा गया है कि कोई सिख किसी भी नापकी कृपाण अपने साथ रख सकता है। मैने वह फैसला नही पढा है। मै समझता हू कि जजोने कृपाणका अर्थ किसी भी नापकी 'तलवार' लगाया है। उस समयकी पजाब-सरकारने प्रिवी कौंसिलके फैसलेपर अमल करनेके लिए यह ऐलान किया कि हर आदमी तलवार रख सकता है। इसलिए पजाबमे कोई भी आदमी किसी भी नापकी तलवार रख सकता है।

मुझे पंजाब-सरकार या सिखोकी इस बातसे कोई हमदर्दी नही है। कुछ सिख दोस्तोने मेरे सामने ग्रंथ साहबके ऐसे हिस्से पेश किये है, जो मेरी इस रायका समर्थन करते है कि कृपाण बेगुनाहो पर हमला करने या किसी भी तरह इस्तेमाल करनेका हथियार नही है। सिर्फ ग्रंथ साहबके आदेशोको माननेवाला सिख ही विरले मौकोपर बेगुनाह औरतो, मासूम बच्चो, बूढे और दूसरे असहाय लोगोकी रक्षाके लिए कृपाणका उपयोग कर सकता है। इसी कारणसे एक सिख सवा लाख विरोधियोके बराबर माना जाता है। इसलिए जो सिख नशा करता है, जुआ खेलता है और दूसरी बुराइयोका शिकार है, उसे पवित्रता और संयमके धार्मिक प्रतीक कृपाणको रखनेका कोई हक नही है, जो सिर्फ बताए हुए ढंग और मौकोपर ही काममे लाई जा सकती है।

मेरी रायमे कृपाणके मनमाने उपयोगको सही साबित करनेके लिए प्रिवी कौसिलके गए-गुजरे फैसलोकी मदद चाहना बेकार और नुकसानदेह भी है। हम हालमे ही गुलामीके बंधनसे छूटे है। आजादीकी हालतमे सारी अच्छी पाबंदियोको तोडना बिलकुल गैर मुनासिब है। क्योकि उनके बिना समाज आगे नही बढ सकता। इसलिए मै अपने सिख दोस्तोसे कहूगा कि वे किसी भी ऐसे काममे, जिसके सही और मुनासिब होनेमे शक हो, कृपाणका उपयोग करके महान् सिख-पंथके नामपर धब्बा न लगावे। जिस पंथको ऐसे कई शहीदोने, जिनकी बहादुरीपर सारी दुनियाको गर्व है, बनाया उसे वे मिटा न दे।

मै एक दूसरी बातकी तरफ आपका ध्यान खीचना चाहता हू। मुझे एक छावनीकी कहानी सुनाई गई, जिसमे फौजपर असभ्य बरतावका इलजाम लगाया गया है। छावनीका सारा जीवन भीतरी और बाहरी शुद्धता और सफाईका नमूना होना चाहिए। इसकी रक्षाके लिए दोनोको एक-दूसरेसे बढकर कोशिश करनी चाहिए। इसलिए मुझे आशा है कि जो सूचना मुझे दी गई है, वह कानून और व्यवस्थाके इन रक्षकोपर आम तौरपर लागू नही की जा सकती—वह एक अपवाद ही है। फौज और पुलिसको सचमुच सबसे पहले आजादीकी

चमक और उत्साह महसूस करना चाहिए। उनके बारेमे लोगोको यह कहनेका मौका न मिले कि ऊपरसे लादे हुए भयानक सयम और पाबदियोमे ही उनसे अच्छा बरताव कराया जा सकता है। उन्हें अपने सही बरतावसे यह साबित कर देना है कि वे भी दूसरोकी तरह हिंदुस्तानके योग्य और आदर्श नागरिक हो सकते हैं। अगर ये कानूनके रक्षक ही कानूनको ठुकराएगे, तब तो राज चलाना भी नामुमकिन हो सकता है। और अखिल भारत-काग्रेस कमेटीके ठहरावोको ठीक तरहसे अमलमे लाना सबसे ज्यादा मुश्किल हो जायगा।

तस्वीरका धुधला पहलू बतानेके बाद अब मै आप लोगोको उसका चमकीला पहलू भी खुशीसे बताऊगा। मुझे आदर्श बहादुरीकी एक आखोदेखी कहानीका जो वर्णन मिला है, वह मैं आपको सुनाता हू।

"मीर मकबूल शेरवानी बारामूलामे नेशनल कान्फरेसका एक नौजवान बहादुर नेता था। उसने अभी तीसवे बरसमे प्रवेश ही किया था।

"यह जानकर कि वह नेशनल कान्फरेसका बडा नेता है, हमलावरोने उसे निशात टॉकीजके पास दो खभोसे बाध दिया। पहले उन्होने उसे पीटा और बादमे कहा कि वह नेशनल कान्फरेस और उसके नेता शेरे काश्मीर शेख अब्दुल्लाको छोड दे। उन्होने शेरवानीसे कहा कि वह आजाद काश्मीरकी आरजी हकूमतकी, जिसका हेडक्वार्टर पालन्द्रीमे है, वफादारीकी सौगध ले।

"शेरवानीने मजबूतीसे नेशनल कान्फरेसको छोडनेसे इन्कार कर दिया। हमलावरोसे साफ कह दिया कि शेरे काश्मीर अब राजके प्रधान मत्री हैं। हिंदुस्तानी सघकी फौज काश्मीरमे आ पहुची है और वह थोडे ही दिनोमे हमलावरोको काश्मीरसे निकाल बाहर करेगी।"

"यह सुनकर हमलावर गुस्सा हुए और डर गए। और उन्होने १४ गोलियोसे उसका शरीर छलनी बना डाला। उन्होने उसकी नाक काट ली, उसके चेहरेको बिगाड दिया, और उसके शरीरपर एक इश्तहार लगा दिया, जिसपर लिखा था—'यह गद्दार है। इसका नाम शेरवानी है। सारे गद्दारोका यही हाल किया जायगा।'

"मगर इस वेरहमीभरे खून और आतकके बाद ४८ घटोके भीतर ही शेरवानीकी भविष्यवाणी सच सावित हुई। हमलावर घवडाकर वारा-मूलासे भागे और हिंदुस्तानी फौजने जोरोसे उनका पीछा किया।"

यह ऐसी शहादत है जिसपर कोई भी अभिमान कर सकता है, फिर वह हिंदू, सिख, मुसलमान या दूसरा कोई भी क्यो न हो।

एक दोस्तने मुझे फख्रकी एक ऐसी मिसाल सुनाई है, जिसका तेज दु खदायी परिस्थितियोमे भी कम नही होता, और दोस्तीका ऐसा उदाहरण वताया है, जो कडे-से-कडे वक्तमे भी खरी उतरती है। यह नारायणसिंह नामके एक पुराने अफसरकी कहानी है। उन्होने पच्छिमी पजावमे अपनी वहुत वडी मिल्कियत खो दी है। अव वह दिल्लीमे है। उनके पास कुछ भी नही वचा है। इसलिए या तो उन्हे अव भीख मागनेपर लाचार होना पडे या मौतका शिकार होना पडे। वह अपने एक पुराने दोस्तसे मिले, जिसे वह अपने साथ दु खी नही होने देना चाहते थे, क्योकि अपनेपर आए हुए दुर्भाग्यकी उन्हे विलकुल परवाह नही थी। वह सिख अफसर अपने दोस्त और साथी अफसर अली-शाहसे मिलकर वेहद खुश हुए। अलीशाह भी अपना सव कुछ खो वैठे है। वे फिरकेवाराना पागलपनकी वजहसे नही, वल्कि किसी और कारणसे वदकिस्मतीके शिकार हुए है। वह भी नारायणसिंहकी तरह ही वहादुर है, और दोनोको एक-दूसरेकी दोस्तीका अभिमान है। वे दोनो अपनी पच्चीस सालकी जुदाईके वाद जव मिले, तो इतने खुश हुए कि अपने दुर्भाग्यको भूल गए।

: १५४ :

२० नववर १९४७

भाइयो और वहनो,

मुझे एक ही शख्सकी तरफसे दो चिटे मिली है, जिनमेसे एकमे लिखनेवाले भाईने कहा है कि उन्होने अपनी नौकरी छोड दी है और

वे मेरे मातहत काम करना चाहते है। दूसरी चिटमे उन्होने प्रार्थनामे एक भजन गानेकी अपनी इच्छा ज़ाहिर की है। उनकी पहली इच्छाके बारेमे मुझे कहना पडता है कि उन्होने अपनी नौकरी छोडकर गलती की है। यह सच है कि अग्रेजी हकूमतके दिनोमे मैने लोगोको सरकार-से असहयोग करनेकी सलाह दी थी, मगर अब ऐसी बात नही है। अगर कोई आदमी चाहे, तो वह अपनी रोजी कमानेके लिए कहीपर नौकरी करते हुए भी अपने देशकी सेवा कर सकता है। हर रोजी कमानेवाले शख्स, अगर वह ईमानदारीसे और किसी भी किस्मकी हिंसा[1] किये बगैर ऐसा करता है, देशसेवा ही करता है। लेखकको यह भी महसूस करना चाहिए कि मेरे पास उनके लिए कुछ काम नही है। अगर वे कुछ सेवा करना चाहते है, तो उन्हे उस गोशालामे अपनी सेवाए देनी चाहिए जिसका मै अभी जिक्र करूगा।

प्रार्थनामे भजन गानेके बारेमे तो यह है कि हर किसीको उसमे गाने नही दिया जा सकता। सिर्फ वे ही लोग पहलेसे इजाज़त लेकर गा सकते है, जो भगवानके सेवक कहे जाते है।

(इसके बाद गाधीजीने सुचेतादेवी और उनके साथी कार्यकर्ताओके साथ किये गए ओखला छावनीके अपने मुआइनेका जिक्र किया। उन्होने कहा—)

उस छावनीकी तारीफके लायक सफाईको देखकर मुझे खुशी हुई। वहापर जगह-जगह यात्रियोके लिए धर्मशालाए बनी है, जो मेलोके वक्त वहा आते है। ये मेले एक निश्चित समयके बाद वहा भरते रहते है। ये धर्मशालाए अब निराश्रितोके काममे लाई जाती है। वहा पानीकी कुछ दिक्कत है, जिसे अधिकारी लोग दूर करनेकी कोशिश कर रहे है। इसमे मुझे कोई शक नही कि आज वहा जितने निराश्रित है उनसे कही ज्यादा निराश्रितोको, अगर पानी पुरानेकी गारटी दी जा सके, उस जगहमे आसरा दिया जा सकता है।

जब मै निराश्रितोके बारेमे बोल रहा हू, तब कुछ ऐसे दोषोके बारेमे उनका ध्यान खीचना चाहूगा जो मुझे बताए गए है। मुझसे यह कहा गया है कि निराश्रितोमे आपसमे ही काला बाजार चल रहा है। जिन अफसरोके जिम्मे निराश्रितोकी देखभालका काम है, वे भी

दोषी बताए जाते है। मुझसे कहा गया है कि जिन अफसरोके हाथमे छावनियोका इतजाम है, उन्हे घूस दिये बिना वहा जगह पाना मुमकिन नही है। दूसरी तरहसे भी उनका बरताव दोषसे परे नही माना जाता। यह ठीक है कि सभी अफसर दोषी नही हो सकते, लेकिन एक पापी सारी नावको डुबो देता है।

इसके बाद मुझसे कहा गया है कि निराश्रित लोग छोटी-मोटी चोरिया भी करते है। मै उनसे पूरी ईमानदारी और खरे बरतावकी आशा रखता हू। मुझे यह रिपोर्ट दी गई है कि निराश्रितोको जाडेसे बचनेके लिए जो रजाइया दी जाती है, उनमेसे कुछ चीर दी जाती है, उनकी रूई फेक दी जाती है और छीटके कमीज वगैरा बना लिये जाते है। मुझे इसी तरहकी दूसरी बहुत-सी बाते बताई गई है, लेकिन मै निराश्रितोके सारे बुरे कामोका वर्णन करके आपका वक्त नही बरबाद करना चाहता। मै आज गायके विषयपर जल्दी ही आना चाहता हू।

दिल्लीकी किशनगज नामकी बस्तीमे एक गोशालाका सालाना जलसा हो रहा है। कल आचार्य कृपलानी उस जलसेके सभापति बननेवाले है और मुझपर यह जोर डाला गया कि मै कम-से-कम १० मिनटके लिए तो भी जलसेमे जाऊ। मुझे लगा कि मुझे किसी जलसे या उत्सवमे सिर्फ शोभाके लिए नही जाना चाहिए। १० मिनटमे न तो वहा मै कुछ कर सकता हू और न देख सकता हूँ। और, मै साम्प्रदायिक सवालोमे ही इतना उलझा रहता हू कि मुझे दूसरी बातोकी तरफ ध्यान देनेका समय नही मिलता। इसलिए मैने अपनी मजबूरी जाहिर की। जलसेका इतजाम करनेवाले लोगोने मेरी लाचारीको महसूस करके मुझे माफ कर दिया और कहा कि अगर आप गोसेवाके बारेमे—खास कर गोशालाओके बारेमे—अपनी बात प्रार्थना-सभामे कह देगे, तो हमे सतोष हो जायगा। मैने उनकी यह बात खुशीसे मान ली। मै साफ शब्दोमे यह कह चुका हू कि हिंदुस्तानके पशु-धनको सभालने व बढानेका काम और गाय और उसकी सतानके साथ उचित बरताव करनेका काम सियासी[1]

---

[1] राजनीतिक।

आज़ादी लेनेके कामसे कही ज्यादा कठिन है। मै इस मामलेमे श्रद्धा और लगनसे काम करनेका दावा करता हू। मेरा यह भी दावा है कि मुझे इस बातका सच्चा ज्ञान है कि गाय कैसे बचाई जा सकती है। लेकिन मै यह कबूल करता हू कि अभीतक मै आम लोगोपर किसी तरह ऐसा असर नही डाल सका जिससे वे इस सवालपर उचित ध्यान दे सके। जो लोग गोशालाओका इतजाम करते है वे उनके लिए पैसा लगाना या फड जमा करना तो जानते है, लेकिन हिंदुस्तानके पशु-धनका वैज्ञानिक ढगसे पालन-पोषण करनेका उन्हे बिलकुल ज्ञान नही होता। वे यह नही जानते कि गायको कैसे पाला जाय कि वह ज्यादा दूध दे। उन्हे यह भी नही मालूम कि गायके दिये हुए बैलोका कैसे विकास किया जाय, या उनकी नसल कैसे सुधारी जाय।

इसलिए हिंदुस्तानभरमे गोशालाए ऐसी सस्थाए होनेके बजाय—जहा कोई शख्स हिंदुस्तानके ढोरोको ठीक तरहसे पालनेकी कला सीख सके, जो आदर्श डेरिया हो, और जहासे लोग अच्छा दूध, अच्छी गाये, अच्छी नसलके साड और मज़बूत बैल खरीद सके—सिर्फ ऐसी जगहे है, जहा ढोरोको बुरी तरह रखा जाता है। इसका नतीजा यह हुआ है कि हिंदुस्तान दुनियामे ऐसा खास देश होनेके बजाय, जहा बडे अच्छे ढोर हो, और जहा सस्ते-से-सस्ते दामोपर जितना चाहो उतना शुद्ध दूध मिल सके, आज इस मामलेमे शायद दुनियाके सारे देशोसे नीचे है। गोशालावाले इतना भी नही जानते कि गोबर और गोमूत्रका अच्छे-से-अच्छा क्या उपयोग किया जाय; न वे यही जानते है कि मरे हुए जानवरका कैसे उपयोग किया जाय। नतीजा यह हुआ है कि अपने अज्ञानकी वजहसे उन्होने करोडो रुपए गँवा दिये है। किसी माहिरने कहा है कि हमारा पशुधन देशके लिए बोझ है और वह सिर्फ नष्ट कर देनेके ही काबिल है। मै इससे सहमत नही हू। मगर यदि आम अज्ञान इसी तरह कुछ दिनोतक और बना रहा, तो मुझे यह जानकर ताज्जुब नही होगा कि पशु देशके लिए बोझ बन गए है। इसलिए मुझे उम्मीद है कि इस गोशालाके प्रबंध करनेवाले इसे हर दृष्टिकोणसे एक आदर्श सस्था बनानेकी पूरी-पूरी कोशिश करेगे।

: १५५ :

२१ नववर १९४७

भाइयो और वहनो,

जव मैं आप लोगोके सामने अपना भाषण दे रहा हू, तव गायद जिस गोशालाके वारेमे मैंने कल शामको आपसे कुछ कहा था, उसका सालाना जलसा अभी हो रहा है। मै एक वात कहना चाहूगा। कल शामके अपने भाषणोमे मैंने फौजियोके लिए हिंदुस्तानमे चलाई जानेवाली विभिन्न डेरियोका जिक्र नही किया था। डॉ० राजेद्रप्रसाद-ने मुझे वतलाया है कि वे डेरिया अभी भी चल रही है। वरसो पहले मै वगलोरकी सेट्रल डेरी देखने गया था। तव कर्नल स्मिथकी देख-रेखमे वह चल रही थी। मैंने वहा कुछ सुदर ढोर देखे थे। उनमे एक इनाम पाई हुई गाय थी। वे लोग मानते थे कि एशियाभरमे वह सवमे अच्छी गाय है। वह हर रोज़ ७५ पौंड दूध देती थी या एक ही वारमे इतना दूध देती थी, यह मुझे वरावर याद नही है। वह गाय विना किसी रोक-टोकके चाहे जहा घूम-फिर सकती थी। उसके लिए जहा-तहा चारा रखा रहता था, जिसे वह चाहे तव खा सकती थी। यह इस तसवीरका अच्छा पहलू है।

दूसरा पहलू मैंने नही देखा, मगर मुझे प्रामाणिक तौरपर कहा गया है कि वहुतसे नर वछडोको मार डाला जाता है, क्योकि उन सवको वोझ ढोने लायक वैल नही वनाया जा सकता। ये डेरिया, वहुत ज्यादा नही, तो सैकडो एकड ज़मीन घेरे हुए है। ये सव खास तौरपर यूरोपियन सिपाहियोके लिए है। इनमे कई करोड रुपया लगा है। अव चूकि व्रिटिश सिपाही हिंदुस्तानमे नही है, इसलिए मै इनकी और ज्यादा ज़रूरत नही समझता। मुझे पूरा विश्वास है कि अगर हिंदुस्तानी सिपाहीको यह मालूम हो कि ये खर्चीली डेरिया उसके लिए चलाई जा रही है, तो उसे शर्म मालूम होगी। मुझे यह भी विश्वास है कि हिंदुस्तानी सिपाही ऐसे किसी खास वरताव का दावा नही करेगा जिसका मामूली नागरिक भी उतना ही हकदार न हो।

गाय और भैसके बारेमे सबसे ज्यादा प्रामाणिक और शायद पूर्ण साहित्य, खादी-प्रतिष्ठानके श्री सतीशचद्रदास गुप्तद्वारा लिखे हुए एक बडे भारी ग्रथमे पाया जा सकता है। जहा-तहाके साहित्यके अवतरणोसे इस ग्रथको नही भरा गया है, बल्कि उसे निजी अनुभवके आधारपर, जब वे एक बार जेलमे थे, तब लिखा गया है। बगाली और हिदुस्तानीमे उसका अनुवाद हो चुका है। पुस्तकको ध्यानसे पढने-वाले लोग इसे हिदुस्तानके पशुधनको अच्छा बनाने और दूधकी पैदावारको बढानेके काममे बहुत उपयोगी पाएगे। इस किताबमे गाय और भैसकी तुलना भी की गई है।

(इसके बाद गाधीजीने एक सवालका जिक्र किया, जो उनके पास श्रोताओमेसे किसीने भेजा था। सवाल यह था—हिदू क्या है ? इस शब्दकी उत्पत्ति कैसे हुई ? क्या हिदुत्व नामकी कोई चीज है ? इसका जवाब देते हुए गाधीजीने कहा—) ये सब इस वक्तके लिए योग्य सवाल है। मै इतिहासका कोई बडा जानकार नही हू। मै विद्वान होनेका दावा भी नही करता। मगर हिदुत्वपर लिखी हुई किसी प्रामाणिक किताबमे मैने पढा है कि हिंदू शब्द वेदोमे नही है। जब सिकदर महान्ने हिदुस्तानपर चढाई की, तब सिधु नदीके पूरबके देशमे रहनेवाले लोग, जिसे अग्रेजीदा हिदुस्तानी 'इडस' कहते है, हिदूके नामसे पुकारे गए। सिधुका 'स' ग्रीक भाषामे 'ह' हो गया। इस देशके रहनेवालोका धर्म हिदू-धर्म कहलाया, और जैसा कि आप लोग जानते है, यह सबसे ज्यादा सहिष्णु (रवादार) धर्म है। इसने उन ईसाइयोको आसरा दिया जो विधर्मियोसे सताए जाकर भागे थे। इसके सिवा इसने उन यहूदियोको, जो बेनिइजराइल कहे जाते है, और पारसियोको भी आसरा दिया। मै इस हिंदू-धर्मका सदस्य होनेमे अभिमान महसूस करता हू, जिसमे सभी धर्म शामिल है और जो बडा सहनशील है। आर्य विद्वान वैदिक धर्मको मानते थे और हिंदुस्तान पहले आर्यावर्त कहा जाता था। वह फिरसे आर्यावर्त कहलाए ऐसी मेरी कोई इच्छा नही है। मेरी कल्पनाका हिंदू-धर्म मेरे लिए अपने आपमे पूर्ण है। बेशक, उसमे वेद शामिल है, मगर उसमे

और भी बहुत कुछ शामिल है। यह कहनेमे मुझे कोई नामुनासिब बात नही मालूम होती कि हिंदू-धर्मकी महत्ताको किसी भी तरह कम किये बगैर मैं मुसलमान, ईसाई, पारसी और यहूदी-धर्ममे जो महत्ता है उसके प्रति हिंदू-धर्मके बराबर ही श्रद्धा जाहिर कर सकता हू। ऐसा हिंदू-धर्म तबतक जिंदा रहेगा, जबतक आकाशमे सूरज चमकता है। इस बातको तुलसीदासने एक दोहेमे रख दिया है—

दया धरमको मूल है, पाप मूल अभिमान।
तुलसी दया न छोडिए, जब लगि घटमे प्रान॥

मेरे ओखला छावनीके मुआइनेके वक्त जो बहन मेरे साथ थी, वे इस खयालसे घबडा गई कि निराश्रितोकी कुछ छावनियोमे बुरा आचरण होनेकी मैंने जो बात कही थी, उसका सबध कही ओखला छावनीमे तो नही है। ओखला छावनीको मैंने बहुत जल्दीमे देखा है, इसलिए उसके बारेमे ऐसी कोई बात कहना मेरे लिए नामुमकिन है। अपने भाषणमे मैंने आम छावनियोमे होनेवाले बुरे आचरणका ही जिक्र किया है।

मैं इस बातका जिक्र किये बिना नही रह सकता कि मुझे जो सूचना मिली है उसके मुताबिक दिल्लीकी करीब १३७ मसजिदे हालके दगोमे बरबाद-सी कर दी गई है। उनमेसे कुछको मदिरोमे बदल डाला गया है। ऐसी एक मसजिद कनॉट प्लेसके पास है, जिसकी तरफ किसीका भी ध्यान गए बिना नही रह सकता। आज उसपर तिरगा झडा फहरा रहा है। उसे मदिरका रूप देकर उसमे एक मूर्ति रख दी गई है। मसजिदोको इस तरह बिगाडना हिंदू और सिख-धर्मपर कालिख पोतना है। मेरी रायमे यह बिलकुल अधर्म है। जिस कलकका मैंने जिक्र किया है, उसे यह कहकर कम नही किया जा सकता कि पाकिस्तानमे मुसलमानोने भी हिंदू-मदिरोको बिगाडा या उन्हे मस-जिदोका रूप दे दिया है। मेरी रायमे ऐसा कोई भी काम हिंदू-धर्म, सिख-धर्म या इस्लामको बरबाद करनेवाला काम है।

(गाधीजीने इस बारेमे अखिल भारत-काग्रेस-कमेटीका हालका ठहराव लोगोको सुनाया।)

आज हमेशासे ज्यादा समयके लिए प्रार्थना-सभामे ठहरनेका खतरा उठाकर भी मै अतमे एक वात कह देना अपना फर्ज समझता हू। मुझसे यह कहा गया है कि गुडगावके पास रोमन कैथोलिकोको सताया जाता है। जिस गावमे यह हुआ है, उसका नाम कन्हाई है। वह दिल्लीसे करीव २५ मीलपर है। एक हिंदुस्तानी रोमन कैथोलिक पादरी और एक गावके ईसाईप्रचारक मुझसे मिलने आए थे। उन्होने मुझे वह खत दिखाया जिसमे कन्हाई गावके रोमन कैथोलिकोने हिंदुओद्वारा अपने सताए जानेकी कहानी वयान की थी। ताज्जुव यह है कि वह खत उर्दूमे लिखा था। मै समझता हू कि उस हिस्सेके रहनेवाले हिंदू, सिख या दूसरे लोग केवल हिंदुस्तानी ही वोल सकते और उर्दू-लिपिमे ही लिख सकते है। सूचना देनेवाले लोगोने मुझे वताया कि वहाके रोमन कैथोलिकोको यह धमकी दी गई है कि अगर वे गाव छोडकर चले नही जायगे, तो उन्हे नुकसान उठाना पडेगा। मुझे आशा है कि यह धमकी झूठी है और वहाके ईसाई भाई-वहनोको विना किसी रुकावटके अपना धर्म पालने और काम करने दिया जायगा। अव हमे सियासी गुलामीसे आजादी मिल गई है। इसलिए आज भी उन्हे धर्म और कामकी वही आजादी भोगनेका हक है, जो वे ब्रिटिश हकूमतके दिनोमे भोगते थे। मिली हुई आजादीपर यूनियनमे सिर्फ हिंदुओका और पाकिस्तानमे सिर्फ मुसलमानोका ही हक नही है। मै अपने एक भाषणमे आप लोगोसे कह चुका हू कि जव यूनियनमे हिंदुओ और सिखोका मुसलमानोके खिलाफ भडका हुआ गुस्सा कम हो जायगा, तो सभव है वह दूसरोपर उतरे। लेकिन जव मैने यह वात कही थी तव मुझे यह आशा नही थी कि मेरी भविष्यवाणी इतनी जल्दी सच सावित होने लगेगी। अभीतक मुसलमानोके खिलाफ वढा हुआ गुस्सा पूरी तरह शात नही हुआ है। जहातक मै जानता हू, ये ईसाई विलकुल निर्दोष है। मुझे सुझाया गया कि उनका गुनाह यही है कि वे ईसाई है। इससे भी ज्यादा वडा गुनाह यह है कि वे गाय और सूअरका गोश्त खाते है। मैने उत्सुकतासे मिलने आए हुए पादरीसे पूछा कि इस वातमे कोई सचाई है? तव उन्होने कहा कि इन रोमन कैथोलिकोने अपनी मरजीसे वहुत पहले ही

गाय और सूअरका मास खाना छोड दिया है। अगर इस तरहका नादानीभरा द्वेष चालू रहा तो आज़ाद हिंदुस्तानका भविष्य अधेरा ही समझिए। वह पादरी जव रेवाडीमे थे, तव उनकी खुदकी साइकिल उनसे छीन ली गई और वह मौतसे वालवाल वचे। क्या यह दु ख सारे गैर-हिंदुओ और गैर-सिखोको मिटाकर ही मिटेगा ?

: १५६ :

२२ नववर १९४७

(गुडगावके नजदीक एक गावमे ईसाइयोके साथ होनेवाले वुरे वरताव-का फिरसे जिक्र करते हुए, गाधीजीने अपने आजके शामके भापणमे कहा—)

भाइयो और वहनो,

मुझे खवर मिली है कि कुछ-कुछ ऐसा ही वरताव सोनीपतके ईसाइयोके साथ हुआ है। मुझसे कहा गया है कि पहले तो वहा ईसाइयोसे प्रार्थना की गई कि वे निराश्रितोको अपने मकानोका उपयोग करने दे। ईसाइयोने खुशीसे इसकी इजाज़त दे दी और इसके लिए उन्हे धन्यवाद भी दिया गया। मगर यह धन्यवाद अभिशापमे वदल गया, क्योकि उनके दूसरे मकान भी जवरदस्ती निराश्रितोके काममे ले लिये गए और उनसे कह दिया गया कि अगर वे सोनीपतमे अपनी जिदगीको वहुत दु खी नही देखना चाहते, तो वहासे चले जाय। अगर यह वात ऐसी ही हो, जैसी कि वह कही गई है, तो साफ जान पडता है कि यह वीमारी वढ रही है और कोई नही वता सकता कि यह वीमारी हिंदुस्तानको कहा ले जानेवाली है।

जव मै कुछ दोस्तोसे चर्चा कर रहा था, तव मुझसे कहा गया कि जवतक पाकिस्तानमे होनेवाली इसी किस्मकी वुराइया कम नही होती, तवतक हिंदुस्तानी सघमे ज्यादा सुधारकी उम्मीद नही की जा सकती। इस वातके समर्थनमे मेरे सामने लाहौरके वारेमे जो कुछ अख-वारोमे छपा है, उसका उदाहरण रखा गया। मै खुद अखवारोकी

खबरोको सोलह आने सच नही मानता और मै अखबार पढनेवालोको भी चेतावनी दूगा कि वे उनमे छपी कहानियोका अपने ऊपर आसानीसे असर न पडने दे। अच्छे-से-अच्छे अखबार भी खबरोको वढा-चढाकर कहने और उन्हे रगनेसे वरी नही है। मगर मान लीजिए कि जो कुछ आपने अखवारोमे पढा वह सब सच है, तो भी एक बुरे नमूनेकी कभी नकल नही की जानी चाहिए।

एक ऐसे समकोण चौखटकी कल्पना कीजिए, जिसमे स्लेट नही लगी है। अगर उस चौखटको जरा भी वेढगे तरीकेसे पकडा जाय, तो उसके समकोण न्यूनकोण और अधिककोणमे वदल जायगे और अगर चौखटको एक कोनेपर फिरसे ठीक ढगसे पकडा जाय, तो दूसरे तीन कोने अपने आप समकोण वन जायगे। इसी तरह अगर हिंदुस्तानी सघकी सरकार और लोग, सही वरताव करे, तो मुझे इसमे ज़रा भी शक नही कि पाकिस्तान भी ऐसा ही करने लगेगा और सारा हिंदुस्तान फिरसे समझदार वन जायगा। ईसाइयोके साथ किये गए बुरे वरतावको, जिन्होने, जहातक मै जानता हू, कोई अपराध नही किया है, इस वातका सकेत समझा जाय कि इस पागलपनको और ज्यादा वढने देना ठीक नही है। और अगर हिंदुस्तानको दुनियाके सामने अपना अच्छा लेखा-जोखा रखना है, तो एकदम और तेजीके साथ इस पागलपनका मुकावला किया जाय।

(इसके वाद निराश्रितोकी समस्यापर वोलते हुए गाधीजीने कहा--)

उनमे डाक्टर, वकील, विद्यार्थी, शिक्षक, नर्से वगैरा है। अगर उन्होने गरीब निराश्रितोसे अपने आपको अलग कर लिया, तो वे अपने ऊपर पडे हुए एकसे दुर्भाग्यसे कोई सवक नही ले पायगे। मेरी राय है कि सब व्यवसायी और गैर-व्यवसायी, धनवान और गरीब निराश्रित एक साथ रहे और जिस तरह लाहौरके धनवान लोगोने लाहौरको आदर्श शहर वनाया—और जिसे हिंदुओ और सिखोको लाचार होकर खाली करना पडा—उस तरह वे भी आदर्श शहर वसाए। ये शहर, दिल्ली-जैसी घनी आवादीवाले शहरोका वोझ हलका करेगे और इनमे रहने-वाले लोगोकी तदुरुस्ती वढेगी और उनकी तरक्की होगी। अगर कुरुक्षेत्रकी

वडी छावनीमे रहनेवाले दो लाखसे ऊपर निराश्रित वाहरी और भीतरी सफाईके मामलेमे आदर्श वन गए, अगर व्यवसायी और धनवान गरीव निराश्रितोके साथ वरावरीके आधारपर रहे, अगर उन्होने तवुओकी इस वस्तीमे अच्छी सडके वनाकर सतोषकी जिदगी विताई, अगर वे सफाईसे लगाकर सारे काम खुद करते रहे और दिनभर किसी-न-किसी उपयोगी काममे लगे रहे, तो वे सरकारी वजटपर वोझ नही रह जायगे। और उनकी सादगी और सहयोगको देखकर शहरोमे रहनेवाले लोग सिर्फ उनकी तारीफ करके ही नही रह जायगे, वल्कि उन्हे अपने जीवनपर शर्म मालूम होगी और वे निराश्रितोकी सारी अच्छी वातोकी नकल करेगे। तव मौजूदा कडुवाहट और आपसी जलन एक मिनटमे गायव हो जायगी। तव निराश्रित लोग, चाहे वे कितनी ही वडी तादादमे क्यो न हो, केद्रीय और मुकामी सरकारोके लिए चिताके विषय नही रह जायगे। लाखो निराश्रितोद्वारा विताई गई ऐसी आदर्श जिदगीकी दु खी दुनिया तारीफ करेगी।

अतमे मै कट्रोलोको हटानेके वारेमे, खासकर अनाज और कपडेका कट्रोल हटानेके वारेमे चर्चा करूगा। सरकार कट्रोल हटानेमे हिचकिचाती है, क्योकि उसका खयाल है कि देशमे अनाज और कपडेकी सच्ची तगी है। इसलिए अगर कट्रोल हटा दिया गया तो इन चीजोके दाम वहुत वढ जायगे। इससे गरीवोको वडा नुकसान होगा। गरीव जनताके वारेमे सरकारका यह खयाल है कि वह कट्रोलोके जरिए ही भुखमरीसे वच सकती है और तन ढकनेको कपडा पा सकती है। सरकारको व्यापारियो, अनाज पैदा करनेवालो और दलालोपर शक है। उसे डर है कि ये लोग कट्रोलोके हटनेका वाजकी तरह रास्ता देख रहे है, ताकि गरीवोको अपना शिकार वनाकर वेईमानीसे कमाये हुए पैसेमे अपनी जेवे भर सके। सरकारके सामने दो वुराइयोमेसे किसी एकको चुननेका सवाल है। और उसका खयाल है कि मौजूदा कट्रोलोको हटानेके वदले वनाए रखना कम वुरा है।

इसलिए मै व्यापारियो, दलालो और अनाज पैदा करनेवालोसे अपील करता हू कि वे अपने प्रति किये जानेवाले इस शकको मिटा दे

और सरकारको यह यकीन दिला दे कि अनाज और कपडेका कट्रोल हटनेमे कीमते ऊची नही चढेगी। कट्रोल हटानेमे काला वाजार और वेईमानी जडसे भले ही न उखाडी जा सके, लेकिन इससे गरीवोको आजसे ज्यादा सुख और आराम मिलेगा ।

: १५७ :

२३ नवबर १९४७

भाइयो और वहनो,

एक भाई लिखते है कि अगर हक नही मिले तो क्या हिंसाका मार्ग नही लेना चाहिए ? हिंसामे हम हक ले नही सकते। मै तो कहूगा कि हिंसासे कुछ मिल ही नही सकता। लगता तो है कि मिल सकता है, लेकिन कैसे ? हा, एक वच्चा है, उसके हाथमे रुपया है, उसको दो-चार तमाचा मार दू और रुपया ले लू, तो मीठा तो लगेगा कि रुपया तो ले लिया लेकिन मैने गुमाया कितना ! वच्चा वेचारा करे क्या ? लेकिन मेरा दिल चुभेगा कि वेचारे वच्चेका रुपया ले लिया, मारपीट करके। लेकिन ऐसे पाजी दुनियामे भरे पडे है। मै तो ऐसा कर नही सकता। ऐसा छीननेका मेरा हक नही है। छीन लिया तो नतीजा वुरा होगा । इसलिए मै कहता हू कि हिंसामे हक ले नही सकते। हक लेनेका एक ही तरीका है और वह मैने प्रकट कर दिया है। वह सवको पसद पडा। उसमे लिखा है कि लोगोका हक क्या है और कैसे मिल सकता है। मै तो कहूगा कि हक है ही नही। जिसके पास फर्ज नही है तो उसका हक नही है, अर्थात् सव हक अपने फर्जमेसे निकलता है—फर्ज नही तो हक नही। मै फर्ज अदा करता हू तो उसका नतीजा मिलता है, वही हक है। जैसे मै खाता हू, खानेका धर्म है तो खाता हू, शौकसे लिया तो कुछ-न-कुछ रोग पैदा होगा। अगर खाता हू धर्म समझकर, ईश्वरका नाम लेता हू, दुनियाकी सेवा करता हू तो मुझे हक मिल जाता है। क्या मिलता है ? सेवा

करनेका हक मिलता है। आप कहेंगे कि इसको हक कैसे कहेंगे ? आप विचार करेंगे तो यह मालूम हो जायगा। मैं तो कहूगा कि वही हक हो जाता है। मानो कि मैं दिनभर काम करता हू तो आठ आना कमा लेना हू—वह आठ आना हकसे मिलता है। हक कैसे आया ? काम किया तब। काम न करू और आठ आना पैसा लू तो हकसे नही लिया, छीन लिया। हक तो तभी होता है जब मजदूरी करनेका इकरार कर दिया और वह दिलमे किया अर्थात् मनसे, वचनसे, कर्मसे किया। लेकिन अगर दिलसे काम नही करता हू, सरदारका बिगाडता हू, सरदार देखता नही है, इसलिए धोखा दू तो वह पाप है। और जब देखता हू कि दूसरेको तो एक रुपया मिल रहा है तो मैं भी एक रुपया ले सकता हू, लेकिन कब ? सरदारको कह-कर। उनको कहू सबको तो एक रुपया मिलता है तो मैं कैसे आठ आनेमे काम करू—एक रुपया नही तो पद्रह आने तो दे दो। वह कहे कि आठ आनेमे काम करो तो करो नही तो चले जाओ। तब मैं क्या करू ? क्या माल जला दू, उसका काम रोक दू, धरना दू, फाका करू, क्या करू ? मैं कहूगा कि मैं इस्तीफा दे सकना हू, लेकिन आठ आनेमे तो मजदूरी नही कर सकता हू—यह तो शराफत हुई। मैं तो कहूगा कि जो कुछ करना चाहो वह शराफतमे करो। शराफतमे यही आता है कि हम धर्मका पालन करे, फर्जको अदा करे और फर्ज-करके अहिंसासे हक पैदा करे। हिंसाके मारफत कुछ भी लेनेकी कोशिश न करे—इसीसे दुनिया चलती है, नही तो दुनिया बिगडती है।

तो क्रिस्तियोंके बारेमे तो कह दिया था। आज मैं आप लोगोको हरिजनोके बारेमे कहूगा। वह तो हमारे लिए शर्मकी बात है कि रोह-तकमे, रोहतक जिलेमे कहो, हर जगह हरिजन पडे है—पहले भी थे, अब भी है। तो वहा भी हरिजन पडे है। वहा तो जाट लोग पडे है, शायद अहीर भी पडे है। उनके दिलमे ऐसा हुआ कि हरिजन है, वे हमारे गुलाम है, जो कुछ काम लेना है लेगे—वहा फिर हककी बात आ गई—वे तो जन्मसे गुलाम पैदा हुए है। पानी चाहिए तो दे, खाना खाए तो ठीक है, नही तो हकसे ले नही मकते।

इसको मै तकवरी[१] मानता हू। जब अग्रेजी सल्तनत थी तब चलती थी और अब वह चीज ज्यादा बन गई। बेचारे हरिजन गरीब है तो मेरे पास आए और कहा कि हमपर ऐसी गुजर रही है तो क्या हम गुलामीमे रहे, कि मर जाय या रोहतक छोड दे या क्या करे? अभी वे छोड भी नही सकते, यह समझने लायक बात है। यदि वे रोहतक छोडते है तो दूसरे लोग मरेगे, क्योकि उनका काम बिगडता है, लेकिन हरिजनको गुलामी ही करना है तो ऐसा हो जाता है। तो वे बेचारे आ गए—मदरसेमे पढते है, कोई आगे पढता है, कोई पीछे है, उद्योग भी सीखते है, लेकिन वे लोग जो नाराज कर रहे है उनको क्या कहे। अब तो हम ऐसे हो गए है कि हम सोचते नही कि हम कहा जा रहे है। अग्रेजी सल्तनत चलती थी तब डरते थे कि हमको मारपीट डालेगे। अब वह सल्तनत चली गई तो कौन क्या कर सकता है! जजके सामने पेश किये जाएगे तो जजको भी डरा सकेगे। जज क्या कर सकता है? अब ऐसी तकवरी पैदा हो गई है। इसका नतीजा यही आता है कि हरिजन तबाह हो जाता है। तो मैने उन लोगोसे कहा कि आप बापा साहब[२]के पास जाइए—उन्होने तो हरिजनो और आदिवासियोकी सेवा करनेके लिए जन्म लिया है, वे हरिजनोके लिए सब कुछ करते है। तो वे गए और पीछे मेरे पास आए और मुझको सुनाया कि बापा साहब कुछ नही करते है। मै तो समझ गया कि वे क्या चाहते है। वे यही बैठे है। मैने कहा कि आप डाक्टर गोपीचदके पास जाइए। वे प्रधान मत्री बन गए है तो क्या, पहले तो हरिजन-सेवक-सघका सब काम करते थे। आज आनेवाले थे तो मैने कहा कि उनसे मिलू। मिला। लेकिन वहा जो लोग जालिम बन गए है, मजबूर करते है, हठीले बन गए है तो क्या करना? आज अग्रेजी सल्तनत तो है नही, वैसा कर भी नही सकते है, तो वे करे क्या? तो मैने सोचा कि आज मै हरिजनोकी करुण कथा सुनाऊ। हम इतना भी नही कर सकते है? आज हमारा धर्म क्या है?

---

[१] तकब्बुर=अभिमान। [२] श्री ठक्कर बापा।

आजतक हम उन्हे अछूत, गुलाम मानते आए है, वह अधर्म किया। गलती की और पाप किया, उसके प्रायश्चित्तके रूपमे हरिजन-सेवक सघ बना, सघने बहुत काम भी किया है। सब हिंदूने ऐसा नही किया—करोडोकी सख्यामे हिंदू, सब हिदूने तो उसे अपनाया भी नही है। अगर सब हिंदुओने अपना लिया होता तो मुझे यह करुण कथा क्यो सुनानी पडती। अग्रेजोके राज्यमे तो करते थे—उनको गाली देते थे कि अगर ये नही होते तो हम अच्छे हो जाते, लेकिन अब तो वे चले गए—हम अब अच्छे है या बुरे ? मैं तो कहूगा कि पहलेसे ज्यादा बुराइया आ गई। हम ज्यादतिया तब करते थे और अब भी करते है, पहले तो मुसलमानोपर ज्यादतिया की, यह भी पाप किया—पाकिस्तान है यह भूल जाओ, उसका खयाल मत करो। समझो कि अगर एक आदमी पाप करता है तो क्या हम भी करे। सोचोगे तो मालूम होगा कि वह बुरा है—एक बुराईसे दूसरी बुराई पैदा होती है। हमने काफी लोगोको मार डाला है, हमारे दिलमे झूठी हिम्मत आ गई है कि मारो क्रिस्तियोको, पीछे हम जाटिस्तान, अहीरिस्तान, हर एक अपना-अपना स्थान बनाएगे, लेकिन हिंदुस्तान कोई नही बनाएगा। हरिजनोको तो अपनाना ही चाहिए—वे तो हम जैसे हिंदू है, वह पचम जाति तो है नही। पचम वर्ण तो हिंदमे है नही, चार वर्ण है—उनमे एक नीचा और दूसरा ऊचा तो है ही नही। इन चारोमे ऐसा है कि एक धर्म सिखाता है, दूसरा रक्षा करता है, तीसरा तिजारत करता है—घर भरनेके लिए नही, अपने लिए करोडो रुपया पैदा करनेके लिए नही, प्रजाके लिए भले ही पैदा करे—और चौथा प्रजाकी सेवा करता है। लेकिन चारो साथ-साथ खडे रह सकते है, बैठ सकते है। अगर शूद्र है, वह बैरिस्टर बन जाय तो वह बैरिस्टरी नही कर सकता, ऐसी बात नही है। वह बैरिस्टर होकर भी सेवा कर सकता है। जो धर्म सिखाता है वह भी सेवा करता है, तिजारत करता है, नौकरी करता है वह सेवा करता है और झाडू लगाता है वह भी सेवा करता है—ये चारो सेवा है, सेवाक्षेत्र बन गया है। पीछे जो धर्म सिखाता है उसको ज्यादा सीखना पडता है—इसका मतलब

यह नही है कि वह अगर उस कामको छोडकर दूसरा काम करता है तो पाप करता है। वह उस कामको नही कर सकता ऐसी बात नही है। इसी तरह हमने अनेक जातिया पैदा की और अब पचम वर्ण पैदा करते है तो हमारी गलती है, दुष्टता है। अगर हम अपने-अपने धर्मके मुताबिक चले तब तो हो सकता है। आज हमारे हाथमे बागडोर आ गई है तो हिंदू-सिख सब अपने-अपने धर्मके अनुसार चले तो मै समझता हू कि सबका काम चल सकता है। मैने भी समाप्त कर दिया और यह भी समाप्त हो गई।

: १५८ :

२४ नवबर १९४७

भाइयो और बहनो,

जब मै प्रार्थनामे आता हू आप लोग मेहरबानी करके मेरे और मेरी लडकियोके लिए काफी जगह गुजरनेके लिए छोड देते है, मगर जानेके समय लोग चरण छूनेके लिए मेरे इर्द-गिर्द भीड़ कर देते है। वह अच्छा नही लगता। मेरी प्रार्थना है कि जानेके समय भी आप लोग मुझे शातिसे रास्ता दे। आपकी मुहब्बत मै समझता हू, और उसकी मुझे कदर है। मगर मै चाहता हू कि यह मुहब्बत बाह्य उभारकी जगह किसी रचनात्मक कार्यका रूप ले। इस बारेमे मै बहुत बार कह चुका हू और लिख चुका हू। रचनात्मक कार्यक्रममेसे मुख्य तो आज कौमी मेल-जोल है। पहले भी झगडा होता था मगर उसमे किसीको बर्बाद करनेकी बात नही होती थी। अब तो मारनेकी ही बात है। जहर फैल गया है। एक तरफसे हिंदू और सिख, दूसरी तरफसे मुसलमान एक दूसरेके दुश्मन बन गए है। इसका शर्मनाक नतीजा आप देख ही चुके है।

प्रार्थनामे आनेवालोका अपना हृदय वैरभावसे खाली हो, यह बस नही। उन्हें सांप्रदायिक मेलजोल फिरसे कायम करनेमे सक्रिय

भाग लेना है। खिलाफतके जमानेमे हिंदू-मुस्लिम-ऐक्यका हमे गर्व था। उन दिनोमे मिली-जुली बडी-बडी सभाओमे जाना मै भूला नही। उस ऐक्यको देखकर मेरा हृदय आनदसे उछलता था। क्या वे दिन फिर कभी वापिस नही आवेगे?

हिंदुस्तानकी राजधानीमे कल ही जो दु खद घटना हुई उसका विचार कीजिए। कहा जाता है कुछ हिंदू और सिखोने एक खाली मुस्लिम घरका कानूनके विरुद्ध कब्जा लेनेकी कोशिश की। उसपरसे झगडा हुआ और कुछ लोगोको चोट पहुची। मगर किसीकी मृत्यु नही हुई। यह घटना बुरी थी। मगर उसे और भी बढाया-चढाया गया। पहली खबर यह थी कि चार सिख मारे गए है। नतीजा वही हुआ जो ऐसी चीजोमे होता है। बदलेकी भावना भडकी और कई लोग छुरेसे घायल हुए।

सुनता हू कि अब एक नया तरीका इस्तेमाल होने लगा है। छोटी कृपाणकी जगह सिख लोग बडी तलवार रखने लगे है। तलवार खीचकर हिंदुओके साथ या अकेले मुसलमानके घरोमे जाते है, और उन्हे मकान खाली करनेको धमकाते है। अगर यह खबर सच्ची है तो राजधानीमे ऐसी चीज असह्य पशुपन है। अगर यह सही नही है तो इसकी तरफ और ध्यान देनेकी जरूरत नही। सही है तो न सिर्फ सत्ताधारियोको, बल्कि जनताको भी फौरन इसकी तरफ ध्यान देना चाहिए। जनताके पीठ-बलके बिना सत्ताधीश कुछ नही कर सकते।

मै नही जानता कि ऐसी हालतमे मेरा धर्म क्या है? इतनी बात स्पष्ट है कि हालत ज्यादा बिगड रही है। जल्दी ही कार्तिककी पूर्णिमा आनेवाली है। मेरे पास तरह-तरहकी अफवाहे आती है। मै उम्मीद रखता हू कि जैसे दशहरा और बकरीदके समय हुआ, उसी तरह अब भी ये अफवाहे झूठी सिद्ध होगी।

इन अफवाहोसे एक पाठ तो हम सीख ही सकते है। आज हमारे पास शातिकी कोई मिल्कियत जमा नही। हमे रोजकी कमाई रोज करना है। यह स्थिति किसी राष्ट्र या राज्यके लिए अच्छी नही। देशके हरेक सेवकको ध्यानपूर्वक सोचना है कि वह इस खा जानेवाले

जहरको मिटानेके लिए क्या कर सकता है और उसे क्या करना चाहिए।

यहांपर लायलपुरके सरदार संतसिंहजीके एक लंबे पत्रकी चर्चा करना अच्छा होगा। वे पहले सेंट्रल असेम्बलीके सदस्य थे। उन्होने सिखोका जबर्दस्त बचाव किया है। उन्होने मेरे पिछले बुधवारके भाषणका जो अर्थ किया है, वह उस भाषणके शब्दोमेसे नही निकलता। मेरे मनमे तो वह था ही नही। शायद सरदार साहब जानते होगे कि १९१५ मे दक्षिण अफ्रीकासे लौटनेके बाद मेरा सिख मित्रोके साथ घनिष्ट संबंध रहा है। एक समय था कि जब सिख, हिंदुओ और मुसलमानोकी तरह मेरे वचनोको वेद-वाक्य मानते थे। अब समय बदल गया है, उसके साथ लोगोके ढंग बदल गए है। मगर मै जानता हू कि मै नही बदला। शायद सरदार साहब नही जानते, सिख आज किस तरफ बहे जा रहे है। मै उनका पक्का मित्र हू। मुझे अपना कोई स्वार्थ नही साधना। सो मै सब चीज देख सकता हू। मै उनसे साफ-साफ दिल खोलकर बात कर सकता हू, क्योकि मै उनका सच्चा मित्र हू। मै यह कहनेकी हिम्मत करता हू कि कई बार सिख भाई मेरी सलाहको मानकर कठिनाइयोमेसे बच निकले है। इसलिए मुझे कभी यह खयाल भी नही आया कि मुझे सिखोके बारेमे, या तो किसीके भी बारेमे, सोच-समझकर बोलना चाहिए। सरदार साहब और हरेक सिख जो सिख-जातिका भला चाहता है और आजके प्रवाहमे बह नही गया, इस बहादुर और महान् जातिको पागलपन, शराबखोरी और उसमेसे निकलनेवाली बदियोसे बचानेमे मदद करे। जिस तलवारका वे काफी प्रदर्शन कर चुके है, और बुरी तरह इस्तेमाल कर चुके है, उसे अब वापस म्यानमे रख दे। अगर प्रिवी कौंसिलके फैसलेका यह अर्थ है कि कृपाणका मतलब है किसी भी मापकी तलवार, तो भी, वह उससे मूर्ख न बने। किसी भी बेउसूल शराबी आदमीके हाथमे जानेसे, या उसका मनमाना इस्तेमाल करनेसे कृपाणकी पवित्रता जाती रहती है। पवित्र चीजका पवित्र और बाकानून मौकेपर ही इस्तेमाल हो सकता है। इसमे शक नही कि कृपाण शक्तिका

प्रतीक है। कृपाण रखनेवालेको वह तभी शोभा देती है जब वह अपने आपपर आश्चर्यजनक काबू रखे और बहुत ही भारी विरोधी ताकतके सामने उसका इस्तेमाल करे।

सरदार साहब मुझे यह कहनेके लिए माफ करेंगे कि मैंने सिख-इतिहासका ध्यानपूर्वक अध्ययन किया है और ग्रथ साहबके तत्वोका अमृतपान किया है। उन वचनोके हिसाबसे देखा जाय तो जो सिखोने किया बताया जाता है, उसका कोई बचाव नही हो सकता। वह अपने आपको बर्बाद करनेका रास्ता है। किसी भी हालतमे सिखोकी बहादुरी और ईमानदारीका इस तरह नाश नही होना चाहिए। वे सारे हिंदुस्तानके लिए भारी सपत्ति हो सकते है, आज तो वे भयरूप बन गए है। सो नही होना चाहिए।

यह कहना कि सिख इस्लामके पहले नबरके दुश्मन है, बिल्कुल वाहियात बात है। मुझे भी तो यही अल्काब[1] दिया जा चुका है न! क्या यह अल्काब मुझे सिखोके साथ बाटना पडेगा? मेरा सारा जीवन इस इल्जामको गलत सिद्ध करनेवाला है। सिखोपर यह इल्जाम लगाया जा सकता है क्या? शेरे-काश्मीरको जो सिख आज मदद दे रहे है, उनसे तो वे पाठ सीखे। उनके नामसे जो मूर्खताके कार-नामे किये जा रहे है, उसका वे पश्चात्ताप करे।

मैं जानता हू कि एक बुरी और भयानक बात यह चलती है कि हिंदू सिखोको छोड दे तो उन्हे पाकिस्तानमे कोई खतरा नही। सिखोको पाकिस्तानमे कभी बर्दाश्त नही किया जाएगा। ऐसे भाई-भाईको मारनेवाले सौदेमे मैं तो कभी हिस्सेदार नही बन सकता। जबतक हरेक हिंदू और सिख बाइज्जत और सुरक्षित रूपसे पश्चिमी पजाबमे अपने घर वापस नही जाता, और हरेक मुसलमान यूनियनमे अपने घर उसी तरह नही लौट आता, तबतक इस बदकिस्मत देशमे शाति होनेवाली नही। जो लोग अपनी खुशीसे खास कारणोसे अपने घरोको न लौटना चाहे उनकी बात अलग है। अगर हमे शातिसे, एक-दूसरेको

---

[1] उपाधि।

मदद देनेवाले पडोसी बनकर रहना है तो जनताके तवादलेके पापको धोना होगा।

पाकिस्तानकी बुराइयोको यहा दुहरानेकी जरूरत नही, उससे हिंदू और सिख दुखियोको कोई फायदा पहुचनेवाला नही। पाकिस्तानको अपने पापोका बोझ उठाना है। और मै जानता हू वह भयानक है। मेरी क्या राय है, यह जानना सबके लिए काफी होना चाहिए। अगर उस रायकी कोई कीमत है तो वह यह है कि १५ अगस्तमे बहुत पहले मुस्लिम लीगने शरारत शुरू की थी। मै यह भी नही कह सकता कि १५ अगस्तको उन्होने नई जिदगी शुरु कर दी और शरारतको भूल गए। मगर मेरी यह राय आपकी कोई मदद नही कर सकती। महत्त्वकी बात यह है कि यूनियनमे हमने उनके पापोकी नकल की, और उनके साथ हम भी पापी बन गए। तराजूके पलडे करीब-करीब बराबर हो गए। क्या अब भी हमारी मूर्च्छा छूटेगी और हम अपने पापोका प्रायश्चित्त करेगे? या फिर हमे गिरना ही है?

: १५६ :

२५ नवबर १९४७

भाइयो और बहनो,

आज मै आपसे पाकिस्तानसे आए हुए शरणार्थियोके बारेमे कुछ कहना चाहता हू, लेकिन अभी मुश्किलकी बात यह है कि उनको शरणार्थी कहना चाहिए कि नही। कल चद भाई मुझको कहते थे कि आप हमको शरणार्थी क्यो कहते है? एक तरहमे तो उनकी बात सच्ची है, क्योकि शरणार्थी तो उनको कहते है जो शरण चाहते है। वे वहाँसे कष्टके मारे आ तो गए, लेकिन यहा किसीकी शरण क्यो चाहे? और शरण भी किसकी, जब सारा हिंदुस्तान है और वह सबका है। यहा तो मै पाकिस्तानको भी उसमे मानता हू। लेकिन आज अगर वह नही है और

ऐसा कहो कि हमारे दो टुकडे हो गए है, तो भी यूनियन तो सबका है और होना भी चाहिए। तब वे यहा आते है तो अपने हकसे आते है। इसलिए उनकी बात मुझको सच्ची लगी। जब आदमीको किसी जगह कष्ट होता है और वह वहासे भागता है और आकर अपनी माकी गोदमें छिप जाता है, तब उसको हम शरणार्थी कहेगे या हकसे आया है, ऐसा कहेगे? मैंने उनको कहा कि आप यह तो मानेगे कि मुझे कोई द्वेष-भाव तो हो नही सकता कि जो मैं इस कटु भाषाका इस्तेमाल करू। हकीकतमें यह पहले अंग्रेजीका शब्द 'रिफ्यूजी' था, और हम तो अंग्रेजी भाषाके अबतक ऐसे गुलाम रहे है कि गुलामीमेंसे छूट नहीं सकते है। इसलिए 'रिफ्यूजी' शब्द तो पहले बना और उसका एक ही मानी हो सकता था जो कि पीछे अखबारवालोंने शरणार्थी या निराश्रित किया। तब उन्होंने कहा कि अंग्रेजीमें और भी तो शब्द बहुत है, जैसे 'सफरर्स'[1] है कि नही, तो फिर उनको 'सफरर्स' क्यो नही कहते? मैं तो अंग्रेजी इतनी जानता हू, इसलिए 'सफरर्स' कैसे कहू! तो फिर क्या कहू उनको? पीछे मेरे दिलमें ऐसा हुआ कि दु खी तो वे है ही, इसलिए दु खी कहो। वैसे तो हम सभी यहा दु खी पडे है, लेकिन जो लोग लाखोकी तादादमें अपने घरबार छोड़कर यहा आए है, वे दरअसल दु खी है। इसलिए उनके बारेमें मैं आज कुछ कहना चाहता हू।

मेरे पास आज तीन किस्मके लोग मिलने आए। एक किस्मको तो मैं छोड देना चाहता हू। लाहौरमें उसका एक बडा सारा कबीला था। कुछ होटल वगैरह उसका चलता था, तो वहा उसका सब घरबार और मालमता छूट गया और अपनी बीबी-बच्चोको लेकर यहा आ गए। सबको तो यहा नही लाए। लेकिन मुझको सब हाल सुनाया और पीछे कहने लगे कि मुझको यहा कही घर दिलवा दो। मैंने कहा कि मेरे हाथमें कोई हकूमत तो है नही, और अगर हकूमत भी होती तब भी मैं घर दिलवानेवाला नही था। एक तो दिल्ली शहरमें वैसे ही घर कम है और यहाके लोग ही काफी परेशानीमें पडे है, इसपर भी उनसे हकूमत घर छुडवा लेती है।

---

[1] पीडित।

जब कोई अमलदार या राजदूत आ गया तो उनको तो तबूमे नही रख सकते है। इसलिए उनको किसीका घर या कोठी खाली कराकर दे देते है। जो लोग उसमे पहलेसे रहते है, वे जब कहते है कि हम कहा जाए तो कहा जाता है कि कही भी जाओ। हकूमत यहातक तो नही जाती, लेकिन जा सकती है, और कई लोगोको इस तरहके नोटिस मिले है कि तुम्हे अपना घर खाली करना पडेगा। जब यह हालत है तो जो ये लाखो लोग दु खी पडे है, उनको घर कहासे दिया जाय ? उसने कहा कि हम सत्रह आदमी खोकर यहा आए है। मैने कहा कि आप सत्रह आदमी खोने लायक तो थे। ऐसे भी कबीले है जिनमे एक मर्द और औरतके सिवा दूसरे कोई है ही नही। अगर आप यह माने कि यह सारा हिंदुस्तान हमारा है तो जो सत्रह गए वे तो गए, लेकिन बाकी हिंदुस्तानके लोग तो है। खैर, यह तो एक ज्ञान-वार्ता हो गई, उसको तो छोडो। तब मैने उनको कहा कि जो कैप यहा चल रहे है उनमे आपको चले जाना चाहिए। वहा सब किस्मके लोग रहते है और वहा रहना कोई बुरी बात नही है। उसने कहा कि क्या मै कोई भिक्षार्थी हू। मैने कहा, हर्गिज नही। अगर मै कैप चलानेवाला बनू तो किसी भिक्षुकको अन्न दूगा ही नही। आप सब लोग तगडे है, काम करो और खाओ, कपडे बनाओ और पहनो। हा, रातमे कुछ कपड़ा ऊपर तान लो जिससे कि ऊपरसे जो ओस गिरती है, उससे बच जाओ। दिनमे उसकी भी कोई जरूरत नही होती। आकाश साफ होता है और सूर्यनारायण जो गर्मी देता है वह गर्मी लेनी चाहिए। मै तो दिनके समय घरमे रहता नही। बाहर सूर्यनारायणकी धूप मुझको अच्छी लगती है। उसने कहा कि हम तो ऐसे नही है, हमारे तो छोटे-छोटे बच्चे है, हमें तो रहनेके लिए मकान ही चाहिए। मैने कहा कि क्या आपके ही बच्चे है और किसीके है ही नही ? मै तो जिस कैपमे गया वहा देखा कि माताए और उनके बच्चे सभी वहा रहते है। कोई उनमे गर्भवती भी है और वही बच्चे पैदा करती है। तब आपको वहा रहनेमे क्या आपत्ति है ? वहा जो दूसरे लोग खाते है वह खाओ और वे जो मेहनत करते है वह करो। तुम तो काफी चुस्त और तगडे हो, होटल वगैरह भी चला सकते हो। तो फिर क्यो नही ऐसा काम करते जिससे दूसरोको भी राहत मिले ?

उन्होने कहा कि यहा जो मुसलमान रहते है वे खाली करके क्यो नही जाते ? वे अबतक क्यो यहा बैठे है ? यह सुनकर मुझे काफी चोट लगी। मुसलमान एक तो पहलेसे ही डरके मारे हट रहे है और जो बाकी रहे है उनमेसे भी रोज कुछ-न-कुछ हलाक[1] हो जाते है। हर कोई जाकर उनको कहता है---यहासे हटो, हमको तुम्हारे घरमे रहना है। इस तरह हरेक आदमी अगर हाकिम बन जाए तो फिर रैयत कौन रहेगा और देश किसका होगा ? हर आदमी तो हकूमत चलानेवाला हो नही सकता। दुनियामे किसी जगहपर भी ऐसा नही होता। हा, जहा बिल्कुल जगली लोग रहते है वहा कहते है कि कोई हाकिम नही होता। लेकिन लुटेरोका भी कोई हाकिम रहता ही है। जैसे अलीबाबा और चालीस चोरकी वार्ता चलती है तो वहा भी उनका एक सरदार तो था ही। इस तरहसे दुनियामे कोई जगह नही जहा सब आदमी हाकिम हो या कोई भी हाकिम न हो। हम हाकिम बनना और अपने ऊपर हकूमत चलाना तो जानते ही नही। तभी तो आज इस झझटमे पडे है। आप उन लोगोके घरोपर, जो कि डरके मारे उन्हे छोड गए है या मारे गए है या पुलिसने पकड लिए है, ऐसी नजर करे, यह बहुत बुरी बात है। यह बात आपके लायक नही। आप अगर कह सकते है तो मुझसे कह सकते है, क्योकि मै जहा रहता हू वह एक महल-जैसा घर है। मुझे कह सकते हो कि तू यहासे हट जा और किसी कैंपमे चला जा। तुझको क्या है ? न तेरे पास पत्नी है, न लडके है और न लडकी है, ये कोई दूसरी-तीसरी लडकिया लेकर बैठ गया है और कहता है कि मेरी लडकिया है। वहा कैंपमे जा। वे भी तेरी ही लडकिया है। मै तुम्हारी यह बात सुनूगा। हा, हँसूगा तो सही, क्योकि अगर मै भाग भी गया तब क्या आप यहा रह जायगे ? यह घर तो दूसरेका है, मेरा नही है। हा, इस घरका मालिक ऐसा है कि उसने मुझको ही मालिक बना रखा है और यह कह रखा है कि जिसको तुझे रखना है रख और न रखना हो मत रख। मुसलमान तो अपने घरोसे हटने लायक है कहा, उनसे बहुत लायक तो गाधी है। उसको यहासे उठाकर कही भी पटक देगे

---

[1] माराजाना।

तो उसको तो उस तरहसे कोई पड़ने देगा नही। उसे तो कोई दूध देगा, कोई फल देगा और कोई खजूर दे देगा, इस तरह उसका निर्वाह तो हो ही जाएगा। नगा वह रहनेवाला नहीं है, कपडे भी उसको मिल जायगे। जब इस तरहसे मैने उनको कहा तो वे शर्मिदा बन गए।

इसके पीछे मेरे पास जो लोग आए वे सिख भाई थे। उन्होने कहा कि हम ऐसे सिख नही है जैसे यहा है। खूबीकी बात यह थी कि उनके पास कृपाण नही थी। मैने पूछा तो नही कि उनके पास कृपाण क्यो नही है, लेकिन हाथोमे कडा पहना हुआ था और मेरा खयाल है कि दाढी भी थी। उन्होने कहा कि हम बहुत परेशानीमे पडे है। हम हजारा जिलेके है। मैने पूछा कि वहा आप क्या करते थे ? उन्होने कहा कि वहा हमारे खेत थे और उनमे खेती किया करते थे। यहा भी हम खेती चला सकते है, अगर हमे जमीन और खेती करनेका सामान दे दिया जाय। मुझको दर्द हुआ कि वे बात तो ठीक ही कहते है। मैने कहा कि आप पूर्वी पजाबमे क्यो नही जाते ? उन्होने बताया कि पूर्वी पजाबकी हकूमत हमे कहती है कि जो लोग पश्चिमी पजाबसे आए है उन्हीको हम ले सकते है। सब जगहसे अगर लोग आए तो उतनी जगह हम कहासे दे सकते है ? चूकि तुम लोग सरहदी सूबेके हो इसलिए केंद्रीय सरकारके पास जाओ। यह जवाब हमको वहासे मिलता है।

केंद्रीय सरकारके पास तो जमीन रहती नही है, लेकिन वह अगर इन लोगोको जमीन दे दे और खेतीका काम ये करने लगे तो बहुत ही अच्छा हो। उनके लिए बैल, हल और बीज वगैरहका भी प्रबंध सरकारको करना चाहिए। दिल्ली प्रातमे इतनी जमीन है या नही, इसका मुझको पता नही है। लेकिन जो लोग हल जोतना चाहते है उनको कही भी बसा देना चाहिए। अगर हकूमत मेरे हाथमे होती तो मैने उनके लिए एक अलग कैप खोल दिया होता। वहापर वे सब अपने लिए खानापीना पैदा करे। अगर वैसे नही तो हकूमत उनके खातेमे लिखकर इस कामके लायक पैसा दे दे। वे कहते है कि आज तो पैसे हमारे पास नही है, लेकिन हम मेहनती आदमी है और अगर हमे खेतीका काम मिल गया तो हम सब कुछ पैदा कर लेगे, हम कोई शौकसे तो बैठेगे नही। मुझको ऐसा लगता है कि ऐसे खेतिहर-

लोग जो इधर-उधर पडे है उससे हमारे मुल्कका नुक्सान होता है। वे हमारे ही भाई है, इसलिए उनके लिए कुछ-न-कुछ करना चाहिए। हकूमत-मे मै किससे मिलू, मुझको पता नही। मगर मै आपकी मार्फत हकूमतको सुनाना चाहता हू कि ऐसे लोगोकी मदद करना हमारा काम हो जाता है। वे कहते है कि हम कहा रहे और क्या खाए ? मै तो कहूगा कि उनके लिए कोई अलग कैप होना चाहिए और जबतक वह न हो तबतक वे इन्ही कैपोमे रहकर अपना गुजारा करे। अगर यहा उनको जगह नही मिलती है तो सारे हिंदुस्तानमे कही कोई खाली जगह मिलती हो वह हमारी ही जगह है। वे यह नही कहते कि हमे इसी जगहपर रखो, वे यह भी नही कहते कि हमे किसी मुसलमानका घर दिलवा दो। वे कहते है कि हमने जो मुसीबत भुगती वह हम दूसरोको देना नही चाहते। हम तो ग़रीब लोग है। वैसे तो तगडे है, लेकिन हमारा तगडापन किसीको डरानेको नही है। हमे तो यहा ईश्वरसे डरकर बैठना है और जिस तरहसे जीवन बसर हो सकता है वैसे करना है। लेकिन मैने कहा कि ये सब चीजे केवल चद दिनोके लिए है। उन्होने पूछा कि यह कैसे ? जैसा कि यहा भी एक भाईने पूछा है कि आप कहते है कि पाकिस्तानमे आनेवालोको वही जाना होगा और यहासे गए हुए मुसलमानोको यहा आना होगा, यह कैसे होगा ? मैने कहा कि यह आज नही तो कल होकर रहेगा। लेकिन उसकी शर्त यह है कि पहले हम लोग यहा अच्छे बने। हम ऐसा मान ले कि हमारा कोई दुश्मन ही नही है, मुसलमान भी हमारे दुश्मन नही है। कुछ लोग कहते है कि मुसलमान यहा भी फिफ्थकालम[1] है। बेचारे क्या 'फिफ्थकालम' हो सकते है ! हम यहा ऐसे पडे है कि हमको कोई सता नही सकता और अगर सताएगा भी तो भगवान उसको देखेगा या हमारी हकूमत ही उसको मार डालेगी। आज अगर हम यहा ठीक हो जाते है तो कल सब काम ठीक हो सकता है। तब तो मै भी आजाद हो जाऊगा। आज तो मै परेशान पडा हू, मेरे लिए अब जीना भाररूप बन गया है। मै सोचता हू कि क्यो मै यहा पडा हू। अगर दिल्ली मान जाए तो मै तगडा

---

[1] पचम स्तभ।

वन जाता हू और तब मै भागता हुआ चला जाऊगा पश्चिमी पजाबमे, और जो मुसलमान यहासे गए है उनको कहूगा कि मै तुम्हारे लिए सब सामान तैयार करके यहा आया हू, आप अब जहा चाहे और जब चाहे तब वापिस जा सकते है। अगर ऐसा मौका आ गया, और कभी-न-कभी तो यह मौका आना ही है, क्योकि करोडो आदमी कैसे एक दूसरेके दुश्मन बनकर रह सकते है ? हमारे यहा जो ३॥ या ४ करोड मुसलमान है, उनको मारो या यहासे भेज दो, यह कोई बननेवाली बात नही है। यह तो ख्वाबमे भी नही आ सकता और न मै ऐसा ख्वाब चाहता हू। लेकिन आज तो मै भारस्वरूप पडा हू। एक दिन वह था जब मेरी चलती थी, मगर आज नही चलती। तो क्या मै भाग जाऊ ? मै जिदा रहू या मर जाऊ, लेकिन जितने ये दु खी लोग है उनको कभी-न-कभी अवश्य अपने-अपने घरोको वापिस लौटना है और पूरी शान तथा मर्दानगीके साथ, किसीसे लडनेके लिए नही, बल्कि अपने भाइयोसे भेट करनेके लिए। उसी तरहसे, मुसलमानोको यहा आना है। केवल वही चीज हमको जिदा रख सकती है और दूसरी तरहसे हम जिदा रह नही सकते ।

: १६० :

२६ नवबर १९४७

भाइयो और बहनो,

एक भाईने मुझे खत लिखा है। उसमे बबईके एक अखबारकी कतरन भेजी है। उस कतरनमे लिखा है, गाँधी तो काग्रेसका ही बाजा बजाता है। लोग वह सुनना भी नही चाहते। इस तरहसे काग्रेस रेडियो वगैराका अपने ही प्रचारके लिए इस्तेमाल करेगी तो आखिरमे यहा हिटलरशाही कायम हो जायगी। मै काग्रेसका बाजा बजाता हू, यह बात सर्वथा गलत है। मै तो किसीका बाजा बजाता ही नही या फिर सारे जगतका बजाता हू। उस कतरनमे यह भी कहा है कि अहिसाकी बात तो यो ही ले आते है, हेतु तो यही है कि हकूमतको अपना ही गान

करना है। मै यह कहता हू कि जो हकूमत अपना गान करती है वह चल नही सकती। और, मै तो धर्मकी ही सेवा करना चाहता हू। धर्मसे सबध रखनेवाली वाते ही आप लोगोको सुनाता हू। हो सकता है कि कुछ लोग मेरी वाते सुनना पसद न करते हो, मगर, दूसरे लोग मुझे लिखते है कि मेरी वातोसे उनका कितना हौसला वढता है। जिन्हे मेरी वाते नापसद हो उन्हे कोई सुननेके लिए मजबूर नही करता। और, अगर आपका मन कही और है तो यहा वैठकर भी आप मेरी वात विना सुने जा सकते है। आप लोग मुझे छोड देगे, तो मै यहा प्रार्थना भी नही कराऊगा और भाषण भी नही होगा। मै खास तौरसे रेडियोपर वोलने जानेवाला नही, मुझे वह पसद नही है। यहापर भी मुझे क्या कहना है, यह मै सोचकर नही आता।

हमारी काफी औरते पाकिस्तानमे पडी है, लोग उन्हे विगाडते है। वे वेचारी ऐसी वनी है कि उसके लिए शर्मिंदा होती है, मेरी समझमे उन्हे शर्मिंदा होनेका कोई कारण नही। किसी औरतको मुसलमान जवर्दस्ती पकड ले और समाज उसको निकम्मी मानने लगे और भाई, मा, वाप, पति सव छोड दे तो यह घोर निर्दयता है। मै मानता हू कि जिस औरतमे सीताका तेज रहे उसे कोई छू नही सकता। मगर आज सीता कहासे लावे ? और सव औरते तो सीता वन नही सकती। जिसे जवर्दस्ती पकडा गया, जिसपर अत्याचार हुआ, उससे हम घृणा करे क्या ? वह थोडे ही व्यभिचारिणी है। मेरी लडकी या वीवीको भी पकडा जा सकता है, उसपर वलात्कार हो सकता है, लेकिन मै कभी उससे घृणा नही करूगा। ऐसी कई औरते मेरे पास नोआखालीमे आ गई थी। मुसलमान औरते भी आई है। हम सव वदमाश वन गए है। मैने उन्हे दिलासा दिया। शर्मिंदा तो वलात्कार करनेवालेको होना है, उन वेचारी वहनोको नही।

एक भाई कहते है कि मान लीजिए कि कट्रोल मिट जाय, देहातोमे लोग अपने लिए अनाज पैदा करने लगे, गावके लोग फसल वगैरा काटनेके लिए एक दूसरेकी अपने आप मदद करे तो अनाज सस्ता होगा, लेकिन अगर किसानको दाम देकर मजदूर लगाने पडेगे तो दाम वढेगा। पहले तो यह रिवाज था ही, एक किसान दूसरे किसानोको निमत्रण देता था

फसल काटनेका और साफ करके घरमे ले जानेका काम हाथोहाथ खतम हो जाता था। आज हम वह रिवाज भूल गए है, मगर उसे वापस लाना चाहिए। एक हाथसे कुछ काम नही हो सकता।

फिर वह भाई यह भी कहते है कि मन्त्रियोमेसे कम-से-कम एक तो किसान होना ही चाहिए। हमारे दुर्भाग्यसे आज हमारा एक भी मन्त्री किसान नही है। सरदार जन्मसे तो किसान है, खेतीके बारेमे कुछ समझ रखते है, मगर उनका पेशा बैरिस्टरीका था। जवाहरलालजी विद्वान् है, बड़े लेखक है, मगर वह खेतीके बारेमे क्या समझे! हमारे देशमे ८० फीसदीसे ज्यादा जनता किसान है। सच्चे प्रजातन्त्रमे हमारे यहा राज्य किसानोका होना चाहिए। उन्हे बैरिस्टर बननेकी जरूरत नही। अच्छे किसान बनना, उपज बढाना, जमीनको कैसे ताजी रखना, यह सब जानना उनका काम है। ऐसे योग्य किसान होगे तो मै जवाहर-लालजीसे कहूगा कि आप उनके मन्त्री बन जाइए। हमारा किसान-मन्त्री महलोमे नही रहेगा, वह तो मिट्टीके घरमे रहेगा, दिनभर खेतोमे काम करेगा, तभी योग्य किसानोका राज्य हो सकता है।

: १६१ :

२७ नवबर १९४७

भाइयो और बहनो,

आपने देखा होगा, शायद देखोगे, क्योकि देखा तो अभी कैसे होगा कि मै आज गवर्नर जनरलके पास चला गया था, अभी अखबारोमे आ जायगा। और बादमे लियाकतअली साहबसे भी मिलने गया। ऐसा मौका आ गया दोनोके पास जानेका। काफी बाते हुई और कुछ काम भी वे कर रहे है। लियाकत साहब बीमार तो है और मैने देखा कि बिस्तरमे ही उनको पडा रहना पड़ता है। छातीका दर्द उनको हो गया था और धडकन भी होती है। वह तो अब ठीक हो गई है, लेकिन बहुत दुबले हो गए है। वे गवर्नर जनरलके मकानमे ही ठहरे हुए है, इसलिए

मै वहा उनके पास भी चला गया था। जैसे जवाहरलालजी यहाके प्रधान मत्री है वैसे वे पाकिस्तानके प्रधान मत्री है। तो वे, और वहाका जो अर्थमत्री है उनका नाम मै भूल गया हू, सरदार पटेल और पीछे दो और, ये सब एक साथ मिले और उन्होने कुछ-न-कुछ कर भी लिया है। पूरा-पूरा तो उसका बयान मै नही दे सकता हू। अगर वह सब हो जाय तो मुमकिन है कि आज इतनी भीडमे जो हम लोग पडे है और जिस परेशानीमेसे हम गुजर रहे है उसमेसे कुछ तो निकल पाए। लेकिन सब तो ईश्वरके हाथमे है कि क्या होनेवाला है और क्या नही। आखिर इन्सान तो सिर्फ कोशिश ही कर सकता है।

आपने यह भी देख लिया होगा कि शेख अब्दुल्ला साहब भी यहा आ गए है। जितने काश्मीरके लोग है वे तो सब उनको 'शेरे काश्मीर' कहते है। और वह है भी ऐसा ही। बहुत काम उन्होने कर लिया है और सबसे आला दर्जेका काम तो उन्होने यह किया कि काश्मीरमे जितने हिंदू, मुसलमान और सिख रहते है उन सबको अपने साथ ले लिया है। तादादमे तो मुसलमान बहुत अधिक है और हिंदू और सिख तो मुट्ठीभर है, ऐसा हम कह सकते है, लेकिन तो भी उनको अपने साथ लेकर वे चलते है। वे खुश न रहे ऐसा कोई काम वे नही करते। पीछे हमने देखा कि वे यहा आते हुए जम्मू भी चले गए थे। जम्मूमे हिंदुओकी तरफसे ज्यादतिया हुई है और काफी ज्यादतिया हुई है। उनका पूरा-पूरा बयान तो हमारे अखबारोमे नही आया। महाराजा साहब भी वहा चले गए थे और उनके नए प्रधान मत्री भी। तब वहा दो प्रधान मत्री है क्या, या कुछ और है, मजाकमे मै उनसे पूछ रहा था। उन्होने कहा कि मुझको भी यह पता नही, मगर इतना तो है कि मै वहाका इतजाम कर रहा हू। दो हो या एक हो। तो वे भी जम्मूमे चले गए थे। जम्मूमे जो कुछ हुआ वह महाराजाने करवाया या उनके जो नए प्रधान मत्री है उन्होने करवाया, इसका तो मुझको पता नही। लेकिन वहा हुआ और हमारे लिए यह बडी शर्मनाक बात है कि हम ऐसा करे। शेख अब्दुल्लाने यह सब देखकर भी अपना दिमाग बिगडने नही दिया और जम्मूमे जो हिंदू पडे है उन्होने भी उनका साथ दिया। पीछे उसमे उनको कहना भी क्या था? यह होते हुए भी

उनको तो बताना है, काश्मीरको, और सारे हिंदुस्तानको भी, कि यही तरीका है जिससे हिंदू, मुसलमान और सिख सब मिलकर रह सकते है और एक दूसरेपर एतबार कर सकते है। तभी काश्मीर और हिंद दोनो एक साथ रह सकते है। उनकी तरफसे कोशिश तो ऐसी ही हो रही है, लेकिन उसमे एक रुकावट है। वह पहाडी मुल्क तो है ही, चौदह हजार फुट तो शायद नही, लेकिन दस हजार फुट ऊंचा तो है। बहुत बर्फ वहा पडती है। इसीलिए एक जगहसे दूसरी जगह आना-जाना आरामसे नही हो सकता। आरामसे तो पाकिस्तानमेसे ही होकर जा सकते है। लेकिन कौन कह सकता है कि वे जाने दे या न जाने दे। इसके अलावा जो अफरीदी हमलावर है, या उनको पाकिस्तानके कहो, उनके साथ कुछ लडाई तो चल ही रही है। तब इस हालतमे काश्मीरके लोग वहासे होकर कैसे आवे? यो तो हिंद सरकारने उनको मदद भी भेज दी है। तब उनको सीधा रास्ता तो यूनियनमेसे ही मिल सकता है। काश्मीरमे वैसे कोई बडी तिजारत[1] तो नही है, लेकिन वहाके लोग उद्यमशील है और हाथके कारीगर है। फलोका तो काश्मीर एक बडा बगीचा है। लेकिन ये सब चीजे कौन वहासे यहा लाए और कैसे लाए? हवाई जहाजसे तो सब चीजे आ नही सकती, और जो बेचनेवाले है वे भी कैसे हवाई जहाज-से आए? ऐसे तो काम नही बन सकता। इसलिए वहा एक ही रास्ता है जो पूर्वी पजाबमे पठानकोटकी तरफसे है। है तो वह छोटा-सा ही रास्ता, लेकिन है। तब पूर्वी पजाबमे जो हिंदू रहते है, वे इतने बदमाश हो गए है कि उस रास्तेसे कोई मुसलमान आ नही सकता। शेख साहब कहते है कि यही सबसे बडा खतरा है। शेख अब्दुल्ला तो एक बडा आदमी है, लेकिन वह कहते है कि हम भी अगर उधरसे जाते है, तो हमको भी बहुत दुश्वारी होती है। यह जरूरी नही कि कोई सिपाही ही हो, बल्कि आम लोग भी वहाके, यह पूछ लेते है कि तुम कौन हो, लाओ, तुम्हारी पगडी उतारकर देखे तो कि चोटी भी है कि नही, और इसके बाद दूसरी-तीसरी चीजे भी पूछ लेते है। अगर वह हिंदू या सिख है तो खैर है और अगर

---

[1] व्यवसाय।

मुसलमान निकला तो बस फिर खत्म हुआ। ऐसी हालत है वहा।

तब गवर्नर जनरल और ये जो चार लोग इकट्ठे बैठ गए है वे अगर कुछ कर लें तो अच्छा ही है, और कुछ कर भी लिया है। मगर उनके करनेसे क्या? जब जनता बिगडी हुई है तो फिर कोई काम बनता नही है। मै तो पूर्वी पजाबकी जनताको यह कहूगा कि अब बहुत हो चुका, हमने कितनी खराबिया की, मगर अब तो भूल जाओ। या हमेशाके लिए यही होनेवाला है? मै कहता हू कि यह रास्ता बिलकुल साफ हो जाना चाहिए। उसमे हकूमतको भी पूरा काम करना है। अगर यह काम न कर सकी और हवाई जहाजोसे थोडा-बहुत लश्कर वहा भेज दिया तो उसमे क्या हुआ? उससे क्या काश्मीरका व्यापार चलनेवाला है? अगर नही तो क्या हिंद यूनियन काश्मीरियोका पेट भरता रहेगा? यह तो हो नही सकता है। आज अगर हमारी हकूमतके पास करोड रुपये आ गए है तो क्या वह उनको इधर-उधर उडाती रहेगी? सुनता हू कि अब हकूमतमे हरएक आदमीको एक-एक सेक्रेटरी मिलनेवाला है। क्या होगा उसका, और क्या दरमाहा[1] उस सेक्रेटरीको मिलनेवाला है, मुझको तो कुछ पता नही चलता। अगर इस तरहसे हम पैसे उडाते रहे तो हमारा जल्दी ही खातमा होनेवाला है। हमारा मुल्क करोडपतियोका नही है, एक गरीब मुल्क है, जहा लोग ताबेके पैसे भी बडी मुश्किलसे पैदा करते है। यहा जो करोडपति या ताजिर[2] लोग है, वे तो केवल मुट्ठीभर है। उनके पास भी जितना पैसा पडा है वही क्या है? इस तरह अगर पैसा उडाया जाय तो वह भी एक मिनट-मे खत्म हो सकता है। पीछे तो सारा हिंदुस्तान पडा है, उसका खर्च भी हमे चलाना है। हम पैसेका दुरुपयोग तो कर ही नही सकते। तब हकूमतको यह देखना होगा कि किस तरहसे यह रास्ता सुरक्षित हो सकता है जिससे कि कोई भी आदमी उस रास्तेमे आ-जा सके। काश्मीरमे बहुत खूबसूरत कपडे बनते है, वे आ सकते है, शाल आ सकते है, और भी जो चीजे कारीगर लोग बनाते है वे सब उस रास्तेसे आ सकती है। काश्मीरकी मेवा यहा आ सकती है। आज तो अगर काश्मीरका मेवा खाना हो तो बहुत मुश्किल-

---

[1] मासिक, [2] व्यापारी।

से ही मिलेगा। काश्मीर भारतीय यूनियनमे आ तो गया, लेकिन इस तरह-से वह कहातक हमारे साथ रह सकता है ? अगर काश्मीरको सुरक्षित रास्ता न मिले तो फिर क्या होगा यह मुझको भी पता नही है। अब एक तीसरी वात और कहकर आजका मामला तो मै खत्म करता हू।

अभी मेरे पास पाकिस्तानके 'डान' और 'पाकिस्तान टाइम्स' दोनो अखवार आ गए है। ये दोनो पाकिस्तानके अच्छे वडे अखवार है। जव 'डान' मे या 'पाकिस्तान टाइम्स' मे कुछ निकलता है तो हम यह नही कह सकते कि अरे, यह तो कुछ अखवार नही है। तव तो वहाके लोग भी कह सकते है कि 'हिंदुस्तान टाइम्स' मे जो लिखा है, वह क्या है, 'ववई क्रानिकल' मे जो लिखा है वही क्या है ? यह तो एक निकम्मी वात हो जाती है। मै तो यह मानता हू कि वे भी अच्छे अखवार है, उनको मुसलमान लोग पढते है और अच्छे-अच्छे मुसलमान उनको चलाते है। तो उनमे वे काठियावाडके मुसलमानोके वारेमे लिखते है। जव सरदार जूनागढमे चले गए थे तव तो मुझको वहुत अच्छा लगता था यह देखकर कि वहाके मुसलमानोने भी उनका इस्तकवाल[1] किया। वे कहने लगे, आप तो भले आए, हम सव परेशान हो रहे थे, अव शायद आराम-से रह सकेगे। जव काठियावाडके सव राजा और प्रजा एक तरफ मिल गए है तव जूनागढ कहातक अलग जा सकता था ! इसलिए मुझको अच्छा लगा कि कुछ मारपीट भी न हुई और सारा मामला निपट गया। वे विल्कुल अहिंसापर तो कायम नही रहे, मगर जो हिंसा उन्होने अख्तियार की थी उसमे उन्होने वहुत सोच-विचारकर काम लिया। मै तो यह सव देखकर खुश हुआ था। लेकिन अभी सुनता हू और 'डान' अखवारमे भी है कि काठियावाडमे मुसलमान आज आरामसे नही बैठ सकते है। ठीक मौकेपर एक मुसलमानका भेजा हुआ मुझको तार भी मिल गया है। काठियावाड ऐसा मुल्क है जहा मुसलमान वहुत आरामसे रहते थे और उनको कोई छूता भी नही था। वहा अच्छे और तगडे मुसलमान भी थे और वलवाखोर भी थे। वलवा वे कोई आपस-आपसमे नही करते थे, वल्कि

[1] स्वागत।

जीविकाके लिए कुछ कर लेते थे। आज उसी काठियावाड़मे उनको ऐसा लग रहा है कि वे वहा रह सकेगे कि नही। तब क्या काठियावाड़से सारे-के-सारे मुसलमान चले जाए या उनको हिंदू लोग काट डाले ? हैरान है वे सब-के-सब और मेरे लिए तो यह एक बहुत बडी दुश्वारी है, क्योकि मै काठियावाड़मे पैदा हुआ हू, वहाके सब राजाओको जानता हू और हजारो लोगोको भी मै वहा जानता हू। वहापर तो जो मेरा लडका-सा ही सावलदास गाधी है वही जूनागढका सब कुछ होकर बैठ गया है। उसने एक आरजी[1] हकूमत भी बना रखी है। इन लोगोकी हकूमतके होते हुए काठियावाड़मे ऐसा हो कि जिस मुसलमानने कुछ भी नही किया है उसको भी लोग मार डाले तो फिर यह आरजी हकूमत क्या हुई ? जब लोग इस तरहसे कानूनको अपने हाथमे ले लेते है तो फिर मुसलमान कैसे वहा सही-सलामत रह सकते है ? अगर यह पीछे सब जगह फैल जाए तब क्या हो, मै जानता नही। यह सब वहा हुआ है या नही यह भी नही जानता, लेकिन 'डान' मे जो लिखा है वह मैने पढा है और तार भी मेरे पास आ गए है। बादमे मैने चद हिंदुओसे भी पूछा और उन्होने भी कहा कि हा, कुछ आग लगानेके मामले तो हुए है, कुछ लूट भी हो गई है, मगर किसीका खून भी हुआ कि नही यह हम नही जानते और मुसलमानोकी औरते भी छीनी गई है कि नही यह भी हम नही कह सकते। लेकिन 'डान' तो लिखता है कि ये चारो बाते हुई है और अच्छे बडे पैमानेपर हुई है। बहुत-से तार मेरे पास आ गए थे, लेकिन मुझको एक ही तार बताया गया और दूसरे तार गफलतसे नही बताए गए। शायद ऐसे पचास तो आ गए होगे, मुसलमानोने इधर-उधरसे भेजे होगे। और उनको हक है मुझसे यह कहनेका, कि तुम्हारा लडका वहाका सब कुछ बना हुआ है। लडका जो कुछ करे उसकी जिम्मेदारी मै कैसे लू ? लेकिन इससे तो मै दुनियाको या उन मुसलमानोको क्या समझा सकता हू ? वे तो ठीक ही मुझको लिखते है। लेकिन मै लडकेको सुनाता भी कब ? आज ही तो मैने यह सब पढा है। इसलिए मै आपकी मार्फत,

---

[1] तात्कालिक।

अपने लडकेको ही नही, सारे काठियावाडको सुनाना चाहता हू कि अगर हिंदू वहाके ऐसे पाजी हो गए है— हिंदू ही हो सकते है, क्योकि सिख तो वहा है ही नही, क्या हुआ अगर एक-दो वैसे काम करनेके लिए चले गए हो—तव काठियावाड सही-सलामत नही रह सकता। हमने जूनागढ लिया तो सही, मगर इस तरहसे हम उसको खोनेवाले है, ऐसे ही, जैसे कि हमने अपने मुल्ककी आजादी ली तो सही, लेकिन खोनेके लिए ली। पीछे वे सुनाते है कि याद है सरदारने जूनागढमे क्या कहा था ? उसने कहा था कि अगर मुसलमानका एक वच्चा भी होगा तो उसके एक वालको भी कोई छू नही सकेगा, वशर्ते कि वह काठियावाड, यानी हिंद यूनियनके प्रति वफादार वनकर रहा। अगर मुसलमानकी एक भी छोटी लडकी है और उसको कोई छूता है तो मै देख लूगा। वह तो ऐसा कह सकते थे, क्योकि एक तो सरदार, और दूसरे हिंदुस्तानके गृहमत्री थे। उनको तो कहनेका हक था। उन्होने कहा तो, लेकिन वह अव कहा गया, मै पूछता हू। मेरे दिलमे चुभता है कि काठियावाडमे ऐसा हो सकता है और वहाके लोग इस तरह दीवाने वन सकते है। हमारा धर्म गया, कर्म गया और इस तरहसे हमारा मुल्क भी चला जायगा। मेरा तो यही धर्म था कि मै आप लोगोको यह सव वता दू। हमारे अखवारोमे तो ऐसी चीजे आती नही है। मेरे पास ये सव आ जाती है। मेरा धर्म तो था कि मै इतनी तहकीकात करता, लेकिन मेरे पास कहा इतना वक्त है ! इसलिए जैसे मैने सुना वैसे ही मैने आपको कह दिया। मै तो जव लियाकतअली साहवसे मिला तव भी मैने कहा कि अगर आपकी इजाजत हो तो एक वात पूछना चाहता हू। उन्होने कहा कि पूछो। तव मैने कहा कि क्या आप काठियावाड-के वारेमे कुछ जानते है ? उन्होने कहा कि मै सव कुछ जानता हू। ऐसा वहा हुआ है और यही चारो वाते हुई है, लेकिन कितने पैमानेपर हुई, यह मै नही कह सकता। वे तो पाकिस्तानके प्रधान मत्री है। इसलिए उन्होने तो सव साफ-साफ कहा, हालाकि मै तो दवी जवानसे ही वात कर रहा था। तव मैने सोचा कि आज शामको मै इसको जरूर कह दूगा। मेरे दिलको इस वातसे कितनी चोट पहुची है।

काठियावाड़ मेरा घर है। जव घर ही इस तरहसे जल जाता है

तो फिर किसीको कहनेका क्या मौका रह जाता है ! तब दिल्लीवालोको मै क्या सुना सकता हू ? मेरे पास तो कुछ ऐसा बन गया है कि इर्द-गिर्द चारो ओर यही चलता है । तब फिर उसमे मै कैसे साबूत[1] रह सकता हू । जो इन्सान है और समझदार है वह इस तरहके वातावरणमे साबूत रह नही सकता । यह मेरी दुखकी कथा है या कहो सारे हिंदुस्तानके दुखकी कथा है, जो मैने आपके सामने रखी है ।

: १६२ :

२८ नवबर १९४७

भाइयो और बहनो,

आप जानते है कि आज गुरु नानक साहबका दिन है । मुझको भी किसीने निमत्रण तो भेज दिया था, मगर उस वक्त तो मैने कह दिया था कि आनेके लिए तो मुझे आप माफ करेगे । लेकिन आज बाबा बिचित्र-सिह मेरे पास आ गए और उन्होने कहा कि आपको तो आना ही चाहिए । वे १० बजे मिले थे और एक घटेमे ही जाना था । तो फिर मैने समझा कि अब मुझको जाना ही चाहिए । अपनी ओरसे मैने तो कुछ किया नही है, लेकिन आज सिख भाई मुझसे नाराज तो है । हा, मैने उनको एक कडवी घूट पिलानेकी चेष्टा की है । यह तो है, लेकिन ऐसे ही बनता है दुनियामे । तब उन्होने कहा कि कुछ भी हो, आपको तो वहा आना ही चाहिए । वहा हजारो सिख भाई-बहने होगी और उनमे काफी दुखी सिख भी पडे होगे, जो आपकी बात सुनना चाहते है । तब मैने कहा कि अच्छा, मुझको ११ बजे ले जाइए । ११ बजे शेख अब्दुल्लाको भी अपने साथमें लेकर आए । उनको भी वे वही ले जानेवाले थे । मैने कहा कि शेख अब्दुल्ला कैसे वहा जा सकता है, क्योकि आज तो ऐसा बन गया है न कि सिख और मुसलमान तो एक दूसरेको बर्दाश्त ही नही कर सकते ; लेकिन

---

[1] साबित ।

कुछ भी हो, शेख अब्दुल्लाने एक बहुत बडा काम कर लिया है। काश्मीर-मे उन्होने हिंदू, सिख और मुसलमानको एक साथ रखा है और एक साथ मरना और एक साथ जीना, ऐसा कर लिया है। तब मैंने सोचा कि शेख अब्दुल्लाको भी ले जाना चाहिए। इसलिए मै उनको अपने साथ ले गया। मुझको यह बडा अच्छा लगा। हजारो सिख भाई-बहने वहा थी। मैंने कुछ थोडा-सा ही कहा, लेकिन शेख अब्दुल्ला तो काफी बोला और सब लोगोने बहुत ध्यानमे सुना। आखसे भी कोई कुछ बताता नही था, आवाज तो कौन करनेवाला था। क्योंकि हम लोगोको तो निमत्रण देकर वे ले गए थे। आखिर सिख बहादुर तो है ही, इसलिए यह सब अच्छी तरहसे हो गया। मैंने सोचा कि आपको इतनी खबर तो देनी ही चाहिए।

मेरे पास बगालसे एक खत आ गया है। वहा जो मुस्लिम चेंबर आव कामर्स है उसका वह खत है। जवाब तो मै नही दे सकता हू, लेकिन सोच लिया है और पीछे घनश्यामदासको भी मैंने पूछा कि आप कुछ इस बारेमे जानते है। उसने बताया कि यह जो मुस्लिम चेंबर आव कामर्स है उसको गवर्नमेंटके साथ ताल्लुक करना है, गवर्नमेंटके साथ खतोकिताबत करना है। लेकिन हकूमत तो सबकी है, हिंदू, मुसलमान, पारसी सबकी। तब मुसलमान एक चेंबर बनाए, हिंदू दूसरा, पारसी तीसरा और अग्रेज चौथा, तो ऐसा कैसे बन सकता है। इसलिए सरकारने इन्कार कर दिया। तब वे लिखते है कि कैसा गोलमाल करते है कि मारवाडी चेंबर रह सकता है, यूरोपियन चेंबर रह सकता है, लेकिन मुस्लिम चेंबर है, वह नही रह सकता। मुझको उनकी यह बात अच्छी लगी और मेरे दिलको चोट लगी। अगर सरकार मुस्लिम चेंबरके साथ कोई ताल्लुक नही रखती तो पीछे मारवाडी चेंबरके साथ भी नही रख सकती और यूरोपियनके साथ भी नही होना चाहिए। अबतक यह सब था और यूरोपियन चेंबरका तो इसलिए भी बन गया था कि वे लोग हकूमतमे थे। यहा यूरोपियनोकी हकूमत चलती थी, तभी तो वाइसराय उनके प्रेसिडेंट बनते थे। पीछे तो ऐसा बन गया था कि बडे दिनोके अवसरपर उनको कलकत्ता तो जाना ही होता था, तो वहा यूरोपियन चेंबरमे एक बडा व्याख्यान भी दे देते थे।

और क्रिस्टी धर्मंमे जो खूबिया है उनका वे पालन कर सकते है। यह तो उनका सामाजिक या धार्मिक क्षेत्र हुआ। लेकिन जहातक राज्य-व्यवहार या राज्य-प्रकरणका सबध है उसमे वे सब एक ही-जैसे माने जा सकते है। उसी तरह व्यापार तो सबके लिए है ही। तब उसमे मारवाडी कहे कि हम सब खा जाए, गुजराती कहे हम खा जाए और पजाबी कहे हम खा जाए, तो पीछे बाकी सारा हिंदुस्तान क्या खाएगा? ऐसे हमारा काम निपटता नही है।

एक चीज तो कहनी मै भूल गया, जो भूलनी नही चाहिए। वहा सिख-सभामे तो मैने कह दिया था, लेकिन यहा भी जो सिख है या हिंदू भी है, क्योकि जो बात एकके लिए सत्य है, वह दूसरोके लिए भी है, तो मै कहूगा कि आज सिखोका नया दिन है, ऐसा मानना चाहिए। इसलिए आजसे ही सिखोका यह धर्म हो जाता है कि वे सब लोगोको अपना भाई-भाई समझे। गुरु नानक साहबने कोई दूसरी बात सिखाई ही नही। वे तो मक्का शरीफ भी चले गए थे और गुरु ग्रथ साहबमे भी काफी लिखा है। गुरु गोविंदने क्या किया था? बहुतसे मुसलमान उनके शागिर्द थे और उनको रखनेके लिए या उनकी हिफाजतके लिए उन्होने कई अन्य लोगोको मारा भी। ऐसा वह नही करते थे कि एक सिखको बचानेके लिए दूसरोको मारा हो। तलवार उन्होने ली तो थी, लेकिन उसमे एक मर्यादा रख दी थी। तब मुसलमानोने चाहे कुछ भी किया हो, लेकिन हमे उनकी नकल नही करनी। हम लोग सब शरीफ रहे और अपने धर्मका पालन करे। आज जब मै वहा सिख-सभामे बोलने गया तो मुझको तो इस बातका बहुत ही दर्द हुआ कि रास्तेमे मुझको एक भी मुसलमान नही दिखाई दिया। चादनी चौकमे एक भी मुसलमान न दिखाई देता हो, इससे बडी शर्मकी बात हमारे लिए और क्या होगी? मैने देखा कि वहा आदमियोकी बहुत भीड थी और मोटरोकी तो लबी-लबी कतार चलती थी। लेकिन उनमे कोई मुसलमान नही था। सिर्फ एक मुसलमान शेख अब्दुल्ला मेरे पास बैठे थे। जब ऐसी हालत है तब हमारा काम कैसे निपट सकता है?

एक भाई मुझको लिखते है कि जो सोमनाथ मदिर था उसका

जीर्णोद्धार होगा। उसके लिए पैसा चाहिए और वहा जूनागढमे जो आरजी हकूमत सावलदास गाधीने वनाई है, उसमेसे वे ५० हजार रुपया उसके लिए दे रहे है। जामनगरने एक लाख रुपया देनेको कहा है। सरदारजी आज जव मेरे पास यहा आए तो मैने उनसे पूछा कि सरदार होकर क्या तुम वहा ऐसी हकूमत वनाओगे कि जो हिंदू धर्मके लिए अपने खजानेमेंसे जितने पैसे चाहे निकाल कर दे दे। हकूमत तो सव लोगोके लिए वनाई गई है। अग्रेजी शब्द तो उसके लिए 'सेकुलर' है, अर्थात् वह कोई धार्मिक सरकार नही है, या ऐसी कहो कि वह किसी एक धर्मकी नही है। तव वह यह तो कर नही सकती है कि चलो, हिंदुओके लिए इतना पैसा निकालकर दे दे, सिखोके लिए इतना और मुसलमानोके लिए इतना। हमारे पास तो एक ही चीज है और वह यह कि सव लोग हिंदी है। धर्म तो अलग-अलग व्यक्तिका अलग-अलग रह सकता है। मेरे पास मेरा धर्म है और आपके पास आपका।

एक भाईने और लिखा है, एक पर्चेमे, और अच्छा लिखा है। वह कहते है कि अगर जूनागढकी हकूमत सोमनाथके जीर्णोद्धारके लिए पैसा देती है या यहा की मध्यवर्ती हकूमत कुछ देती है तो वह एक वडा अधर्म होगा। मै मानता हू कि वह विलकुल ठीक लिखा है। तव मैने सरदारजी-से पूछा कि क्या ऐसी ही वात है ? उन्होने कहा कि मेरे जिदा रहते हुए यह वननेवाली वात नही है। सोमनाथके जीर्णोद्धारके लिए जूनागढकी तिजोरीसे एक कौडी नही जा सकती। जव मेरे हाथमे यह नही होगा तो सावलदास वेचारा क्या करनेवाला है ? सोमनाथके लिए हिंदू काफी पडे है जो पैसा दे सकते है। अगर वे कजूस वन जाते है और पैसा नही देते तो वह ऐसे ही पडा रहेगा। डेढ लाख तो हो गया है और जामसाहवने उसके लिए एक लाख रुपया दे दिया है। रुपयेका इतजाम तो हो जायगा।

एक वात और मेरे पास आ गई है। आपने देखा होगा कि पाकिस्तान-मे हमारी लडकियोको मुसलमान छीन ले गए है। उनको छुडानेके लिए कोशिश तो हो रही है, और वह होनी ही चाहिए। हरएक लडकीको जो कि वहा अवतक जिदा पडी है, वापिस लानेकी कोशिश की जाय। अगर

जुल्म और जबर्दस्ती करके उसे उन्होने बिगाड दिया है, तो क्या उसका धर्म और कर्म सब खत्म हुआ ? मै तो ऐसा मानता नही हू और कल मैने आपको इस बारेमे बताया भी था। जबर्दस्तीसे किसीका धर्म नही बदला करता। लेकिन उस लडकीको लानेके लिए कुछ पैसे दो, ऐसी भी बात आज चलती है। कुछ गुडे आ जाते है और कहते है कि लाओ, एक-एक हजार रुपया फी लडकी दे दो, हम उनको ला सकते है। तब क्या यह कोई व्यापार बन गया है ? अगर मेरी इन तीन लडकियोमेसे एकको कोई उठा ले जाता है और वह पीछे मेरे पास आकर कहे कि एक हजार या एक-सौ ही दे दो, मै वापस ला दूगा, तो मै जवाब दूगा कि तू उसको मार डाल। अगर ईश्वर उसको बचाना चाहते है तो मेरी लडकी मेरे पास आ जायगी। लेकिन क्या तू उसके लिए सौदा करना चाहता है ? एक तो लुटेरा बनता है और फिर दगाबाजी करता है। अपने धर्मको तो तूने छोड दिया और चूकि मेरी लडकी है, इसलिए अब मुझको दबानेके लिए आया है। मै एक कौडी नही देनेवाला हू। इसी तरहसे कोई भी मा-बाप अपनी लडकियोके लिए ऐसा सौदा न करे। उनकी लडकी खुदाके पास पडी है। ईश्वर सब जगह है। अगर एक लडकीका पति मर जाता है तो वह लडकी कहा जायगी ? हा, यह बात दूसरी है कि अगर लडकीको वहासे आना है और किराया नही है, तो किराया दे देते है। लेकिन अगर यह गुडा आता है और कहता है कि इतने पैसे दे दो तो वह कोई बननेवाली बात नही है। इसी तरहका एक दृष्टात मै दे देता हू वहाका, और यहाका भी, क्योकि यहा हमने भी तो ऐसा ही किया और मुसलमान लडकिया छीनी है। तब पूर्वी पजाबकी सरकार या यह मध्यवर्ती सरकार जिन्ना साहबसे कहे कि एक लाख रुपया दे दो, जितनी मुसलमान लडकिया हमारे कब्जेमे है सब दे देगे, तो क्या हमारी हकूमत ऐसा पाजीपनका काम करेगी ? मै तो हकूमतको एक कौडी भी नही दू। एक तो उसके यहा ऐसा नीच काम हुआ है और पीछे उस नीचताके बदलेमे वह पैसा भी मागे! हकूमतको तो मेरे पास आकर तोबा करनी चाहिए और मुझको लडकी भी वापिस करे और उसके साथ ही कुछ इनाम भी दे। ऐसे अगर हम शुद्ध न रहे और हम बहादुर न बने तो फिर हमारा काम अच्छी तरहसे होनेवाला नही है।

कल काठियावाडकी वात मैंने कही थी। मैंने तो जो पाकिस्तानके अखवारोमे पढा और पीछे कुछ हिंदुओने भी सुनाया वही आपको कह दिया था, लेकिन आज जव सरदारजी मेरे पास थे तव मैंने उनसे पूछा। मैंने कहा कि जव आप वहा गए थे तव तो आपने वडे-वडे व्याख्यान दिए थे कि वहा एक भी मुसलमान लडके या लडकीको कोई छू भी नही सकेगा। मगर अव मै सुनता हू कि उनको लूटा गया, मारपीट भी हुई, उनकी जायदाद वगैरा जला दी गई और उनकी लडकियोको भी उठा ले गए। उन्होने कहा कि जहातक मै जानता हू और ठीक जानता हू कि वहा एक भी मुसलमानको मारा नही गया और एक भी मुसलमान-का मकान जलाया नही गया और लूटा भी नही गया। हा, इतना तो कुछ हो गया, लेकिन वह तो उनके पहुचनेसे पहलेकी वात हुई, जव कि वहा यह सव गोलमाल चल रहा था। तव कुछ लूटमार भी हुई और शायद एकाव मकान जलाया भी गया है, लेकिन ये दो वाते तो तव भी नही हुई, न तो किसी-को मारा गया और न किसी लडकीको उठाया गया। वहा तो मध्यवर्ती सरकारका एजेट या कोई कमिश्नर वगैरा भी रहता है। तो उसको हुक्म चला गया है कि इस तरहकी चीज नही हो सकती, तुमको पूरा वदोवस्त करना है। कोई भी, मुसलमानको वहा छू नही सकता, लूटना और मारना तो दूर रहा। वादमे वहा ऐसा कुछ नही हुआ। मैंने कहा कि क्या मै इस वातको शामकी सभामे कह सकता हू। उसने कहा कि वडी खुशीसे तू कह सकता है, अगर कुछ हुआ है तो मै उसके पीछे पडूगा। उसने यह भी कहा कि वहा जो काग्रेसी हिंदू है उन्होने अपनी जान खतरेमे डालकर भी मुसलमानोको और उनकी मिल्कियत वगैराको वचाया। वहा कोई गुडावाजी चल नही सकती। जवतक मै वहा पडा हू और गृह-विभाग मेरे हाथमे है तवतक मै ऐसा कभी भी नही होने दूगा। मै तो यह सव सुनकर राजी हुआ और मैंने पूछा कि क्या मै यह सव लोगोको वता दू। उसने कहा कि वडी खुशीसे, और मेरा नाम लेकर तू कह सकता है। मुझे कितनी खुशी हुई इस वातकी कि कल ही हमने ऐसा कहा था और आज मुझको यह खवर मिल गई।

: १६३ :

२६ नवबर १९४७

भाइयो और वहनो,

मैंने आपसे कल कहा था कि सिखोके लिए तो कलका दिन एक बहुत वडा अवसर था, लेकिन हमको भी वह ऐसा ही मानना चाहिए। अगर सचमुच कलसे उन्होने एक नया जीवन शुरु किया है और जो गुरु नानक सचमुच हमारे सबके लिए रख गए है, उसके मुताबिक वे चलना चाहते है तो जो चीजे आज दिल्लीमे वन रही है, वे होनी नही चाहिए।

मैंने आज तो अखबारोमे भी पढ लिया है और यो भी मैंने सुन लिया था कि दिल्लीमे काफी लोग शराब पीते है। शराव पीनेवाले क्या-क्या कर सकते है, यह तो हम जानते ही है। तो वे कहते है कि अब तो शरावका मामला वडा कठिन हो गया है और दिल्लीमे वह वहुत फैल गया है, यहा-तक कि उसको कावूमे लाना वहुत मुश्किलकी वात हो गई है। अगर कल-से एक नया पन्ना खुल गया है तो यह होना चाहिए कि जो शरावका दौर पहले चलता था वह अब कम हो जाना चाहिए। शराब पीकर तो हम दीवाने ही वन सकते है। तब शराब क्या पीना था! सब चीजे तो मै आपको वताऊ भी क्या, मेरे पास तो न जाने क्या-क्या आ जाता है।

एक तो यह चीज हुई और दूसरी, उसमे कुछ तो हुआ है, ऐसा कहते है—वह यह कि जिन मस्जिदोमे हमने नुकसान किया था, वह तो है, लेकिन जहा मस्जिदको मदिर वना लिया था, वहा अगर पुलिस या मिलटरी-की चौकी पडी है तब तो वह जैसी थी वैसी ही बद रहती है। लेकिन मुझको तो वह भी चुभेगा, क्योकि अगर नया पन्ना हमने कल खोल लिया है तव यह कैसे वन सकता है? जिन मस्जिदोको मदिर वना रखा है, उसमे सिखोका काम तो नही हो सकता। लेकिन सिख एक वडी कौम है, और वे अगर यह निश्चय कर लेते है कि हमको तो आजसे पाक ही बनना है और पाक काम ही करना है तो पीछे उसका हिंदुओपर भी असर पडता है, इसमे मुझे थोडा-सा भी शक नही है। तब सिख लोग तो सचाई और हकके फैलानेवाले वन जाते है और उनका पेशा ही यह वन जाता है कि हम

तो हर जगह अमन[1] चाहते है, दूसरा तो कुछ है ही नही। अगर ऐसा हो जाता है तो फिर शक्ल दूसरी ही बदलनेवाली है। अत जिन लोगोने मस्जिदोको मदिर बनाया है उन्हे वहासे मूर्तिया उठा लेनी चाहिए और जो मस्जिद है, उसको मस्जिद-जैसी ही रखना चाहिए। अगर ऐसा बन जाए तो फिर जो पुलिस या मिलटरी हम वहा रखते है उसकी दरकार भी क्यो रहेगी। जब सब लोग भले हो जाते है तो पुलिसकी दरकार ही नही रहती।

एक तीसरी चीज और है और वह यह कि हमारी काफी लडकियोको पाकिस्तानमे लोग उडा ले गए है। कहा ले गए है वे, इसका तो हमे कुछ पता ही नही है। तो कल मैने कहा था कि एक कौडी भी हम किसी लडकीको खरीदनेके लिए न दे। जिन्होने हमारी लडकियोको उडानेका गुनाह किया है वे उनको वापिस दे दे और उनके साथ-साथ पश्चात्ताप भी करे। हम उसके लिए पैसा दे यह बन नही सकता है। लेकिन एक बयान हमारे लिए भी मेरे सामने आता है और वह तो बहुत खतरनाक बयान है। वे कहते है कि पूर्वी पजाबमे हम जिन मुस्लिम लडकियोको अपने पास रखकर बैठ गए है, उनका हम बेहाल करते है। मै नही समझ सकता कि हम इन्सानियतसे यहातक गिर गए है। मुझसे तो यह बर्दाश्त होता नही है, यह मै कबूल करता हू। उन लडकियोको तो हमे अपनी मा या अपनी लडकियो-जैसी ही समझना चाहिए। जो मुसलमानकी लडकी है तो वह मेरी ही लडकी है। तब मेरी जो ये लडकी है, इनका कोई बेहाल करे, और मै मौज उडाऊ, जिदा बना रहू और खूब खाऊ-पीऊ तो यह कैसे कर सकता हू। जिन भाईने यह खबर दी है उसमे मुझको लगता है कि कुछ-न-कुछ अतिशयोक्ति है। लेकिन अतिशयोक्ति मानकर उसे भूलना तो नही चाहिए और पीछे अगर उसमे अतिशयोक्ति है भी तो अच्छा ही है, क्योकि उससे हमको सोचना तो पडेगा कि क्या इन्सान यहातक भी गिर सकता है। वह चीज तो ऐसी है कि जो हमारे अदर कपन पैदा कर दे। तो कलसे हमने एक नया पन्ना खोल दिया है, क्योकि जब सिखोने खोल दिया,

---

[1] शाति।

तो हिंदुओंने भी खोला और कहो कि मुसलमानोंने भी । लेकिन मुसलमानो-को तो भूल जाओ, क्योंकि यूनियनमे तो हमने उनको लाचार बना दिया है । लेकिन हिंदू और सिख तो लाचार नही है । तब उनको बराबर यह सोचना है कि क्या करना चाहिए । हा, यहा तो हम ऐसा करते नही है । लेकिन कही भी अगर कोई गुनाह करता है तो मै गुनहगार बन जाता हू, ऐसा मुझको लगता है और आपको भी ऐसा ही लगना चाहिए । मैने अगर कुछ गुनाह किया है तो आप भी यही सोचे कि गाधीने गुनाह किया तो हम लोग भी गुनहगार है । हम ऐसे ओतप्रोत बने कि जैसे एक समुद्रके बिन्दु होते है । अगर समुद्रके बिन्दु अलग-अलग होकर रहे तो वे सूख जाते है, मगर जब वे समुद्रमे ही रहते है तो वे सब मिल जाते है और बडे-बडे जहाजो-को भी अपनी छातीपर उठा लेते है । जैसे समुद्रका हाल है वैसे हमारा है । आखिर हम भी तो मनुष्योका समुद्र है । अगर एकने बुरा किया है तो सबने किया । पीछे, ऐसा होनेसे वह बुराई मिट जाती है । हम सबको जाग्रत हो जाना चाहिए । इसलिए मैने आपको इतनी चीजे तो कही, लेकिन मै अब इसके बाद कट्रोलपर आना चाहता हू ।

चीनीपरसे तो कट्रोल हट गया और मेरी उम्मीद तो ऐसी रहती है कि कपडोपर और खुराकपर जो दूसरे-तीसरे कट्रोल है, वे भी सब छूटने ही चाहिए । लेकिन वे कैसे छूटे और उनके छूटनेके बाद हमारा धर्म क्या हो जाता है ? चीनीका तो कट्रोल छूट ही गया, इसलिए पहले तो मै उसकी बात कर लू । अभी तो चीनीके बडे-बडे कारखाने है, उनके लोग ऐसा न करे कि चलो, अब तो हमे छुट्टी मिल गई है, इसलिए हम जितने पैसे लोगोके पाससे छीन सकते है उतने छीन ले । अगर वे चीनीका दाम बढा दे तो पीछे सब लोग कगाल हो जायगे । यह तो अच्छी बात है कि चीनी खानेवाला सारा हिंदुस्तान तो नही है । उनको कुछ खाना है तो गुड खाना चाहिए और गुडपर तो कोई अकुश वगैरा है ही नही । गुडको तो देहाती लोग आरामसे अपने-अपने घरोमे बना सकते है, लेकिन चीनी तो वे नही बना सकते । उसके लिए तो हिंदुस्तानमे बडे-बडे यन्त्रालय बने है और जो लखपति-करोडपति लोग है, वे कुछ मजदूर रखकर उनमे

चीनी बनाते है । लेकिन गुड तो जहा भी गन्ना पैदा होता है वहा आम[1] बन सकता है । और फिर गुड तो बडा खाने लायक होता है, अगर वह शुद्ध बना है तो । बचपनमे मेरे पिता मुझको ले जाते थे या पिताके पास जो दूसरे नौकर रहते थे, उनके साथ मै चला जाता था उन देहातोमे, जहा गन्ना पैदा होता है । तो वहाके लोग हमे बिल्कुल ताजा और स्वच्छ गुड खानेके लिए देते थे । तब तो वह एक खुराक जैसा बन गया, मगर चीनी खुराक नही बन सकती । तब गरीब लोग तो गुड खाए, लेकिन आज उनमेंसे कुछ चाय पीनेवाले भी तो बन गए है और पीछे चायमे वे गुड नही, बल्कि चीनी डालते है । मै तो लोगोको यह सिखा दू कि उसमे गुड डालो, लेकिन मेरी बे माननेवाले थोडे ही है । तब अगर चीनीका दाम बढता है तो वे सोचेगे कि चीनीपर भी अकुश रहता तो ही अच्छा था, हमे इतने दाम तो नही देने पडते । ऐसी हालतमे जितने चीनीके व्यापारी या कारखानेदार है उनका यह परम धर्म हो जाता है कि वे आपसमे मिलकर कुछ ऐसी व्यवस्था करे कि जिससे सारा हिंदुस्तान यह देखे कि आज हमको आजादी मिल गई है तो इस आजादीमे हम केवल शुद्ध कौडी ही कमाएगे । इस आजादीमें हम लोगोको दगा नही देगे और धोखाबाजी भी नही करेगे, जो भी फसाद या गदगी है उसको निकाल बाहर करेगे । अगर वह नही होता है तो मुझको सुनना ही पडेगा, क्योंकि आखिर काफी काम मैने इसपर-से कंट्रोल हट जानेके लिए किया है और अभी भी कर रहा हू । चीनीके व्यापारी और कारखानेदार अगर अपने मुनाफेके टके बढा देते है तो फिर चीनीका दाम बढना ही है । अगर वे सौमेंसे पाच लेते है, तब तो वह शुद्ध कमाई ही मानी जायगी और अगर दस या बीस फी सदी अपनी जेबमे डालते है, तो वह शुद्ध रोटी नही कही जा सकती । सौमेंसे पाच बहुत काफी है, उससे ज्यादा तो लेना नही चाहिए । तब जो इसपर कंट्रोल है वे तो अपने आप ही उड जाते है । हमको यह न कहना पडे कि तब तो सब कहते थे कि अकुश उठा दो और अब वह उठा तो लिया, लेकिन जो गरीब लोग है वे क्या खायगे ? गरीबोको तो वह मिलती ही नही है । ऐसा

---

[1] साधारणत ।

नही होना चाहिए। जो कारखानेवाले पडे है उनको स्वच्छ बनना है और आपसमे मिलकर एक मडल बना ले और एक ही भाव बाध दे। उससे ज्यादा कोई भी कारखानेदार न ले। लेकिन ऐसा भी नही होना चाहिए कि जो गन्ना बोनेवाले किसान लोग है उनको गन्नेका दाम कम दे। अगर किसानोको ज्यादा दाम दे और उसकी वजहसे कुछ भाव बढता है, तब तो वह शुद्ध कौडीकी ही बात हो गई। वे सच्चा हिसाब करे और वह हिसाब सबको बता दे कि कल किसानोके पास इतना जाता था और आज उनको इतना मिलता है जो सीधा किसानोकी जेबमे जाता है और बीचमे उसे कोई खा नही सकता। हम लोग तो कल जो दो रुपये फी सदी या पाच रुपये फी सदी लेते थे, आज सवा पाच भी नही लेते है। मान लीजिए, मिलवालोने तो पाचसे ज्यादा नही लिए, लेकिन जो बीचमे छोटे-छोटे ताजिर लोग आ जाते है, वे अगर ज्यादा दाम लेते है तो फिर चीनीके खानेवाले तो मर जाते है। तब कारखाने-दारोको चाहिए कि वे चीनी सीधी खानेवालोको ही बेच डाले। अगर यह हो जाता है तब तो काम सीधा-सीधा चलता है, इसमे मुझको शक नही है।

एक भाईने लिखा है कि देखो तो सही, जो लोग तीसरे दर्जेमे सफर करते है उनके रेल-किराये भी बढा दिए है, हालाकि दूसरे और पहले दर्जेके किरायोसे तो वे कुछ कम बढे है। लेकिन वह लिखते है और ठीक लिखते है कि तीसरे दर्जेके किरायेमे इतनी-सी वृद्धि भी हमको क्यो करनी पडी? माना कि हमको अब ज्यादा काम करना है और उसके लिए हमको पैसे चाहिए, लेकिन ऐसी बहुत-सी चीजे है, जैसे तबाकू है, बाहरसे कई चीजे ऐसी आती है और यहा भी बनती है कि जो हरएक आदमीके जीवन-निर्वाहके लिए आवश्यक नही है। इन चीजोपर चाहो तो कुछ कर बढा दो। उसमेसे कुछ बन सकता है। तब जो हकूमतमे हमारे बडे-बडे लोग पडे है उनको देखना और हिसाब करना है कि इस तरहकी वृद्धिसे क्या कुछ निकल सकता है। लेकिन यह समझने लायक बात तो है ही, और हकूमतको भी यह देखना है कि ऐसे लिखनेवाले भी मेरे पास पडे है। वे कोई निकम्मे नही, बहुत समझदार आदमी है। आज अगर करोडो

रुपये हमारे हाथमे आ गए है तो करोडो ही हम खर्च कर डाले, ऐसा नही है । करोडमेसे एक-एक कौडी लेकर भी हम आहिस्ता-आहिस्ता और फूक-फूककर चले । एक कौडी हम खर्च तो करे, लेकिन वह हिंदुस्तानकी झोपडियोमे जाती है कि नही, मेरे लिए तो यही हिसाव काफी रहता है । जो करोडो रुपये हिंदुस्तानकी झोपडियोमेसे खिचकर आते है, उनमेसे कितना हम उनको वापिस भेज सकते है ? जो सच्चा पचायती राज्य या लोकराज्य होता है उसे लोगोके पाससे पैसा तो लेना पडता है, लेकिन उसका दाम दस गुना उनके घरोमे चला जाना चाहिए । जैसा कि मै तालीमके लिए लोगोसे पैसा लेता हू तो मै ऐसी तालीम उनके लडकोको दू और इस तरहसे खर्चका अदाजा करू कि जिससे दस गुना पैसा उनको वापिस मिल जाय । मान लीजिए, मै देहातोमे सफाईका काम करू, लोगोके लिए सडके और रास्ते वनवाता हू तो देहातके लोग यही सोचेगे कि जो पैसा हम देते है वह हमारे ऊपर ही खर्च होता है । नतीजा यह होगा कि आज मिलिटरीके पीछे हम जो इतने दीवाने वन गए है, तव उतने नही रहेगे । हमारे दिलमे पीछे यही विचार पैदा होगा कि मिलिटरीपर तो कम-से-कम खर्च करे और आम लोगोपर ज्यादा-से-ज्यादा । तव तो लोग मिलिटरी भी खुद ही वन जाते है और उसका काम सीख लेते है । इस तरहसे जव वह अपनी और अपने पडोसीकी भी रक्षा कर लेते है तो फिर हिंदुस्तानकी रक्षा तो अपने आप हो जाती है । ऐसे तो हिंदुस्तानपर कोई गदी नजर डाल भी नही सकते है ।

आज तो ऐसा है कि अग्रेजी राज तो यहासे गया, लेकिन अग्रेजी हवा अभी नही गई है । हम उस हवाको वदल दे । वे तो यहा एक वडे पैमानेपर खर्च करते थे और ऐसा खर्च कि जो लोगोंके पास वापिस नही आता था , लेकिन आज तो सव-का-सव खर्च हमको वापिस आना चाहिए, तव तो हमारे लिए खैर हो जाती है । वस, आज तो इतना ही मै आपसे कहूगा ।

: १६४ :

३० नवबर १९४७

भाइयो और बहनो,

कल ही मै तो आपसे कहना चाहता था, लेकिन चूकि और बहुत कुछ कहना था, इसलिए रह गया। आपने देखा होगा कि ये लडकिया जो बैठती है तो फर्शपर ही बैठ जाती है और उससे ठड लगती है। मैंने तो कह दिया था कि हमारे पास इतने कागज पडे है या अखबार है जिनका हमने इस्तेमाल कर लिया है, उनपर बैठो। लेकिन आज तो किसी भाईने चद्दर बिछा दी है तो अच्छा किया। हम बेदरकार रहते है यह एक तरहसे तो अच्छा भी है। हम क्यो ऐसे नाजुक बने कि हम अगर कही बैठ गए तो हमको ठड लगे। फिर भी घासपर अगर हम बैठते है तो एक कागजका टुकडा अच्छा-सा मिल जाय और वह गीला नही हो जाता है तो वह ठडसे बचा लेता है। ऐसा नही हो तो पीछे हमारा तो एक पुराना तरीका भी है कि जहा भी कही जाना है, सबको आसन अपने साथ ही लेकर चलना है और पीछे जहा भी बैठना होता है वही आसन बिछाकर बैठना है। आज तो हम यह सब भूल गए है और ऐश-आराममे पड गए है। लेकिन मै तो कहता हू कि कागजका टुकडा भी छोडो, ले लो अगर लेना ही है तो, और वह भी एक खासा अखबार है तो, मगर जो आसन होता है, या तो ऊनका या फिर जूटका या दोनोमेसे किसीका, नही तो फिर कपडेका या सूखी घासका ही हो, वह एक बडी चीज है। जहा बैठना है, उसे बिछाया और बैठ गए और पीछे उसको बगलमे रखकर चले गए। क्योकि मुझको ठड लगती है, इसलिए सबको ठड तो लगती ही होगी। पीछे डाक्टरोका भी बताया हुआ है कि भीगी जमीनपर या कि वहा जहा ठड लगती है, नही बैठना चाहिए। जो भाई धोती पहनते है या जो बहने सिलवार या घाघरी पहनती है, वे अगर भीतर मोटा कपडा पहना हुआ है तो आसनका काम दे देता है। लेकिन वे भी तो नाजुक बन गई है तो फिर उनके पहननेको भी मुलायम चीज ही होनी चाहिए। वे मोटा कैसे पहने और भीतर जो कपडा पहनते है वह मुलायम होना चाहिए। तब वह

यहाकी जो सर्दी है, उससे बचा नही सकते।

अभी मेरे पास तो बहुतसे तार आ गए है काठियावाडसे। उनके बारेमे मैंने सुना तो दिया है जो कुछ भी मैंने सुना था और पीछे जो पाकिस्तानके अखबारोमे लिखा था। उनको भी वहाके हजारो लोग पढते है, शायद दस हजार पढते हो। कितने पढते होगे, इसका तो मुझे कुछ पता नही, लेकिन उनमे जो चीजे आती है, उनके बारेमे मै ऐसा सोचू कि क्या पता ऐसा हुआ है कि नही, तो ऐसे काम नही निपटता। इसलिए मैंने बडा अच्छा किया कि जो कुछ उनमे पढा था वह आपके सामने रख दिया। मै नही जानता कि वह सब सही है या नही। अगर वह सही है तो सारे काठियावाडके लिए बडी शर्मकी बात है और अगर सही नही है तो पीछे जो अखबारोमे लिखनेवाले है उनके लिए शर्मकी बात है। तब एक या दूसरोके लिए वह शर्मकी बात तो हो ही गई। उस बारेमे सरदारजी क्या कहते है, यह भी मैंने आपको बता दिया था। आज भी वे आ गए थे और मुझको सुनाते थे कि वहासे जो बाते आती है वे तुम्हारे कहने लायक नही होती। वे तो बहुत बनी-बनाई आती है।

लेकिन राजकोटसे जो तार आ गया है वह तो आपके समझने लायक है। काफी लबा तार है, उसका थोडा-सा बयान मै आपको दे देता हू। आखिर मै तो काठियावाडके मुसलमानोको पहचानता हू। उनमेसे एक-एकको तो नही पहचानता, लेकिन वहा जो खोजा लोग रहते है, मीना है, वाघेर है और किसानोमे भी कुम्बिय है, मेहेर है इन सबको मै जानता हू। आखिर मै तो वहा पैदा हुआ हू और करीब-करीब १७ साल वहा रहा हू। करीब-करीब क्या, पूरे १७ साल रहा हू, क्योकि कही बाहर तो पढने मै गया ही नही। मेरे बापने मुझको कही भेजा ही नही। मेरा पढना तो वही पूरा हुआ और कालेजमे तो क्या हुआ, कोई दो-चार महीने पढा था और वह भी भावनगरमे। इम्तहान भी मेरा अहमदाबादसे आगे नही जा सका। यह मेरे हाल थे। पीछे वहा कुछ था तो मै सब चीजे देख लेता था, और बादमे भी आता-जाता सबसे मिलता रहा। तो वे लिखते है कि तुमको तो हमारी तरफसे बडी चिता हो गई है और तुम्हारी चिता पीछे हमारी चिता बन गई है। यह ठीक है कि काठियावाडमे हिंदू कुछ बिगड गए

और आज तो कहा ऐसा नही हुआ, और उन्होने कुछ मारपीट भी की, मुसलमानोको कुछ रज भी पहुचाया, उनके कुछ घर ढाए और जलाए भी, लेकिन हमने उसको आगे वढने ही नही दिया। जितने काग्रेसके लोग थे और उनके मुखिया तो ढेवर भाई थे। उनको तो मै अच्छी तरह पहचानता हू। वे उनको वचाने गए और उनको काफी कामयावी भी मिली। सव लोगोका तो इस लूटमारमे हाथ नही था, क्योकि अगर सवका हाथ होता तो फिर राजकोटमे जितने मुसलमान थे, उन सवके मकान जल जाते, मारपीट भी वहुत होती और कोई खून भी हो गया होता। लेकिन यहातक तो नौवत नही पहुची। काग्रेसवालो और दूसरे लोगोने वहा वहुत एहतियात-से[1] काम लिया। ढेवर भाईके साथ तो यहातक भी हुआ, हालाकि वह तो खासा वडा आदमी है और वकील भी है, लेकिन भीडको जव इस तरहसे गुस्सा आ जाता है तो फिर छोटे-वडेकी वात ही छूट जाती है, उन्होने कहा कि अच्छा, इनको वचाने आता है, गालिया दी और वहुत परेशान भी किया। ढेवर भाईके साथ जो दूसरे लोग है, वे लिखते है कि कुछ नुक्सान तो किया, लेकिन ढेवर भाईको तो दूसरे लोगोने वचा लिया। तव तारमे तो यह भी लिखा है कि वहाके जो ठाकुर साहव है उन्होने भी हमारे साथ हाथ वटाया और वहाकी जो पुलिस है, उसने भी। तव वहा दगा करनेवाले रहे कौन ? हिंदू महासभा और राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ, ऐसा वे कहते है। इन लोगोने कुछ-न-कुछ तो किया भी, लेकिन इनकी कोशिश तो यह थी कि मुसलमानोको, कम-से-कम राजकोटसे, तो निकाल ही दे। मगर वह कर नही सके। लेकिन अव हम निश्चित हो गए और मुसलमानोके लिए कोई खतरा अव नही रहा है। और आप भी अव निश्चित रहिए। दूसरी जगह भी हम देखनेकी कोशिश कर रहे है और इसके वाद एक दूसरा तार हम भेजेगे।

वहीसे एक मुसलमान भाईका भी तार आ गया है। वे लिखते है कि हम तो काग्रेसवालो और दूसरे लोगोके वहुत अहसानमद है। हमारी जान-मालकी रक्षाके लिए उन्होने पूरी कोशिश की। लेकिन ववईसे

---

[1] खबरदारीसे।

एक दूसरा तार आया है, वह भी मुसलमानका ही है। वे लिखते है कि पहले जो आपने कहा था वह तो ठीक कहा था, लेकिन अब जो तुमको काठियावाड़के बारेमे सुनाया गया है, वह ठीक नही है। वहा काफी हुआ है और अभी भी हो रहा है।

मुझको नही मालूम कि मै बवईमे जो तार आता है उसको सच मानू या इस दूसरे मुसलमानके तारको। लेकिन जो बवईमे तार आता है उसमे मुझको शक हो जाता है, क्योकि वे तो बवईमे बैठे हुए लिखते है और दूसरा तार तो उनका है जो खुद काठियावाडमे पडे है। और पीछे जो काठियावाडमे है वे मुझको धोखा भी नही दे सकते, धोखा देकर वे जायगे कहा! इसलिए मुझको ऐसा लगता है कि जो बवईमे तार आया है उसमे कुछ अतिशयोक्ति या मुबालगा[1] है। क्या है और क्या नही, यह तो मुझको पीछे पता चल जायगा, लेकिन अभी तो मै उसे सबके सामने रख दू।

एक तार भावनगरसे भी आया है। वह वहाके महाराजाका है। उनको भी मै पहचानता हू, क्योकि मै तो वहा तीन-चार महीने रहा हू। इसलिए महाराजाको मेरे लिए यह लगा कि वह परेशान क्यो होता है। उन्होने लिखा है कि तुम फिक्र क्यो करते हो। हम यहा सब जाग्रत है और यहाके हिंदू भी जाग्रत है। मुसलमानोको कोई नुकसान नही होने देगे। तुमको इस बारेमे कुछ शक मनमे नही लाना चाहिए।

लेकिन जूनागढसे अभी एक तार आ गया है। वह मुसलमानोकी तरफसे है और वे लिखते है कि ये लोग तो तुमको धोखा दे रहे है। तुम एक कमीशन बिठाकर उसकी तहकीकात कराओ कि हम लोगोको परेशान किया जाता है कि नही। यह तार जवाहरलालजी, सरदारजी और दूसरे लोगोको भी भेजा है और उनमे एक मै भी आ गया हू। मै कहता हू कि हरएक चीजके लिए इस तरहसे कोई कमीशन नही बैठ सकता है। कमीशन बनाना कोई छोटी बात नही होती। हा, अगर कोई चीज ऐसी है कि सचमुच इतना नुकसान हुआ है तो फिर उसमे कमीशन बिठानेकी क्या दरकार है? काठियावाडके लिए तो मै ही कमीशन-जैसा पडा हू। अगर मेरे ध्यानमे

---

[1] अतिशयोक्ति।

कुछ आता है तो मै दवा सकता हू, वहाके राजा लोगोको और रैयतको भी। मै यह दावा तो नही करता हू कि मै हर चीजमे कामयाव रहता हू और वह मेरी हर वातको मान ही लेते है, लेकिन काठियावाडके लिए तो ऐसा है न, कि जैसा बिहारके लिए कहो। विहारमे अगर कोई कहे कि तू कमीशन बिठा दे तो मै क्या कमीशन विठाऊगा? मै तो खुद ही वहा पडा हू। वहाके सव लोग मुझको चाहते है और मेरी मान भी लेते है। तब वहाके लिए कोई कमीशन विठाना तो ठीक नही हुआ।

मेरे पास तो राजकोटसे काफी खत भी आए है मुसलमानोके। वे लोग काफी हिदुओके दोस्त है और काग्रेससे भी खुश है। तब हिदू महासभा और राष्ट्रीय स्वयसेवक सघमे कौन है? उनसे मुझको कोई अदावत[1] तो हो नही सकती। वे सोचते है कि हिदू-धर्मको बचानेका वही तरीका है, लेकिन मै मानता हू कि इस तरहसे हिदू-धर्मकी रक्षा नही होगी। वे मानते है कि अगर एक आदमीने कुछ कर लिया है तो उसके साथ मारपीट करना। मगर मै यह कहता हू कि बुराईका वदला बुराईसे क्या देना! हमारी जो हकूमत पडी है उसको सताओ और उससे कहो कि ऐसा क्यो होता है। और फिर हमारी हकूमत तो जाग्रत पडी है और जितना भी हो सकता है कोशिश कर रही है। तब हिदूमहासभाको मै कहूगा और राष्ट्रीय स्वयसेवक सघको भी—ये दोनो हिदुओकी सस्था है और अच्छे वडे और पढे-लिखे आदमी इनमे है, जैसे कि और सस्थाओमे भी है—आप हिदू-धर्मको ऐसे नही वचा सकते, अगर यह बात सही है कि इन्होने ही मुसलमानोको सताया है और अगर यह सही नही है तो फिर किसने उनको सताया है? काग्रेसने नही सताया, वहाकी हकूमतने नही सताया और यहाकी हकूमतने नही, तो पीछे और कौन हिदू है जिसने किया? आज तो यह इल्जाम सारे हिदुओ और सिखोपर पडता है जैसा कि पाकिस्तानमे सारा इल्जाम मुसलमानोपर पडता है, और वह ठीक तो पडता है। इसलिए मै कहूगा कि जो वेगुनाह है और जिनके खिलाफ इल्जाम लगाए गए है उनको अपना नाम साफ करना चाहिए। जूनागढमे जो मुसलमान

---

[1] दुश्मनी।

भाई पडे है वे अगर इन्साफ चाहे तो वह मिल सकता है, फिर कमीशन हम किसलिए विठाए ?

वहाकी वात मैने आपको कह दी, लेकिन अव यहाके वारेमे भी तो आपको कुछ सुनाऊ। सरदारजीने कुछ इतजाम तो कर लिया है और जितनी मस्जिदे हमने यहा रखी है उनकी वे रक्षा करने जा रहे है। आपने अखवारोमे उनका यह नोटिस तो देख लिया होगा कि सात दिनके अदर जितनी मस्जिदोपर कब्जा किया हुआ है वे खाली कर दे, नही तो पुलिसको भेजकर खाली कराई जायगी। मै तो कहता हू कि वे पुलिस भेजकर क्या करेगे ? वहा अगर मस्जिदमे किसी हिदूने मूर्ति रख दी है, पीछे वह मूर्ति तो सोनेकी हो सकती है, चादीकी भी, पीतल, मिट्टी या पत्थरकी भी हो सकती है, लेकिन ऐसा कहते है और मै भी मानता हू कि जवतक उसमे प्राण-प्रतिष्ठा नही की गई है और जवतक लोग पाक हाथोसे उसकी पूजा नही करते है तवतक वह मेरी दृष्टिमे तो मूर्ति नही, वल्कि पत्थर या सोनेका टुकडा है। ऐसी कुछ मूर्तियाँ कनाट प्लेसके कोनेवाली मस्जिदमे भी विठा दी गई है और उनमे अभी तो हनुमानजी नही है। मेरे नजदीक तो वह नही है। मेरे नजदीक तो वह एक पत्थरका टुकडा है जिसे हनुमानजीकी शक्ल दे दी है और कुछ सिंदूर भी लगा दिया है। मेरी दृष्टिमे तो वह कोई पूजाके लायक नही है। पूजाके योग्य तो वह तभी वन सकता है जवकि उसको कही हकसे विठाया जाय, और उसकी प्राण-प्रतिष्ठा की जाय। वह सव तो नही हुआ। इसलिए जिन लोगोने उनको वहा विठाया है उनका यह धर्म हो जाता है कि वे दिनके आरभके साथ उसको वहासे उठा ले जाय और पीछे जहा भी उसको रखना है वहा रखे। इस तरहसे वे एक तो मस्जिदको विगाडते है और दूसरे उस मूर्तिका अपमान करते है। हिंदू-धर्ममे हम मूर्तिपूजक होकर भी इस तरहसे किसी मूर्तिकी पूजा करे तो वह धर्म नही, वल्कि अधर्म है। तव सरदारजीको क्या पडी कि वह वहा पुलिस भेजे ! आप जितने हिंदू है वे सव पहरेदार वन जाए और जिन मस्जिदोमे मूर्तिया रखी है वहासे उनको हटा दे। जो मस्जिदे विगडी हुई है हमको कहना चाहिए कि हम उनकी मरम्मत कर देगे। लेकिन आज तो सरदारजी कहते है कि हकूमत अपने खर्चपर उनकी मरम्मत कर

लेगी। हकूमत क्यो करेगी, इसीलिए न कि हम नही कर रहे है। उसको तो सबकी रक्षा करनी है। लेकिन यह हमारे लिए शर्मकी बात हो जायगी। आज जितने हिंदू या सिख है, लेकिन सिखको तो मैने कही मूर्ति विठाते हुए सुना नही, उनकी तो एक ही मूर्ति या पुस्तक कहो, वह गुरु ग्रथ साहब ही है। मैने तो देखा नही कि किसी सिखने गुरु ग्रथ साहबको मस्जिदमे लाकर रखा हो। अगर किसीने ऐसा किया भी है तो उसने गुरु ग्रथ साहबका अपमान किया है। गुरु ग्रथ साहबको तो गुरुद्वारेमे ही रखा जा सकता है। जो पवित्र सिख है वही उसको ऊची जगहपर सजाकर रखते है। मेरे-जैसा अगर कोई हो तो वह तो वहुत सुदर खादी विछाकर उसको रखे। लेकिन आज यदि देसी-परदेसीका तो खयाल नही है, फिर भी वडे खूबसूरत ऊनी और रेशमी वस्त्र हम हाथोसे तैयार करते है। उस रेशमको हम वहा विछाए और गुरु ग्रथ साहबको रखे तब तो वह पूजाके लायक है और अगर कोई सिख उसे मस्जिदमे ले जाकर रखता है तो वह गुरु ग्रथ साहबकी तौहीन[1] करता है और वह पूजाके लायक नही हो सकता।

आज एक मुसलमान मेरे पास आया। मै समझा नही कि वह क्या कहना चाहता था। लेकिन उसके हाथमे एक कुरानशरीफ थी, जो आधी जली हुई थी। लेकिन उसके लिए तो वह भी पाक थी। इसलिए उसने उसको वहुत साफ कपडेमे लपेटा हुआ था। उसने आरभसे वह कपडा खोला और मुझको दिखाया। वह कुछ बोला तो नही, लेकिन रोने-जैसी उसकी शक्ल बन गई और पीछे चला गया। वृजकिशनजीसे तो कुछ बाते भी की, लेकिन मै तो काममे पडा हुआ था। इसी तरह अगर एक मुसलमान यहा आकर कुरानशरीफ विठा जाता है और मुझको और आपको मारता है तो मै कहूगा कि वह कुरानशरीफकी तौहीन करता है। कुरानशरीफ यह नही कहती कि किसीको मजबूर करके उसे रखो।

इसलिए मै तो वडे अदवसे कहना चाहता हू हिंदू-महासभा और राष्ट्रीय स्वयसेवक सघसे तथा और भी लोगोसे, जो मेरी सुनना चाहते है और साथ-साथ सिखोको भी, क्योकि सिख तो वडे है और अगर वे सीधे

---

[1] अपमान।

हो जाते है और गुरु नानकके सच्चे अनुयायी बन जाते है तो हिंदू भी आप-ही-आप सीधे हो जाते है। मेरे दिलमे सिखोकी कद्र है। लेकिन आज क्या हिंदू और क्या सिख, सब बिगडते जा रहे है और हिंदुस्तानको धूलमे मिला रहे है। जिस हिंदुस्तानको हमने ऊचे चढाया है, क्या उसको नीचे खींचकर हम मटियामेट करेगे? क्या हम अपने धर्म, कर्म और देशको इस तरहसे धूलमे मिला देगे? ईश्वर हमको इस चीजसे बचा ले।

: १६५ :

मौनवार १ दिसबर १९४७

(लिखित सदेश)

भाइयो और बहनो,

कई मित्र नाराज होते है कि मै 'अगर यह सही है तो' कहकर क्यो कोई निवेदन करता हू। मुझे पहले तय कर लेना चाहिए कि बात सही है या नही। मै मानता हू कि जब-जब मैने 'अगर' इस्तेमाल किया है मैने कुछ गमाया नही है। जो काम उस समय मेरे हाथमे था उसे फायदा ही हुआ है।

इस वक्तकी चर्चा काठियावाडके बारेमे है। मित्र लोग कहते है कि मैने काठियावाडके बारेमे मुसलमानोपर ज्यादतियोके झूठे बयानको मजूरी[1] दी है। अधिकतर इल्जाम सरासर झूठे थे। जो थोडी-बहुत गडबडी हुई थी उसे फौरन काबूमे लाया गया। मेरे 'अगर' के साथ उन इल्जामोका जिक्र करनेसे सचाईको कोई नुकसान नही पहुचा। काठियावाडके सत्ताधीन और काग्रेस, जिस हदतक सचाईपर खडे रहे है, उतना ही उन्हे फायदा होगा। मगर मित्र लोग कहते है कि सचाई आखिरमे जाहिर होकर रहती है। इसमे भले शक न हो, मगर उससे पहले नुकसान तो हो ही जाता

---

[1] प्रतिष्ठा।

है। जिन्हे सच-झूठकी कुछ पडी नही, ऐसे वेईमान लोग मेरे कथनको अपनी वात सिद्ध करनेके लिए काममे लाते है। इस तरहसे झूठको फैलाया जाता है। मै इस तरहकी चालबाजीसे आगाह[1] रहू। जव-जव इस तरहकी चालाकी खेलनेकी कोशिश की गई है वह निष्फल हुई है और ऐसा करनेवाले वेईमान लोग जनतामे झूठे बने है। मै 'अगर' कहकर इल्जामोका जिक्र करता हू तो उससे किसीको घवरानेकी जरूरत नही, शर्त सिर्फ यह है कि जिनपर इल्जाम लगाया जाता है वे सचमुच इल्जामसे सर्वथा मुक्त हो।

इससे उल्टी स्थितिका विचार कीजिए। काठियावाडकी ही मिसाल लीजिए। अगर पाकिस्तानके वडे-वडे अखवारोमे लिखे इल्जामोकी तरफ मै ध्यान न देता, खास करके जव पाकिस्तानके प्रधान मत्रीने भी कहा कि इल्जाम मूलमे सही है, तो मुसलमान उन इल्जामोको वेद-वाक्य माननेवाले थे। मगर अब भले मुसलमानोके मनमे उनकी सचाईके वारेमे शक है।

मै चाहता हू कि इसपरसे काठियावाडके और दूसरे मित्र यह पाठ सीखे कि हम अपने घरमे तो किसी तरहकी गडवड होने नही देगे, टीकाका स्वागत करेगे, चाहे वह कडवी टीका ही क्यो न हो, अधिक सच्चे वनेगे और जव कभी भूल देखनेमे आवे उसे सुधारेगे। हम यह सोचनेकी गलती न करे कि हम कभी भूल कर ही नही सकते, कडवी-से-कडवी टीका करनेवाले-के पास हमारे विरुद्ध कोई-न-कोई सच्ची, काल्पनिक शिकायत रहती है। अगर हम उसके साथ धीरज रखे, जव कभी मौका आवे उसकी भूल उसे वतावे, हमारी गलती हो तो उसे सुधारे, तो हम टीका करनेवालेको भी सुधार सकते है। ऐसा करनेसे हम कभी रास्ता नही भूलेगे। इसमे कोई शक नही कि क्षमता तो रखनी ही होगी। समझदारी और शनास्तकी[2] हमेशा जरूरत रहती है। जान-बूझकर शरारतकी ही खातिर जो वयान दिए जाते है उनकी तरफ ध्यान नही देना चाहिए। मै मानता हू कि लवे अभ्याससे मै शनाख्त करना थोडा वहुत सीख गया हू।

---

[1] परिचित, [2] पहचान।

आज हवा बिगडी हुई है, एक दूसरेपर इल्जाम-ही-इल्जाम लगाए जाते है। ऐसी हालतमे यह सोचना कि हम गलती कर ही नही सकते, मूर्खता होगी। हम ऐसा दावा कर सके वह खुशकिस्मती आज कहा! अगर मेहनत करके हम झगडेको फैलनेसे रोक सके और फिर उसे जडमूलसे उखाड फेके तो बहुत हुआ। यह हम तभी कर सकेगे अगर हम अपने दोष देखने और सुननेके लिए अपनी आखे और कान खुले रखे। कुदरतने हमे ऐसा बनाया है कि हम अपनी भूल नही देख सकते, वह तो दूसरे ही देख सकते है। इसलिए बुद्धिमानी यही है कि जो दूसरे देख सकते है उससे हम फायदा उठावे।

कल प्रार्थनामे जाते समय मुझे जो जूनागढमे लबा तार मिला उसकी बात कल पूरी नही हो सकी। कल मैने उसपर सरसरी नजर ही डाली थी। आज उसे ध्यानपूर्वक पढ गया हू। तार भेजनेवाले कहते है कि जिन इल्जामोका मैने पहले दिन जिक्र किया था वे सब सच्चे है। अगर यह सही है तो काठियावाडके लिए बहुत बुरी बात है। अगर जो इल्जाम साथियोने स्वीकार किए है और मैने छापे है उनको बढानेकी कोशिश की गई है तो तार भेजनेवालोने पाकिस्तानको नुक्सान पहुचाया है। वे मुझे निमत्रण देते है कि मै खुद काठियावाडमे जाऊ और अपने आप सब चीजोकी तहकीकात करू। मै समझता हू कि वे जानते है कि मै आज ऐसा कर नही सकता। वे एक तहकीकाती कमीशन मागते है। मगर उससे पहले उन्हे केस तैयार करना चाहिए। मै मान लेता हू कि उनका हेतु जूनागढको या काठियावाडको बदनाम करना नही है। वे सच निकालना चाहते है और अल्पमतकी जान-माल और इज्जतकी रक्षाका पूरा प्रबध करना चाहते है। वे जानते है कि हरएक आदमी जानता है कि अखबारी प्रचार, खास करके जब वह पूरी-पूरी सचाईपर न हो, न जानकी रक्षा कर सकता है, न मालकी, न इज्जतकी। तीनो चीजोकी रक्षा आज हो सकती है, उसके लिए तार भेजनेवालोको सचाईपर कायम रहना चाहिए और हिंदू मित्रोके पास जाना चाहिए। वे जानते है कि हिंदुओमे उनके मित्र है। वे यह भी जानते है कि अगरचे मै काठियावाडसे बहुत दूर बैठा हू, मगर यहासे भी उनका काम

कर रहा हू । मैंने जान-बूझकर यह वात कह दी और मै सव सच्ची खवरे इकट्ठी कर रहा हू । मै सरदार पटेलसे मिला हू और वे कहते है कि जहातक उनके हाथकी वात है, वे कौमी झगडा नही होने देगे और कही कोई मुस्लिम भाई-वहनोसे वदतमीजी करेगा उसे कडी सजा दी जायगी। काठियावाडके कार्यकर्ता, जिनके मनमे कोई पक्षपात नही, सच ढूढनेकी और काठियावाडके मुसलमानोको जो तकलीफ पहुची हो, उसको दूर करनेकी पूरी कोशिश कर रहे है। उन्हे मुसलमान उतने ही प्यारे है जितनी अपनी जान । क्या मुसलमान उनकी मदद करेगे ?

: १६६ :

२ दिसवर १९४७

भाइयो और वहनो,

मैंने तो आपको कहा था कि आज मुझको पानीपत जाना है। इरादा ऐसा था कि ४ वजे वापस आ जाऊगा। लेकिन काम इतना निकल गया था कि वडी मुश्किलसे ५।। वजकर ५ मिनट हो गई थी—३ मिनट तो हो ही गई थी—आया। तव प्रार्थनाकी आवाज सुनी । प्रार्थना तो शुरू हो ही जानी चाहिए थी, मै रहू चाहे न रहू । मैंने तो कह दिया है कि प्रार्थना शुरू हो ही जानी चाहिए, नियमके मुताविक चलना ही चाहिए। पीछे मुह धोने चला गया, इसलिए देर लग गई। मै इसके लिए क्षमा चाहता हू ।

मै क्यो पानीपत गया, इसका थोडा-सा तो इशारा कर दिया था । मेरी उम्मीद तो थी और अव भी उम्मीद नही छोड आया हू कि किसी-न-किसी तरह पानीपतके मुसलमानोको रख सके तो अच्छा है। हमारे लिए तो अच्छा है ही, सारे हिंदुस्तानके लिए भी अच्छा है और जो हिंदुस्तानके लिए अच्छा है वह पाकिस्तानके लिए भी अच्छा है।

वहा आज लोग मुसीवतमे पडे है। वहासे जो दुखी लोग आए है—

दु खीको शरणार्थी कहते हैं—वे भी दु खमें है और रहनेवाले है, जवतक अपने घर नही चले जाते है। वैसे ही मुसलमान मजबूर होकर जो पाकिस्तान गए है वे भी दु खमे ही रहनेवाले है। इसमे आप कोई शक न रखे।

मै धर्मका पालन करता हू तो वहा चला गया, यह अच्छा हुआ। डाक्टर गोपीचद भार्गव भी आ गए थे, गृह-मत्री सरदार स्वर्णसिह भी आ गए थे। मुझको पता नही था कि डाक्टर गोपीचद आनेवाले थे। सरदार कर्णसिहने तो कहला भेजा था कि मेरी दरकार हो तो मै आ सकता हू। मैने कहा कि दरकार तो नही है, क्योकि जो कुछ करना है, वह मै करूगा; लेकिन वे आ गए। पूर्वी पजाव उनका इलाका है तो उनका तो वह हक है, इसलिए वह भी आ गए। देशवन्धु गुप्ताने कहला भेजा था कि मै वीमार हू सो नही आऊगा। मैने कहा कि ठीक है, लेकिन वहा तो उनका घर पडा है, इसलिए वह भी आ गए। तो अच्छा हुआ सव आ गए। मौलाना है वह जो यहा हमेशा आते है, वह भी आए। पीछे उन लोगोसे वातचीत की। मुसलमानोसे अकेलेमे वातचीत की, लेकिन दोनो मत्री तो साथ थे। उन लोगोने कहा कि मत्री तो रहे। जो वात मत्रीसे अलहदा है, जिसे मै इस्तेमाल न कर सकू तो वह किस कामकी है। उन लोगोने कहा कि वहा उस वक्त जो वात हो गई थी तव तय किया था कि रहेगे और आपको कहा भी था। वादमे हालत विगड गई। जैसा तुम कहते थे, कुछ भी हो ही नही पाया, इसलिए हम परेशान हो गए। हमारी इज्जतकी कोई परवाह नही की गई। जव इज्जत, माल और जान, तीनोकी रक्षा नही हो सकी तो कैसे रहेगे? जो कुछ भी हो, घर गिरा तो क्या, आग लगी तो क्या, जानको जाने देगे, मालको जाने देगे, लेकिन मानकी हिफाजत[1] करना अपना काम है। उसकी हिफाजत कर सकेगे तो रहेगे। तो मैने कहा कि मरनेकी वात कहते है वह तो ठीक है, लेकिन मनमे जगत-प्रेम है वही ईश्वरकी भक्ति है।

पीछे वहा जो दु:खी शरणार्थी है उनमे वहुत वाते हुई। यह करते-ही-करते ३॥ वज गए। यहासे १०॥ वजे निकल गया था और

---

[1] रक्षा।

करीव ११॥ वजे वहा पहुच गया। ३ वजेतक वाते चलती रही—वाते काफी थी। पीछे दु खी लोगोसे मैंने कहा, पीछे डाक्टर गोपीचद भार्गव थे उन्होने कहा, सरदार स्वर्णसिह खडे हुए तो गोलमाल शुरू हो गया, लोगोने चीखना शुरू कर दिया, इसलिए नही कि वे लोग उनका अपमान करना चाहते थे, लेकिन वे लोग अव गवारा[1] नही कर सकते थे। वह क्या वताएगे हमको, इसलिए वे लोग गुस्सा हो गए ।

काफी लोग थे— करीव २० हजार होगे। मैदान भर गया था। छत सव भर गई थी। इस तरहसे लोग भरे थे। मेरी वात तो शातिसे सुनी। पीछे उन्होने शुरू किया तो लोग खडे हो गए। हमारेमे तो रिवाज हो गया है कि गुस्सा वता दे। सव खडे हो गए, चीखना शुरू कर दिया कि मुसलमानोको हटा दो। मैंने कहा कि मुसलमानोका जाना अच्छा नही है, उनका घर है तो रहने दो, मजवूर करनेसे क्या होगा ? यहा ऐसा करोगे तो वहा हमारा काम विगड जायगा। तो यह सव समझाया। मै तो वैठने-वाला था, लेकिन स्वर्णसिह गृह-मत्री है, वहादुर आदमी है, वे माननेवाले नही। उन्होने कहा कि ऐसे कैसे चलेगा ? उन्होने वोलनेकी वडी चेष्टा की, लेकिन काम चला नही। लोग चीखते ही रहे, सव खडे रहे। तो दु खी लोगोके जो प्रमुख है, नुमायदा है, वह उतरे। पीछे उन्होने शुरू किया। मुझको पता नही था कि वे शायर है, पजावीमे शुरू किया, पहले तो भजन शुरू किया— वे लोग तो जानते है कि पजावियोमे ऐसा है कि उनको भजन अच्छा लगता है—पीछे पजावीमे ही डाटा और कहा कि मै तो आपका नुमायदा हू, आप क्यो नही सुनते, चीखनेसे क्या होगा ? सभा विगाडनेसे आपका क्या फायदा होगा ? आपका नुकसान ही है। तो पीछे शाति हुई, मेहनतसे। लोग वैठ गए तो पजावीमे सव वाते हुई ।

मै पजावी वोल तो नही सकता, लेकिन समझ लेता हू। उन्होने जो कहा वह मुझको अच्छा लगा था। मुसलमानोके साथ वैठे थे तव भी कहा था कि हम दो चीज जरूर करनेवाले है, पाकिस्तानमे चाहे कुछ भी हो, हम वहशी[2] नही वनेगे। हम आजादीकी सल्तनत चलाते है तो ऐसा

---

[1] वर्दाश्त, [2] जगली।

थोडे होने देगे। मुस्लिम लडकीको जो भगा लिया है उसको हम हर हालतमे वापस करेगे। हा, कोई भी आदमी बता दे, कह दे कि वह लडकी वहा है, क्योकि हमको पता तो है नही, तो वह जहा होगी वहासे हम लाएगे। और दूसरी बात यह कि जिन मुसलमानोको मजबूरीसे हिंदू और सिख बनाया गया है वे मुसलमान ही है, धर्म-परिवर्तन हुआ है उसे हम बाकानून नही समझेगे, क्योकि यह नीतिके विरुद्ध है। ऐसे जो लोग पडे है उनकी हम हिफाजत करेगे। अभी जैसे है वैसे ही उनकी हिफाजत करेगे, पाकिस्तान चाहे करे या न करे। स्वर्णसिंहने तीसरी बात भी कह दी कि मस्जिदोकी भी हिफाजत करेगे। ये तीन चीज तो हर हालतमे हम करनेवाले है।

हा, जान-मालके बारेमे कौन क्या कह सकता है! हकूमत है, पुलिस है, वह पूरी कोशिश तो करेगी, लेकिन अगर सब-के-सब लोग लूट-मार करने लगे तो क्या गोलीसे उडा दे? क्या करे? हम लाचार है, हमारी आजादी लूली है, हम लाचारी कबूल करते है। हा, लोगोको डाटेगे, लेकिन लाचारी तो कबूल करनी ही चाहिए। उन्होने लोगोको खूब समझाया, मिन्नत की कि हमारी लाज, आबरू, शर्म सब आपके हाथमे है, उसकी आप रक्षा करे। हकूमत हमारी थोडी है, हकूमत आपकी ही है, आपने ही हमे भेजा है तो हम पडे है। जब हम पडे है तो हम काम तो करे और आप इसमे मदद दे। यह सब समझाया। इसमे काफी समय लग गया। गोलमाल हो गया, उसे शात करनेमे काफी देर लगी। हमेशा ऐसा रहा है कि ऐसे मौकेपर जब लोग बेचैन हो जाते है, गुस्सा कर लेते है, तब मैने देखा है कि थोडी देर बाद जब वे लोग ठडे दिलसे सोचते है तो समझने लग जाते है। मै जब आजादीकी लडाई करता था तब भी देखा था। ऐसी भी नौबत आ जाती थी कि सभाको खतम कर देगे, लेकिन देखता था कि बादमे समझ जाते थे। तो पीछे नुमायदे आए। मैने कहा था तो वे मेरे पीछे आए। मैने उनको गाडीमे ले लिया। अगर न लू और वहा बैठ जाऊ तो यहा समयमे पहुच नही सकता था, इसमे भी समय लगता, मिनट-मिनटका हिसाब करना पडता था, जब यहा आना था।

मैने आराम करना छोड दिया, जब सब दु खी है तब मै क्या आराम

करू । उनसे तो मुझको बहुत आराम है ही। तो वे सुनाते है कि जो यहा दु खी पडे है वे खुद बहुत रजमे पडे है। कुछ तो हुआ ही है, जैसा मैने देखा था वैसा ही है, ऐसी बात नही है। कुछ इतजाम तो हुआ ही है, कुछ छते लगाई गई है, वे अब तबूमे रहते है, ऐसा तो है, लेकिन खाना जैसा होना चाहिए वैसा नही है, पूर्वी पजावके गवर्नरने भी देखा और कवूल किया कि ऐसा तो नही होना चाहिए। कपडेके वारेमे ऐसा होता है कि अच्छे कपडेको भीतरसे ही कोई ले जाता है—कौन लेता है, क्या कहू। उसको छोड देता हू, लेकिन पीछे उनको टूटे-फूटे सडे कपडे मिल जाते है, ऐसा नही होना चाहिए। जो चीज उनके लिए भेजी जाती है वही मिलनी चाहिए। वहा लोग मरते भी है, मृत्यु तो होनी ही है। दो मरनेवालोको जलानेके लिए लकडी मिली ही नही। सारा दिन चला गया। कोई डाक्टर महाशय है, उनका नाम भूल गया, उनके हाथमे इसका इतजाम है। वे एक जगह नही मिले, दूसरी जगह गए, वहा नही मिले तो तीसरी जगह गए, वहा भी नही मिले। इस तरह दिनभर चला गया, शामको ७ बज गया तो कुछ लोगोने उनके रिश्तेदारको कहा कि वहासे लकडी नही मिली तो क्या हुआ। हम आठ-आठ आना देते है। इस तरहसे १०) या १५) हो गए। लेकिन वह तो तगडा आदमी था। उसने रुपये लेना मजूर नही किया। उसने कहा कि लकडी नही मिलती है तो मेरा नसीव, मै दफना दूगा। हिंदू दफन नही करते, लेकिन उसने दफना दिया। तो मुझको दु ख हुआ कि ऐसा नही होना चाहिए।

पीछे मुझको सुनाया कि कोई भी चीज हो, वह वडे शरणार्थीको तो मिल जाती है, गरीवको नही मिलती है, क्योकि वे अफसरोके हाथमे नही है। रखे भी कैसे, कहातक रखे, वहा जो लोग पडे है, उनको ले लिया, उनकी मारफत करते है। अगर वे भले है, परमार्थी है, सेवाभावी है तव तो हो जाता है, लेकिन जव सेवाभावी नही रहते है तो दुश्वारी हो जाती है। मै सव चीज जाहिर कर देता हू। हम मारपीट तो न करे, इससे जहर पैदा होता है। हमारे पास दूसरा तरीका है, वह यह कि साफ-साफ कह देना चाहिए। ढाकनेसे कोई फायदा तो होता नही है। मै कहता हू कि जो चीज वनी है वैसा कह देना चाहिए। जो वुरा करते है उनपर इल्जाम लगाया जाय तो उसमे वुरा क्या है ! इल्जामके लायक है तो कहना ही

चाहिए। ऐसा समझकर मैं सुनाता हू कि यह बुरी वात है। एक तो हम दु खी है, लाखो लोग घर-बार छोडकर आए है, फिर ऐसा करने लगे यह बहुत दु खकी बात है। आज मुझको एक छोटा-सा लडका मिला, वह स्वेटर पहने था, उसे निकालकर खडा हो गया। मेरे सामने आंखे तो बहुत करता था मानो कि खा जायगा। लेकिन बच्चा था, क्या करनेवाला था! कहने लगा कि आप वात करते है कि आप हिफाजत करने आए है, लेकिन मेरा बाप मर गया है तो मुझे मेरा बाप तो दे दो। वह तो मर गया, मैं कहा-से लाऊ? आखिर उस लडकेको गुस्सा आ गया। मै समझ सकता हू कि अगर इतनी ही उम्रका मै रहता तो शायद मैं भी ऐसा ही करता। यह सुनना पडता है, मुझको गुस्सा नही आया, दया आई।

आजका नजारा देखा। ऐसा था तो पीछे वे कहते है कि इतना तो करो कि हम जो शरणार्थी है वे सब खराब थोडे है, उनके हाथमे इतजाम दे दो, ऊपरमे मजिस्ट्रेट वगैरा तो है ही, वहाके लोगोके ऊपर भी तो देखना पडता है, मजिस्ट्रेट वगैरा हमारे ऊपर भी देख-रेख करे, लेकिन कवल बाटने है तो हमको दे दो। बच्चोको दूध तो मिलना चाहिए, फिर भी मिलता नही, वह तो ऊपरके अमलदारोके लिए है। वे या सेवा-भावके लिए जो कमेटी बनी है उसके सदस्य पी जाय, इससे बेहतर तो यह है कि हमको दे दो। चोरी होती है तो क्या, जैसा करते है वैसा भोगेगे। पीछे वे कहते है कि उनके पास और दु खी भाई लोगोने चिट्ठी भेजना शुरू किया। चिट्ठियोमे वे लिखते है कि महात्माको तो कहो कि वह हमारी भी सुने। वे सुनाते थे कि उनमे ऐसी-ऐसी बाते लिखी है। तो मै समझता हू कि मै चला गया तो अच्छा हो गया। मैंने उनसे कहा कि अगर आप शातिसे रहे और आप मुसलमानोको कहे कि आप भाई है, यही रहो, पानीपतमे तो बहुत-सी लडाई हो गई है, तो यह सबसे आला दर्जेकी चीज हो जायगी।

आप २८००० आदमी डेरेमे रहते है, दूसरे आते है तो इससे क्या। आपको खाना मिल जाय, पहनने और ओढनेको कपडा मिल जाय, छत हो या तबू ही मिल जाय तो ठीक है। कही भी रहोगे तो अभी चौथी चीज तो मिल नही सकती। इन तीनो चीजोसे आप बहुत-सी चीजे पैदा

कर सकते है। तो मैने सोचा कि यह आप लोगोको सुना दू। आप भी समझे कि हमारे हिंदुस्तानमे कैसे-कैसे खेल चल रहे है और उसपर हम कैसे कावू पा सकते है। आज तो हकूमत है। हकूमत आपपर जवरदस्ती तो कर नही सकती। आजादी हमने पाई है तो क्या ऐसा होना चाहिए? कल जवाहरलालने सुदर कहा है। आज देख लिया, मै हमेशा कहा पढनेवाला था, पढनेका मौका कहा आता था। जवाहर कहता है कि मुझको प्रधान मत्री कहते है तो मुझको चुभता है, मै प्रधान मत्री कव वना था? हा, यह कहो तो अच्छा लगेगा कि मै अव्वल दर्जेका खादिम हू, सेवक हू। अगर सव ऐसे वन जाय कि प्रधान सेवक है तो उनको २४ घटे लोगोका खयाल करना है। पीछे उनके नीचेके नौकर ऐसा करेगे तो हमारा देश सचमुच स्वर्णभूमि वन सकता है, रामराज्य हो सकता है, खुदाई राज्य वन सकता है। तव हमारी आजादी मुकम्मिल[1] वन सकती है। अगर हम आजादीके वाद ऐसा करेगे जैसा आज हो रहा है तो ऐसी आजादी मुझको चुभती है। क्या हमारी आजादी ऐसी होगी? ऐसी कभी नही होगी।

: १६७ :

३ दिसवर १९४७

भाइयो और वहनो,

मेरे पास काफी लोग आते है, सवका हिसाव तो मै आपको देता नही हू, कोई ऐसी चीज होती है तो कह देता हू। तो आज भी कुछ भाई लोग मेरे पास आए। उनका कोई ताल्लुक हमारी हकूमतके प्रधान जो है उनसे हुआ होगा। तो वे कहते है कि प्रधानने एक समय तो एक चीज कही थी, लेकिन अभी अपनी प्रतिज्ञा, वचनको भग कर रहे है। वह कैसे, मै तो कह नही सकता हू। उनके पास लिखित खत था कि उन्होने एक वार कल या तीसरे दिन—ऐमा कहा था और अव ऐसा कहते है।

---

[1] पूर्ण।

तो मैने कहा कि लिखित चीज हो तो वताइए। आखिर मै भी वैसा ही हू जैसे आप है। मै हकूमत तो हू नही, मेरे पास कोई अधिकार तो है नही, लेकिन मै सेवक हू, उनका दोस्त हू, उनके साथ काम किया है, इसलिए उनके साथ वात कर सकता हू, लेकिन ऐसी वात कैसे कहू ? इसपर मुझको लगा कि ऐसा क्यो होता है, हमसे कहे एक वात और करे दूसरी वात। ऐसा होता है तो मुझपर बीतती है न ? मै समझता हू कि मैने कभी इरादा करके, समझके किसीको धोखा नही दिया है। हा, हो सकता है कि आदमीको जानकारी नही है, सद्भावसे कहता है, वुरा हेतु नही है, उसे धोखा माने और दु ख माने तो ऐसी वहुत-सी चीज दु खकी होती है। वहुत-सी चीज वगैर समझे होती है और उससे भी वचन भग हो जाता है, लेकिन अगर कोई जान-बूझकर अपना वचन भग करता है तो वुरा करता है। ऐसा नही होना चाहिए। इसके लिए जहातक हो सके वहातक मौन ही रखना चाहिए। कभी वेकार एक शब्द भी नही कहना चाहिए, और अगर एक वार दिलकी वात निकाल दी तो उसके मुताबिक काम करना चाहिए। हम ऐसा करेगे तभी हम एक-वचनी वन सकते है। और अभी जब सारे देशकी हकूमत चलाते है तो हमको सावधानीसे काम करना चाहिए, उसमे मर्यादा होनी चाहिए, विवेक होना चाहिए और नम्रता होनी चाहिए, उद्दडता नही होनी चाहिए। ये सव हो तव हमारा काम आखिरतक पहुच सकता है और लोगोको कुछ कहनेकी गुजाइश नही रहेगी। हा, एक वार कह दिया कि अमुक चीज मुफ्तमे वाटेगे, ऐसा तो होता नही है, लेकिन मानो कि हुआ, वादमे कहा कि दो पैसे लेगे तो वह वचन-भग हुआ। इस तरहसे वचनका भग करना ही नही चाहिए। आज हम ऐसे वन गए है कि हमारे पास वचनकी कोई कीमत ही नही रही। आज वोल दिया और कल अलग हो जाते है। आज मै कह देता हू कि कल कोई ४ वजे आपके पास आता हू, लेकिन उस वक्त नाचमे चला गया या और कही चल देता हू तो वह वचन-भग होता है। मै तो कहूगा कि हमे वडी सावधानीसे काम करना चाहिए। तो मैने सोचा कि मै कह तो दू कि वह हकूमतपर लागू नही होता, व्यक्तिपर लागू होता है। सव वचनपर कायम रहे, वोले तो तौलकर वोले, आवेशमे तो कुछ कहना ही नही चाहिए।

जैसे हम एक चीजका वयान देते है कि मारपीट हो गई, पीछे उसमे रग डालनेके लिए कह देते है कि खून हुआ। ऐसी वात तो छिप नही सकती, अभी नही तो वादमे, कभी-न-कभी तो मालूम हो ही जायगी। मै तो यही कहूगा कि ऐसा करना ही नही चाहिए।

अभी मुझे एक डाक्टर सिधसे लिखते है कि वहा जितने हरिजन रहे है वे वेहाल है। हरिजन अगर अकेले वहा रह गए और कोई दूसरे नही रहते तो वे कहते है कि उनको वहा मरना है। अगर मरना नही है तो गुलामीमे रहना होगा और आखिरमे मुसलमान वनना होगा। यह वहुत वुरी वात है। आज तो ऐसा हो गया है कि पाकिस्तानकी हकूमत जो कहती है उसको उनके मातहत जो आदमी है, वे करते नही है। आज हिंदुस्तानमे भी ऐसा हो गया है। जवाहरलाल कह देगे, सरदार कह देगे कि हम तो मुसलमानोकी हिफाजत करेगे, हम नही चाहते कि जवरदस्ती एक भी मुसलमानको पाकिस्तान जाना पडे, लेकिन चलती नही है, उनके पास ऐसे करनेवाले नही है, क्योकि उनके मातहत करते नही है, पीछे प्रजा तो करती ही नही है।

मैने कल सुनाया ही था कि मै पानीपत चला गया था। वहा २८००० हिंदू सिख दु खी पडे है। उनके साथ पाकिस्तानमे अच्छा सलूक नही हुआ। तभी तो उनको भागना पडा, दु ख पडा तभी तो भागे, नही तो भागनेकी क्या गरज पडी थी ! जव वे ऐसा दु ख उठाकर आए है तो क्या वे दूसरेको भगाए ? लेकिन ऐसा होता है। मै पाकिस्तानको किस मुहसे कहू ? तो भी कहना पडता है। वे लिखते है—लवा-चौडा खत लिखा है, मेरे पास पडा है—वहा कोई हरिजन रहना नही चाहता। वे अगर एक जगह वैठना चाहते है तो वैठकर रह नही सकते, उनसे जवरदस्ती काम लिया जाता है। कहा जाता है कि पैखाना साफ करो, झाडू निकालो। यह सव हमको करना चाहिए। लेकिन उनको ऐसा करनेको कहते है तो आज भगी पैखाना ही साफ करे, ऐसी वात थोडी है। एक भगी हमेशा पैखाना साफ करनेका काम करे, ऐसी वात तो होनी ही नही चाहिए। अगर वह वैरिस्टर वन सकता है तो वह क्यो न वने ? हम ऐसा क्यो कहे कि तुम यही काम करो—उनके दिलकी वात होनी चाहिए। अगर उनसे ऐसा

की तो कह देना चाहिए। इसमे क्या है ? अगर नही हुआ है और मुसलमान अतिशयोक्ति करते है कि उनका मकान जला दिया गया है, उनको जवरदस्ती हिंदू वनाया गया है, उनकी लडकी भगा ली गई है तो डका पीटकर ससारको वता देना चाहिए कि वात क्या है, इसमे मुझे कोई शक नही है। इसी तरहसे अगर हिंदू महासभा और राष्ट्रीय स्वयसेवक सघसे कुछ नही हुआ है तो मै धन्यवाद देनेवाला हू। वडी अच्छी वात है। सही क्या है वह मै नही जानता हू। इसे जाननेकी मेरी कोशिश तो चल रही है। मै वहा जिनको जानता हू उनको मैने लिखा है। मुसलमानोको लिखा है कि क्या हुआ है, उसका हवाला दो, तव तो मै समझू कि किस तरहसे काम चल रहा है। इसका आखिर अजाम क्या आएगा, वह नही जानता हू।

अभी दक्षिण अफ्रीकाकी वात है। आपने देखा होगा कि पडित विजयालक्ष्मीने क्या कह दिया है। वह कहती है, हम यहा हार तो गए, क्यो ? क्योकि दो-तिहाई मत नही मिले। दो-तिहाई मत मिले तव अमरीकामे काम हो सकता है, लेकिन काफी लोगोने मदद दी और कहा कि आप जो कहती है वह सही है। दूसरी वात यह कि सच तो हमारे साथ है, पीछे हमारी एक प्रकारकी विजय तो हो ही गई है। इसलिए दक्षिण अफ्रीकावालोको मायूस[1] नही होना चाहिए। लेकिन मै तो दूसरी वात कहूगा। वह विजयालक्ष्मी वहन तो कह नही सकती, क्योकि वह तो यहासे सरकारकी ओरसे गई थी---आपके पास उपाय नही है तो मेरे पास तो है, मैने तो जनूवी[2] अफ्रीकामे शुरू किया था, तो मै कहूगा कि हारना-जीतना क्या है, चाहे दक्षिण अफ्रीकाके अग्रेज कहे, स्मट्स कहे कि वह वहा हमको नही चाहते, जाओ, नही तो मारेगे, खाना-पीना नही देगे जैसे पाकिस्तानमे होता है और यहा भी ऐसा होता है कि हम मुसलमानोको खाना नही देगे। पाकिस्तानसे हिंदू और सिखको भगा दिया गया, उनसे कहा गया कि नही जाओगे तो मारेगे। जैसे अभी वन्नूमे काफी हिंदू, सिख पडे है, उनका क्या हाल होगा, मुझे पता नही है। आज ही मेहरचद खन्ना आए थे तो उन्होने कहा कि दूसरी जगह भी पडे तो है, लेकिन कहा नही जा सकता

---

[1] निराश, [2] दक्षिण।

कि जिंदा रहेंगे, और अगर जिंदा रहना है तो इस्लाम कबूल करना ही है, लेकिन बन्नूमें तो बहुतसे हिंदू सिख पड़े हैं, वे क्या करें? जैसे जेलमें रहते हैं वैसे पड़े हैं, बाहर निकल नहीं सकते, भीतर रहते हैं तो खाएं क्या, ऐसी बड़ी आपत्तिमें पड़े हैं। हकूमत क्या करे? वह भी पेचीदगीमें पड़ी है। मैं जो यहां कहता हूं, वैसे ही वहां दक्षिण अफ्रीकामें हिंदू, मुस्लिम, सिख सब पड़े हैं। उनको मैं एक ही बात कहूंगा कि हार-जीत तो चलती है। लेकिन सच्ची हार-जीत तो आप ही जाननेवाले हैं, नहीं तो आप कहें कि हम इज्जतसे रहेंगे, हटेंगे नहीं। यहांसे सब गए, ऐसी बात नहीं है। हमको बुलाया गया था। जो गिरमिटमें गए थे, फिर वहां हमारे बाल-बच्चे पैदा हो गए। तो यदि वहां किसीको रहनेका हक है—हब्शीको छोड़कर, क्योंकि वह तो उनका देश है—तो सबसे पहले इनका है। बोर लोगोंको भी हमारे-जितना हक नहीं है।

अमरीकामें सब देशके नुमायदे[1] गए थे। जमा हो गए थे, तो हमारे देशके नुमायदेको भी जाना था। वह बुरा नहीं, अच्छा किया। वहां तो इन्साफ करने जमा होते हैं, इन्साफ नहीं कर पाते या कर नहीं सकते यह बात दूसरी है। लेकिन मैं तो कहूंगा कि दक्षिण अफ्रीकामें हम लड़े, तलवारसे नहीं, बाहुबलसे नहीं, आत्मबलसे। आत्मबल तो छोटी लड़की जो मेरे पास बैठी है उसके पास है, और बैठे हैं उनके पास है, सिपाहियोंके पास है। तलवारको तो कोई छीन सकता है, हथियारको छीन लेगा, हाथको काट डालेगा, लेकिन आत्माको तो कोई छीन नहीं सकता—वह तो सनातन सत्य है, आज रहेगा, कल रहेगा, परसों रहेगा। बिना आत्माके शरीर निकम्मा है। शरीर तो दफन होनेवाला है। मेरी पत्नी मर गई तो उसे मैं रख नहीं सका, जला दिया उसी रोज। दो दिन भी नहीं रख सका। महादेव मर गया, वह तो मेरा सब काम करनेवाला था। तो मैं उसको रख थोड़े सका! जो काम करता था वह चला गया तो उसके शरीरको जला दिया। तो मैं तो यही कहनेवाला हूं कि अगर दक्षिण

---

[1] प्रतिनिधि।

अफ्रीकावालोमे अपनापन है और मैं मानता हू कि वह है, अगर हिम्मतवान हैं तो उन्हे नम्रतासे कहना है कि अमरीकामे दो-तिहाई मत तो नही मिले, लेकिन काफी तो मिले। दक्षिण अफ्रीकाके लोगोसे कहे कि हम नम्रतासे कहते हैं कि आप इतना तो करे कि हमे इज्जतसे रहने दे। हम इज्जतसे रहेगे। वहा मुहकमोमे हमे कोई हिस्सा नही चाहिए। आप हमे मदद न करे, लेकिन हमे हवा तो खाने दे, पानी पीने दे, जमीनमे रहने दे, जिस जगह हम रहना चाहते हैं, पैसे देकर रहना चाहते है, मुफ्तमे नही, हमे आपका मत नही चाहिए, मिले तो जैसे अग्रेजोको मिलते है वैसे मिले, नही तो नही मिले। उसके लिए हम सत्याग्रह नही चलाएगे, लेकिन हमे अपनी इज्जत रखनी है और हमे पानी चाहिए, रोटी चाहिए और जमीन चाहिए, और हमारे लडकोको तालीम चाहिए, इसके लिए पैसे न दे उसे तो समझ सकेगे। हम इधर घूमते है तो लडकोको तालीम तो दे। यह हमारा हक है और इन चीजोके लिए इस तरहसे लडनेका हमारा हक है। हारनेकी बात तो है नही, मरनेकी बात है। करना या मरना इसके सिवा कोई दूसरा चारा नही है। अगर दुनियामे हमे इज्जत रखनी है तो करना या मरना है। इसमे कोई बेहालकी बात नही है। यह सीधा धर्म है। यह मैं दक्षिण अफ्रीकावालोको बताता हू और आपको भी बताता हू। दूसरा मेरे पास है ही नही।

: १६८ :

४ दिसबर १९४७

भाइयो और बहनो,

काठियावाडकी बात मैंने कल भी की थी। आज मेरे पास सामलदास गाधीका तार आया है। कल श्री ढेबरभाईका तार आया था। दोनो कहते है कि मेरे पास बहुत अतिशयोक्तिभरी खबरे आई है। वहा औरते उठाई ही नही गई और जहातक वे जानते है, एक भी खून वहा नही हुआ। सरदार पटेलके जानेके बाद तो कुछ भी नही हुआ। इसके

पहले थोडी लूटपाट और दगा हुआ था। सामलदासको मेरे कहनेकी चोट लगी, लगनी ही चाहिए थी। वह खुद बबईसे काठियावाड चले गए है। वहा और तहकीकात करके मुझे ज्यादा खबर देगे।

इधर अमेरिका, ईरान और लदनमे मेरे पास तार आते रहे है, जिनमे लिखा था कि काठियावाडमे मुसलमानोपर बडा अत्याचार किया गया है। इस तरहका प्रचार करना सच्चे लोगोका काम नही। इस बारेमे ईरानका हिंदुस्तानके साथ क्या ताल्लुक ?

सामलदास गाधी कहते है कि 'मेरे पास हिंदू-मुसलमानका भेद नही।' तो जो मुसलमान भाई मुझे लिखते है उनका मै पूरा-पूरा साथ देना चाहता हू। मगर शर्त यह है कि वे सचाईकी राहपर हो। वे अतिशयोक्तिभरी खबरे विदेशोमे भेजे, सारी दुनियामे शोर मचावे, यह मुझे बुरा लगता है। हिंदुस्तानमेसे भी मेरे पास तार आते है, उन्हे तो मै बरदाश्त कर लेता हू, लेकिन जब विदेशोसे तार आते है तो मुझे लगता है कि यह तो बहुत हुआ। उससे मुझे चोट लगती है।

होशगाबादसे एक मुसलमान भाईका खत आया है। उन्होने लिखा है कि वहा गुरु नानकके जन्म-दिनपर सिखोने मुसलमानोको बुलाया और उनसे कहा कि आप हमारे भाई है, आपसे हमारा कोई झगडा नही है। मुझे यह जानकर खुशी हुई। होशगाबाद वही जगह है, जहा स्टेशनपर एक घटना हो गई थी। होशगाबादमे गुरु नानकके जन्म-दिनपर सिखोने जैसा किया, वैसा सब जगह लोग करे, तो आज हमपर जो काला धब्बा लग गया है उसे हम धो सकेगे।

व्यापारी-मडलवाली बात आगे चल रही है। मैने इशारा तो किया था कि मारवाडी और यूरोपियन व्यापारी-मडल रहे, तो मुसलमान-चेबर क्यो न रहे ? एक मारवाडी भाईने मुझे लिखा है कि हम है तो मारवाडी, मगर हमारे चेबरमे दूसरे भी आ सकते है। मैने उनसे पूछा है कि आपके चेबरमे गैर-मारवाडी कितने है और हिंदू कितने है। उनका खत अग्रेजीमे है, मुझे यह बुरा लगता है। उनकी रिपोर्ट भी अग्रेजीमे है। क्या मै अग्रेजी ज्यादा जानता हू ? मेरा दावा है कि जितनी मै अपनी जबान जानता हू, उतनी अग्रेजी कभी नही जान सकता। माका दूध पीनेके समयसे

जो जवान सीखी, उससे ज्यादा अग्रेजी——जिसे १२ बरसकी उमरसे सीखना शुरू किया——मुझे कैसे आ सकती है? एक हिदुस्तानीके नाते जब कोई मेरे बारेमे यह सोचता है कि मै अपनी जबानसे अग्रेजी ज्यादा जानता हू, तो मुझे शर्म मालूम होती है।

हम अपने आपको धोखा न दे। यूरोपियन चेबरवाले भी ऐसा दावा कर सकते है कि हमारे चेबरमे सब लोग आ सकते है। मगर इससे काम नही चलता। अगर सब कोई आ सकते है तो अलग-अलग चेबर रखनेकी जरूरत क्या? यूरोपियनोसे मेरा कहना है कि वे हिदुस्तानी बनकर रहे, अगर वे हिदुस्तानी बनकर रहे और हिदुस्तानके भलेके लिए काम करे तो हम उनसे बहुत कुछ सीख सकते है। वे बडे होशियार व्यापारी है। उन्होने अपना सारा व्यापार बदूकके जोरसे नही, बल्कि बुद्धिकी शक्तिसे बढाया है।

बर्माके प्रधान मत्री मुझसे मिलने आ गए थे। वह बडे नम्र और सज्जन है। उनसे मैने कहा, आप हमारे यहा आए, यह अच्छी बात है। हमारा मुल्क बडा है, हमारी सभ्यता प्राचीन है। मगर आज हम जो कर रहे है, उसमे आपके सीखने-जैसा कुछ नही है। हमारे देशमे गुरु नानक हुए, उन्होने सिखाया कि सब दोस्त बनकर रहे, सिख मुसलमानोको भी अपना दोस्त बनावे और हिदुओको भी। हिदुओ और सिखोमे तो फर्क ही क्या है? आज ही मास्टर तारासिहका बयान निकला है। उन्होने कहा है, जैसे नाखूनसे मास अलग नही किया जा सकता, वैसे ही हिदू और सिख अलग नही किए जा सकते। गुरु नानक खुद कौन थे? हिदू ही थे न? गुरु ग्रथ साहब वेद, पुराणो वगैराके उपदेशोसे भरा पडा है। बाते तो कुरानमे भी वही है। हिदू-धर्ममे 'वेदके पेट' मे सब धर्मोका सार भरा हुआ है। वर्ना कहना पडेगा कि हिदू-धर्म एक है, सिख-धर्म दूसरा, जैन-धर्म तीसरा और बौद्ध-धर्म चौथा। नामसे सब धर्म अलग-अलग है, मगर सबकी जड एक है। हिदू-धर्म एक महासागर है, जैसे सागरमे सब नदिया मिल जाती है वैसे हिदू-धर्ममे सब धर्म समा जाते है। लेकिन आज हिदुस्तान और हिदू अपनी विरासतको भूल गए मालूम होते है। मै नही चाहता कि

बर्मावाले हिंदुस्तानसे भाई-भाईका गला काटना सीखे। आज हम अपनी सभ्यताको नीचे गिरा रहे हैं। लेकिन बर्मावालोंको हमारे इस काले वर्तमानको भूल जाना चाहिए। उन्हें यही याद रखना चाहिए कि हिंदुस्तानकी ४० करोड़ प्रजाने बिना खून बहाए आजादी हासिल की है। हो सकता है कि अंग्रेज थके हुए थे। मगर उन्होंने कहा है कि 'हिंदुस्तानियोंकी लड़ाई अनोखी थी। उन्होंने हमसे दुश्मनी नहीं की, बंदूकका सामना बंदूकसे नहीं किया। उन्होंने हमें नाराज नहीं किया। ऐसे लोगोंपर क्या हम हमेशा मार्शल ला चलाते रहे ? यह नहीं हो सकता । सो वे हिंदुस्तान छोड़कर चले गए। हो सकता है कि हमने कमजोरीके कारण हथियार नहीं उठाया। अहिंसा कमजोरोंका हथियार नहीं, वह बहादुरोंका हथियार है। बहादुरोंके हाथमें ही वह सुशोभित रह सकता है। तो आप हमारे जंगलीपनकी नकल न करें, हमारी खूबियोंका ही अनुकरण करें। आपका धर्म भी आपने हमसे लिया है। हिंदुस्तान आजाद हुआ तो बर्मा और लंका भी आजाद हुए। जो हिंदुस्तान बिना तलवार उठाए आजाद हुआ उसमें इतनी ताकत होनी चाहिए कि बिना तलवारके वह उसको कायम भी रख सके। यह मैं इसके बावजूद कह रहा हूं कि हिंदुस्तानके पास सामान्य फौज है, हवाई फौज है, जल-सेना बन रही है, और यह सब बढ़ाई जा रही है। मुझे विश्वास है कि अगर हिंदुस्तानने अपनी अहिंसक शक्ति नहीं बढ़ाई तो न तो उसने अपने लिए कुछ पाया और न दुनियाके लिए। हिंदुस्तानका फौजीकरण होगा तो वह बरबाद होगा और दुनिया भी बरबाद होगी।

: १६९ :

५ दिसंबर १९४७

भाइयो और बहनो,

मुझको यहां जो खत दिए जाते हैं वे लंबे-लंबे मिले तो उनको मैं पढ़ूं और उत्तर दूं, ऐसा तो नहीं बन सकता है। तो मैं इतना ही कहूंगा कि ऐसे जो पत्र आते हैं वे अगर जवाब देने लायक हैं तो

दू; लेकिन उनको पढनेमे समय लगता है। उनको यहा पढ तो नही सकता हू, क्योकि उनमे मेरा समय जाता है और आपका भी। एक खतमे लिखा है कि आप लियाकत अली खा साहवसे मिले और वातचीत की। क्या अव भी पता नही चला है कि काठियावाडमे कुछ भी नही हुआ? वह भाई अगर यहा है तो सुन ले, नही है तो भी इसके (रेडियोके) मारफत सुन ही लेगे कि काठियावाडमे कुछ भी नही हुआ है। सामलदास गाधीने कहा है कि जैसा वयान आपको मिला है वैसा नही हुआ। हा, हुआ है, लेकिन उतना नही हुआ है। वह पाकिस्तानके अखवारोमे आ गया और तार भी छूटा। वह भयानक चीज है, लेकिन भयानक चीज नही हुई। आज सामलदासका दूसरा तार आया है। वह लिखते है कि मैने तहकीकात की तव पता चला कि ऐसा हुआ नही है और सरदारके आनेके वाद तो कुछ हुआ ही नही। पहले जो मुझे खवर दी गई थी उसका कहनेका मतलव यह है कि सरदारने लोगोको भडकाया तव हुआ, लेकिन उनके जानेके वाद तो कुछ हुआ ही नही तो शक्ल वदल जाती है। तो सामलदास गाधीने कहा कि मै मुसलमान भाइयोसे कहूगा कि आप ऐसे तार क्यो भेजते है। तो मेरे पास उन्ही लोगोने, जिन मुसलमान भाइयोने शिकायत की थी, तार भेजे है कि उसमे गलती थी, उसमे अतिशयोक्ति थी। वे लिखते है कि पाकिस्तानके अखवारोने जो लिखा है वह गलत है। जितना नुकसान हुआ वताया जाता है वह भी गलत है। उसमे यह भी है कि मुसलमान लोग भडक उठे है, सव दहशतमे है—यह भी गलत है। तो मुझको अच्छा लगा। क्यो? मैने तो कह दिया है कि मुसलमान भाइयोके लिए जितना मुझसे हो सकता है करूगा। जो गिरे है उन्हे हमे लात नही मारनी चाहिए, उनको उठाना चाहिए। यह हमारी इन्सानियत वताता है, हमारी मोहव्वत वताता है, हम सभ्य है, शरीफ है, यह वताता है। किसीको नीचे गिराना तो मेरेसे कभी हो ही नही सकता। मेरा दुश्मन भी हो—मेरा दुश्मन तो कोई है नही—तो उसको भी मै कभी नुकसान नही पहुचाऊगा। हा, लोगोका जो वडा ख्वाव था कि जव पाकिस्तान हो जायगा तो वहा सव कुछ हो जायगा। ऐसा क्या होगा? ऐसा थोडा है कि जो पाकिस्तानमे रहेगे वे जिदा रहेगे और जो वाहर रहेगे वे जिदा नही रहेगे। पाकिस्तान क्या

बचा सकता था ? पाकिस्तानमें तो समुदर भरा है हिंदू और मुसलमानोंका। क्या वहां जो हिंदू सिख भरे हैं उनको भगाए ? वे हटना तो चाहते नहीं थे, लेकिन नहीं होने लायक चीज हो गई। वे हटना थोड़े चाहते थे। सिखोंके पाससे मेरे पास तार आया है कि वे वहां जाना चाहते हैं और उनको उनके बिना चैन नहीं। मानो कि लायलपुरके नजदीक किसीकी हजार एकड़ जमीन पड़ी है, वहां उसने खेत बना लिया है, बगीचा बना लिया है, केले पकाता है, गेहूं पकाता है, कपास पकाता है, फल पकाता है तो वह उनको कैसे छोड़ सकता है। जबतक वह वहां लौट नहीं जाता है तबतक उनको चैन मिल ही नहीं सकता। तो वहां तो ऐसा हुआ और यहां क्या हुआ ? सिखोंको गुस्सा आया कि हम तो वहांसे भागकर आए और वे लोग यहां आराममें रहते हैं तो बदला लें। तो मैंने कहा कि यह इन्सानियत नहीं है, हैवानियत है। ऐसा करना नहीं चाहिए। बुरेका बदला अच्छा ही देना चाहिए। बुरेकी नकल नहीं करनी चाहिए। अच्छेकी नकल हो सकती है। यह इन्सानका काम है। तो मुझको अच्छा लगा कि काठियावाड़से तार आया। मैं तो मुसलमान भाइयोंसे कहूंगा कि एक चीज बन गई है तो उसका आधा बताओ, पाव बताओ, उसका दुगुना, दस गुना क्या करना था, और बाहर क्या भेजना था ! दुनियामें फैलाए, ऐसा क्या करना था ! पीछे हिंदू, सिख—सिख तो हैं नहीं, हां अभी थोड़े चले गए हैं—बिगड़ जाएं तो दुनिया क्या बचा सकती थी ? हां, वे कहते कि क्या तुमने इसलिए आजादी पाई ? हम उसे छीन लेते हैं। वह सब बन सकता है, लेकिन जो मर जाय वह थोड़े आ सकता है। इसलिए मैं कहूंगा कि हम कोई चीज बढ़ाकर न कहें। जो दुख है वह दुख तो है ही, उसको कोई बाहरवाला हटानेवाला नहीं है। उसको छोटा करके कहें। दूसरोंका जो भला काम है उसको बढ़ाकर बताएं और बुरेको छोटा करके बताएं तब तो हम दुनियामें काम कर सकते हैं। तो आपको यह खबर देनी थी, दे दी। एक भाईने लिखा था, वह भी आ गया। उसमें और क्या लिखा है, देखूंगा। कहना होगा तो वह खबर कल दे दूंगा।

अभी एक बात और आपको कहनी है। उसका आपसे कोई ताल्लुक नहीं है, लेकिन आपके मारफत कह तो दूं। मैंने बृजकिशनजीको कह दिया

है कि मेरेसे जो मिलने आते है उनको ६ तारीखसे १३ तारीखतक वक्त न दे। नही मिलना चाहता हू, इसका मतलब यह नही है कि मै बीमार हू या शौक करता हू। वह तो कई महीनेसे बात चल रही है। मै सेवाग्राम जा नही सकता हू। इसलिए वे लोग सेवाग्रामसे यहा आ रहे है। कलसे कस्तूरबा ट्रस्टकी बैठक शुरू होती है, उसके बाद चर्खा-सघ, फिर नई तालीम, पीछे ग्राम-उद्योगसघकी बैठक होगी। इन दिनोमे चार बैठक हो जायगी। अच्छी तरहसे हो सके तो इसमे वक्त तो जायगा। तो इनको वक्त दू या मिलनेवालोको वक्त दू? तो मैने कह दिया कि मेहरबानी करके इन दिनोमे वक्त न मागे। हा, बादमे मिल सकते है। मै यहा अपना काम नही करूगा ऐसी बात नही है। बाहरसे आते है तो कितना चाहते है, क्योकि मै तो सूखा जानवर-सा बन गया हू। जब घर रहता है तब कहते है कि देखनेके लिए तो चले जाए। बाहरसे आते है तो कहते है कि सूखा जानवरको तो देख ले, लेकिन समझ ले कि थोडे दिन घर के भीतर बैठा हुआ है। तो इतना मैने कह दिया।

अभी एक बात आपको और कह देनी चाहिए। कह तो चुका हू। बाते भी चल रही है कि कपडोपर जो अकुश है, कट्रोल है, वह छूट जायगा। खुराकपर है वह भी छूट जायगा—कल छूट जायगा, ऐसी बात थोडी है। लेकिन प्रवाह चल गया है तो कहते है कि तुमने अच्छा किया। सब जगह-मे खत आते है कि अकुश छूट जाय तो अच्छा है। तब मुझे कहना चाहिए कि अकुश छूट जाता है तब हमारा कुछ फर्ज नही है, ऐसी बात नही है। जब छूट जाता है तो जो इस बारेमे व्यापार करते है उनका पहला फर्ज हो जाता है। मै घनश्यामदासको भी कहूगा कि आप ज्यादा कपडे क्यो नही पैदा करते? वह कह सकते है कि मै तो एक मजदूरी कर लेता हू। जो हुकम होता है वे कपडे हम बनाते है, जो दाम होता है वह दाम ले लेते है, लेकिन जब अकुश उठ जाता है तब घनश्यामदास क्या करे, दूसरे मित्र लोग क्या करे? छूट मिल गई तो लोगोको लूटना है? तब तो मेरी हजामत होनेवाली है। ऐसा हो गया है कि लोग कहते है कि यह मैने हटाया। हकूमतमे मेरे भाई-बद है, मेरे दोस्त है, उनको कहा तो छूट गया, ऐसी बात थोडी है। मैने तो हिंदुस्तानकी खिदमत की है। मै कितना भी बडा होऊ, कितना

भी कहू, लेकिन अगर हकूमतको नही जचती है, लोगोको, जिनकी हकूमत है, नही जचती है तो मै कितना भी कहू, उससे क्या? मै भगवान थोडे हू कि जो कहू वह अच्छा है। मै तर्क करता हू, अनुमान करता हू, तब कहता हू कि कपडे और दूसरी चीजोपर जो अकुश है वह हट जाय। इसका मतलब यह है कि अगर आज हमारे पास ५ मन अनाज पडा है तो कल १० मन होना चाहिए, क्योकि मै समझता हू कि दबाकर बैठ गए है। अगर आज किसानके पास नही है और तब भी मै कहू कि अकुश हटा लो, लोग भूखे मरेगे तो क्या? मै इतना बेवकूफ थोडे हू कि कहू कि लोगोको भूखे मरने दो! मेरे लिए तो घनश्यामदास बकरीका दूध तैयार करा देते है, फल दे देते है, भाजी-तरकारी दे देते है, मै थोडे भूखा मरता हू। मै क्या ऐसा कर सकता हू कि लोग भूखे मरे? मै तो मान बैठा हू कि किसानोके पास अनाज पडा है, लेकिन उतना दाम नही मिलता है जिससे वे खाना भी खा सके। मजबूर करके सरकार उनसे जितना लेती है उतना दे देते है और कहते है कि जब छूट हो जायगी तब बता देगे कि हमारे पास कितना अनाज है। दूसरे व्यापारी है, जब हमारे पास हकूमत नही थी तब वे नखरा करते थे और हरएक किस्मका पैसा लोगोसे ले लेते थे, लेकिन अब वैसे एक कौडी भी लेना हराम है। मै तो समझता हू कि किसान अनाज निकाल देगे, उसको अच्छे दामपर बेच देगे तो भूखे नही मरेगे। माना कि हमारे पास उतना अनाज नही है जितना चाहिए, तो क्या जिसके हाथमे जितना अनाज आए उतना सब खा जाय और पडोसी भूखा मरे? अगर हम इतने नालायक बन गए तो उसका इलाज नही है। तब भी मै कहूगा कि उसका इलाज अकुश नही है। अगर ऐसा हुआ तो हमारी हकूमतको जिसमे आला दर्जेके हमारे लोग है, हट जाना है। लोग चालाकी करते है, सचपर नही रहते है, जिन व्यापारियोको लोगोके लिए व्यापार करना है वे अपना ही घर भरते है, अपने लडके-लडकीके लिए व्यापार करते है तो हमारी जो सल्तनत है उसे हट जाना चाहिए। हकूमत क्या करे? गोली मारे, मजबूर करे? हमारी ऐसी ताकत है नही और ऐसी ताकत हमे चाहिए भी नही। पुलिस रखना है तो रखे, लेकिन गोली मारनेके लिए थोडे रखना है! व्यापार करते है उनको मारना है तो किसके लिए मारे? किसानो-

को मारे तो कौन रहेगा ? मै तो कहूगा कि ३० वर्षसे तालीम ली वह कहा गई ? इन्सानियत कहा चली गई ? ऐसा चल नही सकता। यह तरीका तो जो आजादी मिल गई है उसको खोनेके लिए है। इसलिए मै तो कहूगा कि अकुश हट जाय। अगर हकूमत कहे कि अकुश हटा लेगे तो लोग मर जाएगे तो मै कहूगा कि पचायत राज नही बना, लोगोका राज नही हुआ, रामराज्य तो हुआ ही नही। मै तो उसीके खातिर जिदा रहना चाहता हू। मै कहूगा कि जो अकुशसे बरी हो जाते है वे अपनेपर अकुश रखकर दूसरोको खुश करे। पीछे हकूमत चलानेमे जो सिविल सर्विसके लोग है वे कहे कि यह गाधी कहासे निकला, यहा क्यो कूद पडा, उसको हकूमत चलाने का अनुभव कहा है। बादमे अकुश लाना और खाना खिलाना मुश्किल हो जायगा। तो मै कहूगा कि हा, ठीक है, मै सिविल सर्विसमे नही गया हू, हकूमत नही चलाई है, लेकिन हजारो करोडो लोगोमे मै घूमा हू, उनके दिलको जानता हू, इसलिए मै समझता हू। मै सिविल सर्विसवालोसे, जो हकूमत चलाते है उनके पाससे प्रमाणपत्र मागूगा कि वे ऐसा ही कहे, गाधीकी बात सुन ली और नतीजा यह आया कि अबतक हमारेमे जो काला-बाजार चलता था वह मिट गया। जो ताजिर करते है वे अपना ही काम नही करते है—वे लोगोको साथ रखकर चले।

पीछे कपडेका भी आ जाता है। अनाज निकालना तो एक अलग बात भी है। आप कह सकते है कि हमारे यहा अनाज पूरा नही है, लेकिन अभीतक किसीने ऐसा नही कहा है कि कपास काफी नही है। कपास तो यहातक ज्यादा है कि बाहर जाता है। तो कहोगे कि हमारे पास इतनी मिले कहा है ? मै कहूगा कि मिल मेरे घरमे है, आपके घरमे है, यहा जितनी माताए बैठी है उनके घरमे है। दो हाथ तो सबके पास है। कपडा पहनना है तो चर्खा चलावे, नही तो नगे रहे। हा, तो ताजिरको कहोगे कि खबरदार, जितना पैसा चाहो लोगोमे ले नही सकते, और कहोगे कि मिल हम चलाएगे तो मै कहूगा कि वह तो हकूमतके पास है, वह ले सकती है। हमारे पास इतनी मिले है फिर भी उम्मीद है कि कम पडेगा तो हमे हाथसे कातना और बुनना तो पडेगा। बुनना आसान है। हमारे यहा इतने जुलाहे, बुनकर पडे है कि जितना चाहिए उतना बुन सकते है। लेकिन

हमारे यहां लाखों पड़े हैं, जितना सूत मिले तो बुन सकते हैं, हाथका सूत नहीं चाहिए। लेकिन जब समझमें आता है कि नहीं बुनेंगे तो नंगा रहना पड़ेगा तब लाचारीसे हाथके सूतको ही बुनेंगे। अगर हाथके सूतको बुनने लगें तो नंगा रहनेकी कोई दरकार नहीं। तो हमारा खूबसूरत मुल्क, जिसमें इतने लाखों लोग रहते हैं, जो धंधा जानते हैं, जिनको इतना इल्म है कि कपड़ा किस तरह तैयार किया जाता है, नंगा नहीं रह सकता। इस वास्ते कपड़ेका अंकुश रखना कि २ गज कपड़ा मिलेगा, ४ गज मिलेगा, ज्यादा नहीं, अच्छा नहीं लगता। कपड़ेपर अंकुश रखना मेरी निगाहमें अज्ञानताकी सीमा है। आज छूट सके तो आज छूट जाय। हां, अनाजकी बात है तो मैं कहूंगा कि किसान और व्यापारी कहें कि हम तो लोगोंके लिए पैदा करता है, कोई दगाबाजी नहीं करता है। किसान समझे कि अनाज बोता है तो अपने ही पेटके लिए नहीं, सब लोगोंके लिए। मैं यह भी कहूंगा कि हमारे मुल्कमें आधा सेर पैदा होता है तो हम अपनी जमीनसे एक सेर क्यों न पैदा करें, लेकिन इसके लिए लोगोंको बताना तो चाहिए, उत्तेजन तो दें, हमारे पास जो यंत्र[1] पड़ा है उसे रोक लें और इसमें लगा दें कि क्यों ज्यादा नहीं होता है।

हमारा मुल्क ऐसा है कि भूखे मरने, नंगे रहनेकी कोई दरकार नहीं। हम अपनी अज्ञानतासे नंगे रहते हैं, जितना अनाज चाहिए उतना पैदा नहीं करते, जितना दूध चाहिए उतना दूध पैदा नहीं करते, हमारे यहां इतनी सेना पड़ी है तो भी हमारा यह हाल है! इससे ज्यादा मूर्खता मैं समझ नहीं सकता हूं।

: १७० :

६ दिसंबर १९४७

भाइयो और बहनो,

आप लोगोंने लक्ष्मी बहनका भजन सुना, रामधुन भी सुनी।

---

[1] कंट्रोलमें लगी हुई मशीनरी।

वे तो यहा नई है, जलसामे चली जाती है। रामधुन तो ऐसी है, भजन भी ऐसी चीज है जिसमे लीन होना पडता है। आज आपने समझ लिया कि उनका गाना सुननेके लिए क्यो आतुर रहते है— सुर अच्छी रहती है। उन्होने उसके लिए जब पैगाम भेजा तब मुझको अच्छा लगा।

हा, तो आज १५ मिनटसे ज्यादा नही बोलना चाहता हू। कल २५ मिनट लग गए, वह ज्यादा हो गया। यह मेरे लिए शर्मकी बात है। मै नही चाहता हू कि मै २५ मिनट लू। १५ मिनट करना है तो मै १५ मिनट बोलनेका अभ्यास कर लू। बाकी छूट जाय तो छूट जाय। आज १५ मिनटमे पूरा कर दूगा।

कल एक भाईने पत्र भेजा था उसको पूरा पढ नही पाया हू, थोडा पढा है। आज दूसरा पत्र आया है। उसको पढ नही सका हू। इसके लिए माफी माग लूगा। एक ढेर पडा है, उसमे कही पडा होगा। वह खत जिसे पढकर आया हू उसमे लिखा है कि मै तो भोला-भाला हू, पीछे दुनिया कैसी चलती है उसको मै नही जानता हू। उसका उत्तर कैसे दू, यह भी नही जानता हू। इसलिए धोखा दे सकते है। जो धोखा है उसका तात्पर्य भी बताता है। तो वह खबरदार करता है कि मै सावधानीसे रहू। वह लिखता है कि देखो, पाकिस्तानमे क्या हो रहा है, हम भी ऐसा ही करे और बदला ले। अगर सावधान रहते है तो कुछ होनेवाला नही है—हम बदला ले, हमारे मकान वगैरा तो सब गए। मै ऐसा नही मानता हू। ऐसा समझकर मुसलमानोके मकानोको, थोडा या ज्यादा, जलाए तो जिसका मकान जलता है उसके लिए तो उस मकानकी उतनी ही कीमत है जैसे करोडपतिका मकान जल जाय, क्योकि उसीमे उसका गुजारा होता है। यह बडा मकानवाला है तो ज्यादा खाता है, ऐसा थोडा है। जितना आप खाते है, मै खाता हू उतना करोडपति खाता है। तो मै आपको यह बताना चाहता हू कि जब मुसलमानको मजबूरन पाकिस्तान जाना पडता है तो उसको भी नुकसान पहुचता है।

वह पूछते है कि हिंदू, सिख पाकिस्तानमे सब छोडकर यहा चले आए तो वह सब मिलनेवाला है? मुझे कहना है कि हा, यह ठीक शिकायत

है, लेकिन मैं तो कहूंगा कि मैं सतुष्ट होकर बैठनेवाला नही हू जबतक सब हिंदू, सिख—मर गए वह बात दूसरी है—अपने मकानपर जाकर बैठ नही जाते है। जबतक एक भी हिंदू, सिख ऐसा रह जायगा जिसे उसका मकान वापस नही मिला हो तबतक मैं शातिसे नही रह सकता हू। हा, जो मकान जल गया है उसको कहे कि ऐसा-का-ऐसा बना दो, तो ऐसा तो कोई हकूमत नही कर सकती, न आपकी हकूमत ऐसा कर सकती है। हकूमतसे ऐसी आशा करनी ही नही चाहिए। मैं तो कहता हू कि माडल टाउनमे हिंदू सिख सब जाकर रहे तो यह काफी है। लाहौरके हिंदू, सिख है वे अपने घरपर, जमीनपर जाकर बैठे और कहे कि जो मकान जैसा है दे दो, जो जमीन है वैसे दे दो। इसी तरह सब अपने घर चले जाय और अपने घरमे जाकर रह सकते है तो मेरे लिए काफी है। हा, इतना होना चाहिए कि जिन मकानोपर मुसलमानोने कब्जा कर लिया है वहासे उनको हटा दे और जिस हालतमे वह मकान है, दे दे। उनको हवेली बनाकर, दे, ऐसा थोडा है। जमीन है, उसे ही लौटा दे, बस इतना काफी है। लेकिन हा, इस यूनियनमे जितने है वे सच्चे बने, अच्छे बने, शरीफ बने तो दूसरा नतीजा बन नही सकता। इसमे मुझे कोई शक नही है। मै तो यह भी कहूगा कि वे जैसा करे, हम भी वैसा ही करे, ऐसा थोडा है। वे नाक कटाकर बैठ गए है तो क्या हम भी नाक कटाकर बैठ जाय ?

यह भाईका जो खत है उसके जवाबमे मैं कहता हू जो हमारी गलती हो गई—गलती सब करते है, उसमे क्या, लेकिन जब गलतीपर कायम रहते है तब हम जो करते है उसको शैतानियत मानता हू, उसीपर हम कायम रहे तो वह इन्सानियत नही है। आदमी तो गलतीका पुतला है, वैसे धर्मका भी पुतला है। जिस जगह गलतिया कर लेता है उसको दुरुस्त कर लेता है तो वह धर्मका ही पुतला रह जाता है। तो हम अपने धर्मपर कायम रहे तो पीछे सारी दुनियाको सुनानेकी जरूरत नही है।

काठियावाडके मुसलमानोको जितना नुकसान हुआ है उसके बारेमे मुझको लिखना पडा, और यह ठीक भी है, वहाके हिंदुओको उनके बारेमे कहना अच्छा है, वहाकी हकूमतको कहना अच्छा है, यहा हमारी जो हकूमत पडी है उसको कहना चाहिए। यह हमारा हक है। हमने ऐसे थोडे माना

है कि जब पाकिस्तान हो जायगा तो वहा सब हिंदू-सिखका मकान जला दे, सब वहासे चले जाय, ऐसी बात थोडी है। लेकिन गलती हो गई तो गलतीको दुरुस्त करो। उसमे वक्त लगता है। हमको भी कह सकते हैं कि तुम भी गलतीको दुरुस्त करो। वे कह सकते है कि जितने मुसलमान पडे है, जिनको मजबूरन वहा जाना पडा है, उनको ले लो। ऐसे ही पाकिस्तानसे यहा जितने हिंदू सिखोको आना पडा है वे वहा चले जाय तो हम दोनो शरीफ बन जाते है, पाक बन सकते है। नही तो पीछे दुनियामे भारी मुह काला होनेवाला है। हमारा मुह सब दिन सफेद रहा है। हा, हम गुडे रहते है और गुडेपनसे आजादी ले तो बात दूसरी है। दुनिया कहती है कि हमने शराफतसे आजादी ली। मै कहू तो बात दूसरी है, हिंदू मुसलमान कहे तो बात दूसरी है, बाहरकी दुनिया कहती है हमने जो आजादी ली है, मिल गई है, वह शराफतसे ली है, शराफतसे मिली है। तो शराफतसे उसे हमे रखना भी चाहिए, गुडेबाजीसे नही, गुडेबाजीसे हम उसे गवानेवाले है। उसी तरहसे हम अपना आचार रखे, वर्ताव रखे तो दुनिया देख ले कि हमने गलती दुरुस्त कर ली। पीछे आप कहे कि दुनिया पाकिस्तानका क्या करती है, देखना है। मै तो कहूगा कि दुनिया क्या करेगी, दुनियाको कहनेकी दरकार नही। उसे साफ होना ही पडेगा। मुझको कहते है कि अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटीने जो प्रस्ताव पास किया है उसमे मेरा हाथ था, तो सुनाते है कि तुमने करा तो लिया, लेकिन लोगोके दिलमे है नही—पाकिस्तानसे जो हिंदू, सिख आए है वे जाना नही चाहते। तो मै थोडे कहता हू कि वे मिस्कीन होकर जाय। यह ठीक है कि पाकिस्तानसे जितने हिंदू, सिख आए है वे लाचारीसे आए है, लेकिन मै कहता हू कि लाचारीसे जानेकी जरूरत नही, शानसे जाय। पाकिस्तानके मुसलमान कहे कि हम सब मुसलमान ठीक हो गए है, आप आइए। ऐसा हम मुसलमानोसे कहे कि आप मेहरबानी करके आइए, आपका मकान, आपकी जमीन जैसी-की-तैसी पडी है, उसपर कब्जा लीजिए। हमारा दीवानापन मिट गया है। हम शराफतसे चलनेवाले है तो आज अच्छा हो जाता है। उसमे धोखा देनेकी बात क्या है? मै तो जानता नही हू कि धोखा कैसा है, किस तरह धोखा दिया जाता है। उसमे दुनियाको धोखा माननेकी बात नही है। अखिल

भारतीय कांग्रेस कमेटीने प्रस्ताव पास किया है कि जितने हिंदू, सिख यहा आए है उन सबको आदरसे, मोहब्बतसे अपने घरोपर, जमीनपर जाना है, लायलपुरमे जाना है। जैसे हमारे सिख भाई वहा खेती वगैरह चलाते थे तो उनको तो वहा जाना ही है। ऐसा मेरा ख्वाब है। यही देखनेके लिए मै जिंदा रहना चाहता हू। ईश्वर मेरे ख्वावको पूरा नही करना चाहता है तो मुझे उठा ले। दिल्लीमे मै रह इसीलिए रहा हू, दिल्लीमे न कर सकू तो दूसरी जगह क्या करनेवाला हू ! हम शरीफ हो जाय तो यह चीज बननेवाली है, इसमे मुझे कोई शक नही है। पाकिस्तानवाले भले बन जाते है और भलेपनसे कहते है कि हमारी गलती हो गई, अब हम शराफतमे पेश आएगे, आप आइए। इस तरहसे हो जाय तो ठीक बन सकता है। तभी हम अच्छे पडोसी बनकर रह सकते है।

: १७१ :

७ दिसबर १९४७

भाइयो और बहनो,

आज मै आपको बहुत गूढ बात कहना चाहता हू। बात तो हमेशा रहती है, लेकिन यह बहुत नाजुक चीज है। अखबारोमे तो आ गई है। आप लोगोने देखा है कि कल लाहौरमे यहासे चद हिंदू बहने चली गई थी और लाहौरमे चद मुसलमान बहने थी। वे आपसमे मिली—इस कारण कि जिन बहनोको मुसलमान उठा ले गए है और जिन बहनोको हिंदू और सिख उठा ले गए है, पूर्वी पजाबमे, उनका क्या किया जाय ? यहासे काफी मुसलमान चले गए और हो सकता है कि अभी और जाय। अगर हम हिंदू और सिख समझ जाय कि हम एक भी मुसलमानको मजबूर करके यहासे भेजना नही चाहते है, अपने आप चले जाय, यह बात दूसरी है। लेकिन ऐसा है कि अपने आप कोई जाना नही चाहता। क्यो जाय अपना घरबार छोडकर ? वहा पाकिस्तानमे उनके लिए घरबार तैयार है, ऐसी बात तो है नही। इच्छासे वहा जानेका तय कर लिया है

या नौकरीवाले वहा जा रहे है तो यह वात दूसरी है। लेकिन ऐसे कम है। और, लोगोको वहा क्या जाना था ! वहा पाकिस्तानमे उनके लिए काम खाली है, ऐसी वात भी नही है। पहलेके व्यापारमे यहा उनका कोई हर्ज नही होता है तो वे क्यो जायगे ?

यह तो हुआ, लेकिन औरतोका क्या ? यह मामला गूढ है, पेचीदा है। कोई कहते है कि वारह हजार औरतोको हिंदू और सिख उठा ले गए और उसमे दुगुनी पाकिस्तानके मुसलमान उठा ले गए। कोई कहते है कि यह वहुत कम तादाद है, इससे भी ज्यादा है। मै तो कहूगा कि वारह हजारकी तादाद कम नही है, एक हजार भी कम नही है, एक भी कम नही है मेरी निगाहमे। ऐसा क्यो हो कि किसी औरतको कोई उठाए ? कोई हिंदू औरत है या सिख औरत है उसको मुसलमान उठाए और मुसलमान औरत है उसको हिंदू और सिख उठाए, यह तो वडा अत्याचार है। कुछ लोग जो कहते है कि वारह हजारको उठा ले गए, यह कम-से-कम तादाद वताई जाती है। मै तो कम-से-कम लेना चाहता हू। मेरे लिए यह वहुत ज्यादा है। वारह हजार औरतोको पाकिस्तानके मुसलमान उठा ले गए और वारह हजार औरतोको पूर्वी पजावके हिंदू, सिख ले गए। इनको कैसे लाना एक पेचीदा प्रश्न है। इसको हल करनेके लिए वे वहने चली गई थी। मुसलमान वहने है, उन लोगोने भी सोचा। जितनी हिंदू और सिख वहनोको उडा ले गए है उनको वापस लाना चाहिए, इसके लिए ये गई थी। उसी तरह जितनी मुसलमान वहने है उनको भी उनके घर पहुचाना चाहिए। ऐसा नही कि वे आकर ले जाय। हमे ही पहुचा देना चाहिए। उसमे वहाके प्रधान गजनफर अली और वहाके पुलिस अफसर भी थे— नाम तो भूल गया— और दूसरे भी थे जो इसमे काम कर सकते थे। मृदुला वहन, रामेश्वरी वहन चली गई थी। दोनोने मुझे अलग-अलग सुनाया कि सवने मिलकर तय किया कि वहनोको घर वापस पहुचाना चाहिए। लेकिन वात यह हुई कि यह कैसे हो सकता है ? अगर आज उनको निकालनेके लिए ऐसा करना पडे कि पुलिस भेजनी पडे, फौज भेजनी पडे, उनके साथ वहने भेजनी पडे तो यह काम करनेका कोई तरीका नही है। जैसे कि पाकिस्तान है, तो वहा हिंदू, सिख वहने चली जाय, पुलिस

अफसर चले जाय, शायद पूर्वी पजावके अफसर भी चले जाय, उन वहनो-को लानके लिए, और उन वहनोको ले आए। लेकिन दोनोमेसे एक भी जगह ऐसा हुआ नही है। कह सकते है कि वे वहने आना नही चाहती तो भी लाना है। उसी तरहसे यहासे भी वहा पहुचाना है। कोई कह सकता कि हिंदू और सिख वहन मुसलमान वन गई है, उनके साथ निकाह कर लिए है। हा, हुआ है, लेकिन वे आनेको तैयार नही है, यह मै माननेके लिए तैयार नही हू। मै इसे गलत वात समझता हू। उसी तरहसे यहा है। वे वहन खुशीसे रहती है, यह माननेके लिए मै तैयार नही।

दूसरी वात भी मै सुना चुका हू। हमारा व्यवहार वहशियाना तौरसे चलता है, पूर्वी पजावमे, और ऐसे ही पश्चिमी पजावमे। उसमे एक ज्यादा हैवान है और दूसरा कम, ऐसा कहोगे ? हैवानमे ज्यादा और कम क्या हो सकता है ? राजा गजनफर अलीने कहा है कि दोनोने काला काम किया है। किसने ज्यादा किया और किसने कम, इसे जाननेकी जरूरत नही। काफी तादादमे हुआ, किसने पहले की यह तहकीकात करनेकी जरूरत नही, इसके निर्णयकी जरूरत नही। जरूरत यह है कि जिन वहनोको जवरदस्ती उठा ले गए है, जिनके साथ वुरा व्यवहार हुआ है, उनको उनके घर पहुचाना है। तो उनको कैसे लाना ? यह काम कैसे हो सकता है ? मुझको कहना चाहिए कि यह काम पुलिससे नही वन सकता है, फौजसे नही वन सकता है। चद वहनोको पूर्वी पजाव भेज दो और चद वहनोको पश्चिमी पजाव—तो यह काम हो सकता है, नही तो हो नही सकता, ऐसी वात नही है, लेकिन यह तरीका नही है। मै नही कहता कि जान-बूझकर करना नही चाहते, लेकिन मै तजुर्वेकार होनेके नाते कहता हू कि इस तरहसे काम होता नही है। यह काम हुकूमतका है। मै यह नही कहता कि औरतोको उडानेका काम हकूमतने कराया—पूर्वी पजावका काम हकूमतने थोडे कराया—पूर्वी पजावमे हिंदू और सिखोने किया और पश्चिमी पजावमे मुसलमानोने किया। इसमे तहकीकात क्या करनी है ? वह तो हुआ है। सख्या कितनी ही हो, मै कम-से-कम वारह हजार मानता हू। तो पूर्वी पजाव और पश्चिमी पजाव इतनेको तो दे दे।

कुछ ऐसा सवाल उठा है कि उनके घरवाले उनको लेना नही चाहते। जगली मा-बाप या पति लोग जो कहते है कि हम अपनी लडकियो या बीबीको नही लेगे। उनको तो लेना ही है। उन बहनोने बुरा काम किया, यह मै माननेको तैयार नही। उनके साथ जबरदस्ती की गई तब हुआ। उनपर काला तिलक लगा देना और कहना कि वह समाजमे रहने लायक नही है, अधर्म है। मुसलमानोमे ऐसा नही होता है। उसमे, इस्लाममे, तो उदारता है कि वह निकम्मा नही बनाता है। यहा निकम्मे बन जाते है ऐसा होता है। निकम्मे बनानेवाले ही निकम्मे बन जाते है। तो मै तो यही कहूगा कि यह काम हकूमतका है। हकूमतको पता लगाना है कि वे कहा-कहा है—दो-चार थोडे है, बारह हजार है। उनको निकालना है और घर पहुचाना है। अगर हम समझे कि पुलिसको भेजे, औरतोको भेजे उन बहनोको लानेके लिए, तो यह तरीका नही है। उन तरीकेसे वे आनेवाली नही है। यह पेचीदा सवाल है। इसका मतलब यह है कि लोकमत तैयार नही है। बारह हजार औरते उठा ले गए है तो कहोगे कि बारह हजार आदमी ले गए होगे, और वे गुडे लोग है, तो मै कहूगा कि ऐसी बात नही है। शरीफ ही गुडे बन गए है। गुडे तो कोई दुनियामे पैदा होते नही। मौका मिलनेपर वे बन जाते है और इस तरहसे ले जाते है। ऐसा क्यो होता है? तो मै कहूगा कि दोनो हकूमत इस काममे पगु है। दोनो हकूमतोने अपना अधिकार यहातक नही जमाया है कि अधिकारके जरिये उन औरतोको लावे। अगर इतना अधिकार होता तो पूर्वी पजाबमे जो हो गया है वह होनेवाला नही था, इसी तरहसे पश्चिमी पजाबमे होनेवाला नही था। हमे तो तीन महीने पहले आजादी मिली है। हमारी आजादी तो अभी बच्चा है।

मेरी निगाहमे पाकिस्तानने यह जहर फैला दिया। लेकिन उसको क्या कहू? कहनेसे क्या बन सकता है? बहनोको तो बचानेका एक ही तरीका है—वह यह कि हकूमत अब भी समझ जाय, जाग्रत हो जाय, इसको पहले दर्जेका काम बनाकर इसमे सारा वक्त लगा दे और इसके लिए मरनेतकको तैयार हो जाय। तब इन औरतोको बचाया जा सकता है, नही तो कितनी ही बहनोको पूर्वी पजाब भेजो व पश्चिमी पजाब भेजो

इनमे से बचानेवाली नही है। बचानेका एक ही तरीका है जो मै कहता हू। हा, मदद मागे तो मदद दे, यह बात दूसरी है। इतनी बडी बात मैने सुना दी।

मैने सब कह दिया था कि मुझे पद्रह मिनटसे ज्यादा नही लेना है। इसलिए इतना ही कहकर खतम कर दूगा। दो-तीन मिनट रह गए है, उन्हे मै छोड देता हू।

: १७२ :

सोमवार, ८ दिसबर १९४७

(लिखित सदेश)

एक मुस्लिम सोसायटी मुझे चेतावनी देती है कि मुझे हिंदू या मुसलमानोकी बाते मानकर दलीलमे नही उतरना चाहिए। बेहतर यह होगा कि मै पहले तहकीकात करू और बादमे जो करना हो सो करू। सोसायटी आगे चलकर मुझे सलाह देती है कि मुझे काठियावाड जाकर खुद सब कुछ देखना चाहिए। मै कह चुका हू कि आज मै वह नही कर सकता। मुझे दिल्लीमे और दिल्लीके आस-पास अपना धर्म-पालन करना चाहिए। यह सलाहकार भूल जाते है कि मेरे मिठासके तरीकेसे, जहातक आवश्यक था वहातक, उनकी शिकायत वापिस खिचवा सका हू। इसमेसे सीखनेको तो यह है कि जहा सचाईकी खातिर सचाई निकालनेका प्रयत्न रहता है वहा परिणाम अच्छा ही आता है। इस बातको बहुत बार आजमाया जा चुका है। ऐसी बातोमे धीरजकी और लगकर काम करनेकी बहुत जरूरत रहती है।

सिंधसे दुखी पत्र आया ही करते है। सबसे आखिरका खत करांचीसे है। उसमे लिखा है, "खून तो नही हो रहे, पर हिंदू इज्जत व आबरूसे यहा रह नही सकते। यूनियनसे आए हुए मुसलमान जब चाहे हिंदुओके घरोमे आ घुसते है और आराममे कहते है—'हम यहा रहने आए है।' उनके हाथमे सत्ता नही, पर हम उन्हे 'ना' कहनेकी हिम्मत

नही कर सकते। ऐसे किस्से काफी सख्यामे देखनेमे आते है। चद महीने पहिलेका कराची आज स्वप्न-सा हो गया है।" यह एक लवे खतका साराश है। मै जानता हू कि यह बात विश्वास करनेके लायक है। यह बताना है कि वहा अधाधुधी मची हुई है। यह तो आदमीका लहू सुखाकर मारनेकी बात हुई। साथ ही उसमे आत्माका भी हनन होता है। पाकिस्तानवालोसे मेरा अनुरोध है कि वे इस अधाधुधीको रोके। यह एक वीमारी है। उससे जितनी जल्दी छुटकारा पाया जाय उतना ही अच्छा है।

चीनीपरसे अकुश उठ गया है। अन्नपरसे, दालो और कपडेपरसे जल्दी ही उठ जाएगा। अकुश उठानेका मूल हेतु यह नही है कि कीमते एकदम कम हो। आज तो असल हेतु यह है कि हमारा जीवन स्वाभाविक वने। ऊपरसे लदा हुआ अकुश हमेशा वुरा होता है। हमारे देशमे वह और भी वुरा है, क्योकि हमारी करोडोकी आवादी है और वह एक विशाल देशमे फैली हुई है, जो १६०० मील लवा और १५०० मील चौडा है। यहा देशके वटवारेको सामने रखनेकी जरूरत नही। हम फौजी कौम नही है। हम अपनी खुराक खुद पैदा करते है, या यो कहिए कि कर सकते है, और हमारी जरूरतके लिए काफी कपास पैदा करते है। जव अकुश उठ जायगा, लोग आजादी महसूस करेगे, उन्हे गलतिया करनेका अधिकार रहेगा। यह प्रगतिका पुराना तरीका है, आगे वढना, गलतिया करना और उन्हे सुधारते जाना। किसी वच्चेको रुईमे लपेटकर ही रखा जाय तो या तो वह मर जायगा, या वढेगा नही। अगर आप चाहते है कि वह तगडा आदमी वने तो आपको उसे सिखाना होगा कि वह सव किस्मके मौसमको वर्दाश्त कर सके। इसी तरहसे हकूमत अगर हकूमत कहलानेके लायक है तो उसे लोगोको सिखाना है कि कमीका सामना कैसे करना। उसे लोगोको वुरे मौसमका और जीवनकी दूसरी मुसीवतोका अपनी सयुक्त कोशिशसे सामना करना सिखाना है। विना अपनी मेहनतके जैसे-तैसे उन्हे जिदा रखनेमे मदद नही करना है।

इस तरहसे देखा जाय तो अकुश निकालनेका अर्थ यह है कि हकूमतके चद लोगोकी जगह करोडोको दूरदेशी सीखनी है। हकूमतको जनताके प्रति नई जिम्मेदारिया उठानी होगी, ताकि वह जनताके प्रति

अपना फर्ज पूरा कर सके। गाडियो इत्यादिकी व्यवस्था सुधारनी होगी, उपज बढानेके तरीके लोगोको बताने होगे। इसके लिए खुराक-विभागको बडे जमीदारोके बजाय छोटे-छोटे किसानोकी तरफ ज्यादा ध्यान देना होगा। हकूमतको एक तरफसे तो सारी जनताका भरोसा करना है, उनके काम-काजपर नजर रखना है और हमेशा छोटे-छोटे किसानोकी भलाईका ध्यान रखना है। आजतक उनकी तरफ ध्यान नही दिया गया, मगर करोडोकी जनतामे बहुमत इन्ही लोगोका है। अपनी फसलका उपयोग करनेवाला भी किसान खुद है। फसलका थोडा-सा हिस्सा वह बेचता है और उसके जो दाम मिलते है उनसे जीवनकी दूसरी जरूरी चीजे खरीदता है। अकुशका परिणाम यह आया है कि किसानोको खुले बाजारसे कम दाम मिलते है। इसलिए अकुश उठानेसे किसानोको जिस हदतक अधिक दाम मिलेगे उस हदतक खुराककी कीमत बढेगी। खरीदारको इसमे शिकायत नही होनी चाहिए। हकूमतको देखना है कि नई व्यवस्थामे कीमत बढनेसे जो नफा होगा वह सब-का-सब किसानकी जेबमे जाय। जनताके पास रोज-रोज या हफ्ते-के-हफ्ते यह चीज स्पष्ट करनी होगी। बडे-बडे मिल-मालिको और बीचके सौदागरोको हकूमतके साथ सहयोग करना होगा और हकूमतके नीचे काम करना होगा।

मै समझता हू कि यह आज हो रहा है। इन चद लोगोमे और मडलोमे पूरा मेल-जोल और सहकार होना चाहिए। आजतक उन्होने गरीबोको चूसा है। उनमे आपसमे जो स्पर्धा चलती आई है यह सब दूर करना होगा। खास करके खुराक और कपडेके बारेमे इन चीजोमे नफा कमाना किसीका हेतु नही होना चाहिए। अकुश उठानेसे अगर लोग नफा कमानेमे सफल हो सके तो अकुश उठानेका हेतु निष्फल हो जायगा। हम आशा रखे कि पूजीपति इस मौकेपर पूरा सहकार देगे।

: १७३ :

९ दिसबर १९४७

भाइयो और बहनो,

आज मै चर्खा-सघके ट्रस्टियोकी सभामे गया था। बहनोके साथ तो आध घटे बात करना ही था। अगर समय रहा, क्योकि मै १५ मिनटमे तो खतम करता हू, तो उनके बारेमे कहूगा, नही तो कल कहूगा।

आज एक चीज तो अखबारोमे यह आ गई है कि सरदार पटेल और मै पिलानी जा रहे है और वह किस कामके लिए ? हवा खानेके लिए। यह बात बिलकुल निकम्मी है। सरदारके दिलमे क्या है यह तो मै नही जानता हू, लेकिन मै इतना तो जानता हू कि यह हवा खानेका समय नही है। सरदार सारा दिन काम करते है और रातको आराम करते है, वही हवा खाना है। वही हाल मेरा भी है। हा, मेरा काम इतना नही है, क्योकि मेरे हाथमे हकूमत नही है। लेकिन मेरे पास लोग आते-जाते है इसलिए थकान हो जाती है, तो भी आराम तो करता ही हू। आजकल हवा तो यहा भी अच्छी है। इस वक्त हवा क्या खाना था! आजकल तो यहाकी हवा ठडी है। पिलानीमे है क्या ? मेरा तो ऐसा है कि करना या मरना। यह भी नही कर पाया हू। अखबारवाले इस तरहकी हवाई बाते क्यो छापते है, यह मै नही समझ सकता हू। मै यही समझूगा कि अखबारोमे जो कई बाते आती है, वे गलत है। पीछे मैने सुना कि— वह अखबारमे नही है—क्योकि हम वहा जा रहे है, इसलिए जयपुरसे हुकम निकला है कि इतनी चीनी चाहिए, इतना गेहू चाहिए, क्या-क्या चाहिए। पीछे आदमी तो दो रहे, इसलिए इतना चाहिए नही, लेकिन ऐसा हो गया कि वहाके बाजारमे सन्नाटा हो गया। यह सुनी हुई बात है, देखी हुई नही। यह कितनी बुरी चीज है कि जो चीज होनेवाली नही, वह भी हो गई। हम ऐसे है कि बाजारपर भी असर हो गया। बाजारमे ऐसा हो गया कि इतना दूध चाहिए, इतना सेर चीनी चाहिए, जैसे हम खानेके लिए ही जिदा रहते है या हमारे साथ इतना बडा रिसाला जाता है। ऐसा तो होना नही चाहिए। सरदार

मिस्कीन है, मै भी मिस्कीन हू। यह है कि वह आलीशान मकानमे रहते है, आलीशान मकानमे तो मै भी पडा हू। नही तो यहा ढूढू। तो इस तरहसे है। आलीशान मकानमे रहते हुए भी मिस्कीनकी तरह अच्छा है। बडा अच्छा तो यही है—मै कबूल करूगा—कि वह मिट्टीके झोपडेमे रहे और मै भी मिट्टीके झोपडेमे रहू। कुछ भी हो, मै तो यही बात बताना चाहता हू कि इस तरहसे गप्प उडती है। मै तो यही पडा हू तो पूछ लेना चाहिए था कि क्यो भाई, तुम पिलानी जाओगे ? हमारे पास तार आ गया है और वह भी एसोसियेटेड प्रेसका—उसकी तो एजेसी यहा है, सो मुझको और चुभा। सरदार तो ज्यादा काममे रहता है। उसको नही सूझा तो पूछ सकते थे कि क्या वही जानेवाले हो ?

दूसरी बात यह है कि एक सिंधी भाईका पत्र आ गया है। उसने तो अपना नाम दिया है, लेकिन मै उनका नाम देना नही चाहता हू। उनकी तरफसे कोई मनाही नही है। सिंधके एक डाक्टरकी बात तो मैने बताई ही थी। नाम नही दिया था। उन्होने बताया था कि वहा हरिजनोको कितनी तकलीफ है। वह पकड लिए गए। इसी कारण पकड लिए गए या दूसरे कारण, यह मै नही जानता हू। कई आदमी जो हरिजनोकी सेवा करते है वे पकड लिए गए है। ऐसा सिलसिला आज सिंधमे चलता है। हा, इतना है कि खून नही होता है, लेकिन जैसा मैने कल बताया, वह खूनसे बदतर है, क्योकि खून तो एकका हुआ, वह खतम हुआ, पीछे सब समझ जाएगे कि इतना हुआ। लोगोको परेशान कर मारना, यह तो बदतर बात है। एक आदमीको पकड लिया और छोड दिया, मुमकिन है दूसरोको भी छोड दे। लेकिन तो भी इस तरह लोगोको पकडना बुरी बात है। मै पाकिस्तानकी हकूमतपर इल्जाम नही लगाता हू, लेकिन मै पाकिस्तानको सावधान करता हू कि अगर वे इस तरह करते है कि कोई हरिजनोकी सहायता करता है, इसलिए गिरफ्तार कर ले तो सिंधमे कार्यकर्ता कैसे रहेगे ? हरिजन लोग कैसे रह सकते है ? हा, यह चीज पहले अंग्रेजोके जमानेमें तो चलती थी। क्या हम भी ऐसा करेगे ?

अभी चद मिनट बाकी है तो चद मिनटमे वहाकी एक बात सुना

दू—वह औरतोकी बात है। कस्तूरबा स्मारकका सिलसिला है, वह तो इस कारण है न कि हमारे यहा सात लाख देहात है, वहा बच्चे और बहने पडी है, उनकी जाग्रति करना, उनकी सेवा करना कस्तूरबा स्मारकका काम है। लेकिन यहा तो एक बडा मामला हो रहा है कि एक तरफसे हिंदू और सिख औरतोको, लडकियोको मुसलमान भगा ले गए है और दूसरी तरफसे हिंदू और सिख मुसलमान लडकियोको भगा ले गए है। यह बात छोड दो कि कौन ज्यादा भगा ले गए और कौन कम। कुछ भी हो, एक-एक हकूमतमे बारह-बारह हजारसे ज्यादा लडकियोको भगा ले गए है। इसमे कस्तूरबा स्मारक क्या करे? मेरे हाथमे है तो जो होना चाहिए वह तो करूगा ही। लेकिन यह एक बात साफ है कि कोई नामके लिए तो कर नही सकते है। जो सेवक है तो उन्हे काम करना है—काम किया, खतम हुआ, भूल गए— अखबारमे आए चाहे न आए, इसकी ओर ध्यान नही देना चाहिए। इसी तरहसे दूसरा काम भी है—यह काम भी औरतोका ही है। दूसरे भी मदद करेगे। एक बात यह भी है कि औरतोके लिए क्या-क्या किया जाय वह तो बताओ। वह थोडा-सा मै यहा बता देना चाहता हू। इसमे जितनी सेविकाए है, वे शहरोसे है—बहुत-सी सेविकाए देहातोसे नही मिली, दैवयोगसे मिली तो बहुत कम मिली और जो देहातोसे मिली है वे भी शहरोसे ताल्लुक रखती है। शहरोसे ताल्लुक रखना बुरा है, गदा है, ऐसा नही है, लेकिन ऐसा सिलसिला बन गया है—१५० वर्षोसे भी अधिक समयसे—कि शहर है वह देहातियोसे पैसे लेनेके लिए है, देहातोसे कच्चा माल ले, देश-विदेशोमे व्यापार करे और करोडो रुपये कमाये। लेकिन करोडो रुपया देहातियोको नही मिलेगा, थोडा मिलेगा, ज्यादा रुपया करोडपतियो, धनिको तथा मालिकोको मिलेगा। शहर देहातियोको चूसनेके लिए है। इसलिए शहरकी जो सभ्यता है वह देहातोके ढाचेमे नही है। एक बहन शहरकी है तो उसे किस दृष्टिसे देहातको जाना है, तो मैने तो बता दिया है कि उसे शहरोकी आबहवा व सभ्यता लेकर नही जाना चाहिए। माना कि उसके पास पैसे पडे है, शौककी चीजे पडी है, मोटर पडी है, रग-रागकी चीजे है, मखमल है, ऐसी कीमती चीजे पडी है। दात साफ करनेका—बाहरसे या यहाका हो—मजन पडा है तो ले ले,

टूथ ब्रुश ले ले, और अच्छे, खूबसूरत लगते है वैसे बूट ले ले, जूतिया ले ले, चप्पल ले ले—ये सब चीजे पडी है, इनको लेकर देहात जाय तब देहातकी सेवा कैसे कर सकती है ? यह देहातके लिए आदर्श है, ऐसा हुआ तो ये चीजे देहातको खा जायगी। होना तो ऐसा चाहिए कि शहर है वह देहातके मारफत समृद्ध बननेके लिए है, पैसे भेजनेके लिए है, देहातकी सभ्यताको जितना बढा सके उतना बढानेके लिए है, लेकिन वैसे हुआ तो उल्टा हो जायगा। अभी मैने सब बाते तो बताई नही है, लेकिन इतना तो कह दू कि जिन बहनोको सच्ची सेवा करना है, चूसना नही है, तो उनको विवेकशक्ति रखनी होगी और विवेककी दृष्टि रखकर जो चीजे देहातोमे जा सकती है वहा ले जाय। जो सुधार करना है वह भी देहातोके टाचेमे करे। तब तो हमारे सात लाख देहात, जो गिरी हुई हालतमे है, ऊपर आ सकते है। ऐसा नही है कि देहातोमे जगली पडे है, वहा कला नही है, वहाके जीवनमे कुछ भी अच्छापन नही है। देहाती जीवनमे तो बहुत कुछ खूबसूरती भरी है, ऐसा मेरा मत है। यहा बहुत कला भरी है, यहा अनेक प्रकारके उद्योग पडे है, जो सारी दुनिया जानती है। यहाके ही उद्योग पश्चिममे नमूना बनकर गए। तो मै आज इतना ही बता देना चाहता हू कि जिन बहनोको वहा सेवा करनी है उनको समझना चाहिए कि शहरोकी चीज शहरोमे ही छोड दे। शहरकी जो उत्तम चीज है, नीति-वर्धक है, उसे ही ले जाय, बाकी शहरमे ही रख जाय। तभी करोडो बहन और बच्चोको ऊपर ले जानेमे मदद दे सकते है। इतना तो हम कर ही सकते है।

: १७४ :

१० दिसबर १९४७

भाइयो और बहनो,

कल तो मैने आपको कह दिया था कि मै चर्खा-सघकी सभामे गया था और औरतोसे थोडी बात कर ली थी, पर आज भी वहा तालीमी सघकी बैठकमे जाना पडा, लेकिन शायद आज यह बात

छोड दूगा। आज मुझे चर्खा-सघकी बात करनी चाहिए। चर्खासघ क्या चीज है, आप जानते ही है। वह तो गहरा काम करना है और चर्खेमे (चर्खीमे) शुरू होता है, माने यह कि पहले कपासका बिनौला निकालना पडता है, पीछे धुनाई करनी होती है, पीछे पूनिया बनानी पडती है, फिर कातना, फिर बुनाईकी बात आती है। मै इस सबमे जाना नही चाहता हू। मै तो इतना बता देना चाहता हू कि हिदुस्तानमे करोडो लोग पडे है। अगर वे यह काम करे—यह आसान काम है, बुढिया औरत भी कर सकती है, ६, ७ वर्षका बच्चा भी कर सकता है, हम चर्खा-सघमे ऐसे बच्चोको भी सिखाते है—तो कपडेका खर्च करीब-करीब बच जाता है। अगर देहातोमे कपडे बन जाते है तो मुफ्त-सा हो जाता है—मेहनत की और हो गया। अगर देहातमे कपास बो ली तो करीब-करीब सब खर्च बच गया, दुगुना पैसा बच गया—एक तो पैसा खर्च नही करना पडा और दूसरा कुछ उद्योग करते है, कला भी भूलते नही, और आगे बढते है। इस कारण, मै तो कहूगा कि अगर हम पागल नही बनते है तो कपडेका घाटा तो हमारे यहा होना ही नही चाहिए। कोई भी मिल न रहे तब भी घाटा नही होना चाहिए। आज तो हम मिलका मुह ताकते है, मिलका ही कपडा अपनाते है। आज हम चर्खेको, खद्दर-गाढेको अपनाना भूल गए है। आज कोई खद्दरकी टोपी पहन लेता है, क्योकि कुछ अभ्यास हो गया है, उसको साथ लेकर आजादीकी लडाई लडी थी, लेकिन आज वह चीज हमारे जीवनमे जिदा नही है। यह हमारे लिए दु खकी बात है। इतने वर्षोसे चर्खा-सघने काम किया और लोगोको करोडो रुपये दिए, लेकिन फिर भी हम ऐसे-के-ऐसे रह गए है, तो इसके लिए सोचना चाहिए। कल सोचते थे तो बताया गया कि चर्खाके मारफत क्या काम होता है, वह क्या बताता है। चर्खा अहिसा बतानेवाली चीज है। अगर सब लोग चर्खामय बन जाते है और सब देहात सचमुच समृद्ध बन जाय तो आज जो हालत देखते है, करुणा-मय है, वह बननेवाली नही थी। वहा बहस चलती थी। वहा बताया गया कि किस तरह चर्खेके मार्फत—खादीके मार्फत—कपडेका घाटा आरामसे पूरा कर सकते है, करोडो रुपए देहातोमे दाखिल कर सकते है। नगद नही, लेकिन करोडो रुपये जो मिलके कपडे खरीदनेमे खर्च करते है, वह

बन जाते है। लोग यह कहते है कि खादी तैयार करनेमे भी तो कपासका दाम पड़ेगा, लेकिन मै कहता हू कि कपासका दाम तो कम पड़ेगा। आज यहा जिस तरहसे कपास निकलता है उसे लगा दो तो उसमे करीब-करीब ऐसा बन जाता है। लेकिन यह हिसाब सच्चा नही है। इसलिए नही है कि कपड़ेका दाम मिलमे जो होना चाहिए उससे कममे दिया जाता है। सरकारकी मदद नही हो तो दाम तो बहुत बढ जाय, लेकिन उसको सब मदद सरकारसे मिलती है। मिलके लिए सब सुविधा पैदा की जाती है। हम राज चलाते है, उसमे धनपति है, उनकी तो चलती है और जो हलपति है उनकी नही चलती है। यह एक बड़े दुखकी बात है। धनपतिसे मेरा द्वेष तो है नही, क्योकि मै एक धनपतिके घर पड़ा हू। धनपतिका जो पैसा रहा है उसे जानता हू। धनपति मिल चलाते है, तो मै थोड़े हिस्से लेता हू, या काम करता हू। कर भी नही सकता और हिस्सा भी नही लेना है। हा, उनके मार्फत चर्खाका काम निकाल लू तो अच्छा है, लेकिन कर नही पाया हू। ये सब सुविधाए धनपतियोने सरकारके मार्फत पैदा कर ली है। अगर वे कहते है कि गरीबोके लिए है तो वैसा तो अगरेज भी कहते थे। लेकिन सच बात यह है कि गरीबोका काम नही होता है। इस हकीकतको दीनतासे कबूल कर लेना चाहिए। अब अगर ऐसा नही होता है तो बुरी बात है। कह तो सभी देगे कि हा, गरीबोका काम होना चाहिए, लेकिन हमारे जितने मत्री है वे कहे कि हम तो देहातोमे जाकर कहने वाले है। अगर समाजवादी है, और मेरी चले तो यही आवाज निकलवा लूगा कि सब समाजवादी बन जाय। अगर समाजवादी सच्चे है, लोगोंकी सच्ची सेवा करते है—मजदूरोकी ही नही, हलपतियोकी भी, क्योकि इनकी सख्या ज्यादा है, और, हमलोगोको ऊपर उठाना चाहते है तो उनसे यही कहलाऊगा कि हमको तो यही सिखाना है कि तुम कपड़ा खादीका ही पहनो। तुम घरमे खद्दर बना लो, उसमे कोई रुकावट नही है। मतलब यह है कि वे क्या कर रहे है, यह मै लोगोको बता दूगा। जबसे मै आया हू तबसे मै यही कह रहा हू, तो भी मुझसे कुछ हुआ नही है। मुझसे यही हुआ कि कई करोड़ रुपये देहातोको दे दिए, लेकिन मै तो चाहता हू कि हरएक देहातके घरोमे चर्खा गुजन करे और गाढेके सिवा दूसरा दीखे ही नही।

ऐसा बना सकू तो जो दीनता है वह रहनेवाली कहा है! ऐसा अभीतक हो नही सका, यह बहुत दुःखकी बात है।

आजकल यहा सब ठीक चल रहा है, गोलमाल नही है, ऐसा नही है। हिंदू मुसलमानोंके बारेमे एक तरहसे सुनता हू कि ऐसे व्याख्यान भी चलते है—अभी नाम नही बताऊगा, क्योकि पूरा-पूरा नाम अभी नही आया है—कि यहा चद मुसलमान पडे है उनको रहने नही देगे। जो मस्जिदे रह गई है उनपर कब्जा करेगे और उनमे हिंदू रहेगे। फिर क्या करेगे, दैव जानता है, मै नही जानता हू। मै समझता हू कि अगर उनमे हिंदू रहेगे तो उससे हिंदू-धर्म मिट जाता है। यह दिल्लीकी बात है।

अभी अजमेरकी बात भी आ गई। अजमेरमे भी ऐसा हो रहा है। वहा तो मै कई बार गया हू। वहा मुसलमान पडे है, हिंदू पडे है। वहा तो बडी भारी दरगाह है। उस दरगाहमे हिंदू भी जाते है और हिंदू जाकर मानता भी करते है। इसी तरहसे मुसलमान भी जाते है। तो सब एक ही बन गए है, ऐसा चलता है। धर्मसे नही, कर्मसे। हिंदू और मुसलमानके बीच वहा कभी झगडा नही हुआ है, ऐसी बात नही है। होता था, लेकिन आज ज्यादा हो गया है। ऐसा थोडा-सा अखबारमे आया है, उससे जानता हू वहा काफी मुसलमान मारे गए। पहले तो वे डरे, डरके मारे भागे। पीछे थोडे रह गए। फिर झगडा हो गया। सुनता हू कि इर्द-गिर्दके देहातोमे यही हो रहा है। पूरी खबर मिल जायगी तो सही-सही बता दूगा। इतना तो कहूगा कि यह शर्मनाक बात है। हम अभी इतना तो करे कि ईश्वरसे प्रार्थना करे कि हमे ऐसी सुबुद्धि दे कि हम ऐसे न बिगड जाय कि हम हिंदू-धर्मका भी नाश करे। मुसलमानोका नाश करनेके बहाने हिंदू-धर्मका भी नाश करे, यह तो कुछ अच्छी बात नही हो सकती। अगर हम जिदा रहना चाहते है तो हमे सबको जिदा रखना है, तभी हम भी रह सकते है। ईश्वरने ऐसा नही बताया है कि एकको मारकर दूसरेको जिदा रखे। पाकिस्तानमे सब हिंदू और सिखोको मार डाले और हिंदुस्तानमे मुसलमानोको मार डाले और जो बाकी रहे उनको गुलाम बनाकर रखे, यह हो नही सकता। तो मै कहूगा कि हम विनाशका काम कर रहे है। जैसे संस्कृतमे है, 'विनाश-काले विपरीतबुद्धि,' ऐसी हमारी बुद्धि विपरीत हो गई है। मारो, काटो,

निकाल दो मुसलमानोको, यह पागलपनकी वात है। वहुत-सी वाते ऐसी हो गई है, लेकिन सव नही सुना सकता हू, क्योकि मैने तो ऐसा कर लिया है कि घडी निकालकर रखता हू, जिससे १५ मिनटसे ज्यादा न वोलू।

: १७५ :

११ दिसवर १९४७

भाइयो और वहनो,

पहले तो जिस भाईने वडी नम्रतासे पूछा या तो कहा कि कुरानशरीफमेसे यहा जो आयते पढी जाती है, उसके माने अगर समझा दिए जाय तो अच्छा हो, माने पुराने हो या नए। नया तो कोई हो नही सकता। कुरानशरीफ तो मुहम्मदसाहवने उतारा। उनकी जवान है, ऐसा कहते है। इसे १३०० वर्ष हो गए, इतना पुरातन है। उसमेका जो हिस्सा हम पढते है वह वडा वुलद माना जाता है। जैसे हमारे मत्रमे है, वह विभूति मानी जाती है, उसे पढनेमे ही पुण्य मिल जाता है, वैसे ही यह भी जानो। अर्थ जाने चाहे न जाने, शुद्ध उच्चारणसे ही उसका पुण्य मिल जाता है। मै उसका अर्थ, निचोड दे सकता हू, क्योकि मै अरवी या फारसी तो जानता नही हू। मेरे पास शव्दार्थ है। अभी तो नही है, कल दे दूगा। उसका अर्थ यह है कि हम ईश्वरकी प्रार्थना करते है। ईश्वर तो एक ही है, उसे चाहे किसी नामसे पुकारो। उसका नाम अल्ला भी है। वह कैसा है, उसके विशेषण दिए है। वह रहीम है, रहमान है, दयावान है, दयाका भडार है। उसमे यही आता है कि ईश्वर एक है, ईश्वर अनेक नही है। उसमे यह भी है कि तू ही हमे शैतानसे वचा सकता है, शैतान तो हमको नीचे गिराता है, शैतान पाप-कर्म कराता है तो तू ही उस वलासे वचा सकता है। उसमे एक आदमीने इकरार किया है कि वह पुरुषार्थका काम नही करता है, दैव कराता है, ईश्वर कराता है। पीछे कहता है कि हे ईश्वर, तू ही शैतानसे वचा सकता है। हम छोटे इन्सान तो समुदरमे एक विदुके समान है। तू नही वचाएगा तो शैतान हमको खा जायगा।

तू महान् है, तू सब कुछ है, तेरी मेहरबानी रहे तो हम बच सकते है। तो मैं कहूंगा कि हम उसका जितना उच्चारण करें, उसका मनन करें और उसके मुताबिक चलें, कम है। उसीसे दुनिया चलती है। तब आप कहेंगे कि फिर मुसलमान ऐसा मिथ्या आचरण क्यों करते हैं? उसका जवाब यही हो सकता है कि क्रिस्टी आला बन गए हैं, शास्त्रज्ञ बन गए हैं, लेकिन बाइबिलके मुताबिक चलते कहा हैं? उसके मुताबिक चलनेवाले क्रिस्टी कहा हैं? हिंदू गायत्री मंत्रके मुताबिक कहा चलते हैं? वह कितना बड़ा मंत्र है। हम सदा पढते हैं—"ईशावास्यमिदं सर्वम्" उसके माने यह है कि सारा जगत ईश्वरसे भरा है। सब चीज वही देता है। तो आदमी कहता है कि हमारे पास सारा जो कुछ है वह तेरा है। वह हम सब त्याग देते हैं और जो हमें भोगना चाहिए भोगते हैं। हमारी कोई चीज नहीं है, घरबार सब ईश्वरके अर्पण कर दिया। यह तो बडी चीज है। पीछे ऐसा है कि दूसरेका धन है, दूसरेकी दौलत है, उससे द्वेष न करें। उसकी इच्छा तक न करें। उसमें यह सब चीज है। एक ही मंत्रके मुताबिक सब हिंदू चलें, सारा संसार चले, हिंदूके लिए ही थोडे हैं, हिंदूका नाम भी नहीं है—सिख चलें, सिख नहीं मानते है, ऐसा थोडा है। तो हम आज दुनियामें जो करुणामय दृश्य देखते हैं वह थोडे होनेवाला था। तो कहोगे कि उसके मुताबिक नहीं चले तो कैसे यह दुनिया चलती है? तो मैं कहूं कि सब-के-सब बदमाश हैं, ऐसे थोडा है। सब हिंदू फरिश्ता थोडे हैं। सब सिख बदमाश हैं, ऐसा थोडे है। सब हिंदू देवरूप है और सब मुसलमान फरिश्ता है, ऐसा भी नहीं है।

दूसरा मंत्र पारसियोंका है। पहला मंत्र जो होता है वह गुरुदेवको नमस्कार है। पीछे संस्कृतमें है वह है। पीछे भजन गाते हैं वह है। इतना होते हुए भी मनको साफ नहीं करते हैं, यह दुःखकी बात है।

अब हरिजन-बस्तीमें जो चल रहा है, उसकी एक चीज समझा दूं, लेकिन आज मैं उसको छोड देता हूं, क्योंकि दूसरा काम करना है। सात मिनट हो गए और १५ मिनटमें खतम करना है।

आज मेरे पास कुछ मुसलमान भाई आए। पहले भी आए थे, आज दुबारा आए। उन लोगोंने मुझसे कहा कि अभी हम पाकिस्तान,

पजावमे गए थे। यही काम करनेके लिए युक्तप्रातके मुसलमान वहा गए थे। पीछे वहा दूसरे मिले। उनके दिलमे हुआ कि वहा सुलह करा सकेगे तो यहा सुभीता हो जाएगा और पीछे कोई वात नही रहेगी। मुझको पूछकर गए थे। तो मैने कह दिया था कि जाओ। सच्चे दिलसे जाते हो तो अच्छा है। तो आज वहासे आए। मेरे पास आए और कहा कि हम तुम्हारे पाससे एक चीज चाहते है, इतना चाहते है कि हिंदुओको कहो, सिखोको कहो—पहले हिंदूको कहो कि वे लाहौर जाय और हम उनके साथ जाएगे। पहले हम मरेगे, फिर कोई दूसरा मर सकता है। पर ऐसा तो होगा नही। हमने वहाकी हकूमतके साथ वात कर ली है। वह गैर-मुसलमानोको वसानेके लिए राजी है। तो मैने कहा कि यह सव लिखकर तो दो। आज-के-आज तो ऐसा होता नही है। यह वडी वात है। अगर ऐसा हो गया तो मेरा वहुत सारा काम हो जाता है। पीछे उन लोगोने कहा कि करो तो सही, हम जो कहते है उसकी जितनी परीक्षा करते हो करो। तो उन लोगोने लिखकर दिया। उसमे लिखा है—

"युक्तप्रातके शाति-दलने दो मर्तवा पश्चिमी पजावका दौरा किया। पहली मर्तवा एक महीना और दूसरी मर्तवा एक हफ्ता घूमा। अव वहाकी हालत पहलेसे अच्छी है। पहलेके मुकावले अवाम[1] और हकूमत दोनो अमनके लिए कोशिश कर रहे है। चुनाचे पश्चिम पजावकी सरकार खाहिशमद[2] है कि जो गैर-मुस्लिम वहा इस वक्त रहते है तो रहे और जो वहासे चले गए है वे वापस आए, सरकारने यह हिदायत जारी की है कि जो गैर-मुस्लिम पश्चिम पजाव वापस जाएगे उनको उनकी मिल्कियत और जायदादपर कब्जा दिया जायगा और जो गैर-मुस्लिम भाई आएगे और रहेगे उनकी पूरी हिफाजत की जायगी और उनको कारोवारकी हर तरहसे सहूलियत दी जायगी। अगर वावजूद[3] मिन्नत[4]-के कोई गैर-मुस्लिम वहा रहने या वापस जानेका खाहिशमद न हो तो उसको अपनी जायदादको वदलने या फरोख्त[5] करनेका पूरा हक है। वलवा-फसाद करनेवालोको हकूमत सख्त सजा दे रही है और आनेवालोकी

---

[1] जनता, [2] इच्छुक; [3] तिसपर भी, [4] प्रार्थना, [5] बेचना।

हिफाजतके लिए हर तरहकी तदबीर एहतियात[१] बरत रही है। शांतिदलने वहांके अवाम और सरकारको उस बातके लिए आमादा और तैयार कर लिया है कि पाकिस्तानकी हुकूमतका यह फर्ज है कि गैर-मुस्लिमकी इज्जत-आबरूकी पूरी जिम्मेवरी ले। चुनाचे सरकार और अवाम दोनों इसके लिए तैयार हैं। युक्तप्रांतीय शांति-मिशनके सदस्य गैर-मुस्लिम भाइयोंसे गुजारिश करते हैं कि जो भाई पश्चिमी पंजाबमें बसना चाहते हैं हम उनके साथ चलकर उनको वहां बसानेके लिए तैयार हैं। हम अपनी जानसे ज्यादा उनकी जिम्मेवरी लेते हैं और उनको पूरा इतमीनान कराके हम वापस आएंगे।"

चार मुस्लिम भाइयोंने इसमें दस्तखत किए हैं। इसे मैं अच्छी खबर मानता हूं अगर यह सही है। ये शरीफ आदमी हैं, तो मैंने कहा कि लिखकर दे दो तो काम करूं, मैं सारी दुनियाको बताऊंगा। और अगर ऐसी बात नहीं होगी तो बुरी बात है। पीछे मैंने कहा कि माडल टाउनमें काफी हिंदू, सिख आए हैं, लाहौरमें भी हिंदुओंकी बड़ी-बड़ी इमारतें हैं, सिखोंकी भी इमारतें हैं, उनका वहां गुरुद्वारा भी है, क्या वहां जा सकते हैं? उन लोगोंने कहा कि जरूर जा सकते हैं। वहां सब अवाम ठीक हो गए हैं, ऐसी बात नहीं है। कुछ जहर तो भरा ही है, वह जल्दी नहीं निकाला जा सकता है। लेकिन हकूमतने तय कर लिया है कि वहां किसीको हलाक नहीं किया जाय।

अगर सचमुच ऐसा होगा तो यह बहुत बड़ी चीज है। मेरी उम्मीद नहीं थी कि इतनी जल्दी काम हो जायगा। कितना सही है, वह मैं नहीं जानता हूं, लेकिन हम कम-से-कम दिलमें समझें तो सही कि ऐसा करनेवाले मुसलमान भी पड़े हैं। ऐसा समझें कि सब मुसलमान बदमाश हैं तो वह इन्सानियत नहीं है। उनमें भी शरीफ पड़े हैं। पीछे उनके साथ एक हिंदू आया। वह भी खत लाया। अब ज्यादा वक्त नहीं है, इसलिए उसे पढ़ूंगा नहीं, लेकिन उसमें भी यही चीज है। वह वहां होटल, विश्रामगृह चलाता है। वहां करीब एक हजार आदमी हमेशा आते हैं। मुसलमान ज्यादा आते होंगे, लेकिन कुछ हिंदू भी आते होंगे। उनके आनेमें कोई रुकावट

---

[१] सावधानी।

नही होती है। उस खतमे उन्होने लिखा है और कहते है कि हिंदू भाइयोको वहा जानेमे कोई रुकावट नही है। इतना मै आजके तजुर्बेसे कहता हू। लेकिन मै यह नही कहता हू कि कल चले जाओ। मै ऐसा भी नही कहनेवाला हू कि न जाओ, जाओ तो अच्छा है।

: १७६ :

१२ दिसवर १९४७

भाइयो और वहनो,

एक भाईने खत लिखा है। उसमे लिखा है कि मैने कल कहा था कि पाकिस्तान जाना शुरु करे। मैने तो कहा था कि मै उस बातकी जाच करूगा, निश्चय हो जायगा तो कहूगा। मै देख लू कि जिन भाइयोने कहा है वह ठीक है या नही। तव कहूगा कि जाओ या नही जाओ। तो वह भाई कहता है कि मै अभी जाना चाहता हू, क्योकि यहा लूटमार चल रही है, आते है तो कोई पूछता नही है, तन ढाकनेको कपडा और खानेको अनाज नही मिलता, हमारे लिए कुछ भी नही होता है। हा, मै जानता हू कि ऐसा है। ऐसा हो गया है कि सवको पूछ नही सकते, सव चीज पहुचनेवाली भी नही है। मेरा खयाल है कि जितनी तजवीज हो सकती है, कर रहे है। लेकिन अगर तजवीज नही है तो भी मै कह नही सकता कि आज जाओ। नही आए थे तो वात दूसरी थी, लेकिन जब आ गए है तव ठीक-ठीक हो जाय तव जाय। मै अभी खुद यह कहनेको तैयार नही हू कि आप अभी जाय। हा, तैयारीमे रहे तो अच्छा है। जितनी जल्दी जाने लायक हो सके उतना अच्छा है।

मैने कल कहा था कि कुरानशरीफकी जो आयत पढी जाती है उसका तर्जुमा सुना दूगा। उसका सार तो वता दिया था। मेरे पास आज तर्जुमा पडा है। उसमे यह है कि मै अल्लाहकी शरण लेता हू, वह भी शैतान पापात्मासे वचनेके लिए। पीछे कहा है कि मै शुरू करता हू ईश्वरके नामसे ही। मै जो कुछ भी करता हू उसीके लिए, क्योकि सव कुछ

बख्शनेवाला[1] वही है। जो रहीम है, रहमान है, दयालु है वह सब वही है। पीछे कहा है कि अल्लाह एक है, वह जन्म नही लेता और जन्म नही देता है। जन्म नही देता है, यह गलत है, गलत तर्जुमा हुआ है। सबको जन्म देनेवाला तो वह ही है। उसकी बराबरीका कोई नही है—वह तो अकेला है। इसीलिए हम कहते है कि वह निरजन है, निराकार है। गुणका भी आगार है—गुणकी थाहको बता नही सकते। ऐसी चीज उसमे है।

आज मेरे पास चार-पाच खत आ चुके है। एक तो काठियावाडसे है। मैने कहा था कि काठियावाडसे मुसलमान भाइयोने लिखा, लेकिन चद मुसलमानोको वह भी चुभा है। क्यो, मै जानता नही हू, क्योकि जिन लोगोने शिकायत की थी वे खुद लिखते है कि कुछ हुआ नही है और जो हुआ भी तो उसे मिटानेके लिए काग्रेसियोने पूरा जोर लगाया, इसलिए हम आरामसे घरमे है।

एक खत ब्रह्म देशसे आया है और दूसरा शायद बबईसे। उनमे किसीके दस्तखत तो है नही, तो जवाब किसको दू? बबईसे लिखते है कि तुम्हे कुछ करना तो है नही। वह कहते है कि आप गोलमाल करते है। मै यहा गोलमाल करता हू या क्या करता हू, वह तो जो सुनते है वे जानते है, और मै जानता हू। जो भाई खतमे नाम नही देते है तो किसको कहू? वह कहते है कि काठियावाडमे हुआ है, तो पीछे उस खतमे अपना नाम-धाम तो देना चाहिए, तब मै तहकीकात करू। तहकीकात करना मेरे हाथमे तो है नही। हकूमतको कहूगा कि तहकीकात करो। यह कैसी बात है कि आप बैठे है और लोग शिकायत करते है।

एक खत अजमेरके बारेमे भी है। वह हिंदुओका खत है। उसमें लिखा है कि जो तुमने कहा वैसा नही हुआ है। हुआ है सही, लेकिन हिंदुओकी तरफसे शुरू नही हुआ, मुसलमानोकी तरफसे शुरू हुआ। ऐसे तो चलता ही आया है। तो मुझको ऐसा लगा कि ऐसे कहनेवाला पक्ष भी है। ईश्वर ही जानता है कि क्या सही है। मेरे पास तो वहासे कोई चीज आई नही है। अखबारमे जो चीज आई उसको पढकर मैने बताया। कुछ दूसरोने भी

---

[1] देनेवाला।

कहा कि यहा क्या हो रहा है। तो मैने कहा कि अगर हम ऐसा करते रहे तो हमारी हकूमतको कायम नही रख सकेगे।

पीछे एक भाई लिखते है कि सोमनाथके मदिरके जीर्णोद्धारके लिए पैसे निकालते है। सरदारने कहा कि उस मदिरका जीर्णोद्धार किया जाय, लेकिन उन्होने कह दिया कि जूनागढकी तिजोरी या यहाकी हकूमतकी तिजोरीसे पैसा नही निकलेगा। मै कहता हू कि यह ठीक है, लेकिन वह कहते है कि क्यो न निकले, मै उनके बारेमे ज्यादा कहना नही चाहता, लेकिन इतना तो कहूगा कि अगर उनके वास्ते पैसे निकले तो सबके लिए निकले। तो यह बडी बात हो जायगी।

कलकत्तेमे जो हुल्लड हो गया उनकी काफी चीजे अखबारोमे आ गई है। उससे ऐसे लगा कि आज हमारे यहा एक वायुमडल पैदा हो गया है कि किसी-न-किसी तरहसे हम हुल्लडसे ले सकते है। यह खतरनाक बात है। मैने तो ऐसा कभी सिखाया नही। ३० वर्षतक अग्रेजोसे लडाई चली, लेकिन यह ठडी ताकतकी लडाई थी। किसीसे मारपीट करनेकी लडाई नही थी—किसीके पाससे जबरन[1] छीननेकी नही थी। बगालमे जो हकूमत है वह हमारी है, उनमे काग्रेसके आदमी है। उनके साथ ऐसा क्या करना था! मानो कि गलती की, मै तो जानता नही हू कि क्या गलती की, लेकिन मानो कि की है, तो जबरदस्ती क्या करनी थी! हम वहशियाना तौरसे क्यो पेश आए? अखबारोमे जब ऐसी चीज आती है और मै उसे पढता हू कि उस तरहसे हुआ तो मै आपके सामने निचोड रखता हू। वहाके हुल्लडमे विद्यार्थीगण भी है। वे अच्छे लिखे-पढे है, तो उनका यह मार्ग तो हो नही सकता है कि असेबलीमे उसके जो सदस्य जाना चाहते है उनको रोके और हर एक जगहसे सब दरवाजे रोक दे, इतना ही नही, भीतर भी चले जाय। लेकिन उन लोगोने ऐसा किया। तो मुझको ऐसा लगता है कि इस तरहसे हम हकूमत चलानेवाले नही है। इस तरहसे मजबूर करना है कि जो हम नही चाहते है, उसको कानून न बनाओ। बगालकी हकूमतने जो कानून बनाया है उसमे यही है कि जो तूफान वगैरा करते

---

[1]जबरदस्ती।

है, उनको रोका जाय। मानो कि यह भद्दा कानून है, तो जब हमारी हकूमत है तब उसका बाकानून इलाज कर सकते है, तूफान नही कर सकते है। तूफान क्या करना था! हम अग्रेजोके विरुद्ध भी ऐसा नही करते थे और जब कोई ऐसा करता था तब मै डाटता था। हम शरीफ-जैसे काम करते थे—मै तो उपवास भी कर लेता था।

आज जो हमारी हकूमत है उसके सामने बहुतसे काम पडे है। इस कामके लिए सब काम रोकना, पीछे सिपाही जाते है, डडा चलाते है तो उसकी शिकायत करना, गोली चलाते है तो उसकी शिकायत करना, अश्रुगैस चलाते है तो उसकी शिकायत करना—दोनो चीजे हो नही सकती। आजादीका यह अर्थ हो नही सकता कि तूफान करे और अगर उनपर डडा चलाया जाय तो शिकायत करे। तो क्या हकूमत ऐसे लोगोको सजा भी न दे? इसलिए उसकी शिकायत करना ठीक नही। हा, बाकानून करो और जितना कर सको करो। लोगोको समझाओ, अखबारोमे लिखो, वहा-की पार्लमेटमे शिकायत करो, वहा न हो तो यहाकी मरकजी[1] हकूमतको कहो। हमारे पास ऐसे सब सामान है। उसे निकम्मा नही कह सकते। तीन महीनोमे उसे क्या कह सकते है? हम तीन महीनेके बालक है, तीन महीनेकी आजादी है। इसलिए हम सपूर्ण हो गए, ऐसा मै नही कह सकता हू। इसलिए जो गोलमाल कर रहे है उनसे नम्रतासे कहूगा कि वे ऐसा न करे।

गोलमाल करनेवालोमे गुडे पडे है, ऐसा नही है, या अनपढ पडे है, ऐसा नही है। उसमे पढे-लिखे है। वे अगर ऐसा करे तो सब काम रुक जायगा। जो काम हम करना चाहते है वह रुक जायगा। लोगोको खुराक पहुचाना है, लोगोको हर तरहकी मदद देनी है यह सब काम रुक जायगा। सब काम रोक देना क्या हमारा पेशा बन गया है? ऐसा होना नही चाहिए। ईश्वरका शुक्र है कि कलकत्तेके जितने आदमी है उन सबने यह काम नही किया, लेकिन अगर सब-के-सब भी करे तो भी यह शराफतकी चीज हो नही सकती। मुझको लगा कि ऐसी चीज रोकी जानी चाहिए तो

---

[1] केंद्रीय।

मैने कह दिया। लोगोको समझना चाहिए कि हकूमत हमारी है। अगर हकूमतसे इमदाद नही मिलती है तो कानूनके मुताबिक लड़ना चाहिए।

: १७७ :

१३ दिसबर १९४७

भाइयो और बहनो,

जब मै हरिजन-निवास जाता था तब वहाकी बातोके बारेमे रोज थोड़ा-थोड़ा आपको बताना चाहता था। पर मै ऐसा कर न सका। आज आपको फिरसे चरखेकी बात सुनाना चाहता हू। वहापर यह सवाद चला था—चरखेका क्या महत्व है ? मै क्यो उसपर इतना जोर देता हू ?

जब मैने पहले-पहल चरखेकी बात शुरू की थी तब मुझे यह पता नही था कि पजाबमें चरखेका काफी प्रचार था। लेकिन जब मै गया, तो वहाकी बहनोने मेरे सामने सूतके ढेर लगा दिए थे। बादमे पता चला कि गुजरात-काठियावाड़मे भी एकाध जगह चरखा चलता था। गायकवाड़की रियासतोंमें बीजापुर नामक एक गाव है। वहा गगा बहन भटकती हुई जा पहुची थी। इन्हे पता था कि मै चरखेके पीछे दीवाना हू। वहा परदेवाली चद राजपूत औरते चरखा चलाती थी। गगा बहनने उन्हे पूनी देकर उनसे सूत खरीदना शुरू किया। उस समय बहुत कम दाम दिए जाते थे। बादमे तो हमने काफी प्रगति कर ली। उस समय हमे इतनी ही कल्पना थी कि खादीके जरिये हम बहनोका पेट भर सकेगे। उनका पेट कहा बड़ा होता है ? दो पैसेकी जगह तीन पैसे मिल गए कि वे खुश हो जाती थी।

बादमे मैने समझ लिया कि चरखेमे तो बड़ी ताकत भरी है। वह ताकत अहिंसाकी ताकत है। एक तरफ तो हिंसाकी, मिलिटरीकी ताकत और दूसरी तरफ बहनोके पवित्र हाथोसे चरखा चलानेसे पैदा

होनेवाली अहिंसाकी जबरदस्त ताकत ! इसीलिए मैंने चरखेको अहिंसा-का प्रतीक कहा है । अगर सब लोग इस चीजको समझते तो चरखेको जला न देते ।

एक समय सारी दुनियामे चरखा चलता था । कपासका जितना कपडा बनता था सब हाथका बनता था । हिंदुस्तानमे ढाकाकी मलमल और शबनम सब जगह प्रसिद्ध हो गई थी । सबकी आखे उनपर लग गई थी । कपासमेसे इतना खूबसूरत कपडा पैदा हो सकता है, इसपर सबको ताज्जुब होता था । उस रोचक इतिहासको मैं छोड देता हूँ । मगर उस वक्त चरखा गुलामीका प्रतीक था । बहनोको मजबूर किया जाता था कि इतना सूत तो देना ही होगा और अपने मालिकोसे वे यह नही कह सकती थी कि इतने कम दामपर हम सूत नही कातेगी । तगीमे पेट भर जाय, इतना दाम भी तो उन्हे नही मिलता था । औरतोको लूटा जाता था । उस करुण इतिहासको भी मैं छोड देता हू । मगर जो चरखा गुलामीका प्रतीक था, वही आजादीका प्रतीक बना, हिंसाके जोरसे नही, बल्कि अहिंसाके जोरसे । अली भाई चरखेकी कुकडीको अहिंसक बम कहा करते थे । अपने हाथोसे सूत कातना, कपडा रुपया बचाना और चरखेमेसे ताकत पैदा करना—यही चरखेका बनाना, रहस्य है ।

१९१७ मे चरखा शुरू हुआ । १९१७ मे मेरा पजाबका दौरा हुआ । आजादी तो हमने ले ली, पर जो आधी और तूफान आज देशमे चल रहा है, उसका क्या ? हमने चरखा चलाया, पर उसे अपनाया नही । बहनोने मुझपर मेहरबानी करके चरखा चलाया । मुझे वह मेहरबानी नही चाहिए । अगर वे समझ लेती कि उसमे क्या ताकत भरी है तो आज जो हालत है वह होनेवाली नही थी । अगर हमे अहिंसक शक्ति बढानी है, तो फिरसे चरखेको अपनाना होगा और उसका पूरा अर्थ समझना होगा । तब तो हम तिरगे झडेका गीत गा सकेगे । आज हमारे तिरगे झडेमे चरखेका चक्र ही रह गया है । उसमे दूसरा अर्थ भी भर दिया गया है । वह अच्छा है । मगर पहले जब तिरगा झडा बना था, तब उसका अर्थ यही था कि हिंदुस्तानकी सब जातिया मिल-जुलकर काम करे और चरखेके द्वारा

अहिंसक शक्तिका सगठन करे । आज भी उस चरखेमे अपार शक्ति भरी है । अग्रेज चले गए है, मगर हमारा लश्करका खर्च बढ गया है, यह शर्मकी बात है । इतने साल अहिंसासे काम लिया, अब हमारी आखे लश्करपर लगी है । क्योकि हम चरखेको भूल गए है, इसीलिए हम आपसमे लडते है । अगर सब भाई-बहन दुबारा चरखेकी सच्ची ताकतको समझकर उसे अपनावे तो बहुत काम बन जाय । जब मै पजाब गया था, तब वहाके सिख और मुसलमान भाइयोने मुझसे कहा था— 'चरखा चलाना तो औरतोका काम है । मर्दोके हाथमे तो तलवार रहती है ।' बादमे कुछ पुरुषोने चरखा चलाया था, मगर उसे अपनाया नही । आज अगर सब भाई-बहन चरखेको जला दे, खादीको फेक दे, तो मुझे उसकी परवा नही । लेकिन अगर उसे रखना है तो समझ-बूझकर रखे । अहिंसा बहादुरीकी पराकाष्ठा, आखिरी सीमा है । अगर हमे यह बहादुरी बताना हो, तो समझ-बूझसे, बुद्धिसे चरखेको अपनाना होगा । ४० करोडकी आबादीमेसे छोटे बच्चोको छोड दीजिए, फिर भी, अगर ५–७ बरससे ऊपरके बच्चे और बडी उमरके सब तदुरुस्त लोग काते, तो हिंदुस्तानमे कपडेकी कमी कभी नही हो सकती और करोडो रुपये बच जाते है । मगर वह सब भूल जाइए । सबसे बडी चीज यह है कि करोडोके एक साथ काम करनेसे जो शक्ति पैदा होती है उसका सामना कोई शस्त्र-बल नही कर सकता । मै यह सिद्ध न कर सकू तो दोष मेरा है, अहिंसाका नही । मेरी तपश्चर्या अधूरी है, अहिंसाकी शक्तिमे कभी कमी नही आ सकती । उस शक्तिका प्रदर्शन चरखे द्वारा हो सकता है, क्योकि चरखा करोडोके हाथोमे रखा जा सकता है और उससे किसीको नुकसान नही हो सकता । करोडो आदमी मिल नही चला सकते, दूसरा कोई धधा नही कर सकते । चरखेमे नीतिशास्त्र भरा है, अर्थशास्त्र भरा है और अहिंसा भरी है ।

३५९

: १७८ :

१४ दिसबर १९४७

भाइयो और वहनो,

मुझे एक खत मिला है। उसमे एक भाई लिखते है कि 'एक मुसलमान भाईको मजबूर होकर पाकिस्तान जाना पडा है। वह अपनी मेहनतकी कमाईका कुछ सोना-चादी मेरे पास छोड गए है। क्या आप वता सकते है कि यह सोना-चादी असली मालिकके पास कैसे भेजा जाय ?' अगर वह लिख भेजे तो मै हकूमतसे कहूगा कि वह मालिकके पास उसकी मिल्कियत भेजनेका इतजाम कर दे। मैने इसका जिक्र इसलिए किया है कि हम जान ले कि हममे अब भी ऐसे शरीफ आदमी पडे है। इस भाईके दिलमे ख्याल भी नही आया कि चलो, दोस्त तो गया, उसका माल हडप कर जाय। उसे अमानतको लौटानेकी फिक्र है। अगर हम सब भले वन जाय तो सब अच्छा ही होनेवाला है।

मैने आपसे वायदा किया था कि हरिजन-निवासमे जब मै जाता था तब वहा जो चर्चा होती थी, उसके बारेमे आपको थोडा-सा बता दूगा। आज मै आपको नई तालीमके बारेमे कुछ कहना चाहता हू। नई तालीमको शुरू हुए आठ साल हुए है। इस सस्थाका उद्देश्य राष्ट्रको नए आधारपर शिक्षा देना है। उसके लिए यह कोई लबा समय नही है। बुनियादी तालीमका आमतौरपर यह अर्थ किया जाता है कि दस्तकारीके जरिये शिक्षा देना। मगर यह कुछ अशतक ही ठीक है। नई तालीमकी जड इसमे गहरी जाती है। उसका आधार है सत्य और अहिंसा। व्यक्तिगत जीवन और सामाजिक जीवन, दोनोमे ये ही उसके आधार है। विद्या वह जो मुक्ति दिलानेवाली हो—'सा विद्या या विमुक्तये'। झूठ और हिसा तो बधनकारक है। उनका शिक्षामे कोई स्थान नही हो सकता। कोई धर्म यह नही सिखाता कि बच्चोको असत्य और हिसाकी शिक्षा दो। सच्ची शिक्षा हर एकको सुलभ होनी चाहिए। वह चद लाख शहरियोके लिए ही नही, मगर करोडो देहातियोके लिए उपयोगी होनी चाहिए। ऐसी शिक्षा कोरी पोथियोसे थोडे मिल सकती है। उसका

फिरकेवाराना मजहबसे भी कोई ताल्लुक नही हो सकता। वह तो धर्मके उन विश्वव्यापी सिद्धातोकी शिक्षा देती है, जिनमेसे सब सप्रदायोके धर्म निकले है। यह शिक्षा तो जीवनकी किताबमेसे मिलती है। उसके लिए कुछ खर्च नही करना पडता और उसे ताकतके जोरसे कोई छीन नही सकता। आप पूछ सकते है कि बुनियादी तालीमका काम करनेवाले भाई क्या ऐसे सत्य और अहिंसामय बन चुके है ? मै निवेदन करूगा कि मै ऐसा नही कह सकता। मै यह थोडे ही बता सकता हू कि किसके दिलमे क्या है। हिंदुस्तानी तालीमी सघके अध्यक्ष डॉ० जाकिरहुसैन है। श्री-आर्यनायकम् और आशादेवी उसके मत्री है। उन्होने यह कभी नही कहा कि वे सत्य और अहिंसामे विश्वास नही रखते। अगर उनका सत्य और अहिंसामे विश्वास न हो तो उनका तालीमी सघसे हट जाना ही मुनासिब होगा। नई तालीमके शिक्षक सत्य और अहिंसाको पूरी तरह माननेवाले हो, तभी वे सफलता पा सकेगे। तब वे कठोर-से-कठोर व्यक्तियोको चुबकके मानिंद खीच सकेगे। उनमे वे सब गुण होने चाहिए, जो स्थित-प्रज्ञके बताए गए है, और जो आप रोज प्रार्थनाके सस्कृत श्लोकोमे सुनते है। तालीमी सघको काग्रेसने जन्म दिया, मगर अभी वह काग्रेस-जैसा कहा बना है ? काग्रेसमेसे मै निकल गया, सरदार भी निकल जाय, जवाहरलाल भी चले जाय, जितने वहा आज काम करते है, वे सब मर जाय, तो भी काग्रेस थोडे ही मरनेवाली है ? वह तो जिंदा ही रहनेवाली है। मगर तालीमी सघके बारेमे आज ऐसा नही कह सकते। उसे ऐसा बनना है। हर सस्थाको ऐसा बनना चाहिए कि व्यक्ति निकल जाय, तो भी उसका काम बद न हो, बल्कि बराबर बढता और फैलता जाय।

: १७९ :

मौनवार, १५ दिसबर १९४७

(लिखित सदेश)

भाइयो और वहनो,

अखवारोमे पढकर मुझे दु ख हुआ कि शरणार्थियोने ६ म्यूनिस्पल स्कूलोके मकानोपर कब्जा कर लिया है और दिल्ली म्यूनिस्पल कमेटीकी पूरी कोशिशोके वावजूद उन्हे खाली नही किया। कमेटी इन मकानोको खाली करवानेके लिए पुलिसकी मदद लेने जा रही है ।

यह रिपोर्ट विश्वासके लायक लगती है । यह किस्सा शर्मनाक अधाधुधीका एक नमूना है। यूनियनकी राजधानीमे ऐसी चीजे हरएकके लिए शर्मका कारण है। मै आशा करता हू कि कब्जा करनेवाले अपनी वेवकूफीके लिए पछताएगे और अपने आप स्कूलोके मकान खाली कर देगे। अगर ऐसा न हुआ तो आशा है, उनके दोस्त उनको समझा सकेगे और सरकारको अपनी धमकीपर अमल नही करना पडेगा। शरणार्थियोके सामने यह आम शिकायत है कि इतना दु ख सहन करनेके वाद भी वे समझदार, गभीर और मेहनती कार्यकर्ता नही वने। हम सव आशा करते है कि आम तौरपर सव शरणार्थी और खास तौरपर यह स्कूलोका कब्जा लेनेवाले भाई प्रायश्चित्त करके इस शिकायतको गलत सावित कर देगे ।

शनिवारको मैने कलकत्तेकी दगा-खोरीका जिक्र किया था। वहा शरारत करनेवाले शरणार्थी नही थे । उसकी भूमिका भी अलग थी। सव नेताओका, चाहे वे किसी भी खयालो या पार्टीके क्यो न हो, यह फर्ज है कि वे हिंदुस्तानकी इज्जतकी दिलोजानसे रक्षा करे। अगर हिंदुस्तानमे अधाधुधी और रिश्वतखोरीका राज चले तो हिंदुस्तानकी इज्जत वच नही सकती। मैने रिश्वतखोरीका यहा जिक्र इसलिए किया है, क्योकि अराजकता और रिश्वतखोरी दोनो एक ही कुटुबके है। कई विश्वासपात्र जरियोसे मुझे पता लगा है कि रिश्वतखोरी वढ रही है। तो क्या हरएक अपना ही खयाल करेगा और हिंदुस्तानकी भलाई कोई नही सोचेगा ?

एक भाई लिखते है "मैने अभी आपकी कलकी प्रार्थनाका भाषण

"लाहौर 'सिविल और मिलिटरी गजट' अखबारमें हालहीमें एक रिपोर्ट छपी थी कि गैर-मुस्लिम व्यापारी और दुकानदार 'जो दंगेके दिनोंमें भाग गए थे, धीरे-धीरे महीनोंका बंद पड़ा अपना कारोबार फिरसे चलानेकी आशासे वापिस आ रहे हैं। मगर उनकी दुकानें वगैरा वापिस करनेसे पहले उनसे ऐसी नामुमकिन शर्तोंपर दस्तखत कराए जाते हैं कि कई निराश होकर वापिस चले गए हैं। फिर बसानेवाला कमिश्नर इन शर्तोंपर दुकानें खोल देता है

---

[1] घटनाएं।

१—बिक्रीका पूरा हिसाब रखा जाय ।

२—बिना इजाजत मालिक कुछ भी माल या रुपया दूसरी जगह न ले जाय ।

३—अपनी दुकानका चालू धधा रखनेका वचन दे ।

४—बिक्रीसे जितनी कमाई हो रोज-की-रोज बैंकमे जमा की जाय, बिना इजाजत उसमेसे कुछ भी निकाला न जाय ।

५—दुकानदार कायमी तौरपर लाहौरमे ही रहेगे ।

मुसलमानोपर ऐसी कोई शर्त नही है तो हिंदुओपर क्यो ? हिंदू कहते है कि इन शर्तोका वे पालन न कर सकेगे । सो निराश होकर वापिस जाते है ।"

तो निराशाकी बात तो मैं पहले ही कर चुका हू । यह खबर सही हो तो भी जरूरी नही कि उन मुसलमान भाइयोने मुझे जो कहा वह सर्वथा रद्द हो जाता है । उन्हे न सिर्फ अपना नाम रखना है, मगर यूनियनमे, जिनके वे नुमायदे है, उनका और पाकिस्तानका, जिन्होने उन्हे वह सब आश्वासन दिया उनका नाम भी उन्हे रखना है । मै यह भी कह दू कि वे भाई मुझे मिलते रहते है । आज भी आए थे । मगर मेरा मौन था और मै अपनी प्रार्थनाका भाषण लिख रहा था, इसलिए उनसे मिल न सका । उन्होने मुझे सदेशा भेजा है कि वे निकम्मे नही बैठे है । इस मिशन-का काम कर रहे है । पत्र लिखनेवाले भाईको मेरी सलाह है कि जरूरतसे ज्यादा शक न करे और बहुत ज्यादा नाजुक बदन न बने । विश्वास रखनेसे वे कुछ खोनेवाले नही है । अविश्वास आदमीको खा जाता है । वे सभलकर चले । मेरी तरफसे तो इतना ही है कि मैने जो किया है उसका मुझे अफसोस नही । मैने तो सारी जिदगी खुली आखोसे विश्वास किया है । मै इन मुसलमान भाइयोका भी विश्वास करूगा जबतक कि यह साबित नही हो जाता कि वे झूठे है । विश्वासमेसे विश्वास निकलता है । उससे दगाबाजी-का सामना करनेकी ताकत मिलती है । अगर दोनो तरफ लोगोको अपने घरोको वापिस जाना है तो उसका रास्ता यही है जो मैने अख्तयार किया है और जिसपर मै चल रहा हू । पत्र लिखनेवाले भाईकी शका कि यह निमत्रण हिदुओ और सिखोमे फूट डलवानेकी चाल है, ठीक नही ।

मैंने मुसलमान भाइयोंसे कहा भी था कि उनकी बातका ऐसा खतरनाक अर्थ भी निकल सकता है। उन्होंने जोरोंसे इन्कार किया कि ऐसा कुछ मतलब उसमें है ही नहीं। वापिस जानेवालोंके लिए रास्ता साफ करनेमें मैं कोई बुराई नहीं देखता। इस बातसे इन्कार नहीं हो सकता कि पाकिस्तानमें सिखोंके सामने जहर ज्यादा है, मगर इसमें भी शक नहीं कि हिंदुओं और सिखोंको साथ तैरना है या डूबना है। उनके मनमें कोई बुरे इरादे नहीं होने चाहिए। साजिशबाजोंके[1] बीच ईमानदारीका भाई-चारा नहीं हो सकता।

पूर्वी पाकिस्तानसे एक भाई लिखते हैं "हिंदुस्तानके दो टुकडे हो जानेके बाद भी आप अपने आपको एक हिंदुस्तानका बाशिंदा कैसे कहते हैं ? आज तो जो एक हिस्सेका है, वह दूसरेका हो नहीं सकता।" कानूनके पंडित कुछ भी कहें, वे मनुष्योंके मनपर राज नहीं कर सकते। इस मित्रको भी यह कहनेसे कौन रोक सकता था कि वह सारी दुनियाका बाशिंदा है। कानूनकी दृष्टिमें ऐसा नहीं है और हरएक मुल्कके कानूनके मुताबिक कई मुल्कोंमें उसे कोई घुसने भी नहीं देगा। जो आदमी मशीन नहीं बन गया, जैसे कि हममेंसे कई लोग नहीं बने, उन्हें कानूनन हमारी क्या हस्ती है उसकी फिक्र क्या ? जबतक नैतिक दृष्टिसे हम सही रास्तेपर हैं हमें फिक्र करनेकी जरूरत नहीं। हम सबको जिस चीजसे बचना है वह तो यह है कि हम किसी मुल्कके प्रति या किसी मुल्कके लोगोंके प्रति वैर-भाव न रखें। मिसालके तौरपर मुसलमानोंके प्रति या पाकिस्तानके प्रति वैर-भाव रखकर कोई भी पाकिस्तानका और यूनियनका बाशिंदा होनेका दावा नहीं कर सकता। अगर ऐसा वैर-भाव आम तौरपर फैल जाय तो दोनोंमें लडाई ही होनेवाली है। हरएक मुल्क ऐसे बाशिंदोंको, जो मुल्ककी तरफ दुश्मनी रखता है और दुश्मन-मुल्ककी मदद करता है, दगाबाज और बेवफा करार देगा। वफादारीके हिस्से या टुकडे नहीं किए जा सकते।

---

[1] षड्यन्त्रकारियों।

: १८० :

१६ दिमवर १९४७

भाइयो और वहनो,

ऐसा कहा जाता है और कुछ अशमे ठीक भी है कि जो खाने और पहननेकी वस्तुओपर अकुश रखा है वह कुछ तो चला गया है और कुछ और चला जायगा। लेकिन जा रहा है इसमे तो कुछ शक नही है और उसका परिणाम भी मेरे सामने है, जो वृजकिशनजीने रख दिया है। मैने सोचा कि अच्छा है वह भी मै आपको वता दूगा। अभी गुडका भाव एक रुपये सेर था और अव अकुश हटनेके वाद वही गुड आधे रुपयेमे मिलता है। यह तो एक वडी वात हुई। इससे भी कम दाम होना चाहिए। मुझको तो पता नही कि वह क्यो कम नही होना चाहिए। मै जव जवान था तव तो गुडका इतना दाम क्या होनेवाला था! एक सेर गुड ले लिया तो वस उसका एक आना दे दिया और शायद उससे भी कम। इसलिए आशा तो ऐसी ही है कि वह कम होता जायगा। हा, मुफ्त तो वह मिलेगा नही, लेकिन हमे जो पुराने ढग थे, उनपर पहुचना चाहिए, अगर पहुच सकते है तो। शक्करका भाव भी जो ३२ रुपए मन था वह २० रुपए हो गया। वडा अच्छा लगता है कि इतना भाव उतर गया। मूग, उडद और अरहरकी दाल है वह एक रुपयेकी डेढ सेर हो गई है। कितना वडा फर्क हो गया? इसी तरहसे चनेका हाल है। मेरी नजरमे तो चना भी एक प्रकारकी दाल ही है। लेकिन उसका इस प्रदेशमे वहुत उपयोग होता है, इसलिए उसे अलग रखा है। वह २४ रुपए मन था उसके अव १८ रुपए हो गए है। और गेहू चोर-वाजारमे ३४ रुपए मन था वह अव २४ रुपए हो गया है। इस तरहसे यह सव है। मुझको तो पहले सव डरा रहे थे कि तुम कहते तो हो, लेकिन तुमको पता नही कि वाजार कैसे चलता है और किस तरहसे भाव चढते-गिरते है। तुमको अर्थ-शास्त्रका पता ही नही। वस महात्मा हो, इसलिए कह रहे हो। उसका नतीजा तुम्हे तो उठाना नही पडेगा, लेकिन गरीव लोग मर जायगे। मगर जो परिणाम मै देख रहा हू उससे गरीवोको मरना नही, वल्कि तरना है। इसलिए

मै तो यह कहूगा कि मक्का और बाजरा वगैरापर जो अकुश है उनपरसे भी वह हट जाना चाहिए, क्योकि बाजरा खानेवाले बाजरा ही खाते थे, गेहू उनको हज्म भी नही होता। इसी तरहसे मक्का खानेवाले भी बहुत है। उनको पसद भी वही आएगा। इसलिए अकुश जारी रखनेकी कोई वजह मुझको तो लगती नही है। डा० राजेद्रप्रसादने भी तो यही कहा था कि सब अकुश आहिस्ता-आहिस्ता हटा देगे। कुछ तो हट गए है और दूसरे भी जो है वे भी हट ही जायगे। उसका शुभ परिणाम भी हमारे सामने आ गया है। यही दियासलाईका हाल है। अभी तो उसपर बहुत दाम देना पडता है। चोरबाजारमे तो क्या, खुले बाजारमे, उसको चोरबाजार कहे भी कैसे, लेकिन होता है, और इसलिए लोगोको बहुत दाम देने पडते है। उसपरसे भी अगर अकुश निकल गया तो बडा अच्छा परिणाम हो सकता है, मुझको तो इसमे कुछ शक नही है। दियासलाईपरसे कट्रोलको जाना ही है और उसका दाम भी गिरना ही है। दियासलाईका इतना दाम तो पहले कभी भी नही था। मेरे जमानेमे तो उसकी कुछ गिनती ही नही थी। आज तो एक दियासलाईकी पेटी कोई एक आनेमे देगा, लेकिन तब एक आनेमे १२ पेटी मिलती थी। ऐसा भी एक जमाना था और आज ऐसा जमाना हो गया है! आज तो सब चीजोके दाम बढ गए है। अगर लोगोका दरमाहा बढे तब तो वह अच्छा लगता है, लेकिन चीजके दाम बढते हुए देखकर मुझको कभी अच्छा नही लगनेवाला है। अगर दाम कुछ बढना है तो वह मेहनत करनेवालेके घरमे चला जाए, लेकिन उनके घरमे जाए तब भी इतना दाम नही बढ सकता है। इतना दाम तो तब बढता है जब तिजारत करनेवाले लोग पाजी बन जाए, उनकी नीयत बिगड जाए और वह सब पैसा उनकी जेबोमे जायगा। हम आजादी पाकर तो बैठ गए और हमारे ऊपर इतनी बडी आपत्ति भी आई, लेकिन हम शुद्ध काम करना नही सीखे। हमारे जो ताजिर लोग है वे अगर शुद्ध कौडी कमाए तो मुझको तो जरा भी शक नही है और जिनको शक है उनको भी यह नही है कि अकुश हटा दे तो चीजोंके दाम बढ जायगे। वे कहते है कि दाम बढ जायगे, क्योकि हम लोग पाजी और दगाबाज है। ताजिर शुद्ध कौडीका व्यापार नही करते और जो किसान वगैरा है, या जो पैदा करनेवाले है, वे भी अपना

पेट भरना जानते है और प्रजाकी कोई खबर ही नही लेते। तब मै कैसे यह मानू कि हमारे यहा लोकराज्य है ? मुझको तो यह मानते हुए शर्म आती है। लोकराज्य या पचायत राज्यमे यह कैसे हो सकता है ? उसमें तो हकूमतका यह पूरा-पूरा धर्म हो जाता है कि वह लोगोपर एतबार करे। वह साफ-साफ कह दे कि आप जैसा चाहते है वैसा हम करते है, लेकिन उससे अगर कोई तकलीफ होती है तो हम जिम्मेदार नही होनेवाले है। यह ठीक है कि हमारे यहा सिविल सर्विस पटी है, लेकिन हम लोग जितने यहा पडे है, सब-के-सब अपनेको सिपाही समझे और लोगोकी सेवा करे। अगर हम जिंदा रहते है तो भी लोगोके लिए ऐसा हम लोग सोच ले तो मुझको कोई शक नही है कि दाम नही बढ सकते और आज लोगोमे जो एक किस्मका पाजीपन या दगाबाजी आ गई है वह भी मिट जायगी और हम सरल होकर सीधा-सादा काम करने लगेगे। लेकिन आज तो सब इसी तरहसे होता है और मेरे पास तो जगह-जगहसे तार वगैरा आते है। मैने सुना है कि बबईमे तो इस बारेमे कुछ गोलमाल भी चल रहा है। क्या है, इसका मुझको कुछ पता नही। लेकिन यह सब होना ही नही चाहिए। मगर अबतक जो शुभ काम हो गया है इसके लिए तो लोगोको हर प्रकारसे बधाई ही देनी चाहिए। इससे हकूमतको भी उत्साह मिल जाता है। यह तो एक बात हुई।

दूसरी बात यह है कि मेरे पास काफी शिकायते आ रही है कि अभी यह कहाकी बात है कि सिविल सर्विसपर इतना खर्च कर रहे हो। एकाएक तो हटा भी कैसे सकते है और हटाए तो काम कैसे चल सकता है। उनमेंसे काफी तो चले भी गए और जो जा रहे है उनसे काफी ज्यादा काम ले रहे है। हमारे जो सरदार है उनके मातहत ये लोग है। वे तो उनको धन्यवाद देते है कि उन्होने अच्छा काम किया है। थोडे है तो भी वे कामको पहुच जाते है। इस धन्यवादके लायक है तो वह उनको मिले। उनको दरमाहा भी तो काफी मिल जाता है। लेकिन सच्ची सिविल सर्विस तो हम है। हकूमतको चाहिए कि सच्ची सिविल सर्विस हमको बना दे और जितना एतबार वह सिविल सर्विसपर रखे उतना हमपर रखे। यह हो सकता है कि अगर सिविल सर्विसवाले दगा दे तो वे सजाके योग्य होते है और उनको सजा हो जाती है। इसी तरहसे वह हमको भी सजा दे। किसीको

बुला ले और कहे कि तुम्हे इतना काम करना है। क्या पाजीपन और धोखाबाजी करनेवालेको सजा देनेका कोई कानून नही है? अगर नही भी है तो मै कहूंगा कि वे बना ले। जिस तरहमे वे सिविल सर्विसको जिम्मेदार समझते है उसी तरह सारी प्रजाको जिम्मेदार समझे। सारी प्रजाका ही यह राज्य चलता है।

मुझको यह क्यो कहना पडता है? इसलिए कि अभी जो एक नई बात और हो गई है न, कि कांग्रेसने यह कह दिया कि मन्त्रियोंके नीचे पार्लामेंटरी सेक्रेटरी भी होने चाहिए और वे सिविल सर्विसके लोग नही, बल्कि बाहर कांग्रेसमे या जो लोग कांग्रेससे अच्छा संबंध रखते है, उनमेसे पार्लामेंटरी सेक्रेटरी बनाए जाय। मुफ्त तो कोई बनता नही है, सबको दरमाहा देनेको चाहिए। आज अगर करोडो रुपयेकी हकूमत हमारे हाथमे नही आती तो हम कहासे दरमाहा दे सकते थे और कहासे देते? आज वह अगर हमारे हाथमे आ गई है तो हम डेढ-दो हजार रुपया दे, मकान दे, यह दे, वह दे और पीछे पार्लामेंटरी सेक्रेटरी बना दे, मुझको तो यह सब चुभता है। चाहे वह पार्लामेंटरी सेक्रेटरी प्रधान मन्त्रीका हो, गृह-मन्त्रीका हो या किसीका भी हो। और इसके लिए पार्लामेंट उनको मजबूर करे, पार्लामेंट तो क्या कांग्रेस-पार्टी कहो। कांग्रेस-पार्टीका तो शब्द भी मुझको अच्छा नही लगता है। कांग्रेस तो सब लोगोंकी है। हिंदू, मुसलमान और पारसी वगैरा आपस-आपसमे दगा न करे, ऐसा कुछ करना है तो उसके लिए बडा दरमाहा दे तभी क्या हम लोगोंको काम करना है? ऐसा अगर हम करते रहे तो हिंदुस्तान तो एक बिल्कुल निकम्मा देश बन जायगा। हमारी ताकत क्या कल नही थी और आज हो गई है? इससे ज्यादा अज्ञान मै कोई और नही समझता। हा, पहले कुछ पैदा तो हम कर ले। जितना १४ अगस्तको पैदा होता था, उसमे कितना आगे हमने बढाया, यह हिसाब तो कर ले। पहले हम जो कुछ पैदा करते थे उससे ज्यादा क्या बनाया? क्या हमारे अनाजकी पैदावार बढी, क्या कपडा बढा और क्या हमारा उद्योग कुछ बढा? जब लोग सच्चा उद्योग करनेमे लग जाए, उनकी धन-दौलत बढे और वे कहे कि आप क्या पैसा-पैसा करते हो, ले जाओ हमारे पाससे, तब मै समझूंगा कि हमारा काम बढा है, हिंदुस्तानका नाम आगे बढा है और हमारा दाम भी बढ गया

है। लेकिन आज तो हमारी पैदावार ७० रुपये फी आदमी प्रति वर्ष है। यह तो कुछ भी चीज नही है। जब उसकी आय दुगुनी हो जाय या उससे भी ज्यादा, और देहाती लोग भी यह महसूस करने लगे कि उनकी आमदनी बढती जा रही है, तब आप उनसे ज्यादा पैसे भी माग सकते है। अगर पैदावार तो बढे नही और हम खर्च बढाते ही चले जाय तो हमारा हाल क्या होगा ? मान लीजिए, एक दुकान है, क्योकि हिंदुस्तान भी तो एक बडी दुकान है, उसका मालिक हमेशा आकर देखता है और अपने मत्री या कारकुनसे[1] पूछता है कि आज बिक्री कितनी हुई, साहब ? अगर वह कहता है कि आज एक हजारकी बिक्री हुई और कल पाच-सौकी हुई थी तब तो वह राजी हो जाता है। जब वह पूछता है कि आज खर्च कितना किया और वह बताए कि एक हजारकी आमदनी और डेढ हजारका खर्च, तब तो सेठका मिजाज खराब हो जायगा। उसकी आखे लाल हो जायगी और अपने कारकुनको गालिया भी देगा। खैर, गाली देना तो ठीक नही, लाल आखे करना भी ठीक नही, लेकिन वास्तवमे चीज तो उसकी सच ही है, जब वह कहता है कि हजार रुपयेकी आमद और डेढ हजारका खर्च तो ५०० रुपए मै कहासे लाऊ और कौन मुझको देगा ? आज हमारे हाथमे रुपया पडा है, इसलिए हम नाचते है। लेकिन वह नही रहनेवाला है। इसलिए मुझको वह चुभता है कि हम क्यो इतना पैसा फेक रहे है। बस आज मै इससे आगे और नही जाना चाहता।

: १८१ :

१७ दिसबर १९४७

भाइयो और बहनो,

एक भाई जो होशियारपुरमे रहते है, शायद वहीके है, नाम वगैरा दिया है, वह सब तो मै नही देना चाहता हू। काफी प्रश्न भी

---

[1] कर्मचारी।

न कि उनको मजबूरन अपने घरोमेसे निकलना पडा। इसलिए क्या वे कही भी जमकर कब्जा कर ले ? अगर दुर्भाग्यसे वह मुसलमानका घर हुआ तब तो बस खत्म हुआ। उसपर तो वे अपना एक तरहका हक-सा मानते है, लेकिन इससे हम अपना या हिंदुस्तानका कोई भला नही कर सकते। मेरा तो यह दृढ विश्वास है कि कभी भी वे इस तरहसे अपना भला नही कर सकते। इन्सान क्या चोरी या लूट करनेसे या किसीके मकान जलानेसे कभी अपना भला कर सका है, तब इनका कैसे हो सकता है, इस तरहसे अगर मामला चले और पाकिस्तानमे भी ऐसा बन जाए कि वहा सिवाय मुसलमानोके कोई दूसरा रहता ही नही है। मेरे पास तो रोज ऐसा कुछ-न-कुछ आ जाता है कि वे अगर मीठी जबानसे कुछ कहे तो आपको धोखेमे नही पडना चाहिए। बाकी वहा कोई आरामसे रह नही सकता, अगर वह मुसलमान नही है। लेकिन आखिरमे वहा अगर सब मुसलमान ही रह गए तो फिर वे आपस-आपसमे लडेगे। यह अगर वहा चलता है तो भी अच्छा नही है और यहा चलता है तो भी अच्छा नही है। यहा अगर चलता है तब तो मेरी निगाहमे वह और भी अच्छा नही है, क्योकि हमने कभी कहा ही नही कि हिदुस्तान हिंदुओका ही है या उसमे एक ही कोम रह सकती है और दूसरी नही। जो लोग यहा पैदा हुए और जो अपनेको हिंदुस्तानके रहनेवाले मानते है, उन सबको इस देशमे रहनेका हक है। ऐसा अगर था और आज भी है, तो फिर हमारे पास तो कोई कारण नही रहता। लेकिन पाकिस्तानके लिए तो बहुत वर्षोसे वे ऐसा कहते आए है कि मुसलमानोके लिए तो कोई जगह होनी चाहिए। उसका मतलब यही हुआ कि उसमे दूसरे चाहे रहे या न रहे, लेकिन बादमे जब यह हो गया और १५ अगस्तका दिन आया जो पहले ख्वाबमे भी नही था, लेकिन वह हुआ और कहा कि अभी तो हमे सबको रखना है। यह आवाज निकली तो मुझको बहुत प्रिय लगी। लेकिन जो बात चुभने लायक है वह यह कि जो कुछ कहा जाता है उसपर अमल नही होता। यहा भी हिंदू और सिख अगर वैसा ही करते है तो उसमे मै तो दोनोका ही सहार और नाश देखता हू। उसमे मै कोई और दूसरी चीज नही पाता हू, ऐसा मैने कह दिया है।

अभी एक भाई है, वह कहते है कि मै तो लाहौरमे था। अब तो

वे लाहौरमे नही है, लेकिन यह बात लाहौरकी है। वह कहते है कि मुझको वहासे निकलना पडा, निकलना चाहता था, ऐसी बात नही है। लेकिन निकला और पश्चिमी पजाब छोडकर यहा आ गया। लेकिन जब सुनने कहा कि इस तरहसे वापिस वही जाना है तो वहा फिर वापिस चला गया। लेकिन देखता हू कि मेरी जमीन और मेरे मकानपर तो मेरा कुछ होना ही नही है। मुझको लबी-चौडी बाते सुनाई गई और जो कुछ मेरा था वह मुझको नही मिल सका। ऐसी हालतमे आप कैसे कह सकते है कि वापिस वही जाओ ?

मैने कई बार उनका जवाब दिया है और अब भी जब कोई लिखते है तो कुछ कहना ही चाहिए। मैने तो साफ-साफ यह कहा है कि जब वह मौका आएगा तब जाया जायगा। वहा तो मैने तैयारीकी बात कही थी कि जिसके दिलमे वापिस जानेकी इच्छा हो वह तैयार रहे। पहले तो जिन मुसलमान भाइयोकी तरफसे यह बात आई है उनको वहा जाना है। अभी तो वह सिर्फ बात ही है, लेकिन वह बात-की-बात रहनेवाली चीज नही है। हकूमत-के सामने वे कहते थे। आखिरमे उनको या तो यह कह देना होगा कि हम हार गए और यह हमने गलत कह दिया था कि पाकिस्तान सरकारने कहा है कि हिंदू वहा वापिस आ सकते है। यह भाई लिखते है कि कहना तो एक बात है, लेकिन काम असलमे उल्टा ही होता है, इसलिए वह पूछते है कि उनको वापिस जाना है ? और यह पूछनेका उनको पूरा हक है। लेकिन जब वे इतना लबा-लबा लिखते है तो जो कुछ कह चुका हू वह भी दुहरा देता हू, क्योकि आखिर तो यह एक भलाईकी बात है। साफ-साफ जो बात है वह यह कि इस तरहसे किसीको वापिस जानेकी बात ही नही है। इस तरह तो दूसरे भी बहुतसे लिखते है कि हम भी जानेको तैयार है। मै सबको यही जवाब दे देता हू कि जब जाना होगा तो मै कह दूगा कि फला तारीख-को आप जानेको तैयार रहे। अभीसे मै किसीको कोई बात नही कह सकूगा। ऐसी शीघ्रतासे तो यह ख्याल भी किसीके दिलमे नही आ सकता था, लेकिन जब मुसलमान भाई ही ऐसा कहते है तो मुझको वह अच्छा लगता है। अगर वे इसमे कामयाब हो जाते है तो मै कहूगा कि हमारी फिज़ा[1] जो आज

[1] वातावरण।

बिगड गई है उसको दुरुस्त होनेमे उससे एक बडी मदद मिलनेवाली है। उसके लिए जो कोशिश हो सकती है वह की जायगी। लेकिन ये जो भाई लिखते है या दूसरे भी, उनसे मैं कहूगा कि आपको अभी तो खामोश रहना है, अभी तो कुछ होनेवाला नही है। उसकी तजवीज हो रही है। जब हो जायगी तो उसका मैं ऐलान[१] कर दूगा। किसीके खुफिया तौरसे जानेकी तो बात है नही। मेरी तो ऐसी उम्मीद रहती है कि पाकिस्तान उनके लिए गाडी यहा भेज दे और फिर उसमे पाच हजार आदमी चले जाए। वे वहा शौकसे और हकसे जायगे। इसलिए वे जाएगे कि उनको वे वहा बुलाते है। अगर यह नही होता है तो वह चीज भी नही हो सकती है।

अभी एक तीसरी चीज और है और वह है पूर्वी अफ्रीकाकी। आपको याद रखना चाहिए कि पूर्वी अफ्रीकामे नैरोबी करके जो प्रदेश है वही सबसे अच्छा है। वह ऐसे ही है जैसे यहा शिमला है। यहा जैसे चार-पाच महीने तो मौसम अच्छा होता है और फिर गर्मी पडने लगती है और मैदानमे तो और भी अधिक गर्मी होती है। लोगोको ठडक चाहिए, इसलिए वे शिमला या दार्जिलिंग चले जाते है। हिंदुस्तान तो एक बडा मुल्क है मगर पूर्वी अफ्रीका तो छोटा-सा है। इसके अलावा नैरोबीको बनानेवाले भी सिख थे। सिख लोग कोई ऐसे-वैसे थोडे ही है। बडी काबिल कौम है और बहुत तगडे और काम करनेवाले है। बडी जहमत[२] उठाकर उन्होने वहाकी रेल बनाई थी। मगर खूबीकी बात यह है कि रेल तो बनाई उन्होने और नैरोबीमे वे खुद जा भी नही सकते। जा तो सकते है, मगर मजदूरी करनेके लिए, रहनेके और तिजारत करनेके लिए नही। यह तो नैरोबीमे है, लेकिन आदमी जब बिगडता है तो स्वभावसे ही कुछ ऐसा है कि जब वह एक चीजमे बिगडता है तो पीछे सब चीजोमे ही बिगड जाता है। इसलिए जो भी हिंदुस्तानी वहा रहते है उनके विरुद्ध वे भारतीय प्रवेशविरोधी बिल बनाने जा रहे है, जैसा कि दक्षिण अफ्रीकामे भी बन गया है। हिंदुस्तानियोके जो हक है उनको वे छीन लेनेकी कोशिशमे है। अभी यह बिल बना तो नही है, लेकिन उनकी लेजिस्लेटिव असेबली

---

[१] जाहिर, [२] सकट।

या कौंसिलमे तो आ गया है। इसलिए जो हिंदुस्तानी भाई वहा रहते है बेचारे उम्मीद तो हमसे रखते ही है। पडित नेहरूको भी उन्होने कुछ लिखकर भेजा है, क्योकि वे हमारे विदेश-मत्री है। बाहर जितनी चीजे होती है वे सब उनके हाथमे रहती है। इसके अलावा वे हमारे प्रधान मत्री भी है। इसलिए उनको उन्होने एक तार दिया और तारकी एक नकल मुझको भी दी है। वे कहते है कि इस बारेमे कुछ तो कहो। मै चूकि अफ्रीकामे रहा हू, इसलिए मुझपर भी उनका हक है। इसलिए मै तो आज कुछ कहे देता हू और पीछे मेरी आवाज वहा पहुच जायगी। हिंदुस्तान आजाद तो हो गया है, लेकिन आजाद हिंदुस्तानके साथ ऐसा ही होगा क्या? मुबासा और पूर्वी अफ्रीका जो है वह ब्रिटिश इलाका है। जो हिंदुस्तानी वहा गए हुए है उनके साथ ब्रिटिश इलाकेमे क्या ये हाल होनेवाले है? उनके साथ यह सब गोलमाल क्यो चलता है? आपको समझना चाहिए कि वहा हमारे काफी ताजिर लोग है, उनमे काफी मुसलमान है और खोजा तथा दूसरे मुसलमान भी वहा है। हिंदू भी वहा काफी पडे है। हर जगहसे वे वहा गए है और पैसे भी काफी वहा कमाए है, कोई लूट या चोरी करके नही, बल्कि वहा जो हब्शी लोग रहते है उनके साथ तिजारत करके। वे अग्रेजोंके जानेमे काफी पहलेके वहा है। यूरोपके अन्य लोग भी तबतक वहा नही गए थे और अगर गए भी होगे तो बहुत कम। हिंदुस्तानियोने वहा बडी-बडी हवेलिया बनाई, क्योकि वे बनाने लायक थे। उस जमानेमे तो जहाज भी हमारे थे, लेकिन जब हम गिर गए तो हमारे जहाज भी सब गए।

पीछे तो वहा अग्रेज भी गए और यूरोपके दूसरे लोग भी। यह तो एक लबा इतिहास है, जिसपर मै नही जाता। हिंदुस्तानी वहाके हब्शी तथा दूसरे लोगोसे मिल-जुलकर रहे और उनके साथ तिजारत की। उन्होने शुद्ध कौडी ही कमाई हो, ऐसा दावा मै नही कर सकता। लेकिन इतना तो सही है कि उन्होने जबरदस्ती किसीसे कुछ नही लिया। मुसलमान भी वहा गए और ऐसा कुछ नही था कि जो मुसलमान थे उनको तो कुछ ज्यादा मिला हो और हिंदुओको कम। उसमे ऐसा भेद भी कोई देखता नही है। इसलिए वे सब मिलकर लिखते है कि हम किसके पास [illegible]

न-किसी तरह रोके, नही तो हमारा वडा नुक्सान होता है। मै तो कहूगा कि वह विल रुक जाना चाहिए।

हिंदुस्तान आज एक आजाद मुल्क है। मुझको पता है कि जवाहरलालजी तो इस वारेमे जो कुछ हो सकता है वह करनेवाले है।

: १८२ :

१८ दिसवर १९४७

भाइयो और वहनो,

एक भाईका एक खत आया है जिसमे यह लिखा है कि जव आपको उर्दू जवानपर एतराज नही है तो अग्रेजीपर क्यो है? जव हिंदुस्तान सारी दुनियाका मित्र है, जैसा कि आप कह चुके है तो फिर जैसे मुसलमान है, वैसे अग्रेज है।

इस भाईको जो दु ख हुआ है वह केवल अज्ञानताका कारण है। इससे ज्यादा अज्ञानका कारण कोई और हो सकता है मै तो नही समझता। उर्दूपर मुझको एतराज नही होता, मै तो उसका समर्थन कर रहा हू। प्रातीय भाषाकी हैसियतसे तो उर्दू है, पजावी है, मराठी, गुजराती, वगला और उडिया वगैरा सव है। जितने भाषावार प्रात है उनकी उतनी ही भाषाए है। यो तो हिंदुस्तानमे वहुत अधिक भाषाए पडी है, लेकिन सव विद्वानोने मिलकर जो फैसला किया है उसके मुताविक तो १४ या १५ भाषाए है जो काफी भव्य है, जिनके अपने-अपने साहित्य है और जिनसे हम कुछ-न-कुछ सीखते ही है। लेकिन १५ या १४ भाषाए सव प्रातोमे तो नही चल सकती। सव प्रातोमे एक दूसरेके साथ व्यवहार करनेके लिए कौन-सी एक भाषा होनी चाहिए, यह सवाल है। जवसे मै दक्षिण अफ्रीकासे वापस आया हू तभीसे मै वरावर यह कहता आया हू कि हमारी राष्ट्रभाषा वही हो सकती है कि जिसको हिंदू और मुसलमान ज्यादा-से-ज्यादा तादादमे वोलते और लिखते है। तव तो वह देवनागरी लिपि या उर्दू लिपिमे लिखी हुई हिंदुस्तानी ही हो सकती है। मैने तो कहा है कि मै उर्दूका समर्थन करता

हू, लेकिन सारी दुनियाका मित्र होते हुए भी मै अग्रेजीका समर्थन क्यो नही करता, यह समझने लायक बात है। अग्रेजी भाषाका यहा स्थान नही है। अग्रेजोने यहा राज चलाया और पीछे जो राज चलाता है वह अपनी भाषा भी चलाता है। वह परदेशी भाषा है, स्वदेशी भाषा नही है। इसलिए मुझको यह कहते हुए दु ख नही, बल्कि फख्र[1] होता है कि उर्दू हिंदुस्तानकी भाषा है और वह हिंदुस्तानमे ही बनी है। तुलसीदासके तो हम सब भक्त है और होना ही चाहिए, लेकिन उनकी रामायणमे आपको यह देखकर ताज्जुब होगा कि कितने ही अरबी और फारसीके शब्द ले लिए है। जो शब्द बाजारमे लोग बोलते थे वही उन्होने ले लिए। आखिर उन्होने लिखा है वह आपके लिए और मेरे लिए लिखा है। तुलसीदासजीने जो थोडेसे सस्कृत बोलनेवाले है, उनके लिए थोडे ही लिखा है। इसलिए जो तुलसीकी भाषा है वही हमारी भाषा है। अगर आपको फैसला करना है कि कौन-सी हमारी राष्ट्र-भाषा है तो मै यह दावेसे कह सकता हू, पीछे हिंदू मुझको चाहे मारे, काटे, या कुछ भी करे, कि हमारी राष्ट्र-भाषा वही हो सकती है जो देवनागरी और उर्दू दोनो लिपियोमे लिखी जाती है।

लाला लाजपतरायजी तो पजाबके शेर माने जाते थे। वह तो चले गए। मै तो उनका मित्र था और उनके साथ मजाक भी करता था कि हिंदीमे बोलना कब सीखोगे। वह कहते थे, यह नही होनेका। याद रखो वह समाजी थे और यह भी याद रखो कि वे हवन इत्यादि भी करवाते थे। चूकि मै उन्हीके घरमे ठहरता था, इसलिए मै यह सब देखता था। हवन-मे तो सस्कृत ही काममे आती है और अजीब बात थी कि यह सब होते हुए भी वे थोडा-थोडा पढ तो लेते थे देवनागरीमे, लेकिन उनकी मादरी जबान उर्दू ही थी। वे कहते थे कि उर्दूमे तो मुझसे कहो तो घटो बोल लेता हू और बोलते थे, और उर्दूके तो मै आपको क्या बताऊ, वे बडे भारी विद्वान थे और बहुत शीघ्रतासे लिख सकते थे। अग्रेजीमे भी वे घटो बोल सकते थे, लेकिन सस्कृतमय हिंदी तो उनकी समझमे भी नही आती थी। जब मै चुन-चुनकर अरबी-फारसीके शब्द लाता तब वे मेरी बात समझ सकते

---

[1] अभिमान।

थे। जब उनकी बात मैंने कर ली तो सबकी कर ली। तब वे भाई क्यो कहते है कि उर्दूपर एतराज क्यो नही है ? मै तो कहूगा कि किसीको भी नही होना चाहिए। लेकिन अंग्रेजीके लिए एतराज है। आखिर हिंदी साहित्य सम्मेलन-का भी मै दो दफा सभापति रह चुका हू और सभापतिके पदमे मैंने यही चीज कही और किसीने शिकायत नही की। की होगी तो शायद १-२ ने की होगी। सब लोगोने तालिया ही बजाई और कहा कि मै बिल्कुल ठीक बात कहता हू। आज भी मै वही आदमी हू। तब क्यो आप मुझको ऐसा सुनाएगे कि मै हिंदीका पक्ष कम लेता हू और इसलिए कम हिंदुस्तानी हू। मुझको तो ऐसा लगता है कि जो आदमी उर्दूपर एतराज करता है, वही कम हिंदुस्तानी है।

हम आज अनेक झंझटोमे पडे है और इस तरहसे आपस-आपसमे विष पैदा हो गया है। अजमेरमे भी तो यही हुआ है। अगर आप हिंदू-धर्म-की रक्षा करना चाहते है तो यहा जितने मुसलमान पडे है उनकी दुश्मनी करके नही कर सकते। मै तो आजकलका ही मेहमान हू। कुछ दिनोमे यहासे चला जाऊगा। पीछे आप याद किया करोगे कि बूढा जो कहता था वह सही बात है। मै कोई अकेले हिंदू-धर्मकी ही बात नही करता। इस्लाम-धर्म भी मर जायगा अगर उन्होने कहा कि हम तो सिर्फ मुसलमानोको ही पहचानते है, बाकी तो हमारे दुश्मन है। इस तरह तो वे इस्लामको दफना देगे, इस बारेमे मुझे कोई शक नही है। ईसाई-धर्मके लिए भी मै यही कहूगा। अगर वे कहे कि जो ईसाको नही मानते वे सब दुश्मन है और अहले[1]किताब नही है, तो मै कहूगा कि वे गलती करते है। दुनियाके जितने धर्म है उनके माननेवाले सब अहले किताब है। अगर वे कहे कि जो बाइबिलको माने वह अहलेकिताब है या जो कुरान शरीफको मानते है वही अहले किताब है, तो मै कहूगा कि वे गलत रास्तेपर है। दुनियाके जितने धर्म है वे सब अच्छे है, क्योकि वे भलाई सिखाते है। जो दुश्मनी सिखाते है उनको मै धर्म नही मानता।

अंग्रेजोके जमानेमे भी वही बात मै कहता था कि यहा अंग्रेजी हो

---

[1]आस्मानी किताबो वाले।

नही सकती। मेरे दिलमे अग्रेजीकी कद्र है और मै अग्रेजी पढ-लिख भी लेता हू। सब मानते भी है कि मै न अग्रेजोका दुश्मन हू, न उनकी भापाका। लेकिन सब चीजे अपनी-अपनी जगहपर है। अग्रेजी दुनियाकी भाषा है। अगर दुनियाके साथ व्यवहार करना है तो अग्रेजीसे ही हो सकता है। अग्रेजी वहुत व्यापक वन गई है, लेकिन हिंदुस्तानी व्यापक नही है। हम अग्रेजी राज्यसे तो वरी हो गए, लेकिन अग्रेजी भापा और अग्रेजी सभ्यताका जो प्रभाव हमपर पडा है, उस असरसे हम अभी नही निकले है, यह कितने दु खकी वात है!

याद रखो, मैने कहा है कि हिंदुस्तानी वह चीज है जो उर्दू और हिंदीके सगमसे वनी है, जैसा गगा और जमनाका सगम प्रयागमे होता है। उस सगममे तो सरस्वती भी वताई जाती है, लेकिन उसको तो न देखते है, न जानते है। दोनोका व्याकरण तो एक होना ही चाहिए और वह हिंदुस्तानी है। उसमे सस्कृत, फारसी, अग्रेजी वगैरा सव भापाओके शब्द भरे पडे है। अग्रेजीका शब्द जैसे कोर्ट है, तो उसको कोर्ट ही कहेगे। अगर कचहरी कहो तो वह भी वाहरका ही शब्द है, हमारा तो नही है। इसी तरह वाइसिकल है और रेल है। रेलको और क्या कहेगे? अग्रेजी शब्द हमारी भाषामे काफी दाखिल हो गए है और उनसे हमे घृणा नही है। लेकिन अगर ये भाई मुझको अग्रेजीमे खत लिखे तो मै फेक दूगा, क्योकि मै जानता हू कि वे हिंदुस्तानी लिख सकते है। इसी तरहसे अगर मेरा लडका अग्रेजीमे लिखे, क्योकि अग्रेजी तो वह जानता है, तो मै फेक दूगा और नही पढूगा। इसी तरहसे अगर मै अग्रेजीमे कुछ लिखकर भेजू तो उसे फेकनेका अधिकार है। यह तो विल्कुल ही सरल चीज है, लेकिन हम तो आज अपना धर्म-कर्म सव भूल गए और हमारे अदर एक प्रकारकी विकृति पैदा हो गई है। ईश्वर उस वलासे हमे वचा ले।

: १८३ :

१६ दिसबर १६४७

भाइयो और बहनो,

आज दुपहरको मेवो[1]को देखनेके लिए गुडगावा चला गया था। वहा तीन तरहके मेव थे एक तो अलवरसे भागकर आए हुए, दूसरे भरतपुरसे और तीसरे वहीके। पूर्वी पजावके प्रधान मत्री डा० गोपीचद भार्गव भी साथ थे। उन्होने मेवोसे कहा कि जो रहना चाहते है, उनको कोई हटा नही सकता। हकूमत उनकी हिफाजत करेगी। लाखो आदमियो-को अपने मकान छोडकर वहासे भागना पडा, वह एक वहशियाना वात थी। यहासे जिनको भागना पडा वह भी वहशियाना वात थी। पीछे किसने ज्यादा किया, किसने कम किया और किसने शुरू किया, उसको छोड देना चाहिए, क्योकि ऐसे हिसावमे अगर हम पडे तो दुश्मनी मिट नही सकती और कोई आरामसे नही वैठ सकता। हमारे नसीवमे एक-दूसरेकी दुश्मनी रहे, वह नही रहनी चाहिए। वह अगर रही तो हमारा खात्मा हो जायगा। मैने तो कहा है न कि मै तो इसे वर्दाश्त कर नही सकता। हा, जिनको जाना है या जो विदक गए है, उनको कोई रोकनेवाला नही है। लेकिन किसीको मजवूरीसे न जाना पडे। जो भी हो, वह आदमीकी इच्छासे हो। उनको भागना पडे, इस तरह उन्हे कोई मजबूर न करे, न हकूमत करे, न हकूमतके अफसर करे और न जनता करे। अगर कोई करता है तो वह पागलपन है। वहा वहने भी सव थी और पुरुप भी। सव परेशानीमे पडे है। कई तो ऐसे है कि तवू है, नही है और ये जाडेके दिन! यह सब एक वहुत ही दु खद किस्सा है। इनको वापिस जाना चाहिए। अगर अलवर रियासत यह कहे कि गलती तो हो गई, लेकिन अब आप आइए। इसी तरहसे भरतपुर है। और पीछे यहा भी जिन्होने गुनाह किया है और उनको हलाक किया है, उनको उन्हे निभा लेना चाहिए। ऐसा कहनेसे तो काम नही चलता कि मेव तो गुनाह करनेवाली कौम है। गुनाह

---

[1] एक जाति।

करनेवाला कौन है और कौन नहीं, इसको कौन जानता है? जो लोग गुनाह करते भी हैं उनको क्या आप हिंदुस्तानसे जला-वतन[1] करेंगे? यहांसे निकाल देंगे या मार डालेंगे? तुम यहांसे चले जाओ, यह कहनेसे तो काम हो नहीं सकता। उनको तो सुधारना चाहिए और सच्ची तालीम देनी चाहिए। जो शराफतका रास्ता है वह उनको बताना चाहिए। एक तो यह बात हुई।

दूसरी बात चीनीकी है। चीनी हर जगहपर तो होती नहीं और शक्कर भी हर जगह नहीं होती। जहां होती है, उस जगहसे उसको लाना है। माना कि यहां नहीं है, तो यू० पी०से उसको लाना है। या कोयम्बटूरसे आ सकती है। लेकिन आए कैसे? वह तो रेलसे ही आ सकती है। लेकिन गाड़ियां तो आज हैं ही नहीं। डा० जान मथाईके हाथमें वह महकमा[2] है। वह कहते हैं कि मैं कहांसे दूं। जितने वैगन[3] हैं रेलवेके वे सब-के-सब तो निकाल दिए हैं। जितनी जल्दी वे काम आ सकते हैं, आ रहे हैं। इसके अलावा कोयला कम, लोहा कम और चलानेवाले कम, ये सब झंझट हैं। रेलवे स्टाफ जितना चाहिए उतना नहीं है। पीछे दूसरे-तीसरे कामसे भी उनको लेना पड़ता है। वह तकलीफ तो जब रफा होगी तब हो जायगी। लेकिन बीच-बीचमें हम क्या करें? वह जो चीनी और शक्कर बनानेवाले हैं वे बदमाश हैं और वे दाम बढ़ा देते हैं। आखिर हजारों और सैकड़ों मीलसे माल कोई सिरपर तो ला नहीं सकता। आज तो रेल और हवाई जहाज देखकर लोगोंको ऐसा हो गया है कि उनके हाथ-पैर चलते ही नहीं हैं। तब क्या करना चाहिए? एक तो मथाई साहबको लिख देना चाहिए। यह सही है कि हमको रेलवे वैगन नहीं मिलते या ऐसा कहो कि रेल ट्रांसपोर्ट[4] नहीं मिलता। मगर हिंदुस्तानमें ऐसा भी तो बन गया है कि एक तरफ रेलवे चलती है तो साथ-साथ दूसरी ओर मोटर भी चलती है। जितनी तेज रफ्तारसे रेल जाती है उतनीसे ही मोटर जाती है। रेलके लिए तो लोहेकी पटरी भी होनी चाहिए, लेकिन मोटरके लिए तो कुछ भी नहीं। साफ रास्ता हो तो अच्छा है, लेकिन रास्ता जैसा-तैसा हो तो भी जीप तो

---

[1] देश निकाला, [2] विभाग, [3] डिब्बे, [4] यातायात।

चली जाती है। काफी तादादमे ये मोटरे हिंदुस्तानमे चलती है। लेकिन उनके लिए पेट्रोल चाहिए और उसपर अभीतक अकुश है। मैने वताया कि अभी सव अकुश तो छूटे नही है। अगर पेट्रोलपरसे अकुश हटा ले तो सव लारिया चलने लगे और माल लाए—और ले जाने लगे। उनमे तो पीछे नमक भी आ सकता है। यह कैसी भयानक वात है कि आज हमारे मुल्कमे नमक वन सकता है, उसपरसे कर भी चला गया है, तो भी वह महगा है, क्योकि वह पूरा आता ही नही है। मेरी निगाहमे तो कुछ लोगोको नमक वनाने और लानेका जो ठेका दिया गया है वह एक वडी गलती हुई है। सवको नमक लानेकी छूट होनी चाहिए। अगर पेट्रोलपरसे अकुश निकल जाए तो ये मोटर-लारिया नमक भी ला सकती है और दूसरी चीजे भी। एक चीजपरसे अकुश हटा लिया और दूसरीपर रखा तो वह ठीक नही वैठता। जव एक नीति हमने ग्रहण कर ली कि अकुश निकालना है तो पीछे सवको ही निकाल देना है और देखना है कि लोग क्या करते है। ऐसा आप नही कह सकते कि वाजारमे पेट्रोल नही है। पेट्रोलका तो चोर-वाजार चलता है और जवतक उसपर अकुश चलेगा तवतक यह चोर-वाजार चलता रहेगा। चोर-वाजार तो अधेरेमे चलना चाहिए, लेकिन वह तो साफ-साफ जाहिरमे चलता है। तव उसे ब्लैक मार्केट कहे या सफेद मार्केट कहे या उसको और कोई नाम दे ? पीछे क्या होता है, सुना है उसके पीछे रिश्वत भी वहुत वढ गई है। जो पेट्रोलका अफसर है, थोडा पैसा उसके हाथमे रखना ही चाहिए। थोडा पैसा कोई रुपया, दो रुपया नही, वल्कि सैकडोकी वात चलती है। जव एक चीज वुरी हो जाती है तो और भी वुराइया उसके साथ चलती रहती है। जिन चीजोपरसे अकुश निकल गया उससे लोग तो मानते है कि उनको राहत मिली है। फिर पेट्रोल तो कोई खानेकी चीज भी नही है और न हरएक आदमीके दरकारकी चीज है। जो लोग मोटर ट्रासपोर्ट चलाते है उनको पेट्रोल चाहिए। हकूमतको जितना पेट्रोल चाहिए उतना वह अपने लिए रख ले और वाकीको खुले वाजारमे रख दे। अगर माना कि वाजारमे वह विल्कुल मिलता ही नही और रेले भी सव-की-सव मिट गई तो भी हिंदुस्तानका कारोवार पेट्रोलके विना वद नही होनेवाला है। सिर्फ इधर-उधर माल ले जानेका तरीका, जो आज है वह वदल जायँगा।

तब हम पुराने जमानेके तरीकेपर चले जायगे। अगर पेट्रोलका जो अकुश है वह निकल जाय तो मुझको उनमे कुछ डर नही है।

एक बात यह भी है कि हमारे यहा पूरी खुराक तो पैदा नही होती है। तब लोगोको कहो कि वे जमीनको बो ले, उसमेसे पैदा हो जायगी। बात तो सच्ची है, लेकिन उसके लिए बाहरसे जो बनी बनाई खाद आती है, जिसको कि रसायन खाद बोलते है, उसमे हम चद करोड रुपये मुफ्तके दे देते है या ऐसा कहो कि जमीनको बिगाडनेके लिए वह पैसे देते है। यह मेरा कहना नही है, मै तो वह जानता ही नही, लेकिन जो इसका ज्ञान रखते है वे ऐसा कहते है। मीराबेनने ही यह सब किया है और उसने ही इस चीजके जानकार लोगोको इकट्ठा किया। उसको शौक है और वह सचमुच किसान बन गई है।

और भी बडे-बडे आदमी इस काममे उसके साथ थे। राजेंद्र बाबू तो है ही, सर दातारसिह है और भी दूसरे अच्छे-अच्छे खेतीका थोडा-बहुत जाननेवाले है, वे आ गए थे। वे मिले और जो किया वह अखबारोमे भी आ गया है। उन्होने यह निकाला है कि खाद किस तरह बना सकते है। उसको जिदा खाद कहते है। हमारे यहा गोबर तो काफी होता है और जहा मनुष्य है वहा उनका विष्टा भी रहता है, उससे खासा अच्छा खाद बन जाता है। उसको मिश्रण करनेके बाद, यह कोई कह नही सकता कि वह कैसे बना है। अगर बननेके बाद उसको हाथमे ले लो तो सुगधि निकलती है, दुर्गन्धि नही। इस तरहसे उसका परिवर्तन हो जाता है। जो भी घास-पत्ता और कूडा-कचरा होता है वह सब मिला लिया जाता है और इस तरह वह मुफ्तमे खाद बन जाता है। कचरेमेसे करोडो रुपए कैसे निकल सकते है, यह इल्म लोगोको बतानेके लिए दो-तीन रोजके लिए ये कुछ लोग बैठ गए थे।

: १८४ :

२० दिसवर १९४७

भाइयो और वहनो,

वडे दुखकी वात है कि यहा (दिल्लीमे) फिर थोडेसे पैमानेपर दगा शुरू हो गया है। अगर हम चाहते है कि सव मुसलमानोको यहासे जाना है तो फिर हमको साफ कह देना चाहिए, वह शराफत होगी या हकूमत कहे कि आप लोगोका यहा रहना मुफीद[1] नही है ? हम आपको थोडा-थोडा हलाक करके नही निकालना चाहते, लेकिन सचमुच तो आपको जाना ही है। मुझको तो इसका वडा दुख होता है।

क्या ही अच्छा हो अगर हम सव अच्छे हो जाय, शरीफ वन जाय और वहादुर हो जाय। वह तो एक डरपोकका काम हो जाता है कि जो यह कहे कि मुसलमान मेरे पास नही रह सकता। क्यो नही रह सकता ? अगर वह खराव है तो उसको ठीक करना है—शराफतसे, मारपीटकर नही। इसलिए मुझको तो यह वडा चुभता है कि हम क्यो ऐसे वन गए कि जिससे मुसलमान यहा डरे और हिंदू तथा सिख पाकिस्तानमे डरे। और पीछे वडी-वडी वाते हम करे कि यहा सव लोग आरामसे रह सकते है। कहा आरामसे रह सकते है ? मै तो हमारी हकूमतसे भी कहता हू कि अगर वह सच्ची वनना चाहती है तो ऐसा होना नही चाहिए। अपने सारे अफसरोको साफ-साफ यह कह दे कि हमारे रहते हुए ऐसे नही वन सकता है। आखिर आप ही लोगोके तो हम नुमायदे है, क्योकि सरकारी अफसर भी तो मतदाता होते है। इसलिए अफसरोको क्या, फौजको क्या और पुलिसको क्या, सवको शराफतसे चलना है। अगर हम लोग शराफतसे चलेगे तो हमारी गाडी आगे चल सकती है, नही तो जो लगाम हमारे हाथमे आ गई है उसको हम छोड रहे है, इसका मुझको दुख होता है। लेकिन आज तो मै वह वात नही करना चाहता था। मै तो आपको वह सुनाना चाहता हू जो मैने छोड रखी है।

---

[1] लाभदायक।

चरखा-सघकी जो बैठक हुई थी उसमे ग्राम-उद्योगसघकी बात मैंने अभीतक छोड रखी थी। थोडा-सा इशारा जरूर कर दिया था। चरखा तो ग्राम-उद्योगका मध्य-बिंदु है। अगर सात लाख गावोमे चरखा न चले तो अन्य गृह-उद्योग भी नही चल सकते है। चरखा तो सूरज है और दूसरे जो उद्योग है वे ग्रह है, जो सूरजके इर्द-गिर्द घूमते है। उनको ग्रह भी इसलिए कहा गया कि वे सूरजके इर्द-गिर्द फिरते रहते है। अगर सूरज डूब जाय तो दूसरे ग्रह चल नही सकते, क्योकि वे सब सूरजपर ही आश्रित है, ऐसा दुनियामे बन गया है। लेकिन देहातका सूरज किसको कहे? हिंदुस्तानका सूरज तो वह चक्र है कि जो झडेमे मौजूद है, पीछे चाहे आप उसको सुदर्शन चक्र कहे या अशोक राजाका चक्र कहे। मेरी निगाहमे तो वह चरखेकी निशानी है। अगर वह देहातोमे चलता रहे तो अन्य ग्राम-उद्योग भी रुक नही सकते, लेकिन उसके चलते रहनेपर भी दूसरोको देखना तो है। अगर उनको सभाले ही नही और वे सब इर्द-गिर्द चलना छोड दे तो फिर जो सूरज है, वह भी बेहाल हो जायगा। जितने हमारे खगोल-शास्त्री कहे जाते है उन्होने यह नही देखा है और उन्होने देखा होगा तो मै मूर्ख हू, जानता नही हू। लेकिन मै तो मानता हू कि अगर सब ग्रह डूब जाते है तो सूरजको भी डूबना है। यह मै शास्त्रीय तरीकेसे तो सिद्ध नही कर सकता हू, लेकिन यहा तो मै सिद्ध कर सकता हू कि जो दूसरे इर्द-गिर्दके उद्योग न चले तो चरखा बेचारा अकेला क्या कर सकता है? दिल्लीके इर्द-गिर्द क्या थोडे ग्राम पडे है। अगर वे सब दिल्लीको आश्रय दे और उनको दिल्लीका आश्रय लेना है तो पीछे वह सब बहुत खूबसूरत काम बन जाता है और आपस-आपसकी लडाईका सारा झगडा भी मिट जाता है। आखिर देहातोमेसे सब चीजे हमको चाहिए। आज तो वे चीजे आ नही सकती है। आप अगर न जानते हो तो जानना चाहिए कि दिल्लीमे बहुतसे कारीगर मुसलमान थे। वे चले गए। पानीपतमे देखो, कितने मुसलमान कबल वगैरा बनाते थे। आज तो वह धधा अस्त-व्यस्त हो गया। पीछे अगर हिंदू और सिख वहा गए तो देखा जायगा। लेकिन वे क्यो वहा जाए? वे कोई भूखे थोडे ही मरते है! हिंदूके पास जो पेशा है उसमेसे वह कमा लेता है और मुसलमानके पास जो पेशा है उसमे वह कमा लेता है। अगर तब

मुसलमान अपना काम छोडकर यहासे चले जाते है तो उसमे हिंदुस्तानका नुकसान ही होता है। इस लिहाजसे तो पाकिस्तान और हिंदुस्तान दोनो डूब रहे है। क्या वजह है कि हम काश्मीरमे लडते है ? वहा जो वागी लोग आ गए है वे लडे और फिर हम यहासे उसके लिए लश्कर भेज दे, वह तो एक वहशियाना वात मै समझता हू।

ग्राम-उद्योगकी वात तो एक वडी वुलद वात है। कल मैने आपको वताया था कि मीरा वेन उस कामको कर रही है और उसमे तो हमारी हकूमतके लोगोका भी हाथ है। वह खाद हम सव अपने घरोमे वना सकते है। हम लोग जो मैला करते है वह और गोवर तथा और भी जो कूडा-कचरा जमा हो जाता है, वह सव मिला ले। वह इस खूवीसे मिल जाता है कि पीछे एक खूवसूरत और सुगधित खाद वन जाती है।

इसलिए ग्राम-उद्योग और चरखा-सघका जो काम है वह तभी चल सकता है जव करोडो आदमी उसमे मदद दे। अगर वे न दे तो वह काम विल्कुल चल नही सकता। चार चीजे, जहातक मुझको याद है, अर्थात् चरखा-सघ, हरिजन-सेवक सघ, ग्राम-उद्योग सघ और तालीमी सघ—जो वनी है, वे चारोकी चारो धनिकोके लिए नही, वल्कि गरीवोके लिए है। सव लोगोको इनके काममे हाथ वटाना है। अगर हाथ न वटाए तो वह काम चल नही सकता। अगर हम हिंदुस्तानमे पचायत राज्य या लोगोका राज्य चाहते है, तो सव लोगोको उस काममे मदद देनी है। वह कोई हवामेसे तो आता नही है और न हिमालयसे चलकर आता है। वह तो यहाकी जनताके द्वारा ही हो सकता है। जनता एक तरहकी नीव है, जिसपर हम एक वहुत ऊचा मकान वना सकते है। अगर उसमे सव हाथ दे, तव तो खैर है और अगर न दे तो ठीक है। हम एक-दूसरेसे लड तो रहे ही है और नतीजा भी उसका वही आकर रहेगा जो यादव लोगोका हुआ था। यदुवशी तो कृष्ण भी हुए थे, लेकिन पीछे क्या हुआ कि सव लडने थे और दूसरोको डराते रहते थे। शराव पीना, व्यभिचार करना और आपसमे लडना, उनका काम रह गया था। नतीजा यह हुआ कि वह उस चीजमे जो घासकी थी, खत्म हो गए। यादवस्थल उसको हम कहते है। वह नतीजा या तो हिंदुस्तानको आनेवाला है और अगर नही

आनेवाला है तो केवल इससे कि ये चार चीजे वनी है उनको हम करते रहे। तभी हम सब आरामसे रह सकते है।

: १८५ :

मौनवार, २२ दिसबर १९४७

(लिखित सदेश)

भाइयो और वहनो,

यहासे आठ-दस मीलके फासलेपर महरौलीमे कुतुबुद्दीन वखतियार चिश्तीकी दरगाह है। वह पवित्रतामे अजमेरकी दरगाहसे दूसरे नवरपर मानी जाती है। इन दरगाहोपर न सिर्फ मुसलमान जाते थे, वल्कि हजारो हिंदू और दूसरे गैर-मुस्लिम भी वहा पूजाभावसे जाया करते थे। पिछले सितबरमे यह दरगाह हिदुओके गुस्सेका शिकार वनी। आस-पासमे रहनेवाले मुसलमान अपने ८०० साल पुराने घरोको छोडनेपर मजबूर हुए। इस किस्सेका जिक्र करनेका कारण इतना ही है कि दरगाहके प्रति प्रेम और वफादारी रखने हुए भी, वहा आज कोई मुसलमान नही है। हिंदुओ, सिखो, वहाके सरकारी अफसरो और हमारी सरकारका यह फर्ज है कि जल्दी-से-जल्दी पहलेकी तरह उस दरगाहको खोलकर, यह कलकका टीका धो डाले। यह चीज देहलीमे और देहलीके इर्द-गिर्दके मुसलमानोकी सब धार्मिक जगहोपर लागू होती है। वक्त आ गया है कि दोनो तरफकी सरकार सख्तीके साथ अपनी-अपनी अक्सरियत[1]के सामने यह साफ कर दे कि अब धार्मिक स्थलोका अपमान वर्दाश्त नही किया जायगा, चाहे वह स्थल छोटा हो और चाहे वडा। इन स्थलोका जो नुक्सान किया गया है, उसकी मरम्मत होनी चाहिए।

मुस्लिम लीगकी सभाने कराचीमे जो फैसला किया है उसे देखते हुए मुसलमान मुझे पूछते है कि जो लीगके मेवर है वे, जो सभा लखनऊमे मौलाना आजाद बुला रहे है, उसमे जावे या न जावे ? क्या मुस्लिम लीगके

---

[1] वहुसख्यक।

मेंबरोंकी जो सभा मद्रासमें होनेवाली है, उसमें भी जावें ? हर हालतमें यूनियनमें रहनेवाले मुस्लिम लीगके मेंबरोंका क्या रवैया[1] होना चाहिए ? मेरे दिलमें कोई शक नहीं कि अगर उन्हें व्यक्तिगत या जाहिर निमंत्रण मिले, तो उन्हें लखनऊकी मीटिंगमें जाना चाहिए, और मद्रासकी मीटिंग-में भी। दोनों जगह उन्हें अपने विचार निर्भयतासे और खुली तरह जाहिर करने चाहिए। अगर उन्होंने पिछले ३० सालमें हिंदुस्तानकी अहिंसाकी लड़ाईका अभ्यास किया है तो उन्हें इस बातसे घबराहट नहीं होनी चाहिए कि यूनियनमें वे अकलियतमें[2] हैं, और पाकिस्तानकी अक्सरियत उनकी कोई मदद नहीं कर सकती। यह चीज समझनेके लिए उन्हें अहिंसामें विश्वास रखनेकी जरूरत नहीं कि अकलियतको, चाहे वह कितनी ही छोटी क्यों न हो, अपनी इज्जत और इन्सानको जो भी प्रिय और निकट लगता है, वह सब कुछ, बचानेके लिए डर रखनेका कभी कारण नहीं रहा। इन्सान ऐसा बना है कि अगर वह अपने बनानेवालेको समझ ले और यह समझ ले कि मैं उसी भगवानका प्रतिबिंब हूं तो दुनियाकी कोई ताकत उसके स्वमानको छीन ही नहीं सकती। उसके स्वमानका हनन कोई कर सकता है तो वह खुद ही कर सकता है। जिन दिनों मैं ट्रांसवालकी जबर्दस्त हकूमतके साथ लड़ रहा था, मेरे एक प्रिय अंग्रेज मित्रने मुझे जोहानसबर्गमें कहा, "मैं हमेशा अकलियतका साथ देना पसंद करता हूं, क्योंकि अकलियत आम तौरपर कभी गलती नहीं करती है, और करती है तो उसे सुधारा जा सकता है। मगर अक्सरियतको सत्ताका मद होता है, इसलिए उसे सुधारना कठिन रहता है।" अगर अक्सरियतसे हथियारोंकी एकतरफा ताकतका भी मतलब हो तो इस दोस्तकी बात सही थी। हम अपने कड़वे अनुभवपरसे जानते हैं कि कैसे मुट्ठीभर अंग्रेज यहां हथियारोंकी ताकतसे अक्सरियत बने बैठे थे और सारे हिंदुस्तानको दबाए हुए थे। हिंदुस्तानके पास वे हथियार नहीं थे, और रहते भी तो हिंदुस्तानी उनका इस्तेमाल नहीं जानते थे। यह दुःखकी बात है कि हमारे मुल्कमें अंग्रेजोंकी हकूमतसे हिंदुओं और सिखों-ने पाठ नहीं सीखा। यूनियनके मुसलमानोंको पश्चिममें और पूर्वमें अपनी

---

[1] तरीका; [2] अल्पसंख्यक।

अक्सरियतका झूठा घमड था। आज उस बोझसे मुक्त हो गए है। अगर वे अकलियतमें रहनेके गुणोको समझेगे तो वे अपने तरीकेसे इस्लामकी खूबियोका प्रदर्शन कर सकेगे। उन्हे याद रखना चाहिए कि इस्लामका अच्छे-से-अच्छा जमाना हजरत मुहम्मदके मक्केके दिनोमे था। कान्सटेनटेन-की शहनशाहीके वक्तसे मिस्री धर्मका अस्त होने लगा। इस दलीलको यहा लबा करना नही चाहता। मेरी सलाहका आधार मेरा पक्का अकीदा[1] है, इसलिए अगर मुस्लिम मित्रोके मनमे इस चीजपर विश्वास नही है तो बेहतर होगा कि वे मेरी सलाहको फेक दे।

मेरी रायमे उन्हे काग्रेसमे आनेके लिए तैयार रहना चाहिए। मगर जबतक काग्रेसमे उनको हार्दिक स्वागत न मिले, और समानताका बर्ताव न मिले, तबतक वे काग्रेसमे भर्ती होनेकी अर्जी न करे। सिद्धातके तौरपर तो काग्रेसमे अक्सरियत और अकलियतका सवाल उठता ही नही। काग्रेसका कोई धर्म नही, एकमात्र मानवताका धर्म है। उसमे हरएक स्त्री-पुरुष समान है। काग्रेस एक शुद्ध राजनैतिक सस्था है, जिसमे सिख, हिंदू, मुसलमान, ईसाई, पारसी, यहूदी, सब बराबर है। काग्रेस हमेशा अपने कहनेपर अमल नही कर सकी। इससे कभी मुसलमानोको लगा है कि यह तो मुख्यत सवर्ण हिंदुओकी ही सस्था है। जो भी हो, जहातक खेचतान जारी है मुसलमान बाइज्जत अलग खडे रहे। जब उनकी सेवाओकी काग्रेसको जरूरत होगी वे काग्रेसमे आ जावेगे। उस वक्त-तक जिस तरह मै काग्रेसका हू, वे काग्रेसके रहे। काग्रेसका चार आनेका मेबर न होते हुए भी काग्रेसमे मेरी हैसियत है, तो उसका कारण यह है कि जबसे १९१५ मे मै दक्षिण अफ्रीकासे आया हू, मैने वफादारीमे काग्रेसकी सेवा की है। हरएक मुसलमान आजसे ऐसा कर सकता तो वे देखेगे कि उनकी सेवाओकी भी उतनी ही कदर होती है जितनी कि मेरी सेवाओकी।

आज हरएक मुसलमान लीगवाला और इसलिए काग्रेसका दुश्मन समझा जाता है। बदकिस्मतीसे लीगका शिक्षण ही ऐसा रहा है। आज तो दुश्मनीका तनिक भी कारण रहा नही। कौमीवादके[2] जहरसे मुक्त

---

[1] विश्वास, [2] साप्रदायिकता।

होनेके लिए चार महीनेका अर्सा बहुत छोटा अर्सा है। इस दुःखी देशका दुर्भाग्य देखिए कि हिंदुओ और सिखोने जहरको अमृत समझ लिया और लीगी मुसलमानोके दुश्मन बने। ईंटका जवाब पत्थरसे देकर उन्होंने कलक-का टीका मोल लिया और मुसलमानोके बराबर हो गए। मेरा मुसलमान अकलियतसे अनुरोध है कि वे इस जहरी वातावरणसे ऊपर उठे, अपने आदर्श वर्तावसे उनके बारेमे जो वहम भर गया है, उसे वे गलत सिद्ध करे और बता दे कि यूनियनमे इज्जत-आबरूसे रहनेका एक यही तरीका है कि वे मनमे किसी तरहकी चोरी न रखकर हिंदुस्तानके शहरी बने।

इसमेसे यह परिणाम निकलता है कि लीग राजनैतिक सस्थाके रूपमे नही रह सकती। इसी तरह हिंदू-महासभा, सिख-सभा और पारसी-सभा भी नही रह सकती। धार्मिक सस्थाओके रूपमे वे भले रहे। तब उनका काम अदरूनी सुधार होगा, धर्मकी अच्छी चीजे ढूढना और उनपर अमल करना होगा। तब वातावरणमेसे जहर निकल जाएगा और ये सस्थाए एक दूसरेके साथ भलाई करनेमे मुकाबला करेगी। वे एक दूसरे-के प्रति मित्रभाव रखेगी और हकूमतकी मदद करेगी। उनकी राजनैतिक महात्वाकाक्षाए तो काग्रेसके ही द्वारा पूर्ण हो सकती है, चाहे वे काग्रेसमे हो या न हो। जब काग्रेस, जो काग्रेसमे है उन्हीका विचार करेगी, तो उसका क्षेत्र बहुत सकुचित हो जायगा। काग्रेसमे तो आज भी बहुत कम लोग है। काग्रेसकी आज कोई बराबरी नही कर सकता तो उसका कारण यह है कि वह सारे हिंदुस्तानकी नुमायदगीका प्रयत्न कर रही है। वह गरीब-से गरीब, दलित-से-दलितकी सेवाको अपना ध्येय बनाए हुए है।

: १८६ :

२३ दिसबर १९४७

भाइयो और बहनो,

आज तो मैने विचार कर लिया है कि तीन चीज कहूगा। एक

चीज तो यह है कि कल आपने देखा होगा कि यहा बहावलपुरके लोग आ गए थे। बडे परेशान है। उन लोगोने बताया कि वहा जितने हिंदू और सिख है उन सबको बुला लेना चाहिए, नही तो उनकी जान खतरेमें है। आज वहासे दो भाई भी आ गए थे। उन लोगोने भी यही बात बताई। उन लोगोने कहा कि अगर कुछ नही होता है तो गवर्नर-जनरलके घरके सामने जाकर भूख-हडताल करेगे। तो मैंने कहा कि वहा भूख-हडताल करनेसे न तो आ सकते है और न बच सकते है और गवर्नर-जनरल तो अब नामके रह गए है। दस्तखत कर देते है, उनके पास तो आज सत्ता है नही। वे तो आज जैसे आप है वैसे है। अपने बलसे ऐसा कहो कि हमारे बलसे खडे है। हमारे प्रधान है, हमारे बलपर खडे है। तो सोचोगे कि पडित नेहरू या सरदारके घरके सामने भूख-हडताल करे, यह भी अज्ञानता है। उनमे एक-दो डाक्टर थे। वे समझ गए, इसलिए हडताल नही की। कल तो मेरी खामोशी थी, इसलिए कुछ नहीं कह सका। बहावलपुरके नवाबको चाहिए कि वे सब हिंदू सिखको जहा वे जाना चाहते है, भेज दे, नही तो उनके धर्मका पतन हो जायगा। नवाब साहबके होते हुए क्या हुआ, वह क्या बताऊ ? वह काफी खतरनाक बात है। वहा काफी हिंदू, सिख मारे गए और परेशान भी हुए। सिखोने तो बहावलपुरको बनाया है—वे बहादुर है, वे लड सकते है, किसानका काम कर सकते हैं और वे वहा किसान बनकर रहते है, खाते-कमाते है। वैसे ही हिंदू भी है। आलसी बनकर बैठे है, ऐसे थोडे है। उन्होने कोई गुनाह तो किया नही, गुनाह इतना ही है कि वे हिंदू है या सिख है। बिना गुनाहके काफी हिंदू और सिखोको मार डाला और बाकी भाग गए। जब हिंदू और सिख वहा आरामसे रह नही सकते तो नवाब साहब कुछ भी कहे तो उसमे क्या ! मै तो कहूगा कि नवाब साहब अपने धर्मका पालन करे, इसीमे उनकी शोभा है। अगर वे वहा उन लोगोको इज्जतसे रख नही सकते तो उनको चाहिए कि वे प्रबंध कर उन लोगोको भेज दे, नही तो उन्हे ऐलान कर देना चाहिए कि वहा जितने हिंदू, सिख पडे है उनके बालको भी कोई छूनेवाला नही है। वे आरामसे पडे रह सकते है और अगर भूखो मरते है तो उनकी रोटीका प्रबंध कर दिया जाय।

जो पागलपन हो गया वह हो गया। वैसा पागलपन तो हिंदुस्तान और पाकिस्तान दोनोमे हो गया। उस पागलपनको अब छोड दे और शराफतसे काम करे।

दूसरी वात जो कहना चाहता हू वह आजके 'स्टेट्समैन' मे है। वह यह कि लाहौरमे जो शिविर पडे है—उसमे तो दु खी लोग है, वहा तो मुसलमान पडे है—वे वहुत गदे है, वहा हैजा हो रहा है, सीतला निकल रही है और काफी लोग ऐसे है जिनको कुछ हुआ तो नही है, लेकिन ठडमे पडे रहते है। कुछ लोग ठडके कारण भी मरते है, क्योकि वाहर पडे रहते है। वाहर रहे तो रहे, लेकिन आकाशके नीचे कैसे रह सकते है ? पानीसे वचनेको कुछ रहना चाहिए, तन ढकनेको चाहिए और रोटी भी चाहिए। ये न रहे तो मरनेका चारा हो गया। वाकी मै नही जानता कि वहा क्या-क्या हो रहा है। हा, ऐसा भी है कि वहा स्यालकोटसे भगी वुलाए गए है, जो शिविरोकी सफाईका काम करेगे, मैला उठाएगे। वहाके अफसर कहते है कि वहा उनसे पूरा-पूरा काम होता नही है—मै तो जानता नही हू कि क्या है, लेकिन मै इतना कहूगा कि परेशानीमे पडे है। वे लोग पाकिस्तानमे है तो क्या हुआ, मुसलमान है तो क्या हुआ, इन्सान ऐसे क्यो वने, मुझे इसका दु ख होता है। हमारी ज्यादतीके कारण वे लोग यहासे जान वचाकर भागे, यहासे घर-वार छोडकर चले गए। वहा उनका घरबार तो है नही तो तकलीफ तो होगी ही, लेकिन यह क्या वात है कि वे अपनी सफाईतक न रख सके। मै तो हर दु खीको—वहा पडे है उनको, और यहा पडे है उनको, सवको—कहूगा कि उन्हे ऐसा कहना नही चाहिए कि हमे खाना वनानेवाले दो, झाडू करनेवाले दो, मैला उठानेवाले दो। जब घर छोडकर भाग गए तो ऐसी माग क्यो करनी चाहिए। वे तो करोडपतिके लिए है। वह चाहे तो एक आदमीके वदले दस आदमी रख सकता है, लेकिन सव कैसे रख सकते है ? मै तो कहूगा कि यह हमारे गिरनेके लक्षण है। उनको दृढता-से, हिम्मतसे कहना चाहिए कि हम स्यालकोटसे भगी नही वुलाएगे और अपने शिविरको हमे ही साफ रखना है। पाकिस्तानके अफसर और वहाकी हकूमतको भी कहना चाहिए कि हम आपके लिए स्यालकोटसे झाडू देनेवाले नही वुलाएगे। इन्सानसे जितना हो सकता है उतना तो करे। उसके वाद

सके यह बात हुई है, लेकिन नहीं करते हैं तो सरकार इसका है और इन्सानपर सारा बोझ पड़ जाता है। मैं पहले भी कह चुका हूं और अब भी कहता हूं कि शरणार्थियोंको शान्तिसे रहना चाहिए। उन्हें चाहिए कि उनसे जितना काम हो सकता है, करें, किसीपर बोझ नहीं होना चाहिए। पंजाबका नमूना देकर सबको कहूंगा कि सफाईका काम शुरू करना चाहिए। काम करनेमें कोई शर्म नहीं है।

एक बात और कहूंगा। वह अच्छी बात है। आपको मैंने एक वक्त शायद सुनाया तो था कि प्यारेलाल वहां आ गए हैं। आप लोग तो जानते ही हैं कि वे कौन हैं। वे तो मेरा मंत्रीका काम करते हैं—वे बहुत दिनोंसे नोआखालीमें काम करते थे। उनके साथ और लोग भी थे—वे सब-के-सब जानपर खेल रहे थे, उससे वहां जितने हिंदू रहते थे उन सबको सहारा मिल गया और मुसलमान भी समझ गए कि वे हमारे दोस्त हैं, सेवक हैं, मारने-पीटने नहीं आए हैं, वे तो दोनोंके बीचमें, अगर हो सके तो मेल कराने आए हैं। वे कहते हैं कि वहांकी एक चीज जानने लायक है, ऐसी तो कई चीज हैं, लेकिन यह एक बड़ी चीज है। वहां किसी मंदिरको मुसलमानोंने तोड़ दिया था और उसपर लोगोंने अधिकार कर लिया था। तो यह तो झगड़ेकी बात हो गई। पीछे उन मुसलमानोंने कहा कि हम हिंदुओंके साथ मिल-जुलकर रहनेवाले हैं, लेकिन जब हिंदू मंदिरको नहीं जा सकते, पूजा नहीं कर सकते तो यह जंचनेवाली बात नहीं हुई। यह सब तो दुबारा सुनाऊंगा, क्योंकि अब वक्त हो रहा है। पीछे मुसलमानोंने कहा कि वे अपने मंदिरोंमें जा सकते हैं, पूजा कर सकते हैं, हम भी जाकर उनके साथ पूजा करेंगे तो प्यारेलालने कहा कि क्या करोगे, मंदिर तो है नहीं, मंदिर तो होना चाहिए, तो उन लोगोंने कबूल कर लिया कि ठीक है और मेहनत कर मंदिर बना दिया और कहा कि आप लोग आरामसे रह सकते हैं, पूजा कर सकते हैं, रामधुन चला सकते हैं। वहां प्रतिष्ठा हो गई। इस तरहसे अब सब बड़े आरामसे रहते हैं। अमलदारोंने भी इसमें हिस्सा लिया। यह अच्छी चीज है। अगर सारे हिंदुस्तान और पाकिस्तानमें ऐसा हो जाय तो हमारी शक्ल बदल जाती है। अगर हम अपने धर्मपर कायम रहें और दूसरोंके धर्ममें दखल न दें तो हमारा सब काम हो सकता है।

: १८७ :

२४ दिसबर १६४७

भाइयो और वहनो,

मेरे पास हमेशा सिख भाई आते रहते है। मै अखवारोमेसे थोडा पढ लेता हू, मिलने आनेवाले लोग भी मुझे सुनाते रहते है। वे लोग कहते है कि मै तो सिखोका दुश्मन वन गया हू। उन्होने इसकी परवा न की होती, अगर मेरी वात हिंदुस्तानके वाहर कुछ-न-कुछ वजन न रखती। दुनिया मानती है कि हिंदने अहिसाके, शातिके जरिये आजादी ली है। अगर ऐसा ही होता तो मुझे वहुत अच्छा लगता। मगर पगु और नामर्दोसे अहिसा चल नही सकती। यह पगुपन और गूगा-पन शारीरिक नही। शरीरसे पगु वननेवाले तो ईश्वरकी मददसे अहिसापर खडे रह सकते है। एक वच्चा भी अहिसापर खडा रह सकता है—जैसे प्रह्लाद। ऐसा हुआ या नही, मै नही जानता, पर कहानी वन गई है कि प्रह्लादने अपने पिताको साफ कह दिया था कि मेरी कलमसे रामके सिवा कुछ निकलेगा ही नही। मेरे सामने १२ वरसका वच्चा प्रह्लाद आज भी खडा है। मगर जो आदमी आत्मासे लूला है, पगु है, अधा है, वह अहिसाको समझ नही सकता। अहिसाका पालन कर नही सकता। मैने गलतीसे यह सोच लिया था कि हिदुस्तानकी आजादीकी लडाई अहिसक लडाई थी। लेकिन पिछली घटनाओने मेरी आखे खोल दी है कि हमारी अहिसा असलमे कमजोरोका मद विरोध था। अगर हिंदुस्तानके लोग सचमुच वहा-दुरीसे अहिसाका पालन करते, तो वे इतनी हिंसा कभी नही करते।

सिख भाइयोके गुस्सेपर मुझे हँसी आती है। सिखो और हिदुओमे मै फर्क नही समझता। गुरु ग्रथसाहव मैने पढा है। सिख कहते है कि मै गुरु गोविंदसिंहके वारेमे क्या समझू ? अगर मै इस दिशामे अज्ञान होता, तो उनके वारेमे मैने जो लिखा है वह नही लिख सकता था। मै किसीका दुश्मन नही हू। उन्हे समझना चाहिए कि जव मै सिखोकी शरावखोरी या जुआ खेलनेकी वात करता हू, तो वह सारे सिखोपर लागू नही होती। हिदुओमे भी ऐसे वहुत लोग पडे है। मगर जहा सिखोकी

तलवार नही चलनी चाहिए, वहा चलती है यह-बुरी बात है। बुरा बरताव करनेवाला कोई भी क्यो न हो, वह ईश्वरके सामने गुनाह करता है।

आज २४ दिसबर है, कल २५। क्रिस्मस[1] ईसाइयोके लिए वैसा ही त्योहार है, जैसी हमारे लिए दीवाली। न दीवाली नाचरगके लिए हो सकती और न क्रिस्मस। जीसस क्राइस्टके नामसे यह चीज बनी है। इस मौकेपर सारे ईसाई भाइयोको मै बधाई देता हू ओर आशा करता हू कि वे अपने जीवनमे जीसस क्राइस्टके उपदेशोपर अमल करेगे। मै नही चाहता कि कोई हिंदू, मुसलमान या सिख यह चाहे कि हिंदुस्तानके थोडेसे ईसाई बरबाद हो जाय या अपना धर्म बदल डाले। 'धर्म-पलटा' शब्द मेरी डिक्शनरी[2]मे ही नही है। मै चाहता हू कि हर ईसाई अच्छा ईसाई बने। हर हिंदू अच्छा हिंदू बने। वह हिंदू-धर्मकी मर्यादा और सयमका पालन करे और उसमे जो तपश्चर्या बताई गई है, उसे अपने सामने रखकर जीवन व्यतीत करे। उसी तरह मै चाहता हू कि एक मुसलमान अच्छा मुसलमान बने और सिख अच्छा सिख बने। पाजी हिंदू अगर मुसलमान बने, तो वह अच्छा मुसलमान हो नही सकता। अगर मै अच्छा हिंदू बनता हू और ईसाईको अच्छा ईसाई बननेकी प्रेरणा देता हू, तो मै अपने धर्मका प्रचार करता हू।

ईसाई लोग जीसस[3]के धर्मपर कायम रहे। दुनियामे धर्मकी वृद्धि हो। मैने अखबारोमे देखा है कि चूकि अब ईसाई धर्म या दूसरे किसी धर्मको राजसे पैसेकी मदद नही मिलनेवाली है, बाहरसे भी बहुत पैसे नही आनेवाले है, इसलिए हिंदुस्तानके ७५फी सदी गिरजे बद हो जायगे। हमारे यहाके ज्यादातर ईसाई गरीब है। उनके पास पैसे नही है। मगर पैसेसे धर्म नही चलता। ईसाइयोको खुश होना चाहिए कि पैसेकी यह बला दूर हुई। हजरत उमरके घर एक बार बहुत-सा इनामइकराम आ गया। वह बहुत गभीर होकर अपनी बीबीसे कहने लगे कि यह बला आ गई है। पता नही, अब मै अपने धर्मपर कायम रह सकूगा या नही। भगवान तो हमारे पास पडा है, उसे हम पहचाने। सबसे बडा गिरजाघर है ऊपर आकाश और

---

[1] बडा दिन, [2] कोष, [3] ईसा।

नीचे धरती माता। खुलेमे क्या मै भगवानका नाम नही ले सकता? भगवानकी पूजाके लिए न सोना चाहिए न चादी। अपने धर्मका पालन हम खुद ही कर सकते है, और खुद ही उसका हनन कर सकते है।

: १८८ :

२५ दिसबर १९४७

भाइयो और वहनो,

काश्मीरमे जो कुछ हो रहा है, उसके वारेमे थोडा वहुत मुझे और आपको मालूम है। एक चीजकी तरफ मै आपका ध्यान खीचना चाहता हू। अखवारोमे आ गया है कि यूनियन और पाकिस्तान काश्मीर-के वारेमे फैसला करनेका किसीको निमत्रण दे। यह पच नियुक्त करनेकी वात हुई? कहातक ऐसा चलेगा कि पाकिस्तान और यूनियन आपसमे फैसला कर ही नही सकते? कहातक हम आपसमे लडते रहेगे? दोनो काश्मीर और जम्मू एक है। वहा मुसलमानोकी अधिकता है। काश्मीरके दो टुकडे करे, तो यह टुकडे करनेकी वात कहा जाकर रुकेगी? हिंदुस्तानके दो टुकडे हुए, इतना वस है, वससे ज्यादा है। हिंदुस्तानको ईश्वरने एक वनाया, उसके टुकडे मनुष्य कैसे कर सकता था? पर वह हुआ। लीग और काग्रेस अलग-अलग कारणोसे उसमे राजी हुई। आज काश्मीरके टुकडे करे तो दूसरी रियासतोके क्यो नही?

काश्मीरमे झगडा क्यो हुआ? कहा जाता है कि हमला करनेवाले डाकू है, लुटेरे है, वे वाहरसे आते है, रेडर्स[1] है। मगर जैसे-जैसे वक्त वीतता है, वैसे-वैसे पता चलता है कि ऐसा नही है। उर्दूके कुछ अखवार यहा आ जाते है। मै थोडा-वहुत खुद पढ सकता हू। कुछ मुझे आसपास वाले सुना देते है। आज 'जमीदार' नामके अखवारमेसे मुझे थोडा सुनाया गया। 'जमीदार'के एडीटर[2]को मै पहचानता हू। उनकी जवानपर कभी लगाम

---

[1] आक्रमणकारी; [2] सम्पादक।

नही रही। अब तो उन्होने खुल्लमखुल्ला निमत्रण दिया है कि सब मुसलमान काश्मीरपर हमला करनेके लिए भर्ती हो। डोगरोको, सिखोको सबको उन्होने गालिया दी है। काश्मीरकी लडाईको जिहाद[1] कहा है मगर जिहादमे तो मर्यादा होती है—सयम होता है। यहा तो कुछ भी नही है। जो कुछ चल रहा है, वह होना नही चाहिए। क्या वह यह चाहते है कि हिंदू, सिख और मुसलमान हमेशा अलग ही रहे ? मुसलमान अगर हिंदुओ और सिखोको मारे-काटे, फिर भी हमारा धर्म क्या है यह मै आपको रोज वतलाता हू। हिंदू और सिख कभी वदला न ले

सीधी वात यह है कि काश्मीरपर पाकिस्तानकी ही चढाई है हिंदुस्तानका लश्कर वहा गया हुआ है, मगर चढाई करनेको नही। वह महाराजा और शेख अब्दुल्लाके बुलानेपर वहा गया है। काश्मीरके सच्चे महाराजा शेख अब्दुल्ला है। हजारो मुसलमान उनपर फिदा है

अपना गुनाह हरएकको कबूल कर लेना चाहिए। जम्मूके सिखो और हिंदुओने या बाहरसे आए हुए हिंदुओ और सिखोने वहा मुसलमानोको काटा। काश्मीरके महाराजा इग्लैडके राजाकी तरह नही है। उनकी रियासतमे जो भी वुरा-भला होता है, उसकी जिम्मेदारी उनके सिरपर है। वहा काफी मुसलमान कतल किए गए, काफी लडकिया उडाई गई। शेख अब्दुल्ला साहवने बचानेकी कोशिश की। जम्मूमे जाकर उन्होने बहस की, लोगोको समझाया। काश्मीरके महाराजाने अगर गुनाह किया है तो उन्हे या जिस किसीने गुनाह किया है, उसे हटानेकी बात मै समझता हू। पर काश्मीरके मुसलमानोने क्या गुनाह किया है कि उनपर हमला होता है ?

पाकिस्तानकी हकूमतसे मै अदवसे कहना चाहता हू कि आप कहते है कि इस्लामकी सबसे बडी ताकत पाकिस्तान है। मगर आपका उसका फख्र तभी हो सकता है, जब आपके यहा एक-एक हिंदू-सिखको इन्साफ मिले। पाकिस्तान और हिंदुस्तानको आपसमे बैठकर फैसला करना चाहिए, लेकिन तीसरी ताकतके मार्फत नही। दोनो तरफके प्रधान

---

[1] मजहबी लडाई।

बैठकर बाते करे। महाराजा अपने आप समझकर अलग बैठ जाय और लोगोको फैसला करने दे। शेख अब्दुल्ला तो उसमे होगे ही। मगर महाराजा समझ ले और कह दे कि यह हकूमत मेरी नही, काश्मीरके लोगोकी है। यहाके लोग जो चाहे, सो करे। काश्मीर, काश्मीरके मुसलमानो, हिंदुओ और सिखोका है, मेरा नही। महाराजा और उनके प्रधान अलग हो जाते है, तो शेख साहब और उनकी आरजी हकूमत रह जाती है। सब बैठकर आपस-आपसमे फैसला करे। उसमे सबका भला है। यूनियन सरकारने काश्मीरकी मदद की तो वहाकी प्रजाके खातिर, महाराजाके खातिर नही। काग्रेस प्रजाके विरुद्ध किसी राजाका पक्ष नही ले सकती। राजाओको प्रजाका ट्रस्टी बनकर रहना है, तभी वे रह सकते है।

एक उर्दू मैगजीन[1]मे आज मैने एक शेर देखा। वह मुझे चुभा। उसमे कहा है—'आज तो सबकी जबानपर सोमनाथ है। जूनागढ वगैराका बदला लेनेके लिए गजनीसे किसी नए गजनवीको आना होगा।' यह बहुत बुरा है। यूनियनके किसी मुसलमानकी कलमसे ऐसी चीज नही निकलनी चाहिए। एक तरफसे मित्रभाव और वफादारीकी बाते और दूसरी तरफसे यह ! मै तो यहा यूनियनके मुसलमानोकी हिफाजतके लिए जीवनकी बाजी लगाकर बैठा हू। मै तो यही करूगा, क्योकि मुझे बुराईका बदला भलाईसे देना है। आप लोगोको यह सुनाया, ताकि आप ऐसी चीजोसे बहक न जावे। गजनवीने जो किया था, बहुत बुरा किया था। इस्लाममे जो बुराइया हुई है, उन्हे मुसलमानोको समझना और कबूल करना चाहिए। काश्मीर, पटियाला वगैराके हिंदू-सिख राजाओको-उनके यहा जो बुराई हुई हो उसे कबूल कर लेना चाहिए, उसमे कोई शर्म नही। गुनाह कबूल करनेसे वह हलका होता है। यूनियनमे बैठकर मुसलमान अगर अपने लडकोको सिखावे कि गजनवीको आना है, तो उसका मतलब यह हुआ कि हिंदुस्तानको और हिंदुओको खा जाओ। इसे कोई बर्दाश्त करनेवाला नही। दोनो आपसमे मिलकर चाहे कुछ भी कर ले। अगर यह शरारतभरा शेर एक महत्वपूर्ण मैगजीनमे न छपा होता, तो मै उसका जिक्र भी न करता।

---

[1] अखबार।

: १८६ :

२६ दिसबर १६४७

भाइयो और बहनो,

आज मै आपको यहाके तिबिया कॉलेजके बारेमे एक बात सुनाना चाहता हू। इस कॉलेजके जन्मदाता हकीम अजमलखा थे। आज कमनसीबीमे हम मुसलमानोको दुश्मन मानकर बैठ गए है। मगर जब तिबिया कॉलेज बना था, तब ऐसा नही था। हिंदू राजाओ और मुसलमान नवाबोने और हिंदू-मुस्लिम जनताने उसके लिए पैसा दिया था। हकीम साहब बडे तबीब (डॉक्टर) थे। वह इस कालेजको चलाते थे। इसका एक ट्रस्ट भी बना था। ट्रस्टमे हिंदू और मुसलमान दोनो थे। डॉ० अन्सारी भी उसके ट्रस्टियोमे थे। आज कुछ हिंदू सज्जन मेरे पास आए थे। उन्होने पूछा कि तिबिया कॉलेजका क्या होगा? अगर तिबिया कॉलेज बद हो, तो मै समझता हू कि हमारे लिए बहुत दु ख और शर्मकी बात होगी। आज तो वह बद पडा है। कॉलेज करोलबागमे है। हमने बहुतसे मुसलमानोको अपने पाजीपनसे भगा दिया। मगर दिल्लीमे आज मुसलमान कहा रह सकते है और कहा नही रह सकते, यह बडा प्रश्न है। दूसरोको मिटानेकी चेष्टा करनेवालोको खुद मिटना होगा। यह जीवनका कानून है। यह अपने आपको और अपने धर्मको मिटानेकी बात है।

दूसरी बात जो मै कहना चाहता हू, वह पहले कह चुका हू। मगर वह बार-बार कही जा सकती है। हजारो हिंदू और सिख लडकियोको मुसलमान भगा ले गए है। मुसलमान लडकियोको हिंदुओ और सिखोने भगाया है। वे सब कहा है? उनका पता भी नही है। लाहौरमे सबने मिलकर यह फैसला किया था कि सारी भगाई हुई हिंदू, सिख और मुसलमान औरतोको निकाला जाय। मेरे पास पटियाला और काश्मीरसे भगाई हुई मुसलमान लडकियोकी एक लबी लिस्ट[1] आई है। उनमेसे कई अच्छे और मशहूर घरोकी लडकिया है। अगर वे लडकिया मिले तो उन्हे वापस

---

[1] सूची।

लेनेमे कोई कठिनाई नही होगी। लेकिन हमारे हिंदू लोग खोई हुई हिंदू और सिख लडकियोको आदरसे वापिस लेगे या नही, यह वडा प्रश्न है। अगर उनके साथ किसीने निकाह भी कर लिया, उन्होने इस्लाम भी कबूल कर लिया, तो भी मेरे विचारसे वे मुसलमान नही हुईं। उन्हे मै आदरसे अपने पास रखूगा। उनकी जो सतान होगी उसे भी आदरसे रखूगा। वे दिलसे तो नही विगडी। अगर वे दुष्टोके पजेमे फस गईं तो मेरे मनमे उनके प्रति घृणा नही हो सकती, रहम ही हो सकता है। समाजको उन्हे वापस ग्रहण करना ही चाहिए। अगर उन्हे आदरसे वापस नही लेना हो तो उन्हे लोगोके घरोसे निकालनेकी चेष्टा ही क्यों की जाय ? किसी लपटने उनपर जवरदस्ती की और उन्हे हमल[1] रह गया, तो क्या उन्हे मैं ठुकरा दू ? नही, उन्हे मै अपनी गोदमे विठाऊगा।

ऐसी जो लडकिया हिंदू थी, वे हिंदू रहेगी, और जो सिख थी वे सिख रहेगी। वच्चोका धर्म माका ही धर्म रहेगा, वडे होकर वे स्वेच्छासे भले किसी धर्ममें चले जाय। सुनता हू कि कई लडकिया आज कहती है कि हम वापस नही जाना चाहती। क्योकि उन्हे डर है कि उनके मा-वाप या पति उनकी तौहीन[2] करेगे। जिन लडकियोके रिश्तेदार है, उन्हे ऐसी लड़कियोको आदरपूर्वक वापिस लेना चाहिए। जिनका कोई नही है, उन्हे हम कोई धधा सिखा दे, ताकि वे अपने पाँवोपर खडी रह सके। मेरे पास ऐसी कोई लडकी आ जायगी तो उसे मैं लाकर आपके सामने यहा विठाऊगा। जैसा इन लडकियोका आदर है, वैसा ही उसका भी होगा। वह मेरी गोदमे वैठेगी। अगर मै वेरहम वन जाऊ, तो मै हिंदू नही रह जाऊगा। गुडा मुसलमान हो या हिंदू, वह वुरा है। मुसलमान लडकियोको हमे वापिस करना चाहिए और पचके सामने अपने गुनाहका प्रायश्चित्त करना चाहिए। यह लिस्ट देखकर मै काप उठता हू। जम्मूमे भी यही हुआ। मर्दो और वूढी औरतोको मार डाला और जवान लड़कियोको उठा ले गए। मैं नही जानता कि वे कहा है। अगर मेरी आवाज वहातक पहुच सकती हो, तो मेरा उन लोगोसे अनुरोध है कि उन सव लडकियोको वे लौटा दे।

---

[1] गर्भ; [2] अनादर।

कहते हैं कि काफी हिन्दू और सिख लड़कियां किसी पीरके यहां पड़ी हैं। वे कहते हैं कि उनको किसी तरहका नुकसान नहीं पहुंचाया जायगा। मगर हम उनको तबतक वापिस नहीं करेंगे, जबतक हमारी मुसलमान लड़कियां वापिस नहीं आएंगी। लेकिन ऐसी चीजोंमें सौदा क्या? हम दोनों तरफसे सब लड़कियां अपने-आप लौटा देनी चाहिए। वही [illegible] और शराफतको रखनेका रास्ता है, नहीं तो हमारा मुल्क ४० करोड़ गुंडोंका मुल्क बन जायगा।

: १६० :

२७ दिसबर १६४७

भाइयो और बहनो,

मुझे बड़ा हर्ष होता है कि मैं आज इस देहात[1] में प्रार्थना कर रहा हूं। लेकिन आप मुझे प्रार्थनामें यहां धन्यवाद करते हैं या मान-पत्र देते हैं या हार पहनाते हैं, ऐसा होना नहीं चाहिए। प्रार्थना करना तो हमारा धर्म है। प्रार्थना तो जब प्रातःकाल हम उठते हैं तभी करते हैं। अगर हम नियमित रूपसे प्रार्थना करें तो फजर[2] और शाम को करें। शामको पांच बजे अगर हो सके तो मिलकर करें, लेकिन जाड़ेके दिनोंमें जितनी जल्दी कर सकें, अच्छा है। सोते हैं तब, और उठते हैं तब, ईश्वरकी याद करें। बीचमें जब काम करते हैं तब ईश्वरका काम करें, स्वार्थका काम न करें, सेवा करें। प्रार्थनामें क्या भरा है यह मैं आज नहीं समझा सकता, क्योंकि मेरे पास इतना समय नहीं है।

मैंने जब कह दिया कि मान-पत्र नहीं चाहिए, हार नहीं चाहिए तो भी आप लोगोंने दिया तो मैं इसके लिए आभारी हूं। आपने मान-पत्र-में सत्य और अहिंसाका जो उल्लेख किया है वह बहुत भारी चीज है। अगर हमारे आचार-विचार ऐसे नहीं हैं तो हम नाम लेनेसे घातक बनते

---

[1] दिल्लीसे बारह मील दूर सिभालका नामक गांवमें, [2] सुबह।

है। मै तो ऐसा धोखा दे नही सकता हू। जबसे मै दक्षिण अफ्रीकासे हिंदुस्तान आया हू तबसे मै हिदुस्तानका भ्रमण कर रहा हू। एक दफा नही, कई दफा सारे हिदुस्तानका मैने भ्रमण किया है, हजारो देहातोको देखा है। लोग ऐसी बाते कह तो देते है, लेकिन करते नही है। उनको मानते है या नही, उसकी परवाह नही करते। हम ऐसा कभी न करे। खयाल एक चीजका करे, उच्चारण दूसरेका और आचरण तीसरी चीजका करे तो बात बनती नही है। हिदुस्तानमे आपस-आपसमे हिंदू, सिख और मुसलमान एक दूसरेको काटे, गाली दे, हटा दे तो हमारे लिए शर्मकी बात है। दैवयोगसे आपके यहा झगडा नही है, क्योकि मुसलमानोकी ज्यादा आबादी नही है। अगर है तो थोडी-सी। तो वे बेचारे क्या करनेवाले है? अगर मै जान लेता कि यहा कितने है तो अच्छा होता और कुछ ज्यादा सुना सकता था। अगर हम आपस-आपसमे दुश्मनी करते है तो अहिसा छोड दे। हम कम-से-कम इतने सच्चे तो हो जाय। अगर हम ऐसा नही करते है तो वह दुःखकी बात है। हम आजाद हुए है तो एक दूसरेको काटनेके वास्ते नही। आजादीके माने यह है कि हम बिना किसी दबावके धर्मका पालन करे—धर्मकी आजादी मिली है, अधर्मकी नही। ईश्वरसे कोई ऐसी प्रार्थना थोडे करता है कि हमको झूठ बोलने दे। अगर हम ऐसा करते है तो हम शैतानकी बदगी करते है, उसके पजेमे पडते है और गुलाम बन जाते है।

आप लोगोने पचायत बनाई है तो अच्छा किया, इसके लिए मुबारकबाद देता हू। लेकिन अगर पचायतका काम नही किया तो मै कहूगा कि पचायतका नाम किया, लेकिन काम नही किया। आपकी पंचायत सच्चे मानेमे पचायत नही है। पहले हिदुस्तानमे सच्ची पचायत थी—आपने तथा मैने वह देखी नही है, लेकिन चीन और यूनानसे जो लोग हिदुस्तान आए वे सब कहते है। उनकी किसीने खुशामद नही की, उनको किसीने पैसा नही दिया, उनको किसीने बुलाया भी नही। वे खुद बडी तकलीफ उठाकर आ गए—वे ज्ञान पाने आए, तो वे लिखते है कि हिंदुस्तानमे कही चोरी देखनेमे नही आई, किसी जगह ताला-कुजी नही देखा, यह कोई हजारो वर्षकी बात नही है। हजारो वर्षका इतिहास कहा है?

वह तो रामायण-महाभारतसे निकलता है, लेकिन किसीने देखा नही है—वह कहातक ठीक है यह मै नही कह सकता। एक-दो हजार वर्पकी वात इतिहाससे पता चलती है, लेकिन आज हम उस ढगसे नही रहते, जैसे एक-दो हजार वर्प पहले रहते थे।

पहले चार वर्ण थे। मै उनके वर्णनमे नही जाना चाहता हू। आज तो कितने ही वर्ण हो गए है। उनको वर्ण कहना अनर्थ हो जाता है। आज आपने पचायत कर ली तो आपने कितनी जिम्मेदारी ले ली। गाय आज इतना कम दूध देती है कि कई लोग कहते है कि उनको काट डालो। मुसलमान तो काटते है, लकिन हिंदू जितनी गाए काटते है उतनी गाए जगतमे कोई नही काटता। हिंदू अच्छी तरहसे रखते ही नही, किस तरहपर गाए रखनी चाहिए, यह जानते ही नही। यह तो आहिस्ता-आहिस्ता काटनेकी वात हो गई। इससे अच्छा तो जल्दीसे काट दे तो वे खत्म हो जाय। हम उनकी पूजा तो करते है, लेकिन कप्ट इतना देते है जितना दुनिया-मे कही नही दिया जाता। आज अगर एक गाय तीन सेर दूव देती है तो एक वर्पके वाद मै सुनना चाहता हू कि वह ६ सेर दूध देती है, तव मै समभूगा कि आपने कुछ किया।

इसी तरह आप अनाज दुगुना पैदा करे। आप कहेगे—कैसे? मैं कहूगा कि आप जमीनको पेटभर खानेको दे। मीरावेन आई थी, उसने सभा वुलाई। उसमे वहुत लोग आए। उन लोगोने तय किया कि गावमे जितना कूडा-कचरा, गोवर, विप्ठा होता है उनमेसे सुनहरी खाद पैदा कर सकते है। इसमे पैसे भी नही लगते, हा, थोडा परिश्रम करना पडता है। लेकिन इससे जमीनकी पैदा करनेकी शक्ति वढ जाती है।

आज यहा कितनी स्वच्छता है, मै यह नही जानता हू, लेकिन आपका परम कर्तव्य है कि आप तगडे हो। आप भीतर भी स्वच्छ रहे और वाहर भी। आपका देहात ऐसा होना चाहिए कि किवर भी जाए कूडा-कचरा न मिले, गोवर पडा हुआ न मिले और दुर्गंव न आए। आपको स्वच्छताके नियम पूर्णत पालन करने चाहिए।

मै कहूगा कि यहा सिनेमा-घर रखकर क्या करोगे? हमारे जमानेके कितने खेल पडे है, नाटक है, ये सव करो। सिनेमा आएगा तो पैसे खर्च

करोगे, पीछे जुआ खेलोगे। इससे और भी कई बुराइया सीखोगे। जब तालीम दी जायगी तब भले ही कुछ फायदा हो, लेकिन अभी तो मैं ये बुराइया देख रहा हू। अभी तो आपमेसे कई भाई शराब, गाजा, भाग पीते है, लेकिन जब सब भाई ये व्यसन छोड दे तब मै समझूगा कि आपने सचमुच पचायत बनाई। तब दिल्लीके लोग यहा देखने आएगे। पीछे आप अस्पृश्य बन जाय और छूआछूतको भूल जाय। आप जब यह समझने लगे कि मुसलमान, हिंदू, सिख, क्रिस्टी, पारसी सब भाई है तब आप हिदुस्तानकी आजादी किसको कहते है, यह सिद्ध करके बतानेवाले है। तब हिदुस्तान आपके गावका नमूना देखकर नकल करेगा। ईश्वर आपको शक्ति दे कि आप यह सब काम कर सके।

आप लोग तालिया न बजाए, क्योकि मैने जो कहा है वह भी प्रार्थनामे शामिल है और प्रार्थना तो ईश्वरका नाम है। मुझे आपलोगोका आशीर्वाद चाहिए और मैने जो कहा है वह पूरा कर दिया तो मुझको आपने सब दे दिया, मेरा काम पूरा कर दिया, ऐसा मै माननेवाला हू।

: १९१ :

२८ दिसबर १९४७

भाइयो और बहनो

आज मै व्यापारियोकी सभामे चला गया था। उन लोगोने भी बताया कि कुछ अन्य चीजोकी तरह कपडेपरसे भी अकुश हटा लिया जाय। मुझको इसमे शक नही है कि अकुश छूट जाना चाहिए। उस सभाकी सब चीज तो आप अखबारमे देख ही लेगे, लेकिन एक चीज कहने लायक है। वह यह कि व्यापारियोने बताया कि अकुश हटनेका ऐसा चमत्कार हो गया है कि कपडेपरसे अकुश न हटनेपर भी कपडेके दाम कम होने लगे है। इसका कारण यह बताया जाता है कि लोगोको ऐसा खयाल हो गया है कि अब चूकि गाधीजी लोगोकी आवाजको हकूमततक पहुचा रहे है, इसलिए कपडेपरसे शीघ्र अकुश हट जायगा। इसीसे चोर-

बाजारका कपडा बाहर आ गया और दाम कम हो रहा है।

उसी तरह चीनीका हो गया है। मुझको बताते हैं कि जिधर जाओ उधर चीनीका ढेर पडा है। वहासे सब लोग ले जाते हैं। एक रुपया सेरके भावसे लेते हैं। आज मैंने सुना है कि कुछ लोग कहते हैं कि हम तो इस भावमे नही ले सकते, तो पद्रह आना सही, चौदह आना सही। यह तो व्यापार है। अकुश छूट जानेसे लोग आरामसे ले जाते हैं। इसमे ऐसी खूबी है। हर जगहसे इस तरहसे मेरे पास तार और खत आ रहे हैं। अकुश छूट जानेसे आराम महसूस करते हैं। पीछे मुझको लिखते हैं कि करोडोकी दुआ तुमको मिलती है। मैं समझता हू कि मुझको दुआ क्यो मिले—करोडोको मिले। मैंने तो करोडोकी आवाज उठाई—न उठाऊ तो मेरी आवाजको क्यो सुने? जब मैं अपनी आवाज उठाता हू तब कौन सुनता है? मैं कहता हू कि मुसलमानोको दुश्मन मत मानो तब लोग मुह मोड लेते हैं। लोग कहते है कि यह क्या पागलपन करता है। मेरी ऐसी आवाज कोई नही सुनता। हा, मैं इतना तो जरूर कहूगा कि अगर करोडो लोग मेरी आवाज नही सुनते है तो अपने धर्मको हानि पहुचाते हैं। लोगोको समझना चाहिए कि मैं जब हमेशा अच्छी बात कहता हू तो अभी बुरी बात क्यो कहूगा? मैं गलत बात कहता ही नही। इसमे गलत बात क्या कहनी थी! मैं जो कहता हू कि धर्मकी जड दया है वह तो तुलसीदासका है। उससे कहो कि तू दीवाना है। लेकिन उसकी रामायण जितनी चलती है उतनी सारे हिंदुस्तानमे दूसरी कोई पुस्तक नही चलती—शायद ही दुनियामे इतनी कोई दूसरी पुस्तक चलती होगी। वह पुस्तक सिर्फ बिहारमे चलती है या युक्तप्रातमे चलती है, ऐसी बात नही है। वह सब जगह चलती है। मैंने तो उनका काम किया, उनकी आवाज उठाई। इसमे मुझको पागल कहनेकी क्या बात है। लकडीपर क्या अकुश रखना था! वह खानेकी चीज तो है नही कि न मिले। मानो कि मिलने लग जाय तो सब खा जायगे यानी जला डालेगे? लेकिन उतनी ही जलाएगे जितनी जरूरत होगी। कोई फालतू तो जलाएगा नही। तब उसपर अकुश क्यो? मुझको तबतक सतोष नही जबतक लकडीपरसे अकुश न हट जाय। आज उसका मिलना इतना मुश्किल हो गया है कि गरीबोकी हानि होती है।

पीछे मुझको सुनाते है कि आपने इतना तो किया तो पेट्रोलपरसे अकुश हटानेके लिए आवाज उठाओ। मै तो कहूगा कि पेट्रोलपरसे भी अकुश हट जाना चाहिए और कल हट जाना चाहिए तभी हमारी भलाई होनेवाली है। पेट्रोलपरसे अकुश हट जायगा तव ज्यादा मोटरे चलेगी। इससे गरीवोको नुकसान नही होगा—फायदा होगा। अगर रेलगाडिया ज्यादा चले तो पेट्रोलकी ज्यादा जरूरत नही, लेकिन ज्यादा रेल वनाए तो करोडो रुपया खर्च होगा। जितना है उतना तो हजम होने दो। ज्यादा क्या करोगे ? रेलके लायक वने तो सही। हमको जितना चाहिए उतना है। जल्दीसे एक जगहसे दूसरी जगह जानेके रास्ते तो है, लेकिन पेट्रोल नही है। एक जगहसे दूसरी जगह हम जितनी चीज भेजना चाहे भेज सकते है। इसके लिए हमे रेल-यातायात नही, सडक-यातायातके साधनोकी जरूरत है। मै समझता हू कि अगर पेट्रोलपरसे अकुश उठ गया तव यह हो सकता है। अकुश हटानेसे सव दाम कम हो रहे है। किसी चीजका दाम वढ नही रहा है। अगर कोई ऐसा कहे तो वह गलत वात है। अगर दाम वढते तो मेरे पास इतने तार कहासे आते। क्योकि दाम गिर रहे है, लोग कहते है कि अच्छा हुआ। पेट्रोलपरसे अकुश हट जाय तो सडक-यातायात वढ जायगा। इसके वढनेमे सव जगह अनाज और कपडा जा सकेगा। नमकका आना-जाना वढ जाएगा।

सवमे ज्यादा तो नमकका दाम कम होना चाहिए, लेकिन वह सवमे ज्यादा है। नमकपर कर वद हो गया, इसलिए दाम वढ गया, यह गलत वात है। हा, लेकिन नमकका दाम वढ गया है। हमारी आदत नही हुई है कि नमक पैदा कर ले। नमक वनाना हमने सीखा नही है। हिंदुस्तानके पास दरियाका किनारा इतना पडा है कि नमककी कमी हो नही सकती। दरियाके पानीसे वच्चा भी नमक वना सकता है। नमक वडे आराममे वनाया जा सकता है। एक वहन वना सकती है। वगालमे नमकका पानी लाऊ तो वडे आरामसे नमक वन सकता है। इसके लिए इतना पैसा देना पडता है, इतने झझटमे पडते है। इसका सवव यह है कि जिस जगह नमक वनता है वहासे वह आ नही रहा है—वहासे शीघ्रतासे हम ला नही सकते। मै मानता हू कि उसमे एक गलती हो गई है। वह यह कि किसीको ठेका दे दिया है कि

तुम लाओ। वे बदमाशी करना सीख गए है, जिससे बहुत पैसा कमाते है। वहासे दूसरे ला नही सकते। इस ठेकेकी तबदीली[1] होनी चाहिए। अगर नमकको सस्ता करना है तो अकुश हटाकर चमत्कार देखो। हा, दो चीजे जरूरी है, एक यह कि ठेका-प्रणालीमे तबदीली हो और दूसरी सडक-यातायातकी व्यवस्था हो। बस आज मै इतना ही कहना चाहता हू।

: १६२ :

२६ दिसबर १६४७

भाइयो और बहनो,

कल हकीम अजमल खा साहबकी वार्षिक तिथि थी। वह हिंदुस्तानके हिंदू, मुसलमान, सिख, क्रिस्टी, पारसी, यहूदी सबके प्रिय थे। वह पक्के मुसलमान थे, मगर वह इस खूबसूरत देशके रहनेवाले सब लोगोकी समान सेवा करते थे। उनकी मेहनतकी सबसे बढिया यादगार दिल्लीका मशहूर तिबिया कालेज और अस्पताल था। वहापर हर श्रेणीके विद्यार्थी पढते थे और वहा यूनानी, आयुर्वेदिक और पश्चिमी डाक्टरी सब सिखाई जाती थी। साप्रदायिकताके जहरके कारण यह सस्था भी, जिसमे किसी तरह साप्रदायिकताको स्थान न था, बद हो गई है। मेरी समझमे इसका कारण इतना ही हो सकता है कि इस कालेजको बनानेवाले हकीम साहब मुसलमान थे, फिर वे चाहे कितने ही महान् और भले क्यो न रहे हो, और भले ही उन्होने सबका मान सपादन क्यो न किया हो। उस स्वर्गवासी देशभक्तकी स्मृति, अगर वह हिंदू-मुस्लिम फिसादको दफन नही कर सकती, तो कम-से-कम इस कालेजको तो नया जीवन दे सके।

कल मैने जिक्र किया था कि हमारी सभाए वगैरा खुलेमे, आकाशके मडपके नीचे हो। यह बहुत इष्ट चीज है। अगर यह आम रिवाज हो जावे

---

[1] परिवर्तन।

तो इस कामके लिए विचारपूर्वक जगह वगैराका प्रवध करना होगा। छोटे-वडे शहरोमे इस कामके लिए मैदान रखने होगे, अपनी आदते हमे वदलनी होगी, शोरकी जगह शाति और वेतरतीवीकी जगह करीने[1]से वैठना सीखना होगा। हमारी आदते सुधरेगी तो हम तभी वोलेगे जव हमे वोलना ही चाहिए और जव वोलेगे तव हमारी आवाज उतनी ही ऊची होगी, जितनी कि उस मौकेके लिए जरूरी होगी, उससे ज्यादा कभी नही। हम अपने पडोसीके हकका मान रखेगे, और व्यक्तिगत रूपसे या सामूहिक रूपसे कभी दूसरोके रास्तेमे नही आएगे, दूसरोके कामोमे दखल नही देगे। ऐसा करनेके लिए कई वार अपने आपपर वहुत सयम रखना पडेगा। ऐसी सामाजिक व्यवस्थामे दिल्लीके सवसे ज्यादा कारोवारवाले हिस्सेमे जो शोर और गदगी आज देखनेमे आती है, वह नही मिलेगी, चाहे कितने ही वडे हजूम[2] क्यो न हो, धक्कम-धक्का या फिसाद नही होगा। हम ऐसा न सोचे कि इस लक्ष्यको तो हम पहुच ही नही सकते। किसी-न-किसी तवके[3]को इस सुधारके लिए दिली कोशिश करनी होगी। जरा विचार कीजिए इस किस्मके जीवनमे कितना समय, शक्ति और खर्च वच जायगा।

मैंने काश्मीर और वहाके महाराजा साहवके वारेमे जो कुछ कहा है उसके लिए मुझे काफी डाट खानी पडी है। जिन्हे मेरा कहना चुभा है उन्होने मेरा निवेदन ध्यानपूर्वक पढा नही लगता। मैंने तो वह सलाह दी है जो मेरी समझमे एक मामूली-से-मामूली आदमी दे सकता है। कभी-कभी ऐसी सलाह देना फर्ज हो जाता है और वही मैंने किया। ऐसा किया इसलिए कि मेरी सलाह अगर मानी जाती तो महाराजा साहव अपनी और जगतकी आखोमे वहुत ऊचे चले जाते, उनकी और उनकी रियासतकी हालत आज ईर्ष्याके लायक नही। काश्मीर एक हिंदू राज है और उनकी प्रजामे वहुत वडी अक्सरियत मुसलमानोकी है। हमलावर अपने हमलेको 'जिहाद' कहते है। वे कहते है कि काश्मीरके मुसलमान हिंदू राजके जुल्मके नीचे कुचले जा रहे थे और वे उनकी रक्षा करनेको आए है।

---

[1] सलीका; [2] भीड, [3] गिरोह।

शेख अब्दुल्ला साहबको महाराजाने ठीक वक्तपर बुलाया है। शेख साहबके लिए यह काम नया है। अगर महाराजा उन्हे इस लायक समझते है तो उन्हे हरएक तरहका प्रोत्साहन मिलना चाहिए। मुझे यह स्पष्ट है और बाहरके लोगोके सामने भी स्पष्ट होना चाहिए कि अगर शेख साहब अक्सरियत और अकलियत दोनोको अपने साथ न रख सके तो काश्मीरको सिर्फ फौजी ताकतसे हमलावरोसे बचाया नही जा सकता। महाराजा साहब और शेख साहब दोनोने हमलावरोका सामना करनेके लिए यूनियनसे फौजी मदद मागी थी।

महाराजाको मेरे यह सलाह देनेमे कि वे इगलैडके राजाकी तरह वैधानिक राजा रहे, और अपनी हकूमत और डोगरा[1] फौजको शेख साहब और उनके सकटकालीन मत्रिमडलके कहनेके मुताबिक चलावे, आश्चर्यकी बात क्या है? रियासतोके यूनियनके साथ जुडनेका शर्तनामा तो पहले ही जैसा है। वह राजाको अमुक-अमुक हक देता है। मैने एक सामान्य व्यक्तिकी हैसियतसे महाराजाको यह सलाह देनेका साहस किया है कि वे अपने आप अपने हकोको छोड दे या कम कर दे और एक हिंदू राजाकी हैसियतसे वैधानिक कर्तव्यका पालन करे।

अगर मुझे जो खबरे मिली है उनमे कोई गलती है तो उसे सुधारना चाहिए। अगर हिंदू-धर्मके बारेमे और हिंदू-राजाके फर्जके बारेमे मेरे ख्यालात भूलभरे है तो मेरी सलाहको वजन देनेकी बात नही रहती। अगर शेख साहब मत्रिमडलके मुखियाकी हैसियतसे या एक सच्चे मुसलमानकी हैसियतसे अपना फर्ज पूरा करनेमे गलती करते है तो उन्हे एक तरफ बैठ जाना चाहिए, और बागडोर अपनेसे बेहतर आदमीके हाथोमे सौप देनी चाहिए।

आज काश्मीरकी भूमिपर हिंदू-धर्म और इस्लामकी परीक्षा हो रही है। अगर दोनो सही तरीकेसे और एक ही दिशामे काम करे तो मुख्य कार्यकर्ताओको यश मिलेगा और कोई उनका यश और नाम और इज्जत छीन नही सकेगा। मेरी तो एक ही प्रार्थना है कि इस अधकारमय

---

[1] राजपूतोकी जाति।

देशमे काश्मीर रोशनी दिखानेवाला सितारा बने।

यह तो हुआ महाराजा साहब और शेख साहबके बारेमे। क्या पाकिस्तान सरकार और यूनियन सरकार साथ बैठकर तटस्थ हिदुस्तानियोकी मददसे दोस्ताना तौरपर अपना फैसला नही कर लेगी? क्या हिदुस्तानमे निष्पक्ष लोग रहे ही नही? मुझे यकीन है कि हमारा ऐसा दिवाला नही निकला।

मुझे मथुरासे एक बहिनने ५०)का मनीआर्डर शरणार्थियोके लिए कबल खरीदने को भेजा है, वह अपना नाम मुझे भी बताना नही चाहती और लिखती है कि प्रार्थना-सभामे अपने भाषणमे मै उन्हे पहुच दे दू, मै आभारके साथ उनके ५०) रु० की पहुच देता हू।

आश्चर्यकी बात है कि जिन रियासतोके राजाओने यूनियनमे जुड जानेका इरादा जाहिर किया है वहाकी प्रजाकी तरफसे मुझे शिकायतके तार आ रहे है। अगर किसी राजा या जागीरदारको यह लगे कि वह अकेला रहकर अपने आप अच्छी तरहसे अपना राज नही चला सकता तो उसे अलग रहनेपर कौन मजबूर कर सकता है? जो लोग तारोपर इस तरहसे रुपया खर्च करते है उन्हे मेरी सलाह है कि वे ऐसा न करे। मुझे लगता है कि ऐसे तार भेजनेवालोके बारेमे कुछ दालमे काला है। वे गृह-मत्रीके पास सलाह लेने आवे।

कई मुसलमान, खास तौरपर डाक और तारके महकमेवाले कहते है कि उन्होने प्रचारकी खातिर यूनियनमे रहनेकी बात की थी, अब वे अपना विचार बदलना चाहते है। ऐसे भी मुसलमान है जिन्हे नौकरीसे बरखास्त किया गया है। उसका कारण तो मेरे खयालमे यही होगा कि उनपर शक किया जाता है कि वे हिदुओके विरोधी है। मेरी उन लोगोके प्रति पूरी सहानुभूति है। मगर मै महसूस करता हू कि सही तरीका यह है कि व्यक्तिगत किस्सोमे यह शक कितना ही बेजा क्यो न हो, उसको क्षम्य समझा जाय और गुस्सा न करे। मै तो अपना पुराना आजमाया हुआ नुस्खा ही बता सकता हू। सरकारी नौकरियोमे बहुत थोडे लोग जा सकते है। जिदगीका मकसद सरकारी नौकरी पाना कभी नही होना चाहिए। जीवनके इस क्षेत्रमे ईमानदारीकी जिदगी बसर करना ही एकमात्र ध्येय

हो सकता है। अगर आदमी हर तरहकी मेहनत-मजदूरी करनेको तैयार रहे तो ईमानदारीसे रोटी कमानेका जरिया तो मिल ही जाता है। मेरी सलाह यह है कि आज जो साम्प्रदायिक जहर हमपर सवार है जबतक वह दूर न हो तबतक मुक्ति नही। मैं समझता हू, मुसलमानोके लिए अपना स्वाभिमान रखनेके लिए यह जरूरी है कि वे सरकारी नौकरियोमे हिस्सा पानेके पीछे न दौडें। सत्ता सच्ची सेवामेसे मिलती है। सत्ता पाकर बहुत बार इन्सान गिर जाता है। सत्ता पानेके लिए झगडा शोभा नही देता। उसके साथ-ही-साथ सरकारका यह फर्ज है कि जिन स्त्री-पुरुषोके पास कोई काम न हो, चाहे उनकी संख्या कितनी ही क्यो न हो, उनके लिए वह रोजी कमानेका साधन पैदा करे। अगर अक्लसे यह काम किया जाय तो सरकार-पर बोझ पडनेके बदले इससे सरकारको फायदा होगा। मैं इतना मान लेता हू कि जिनके लिए काम ढूढना है वे शरीरसे स्वस्थ होगे, और काम-चोर नही, बल्कि खुशीसे काम करनेवाले होगे।

: १९३ :

३० दिसबर १९४७

भाइयो और बहनो,

मैंने कलके भाषणमे कहा है कि हमारी सभ्यता कहातक जानी चाहिए। हमें कब बोलना, कैसे चलना चाहिए कि करोडो आदमी साथ चले, तो भी पूरी शाति रहे। ऐसी लश्करी तालीम हमें मिली नही। मैं यहासे जानेके बाद घूमता हू, तब लोग मुझे इधर-उधरसे देखनेकी कोशिश करते है। वे ऐसा न करे। प्रार्थनामे देख लिया, वह बस हुआ। वहा जो लाभदायक बातें सुनी, उनका वे मनन करे और अपने-अपने घर चले जाए।

बहावलपुरके बारेमें एक भाई लिखते है कि मैं बहावलपुरके लिए एक बार कुछ और कहू। वहाके नवाब साहबने तो कहा है कि उनके नजदीक उनकी सारी रैयत बराबर है। तो मैं क्यो कहू कि यह सच्चा नही

है ? अगर सचमुच उनके लिए सारी रैयत एक-सी है तो उनको चाहिए कि अगर वे हिंदू-सिखोकी सभाल नही कर सकते तो उन्हे अपनी गाडीमें विठाकर यहा भेज दे और आराममे आने दे। जवतक उनको वहासे लानेका प्रवध नही होता तवतक उनकी खानेकी, कपडेकी, ओढनेकी व्यवस्था उन्हे अच्छी तरह कर देनी चाहिए। मुझे उम्मीद है कि वे ऐसा करेगे।

मै तो कायदे आजमसे कहना चाहता हू कि सिधमे हिदुओका रहना दुश्वार हो गया है। वहा हरिजन परेशान है। उनको भी वहासे आने देना चाहिए। सिंध जैसा पहले था वैसा आज नही है। इस यूनियनसे जो मुसलमान वहा गए है वे लोग वहाके हिंदुओको घर छोडनेपर मजवूर करते है, उनके घरोमे घुस जाते है। अगर वे ऐसा करे तो कौन हिंदू वहा रह सकता है ? तव क्या पाकिस्तान इस्लामिस्तान हो जायगा ? क्या इसीलिए पाकिस्तान वना है ? कोई हिंदू वहा चैनसे रह ही नही सकता, यह दु खकी वात है।

पढरपुरमे विठोवाका मदिर है। महाराष्ट्रमे इससे वडा मदिर कोई नही है। वह मदिर हरिजनोके लिए वहाके ट्रस्टियोने खुशीसे खोल दिया है, ऐसा तार आया था। अव वे लिखते है कि वडे-वडे ब्राह्मण पुजारी इसपर नाखुश है और अनशन कर रहे है। यह सुनकर मुझको वहुत वुरा लगा। मै वहा जा तो नही सकता, मगर यहासे दृढतासे कहना चाहता हू कि पुजारी लोग अपने आपको ईश्वरके पुजारी मानते है, लेकिन वे सच्चे तरीकेसे पूजा नही करते। आज तो वे लोगोको लूटते है। विष्णु भगवान ऐसे नही है कि कोई भी उनके पास जावे और वे दर्शन न दे। ईश्वरके लिए सव एक है। सो उन पुजारी लोगोको अनशन छोडना चाहिए और कहना चाहिए कि हम सव हरिजनोके लिए मदिर खोलनेमे राजी है। हमारी धर्मकी आख खुल गई है। मदिरमे जानेसे पापका नाश होता है, यह माना जाता है। अगर सच्चे दिलसे पूजा करे तो पापका नाश होगा ही। ऐसा थोडे ही है कि पापी मदिरमे नही जा सकते और पुण्यशाली ही जा सकते है। तव वहा पाप धुलेगे किसके ? जिन हरिजनोको हमने ही अछूत वनाया है वे क्या पापी हो गए ? मुझे आशा है कि अनशन करनेवाले समझ जाएगे कि यह वात कितनी असगत है।

वबईमे चावल वहुत कम मिलते है। एक हफ्तेमे एक रतलसे ज्यादा नही मिलते। सो लोग काले वाजारसे चावल लेते है। अकुश छूटनेपर भी उस शहरमे अभी राहत नही मिली। अगर शहरी लोग ईमानदार वन जाय, तो ये तकलीफे मिटनी ही है। लोगोका पेट भर जाय तो चोरीका कारण ही क्यो रहे?

: १६४ :

३१ दिसवर १९४७

भाइयो और वहनो,

मेरे पास कई खत आए है। सवका जवाव अभी नही दे सकूगा। जिनका दे सकता हू, देता हू।

एक भाईने लिखा है कि सिंधमे जव हिंदुओपर सख्ती होती है और वहा हिंदू और सिख नही रह सकते, तो पजावमे या पाकिस्तानके और हिस्सोमे फिरमे जाकर वे कैसे वस सकते है? खत लिखनेवाले भाईने मेरी इस वावतकी सव वातोपर ध्यान नही दिया। कुछ मुसलमान भाई पाकिस्तान होकर मेरे पास आए थे। उन्होने उम्मीद दिलाई थी कि जो हिंदू और सिख पाकिस्तानसे आ गए है, वे वहा वापिस जा सकेगे, ऐसी आशा होती है। मैने वही आपसे कह दिया था। पर मै यह भी कह चुका हू कि अभी वह वक्त नही आया। अभी मै किसीको वापिस जानेकी सलाह नही दे सकता। जव वक्त आवेगा तव मै कहूगा। अभी तो सुनता हू कि सिंधमे भी हिंदू नही रह सकते। यह ठीक है। चितरालसे एक भाई मेरे पास आए थे। उन्होने वताया कि वहा ढाई सौके करीव हिंदू-सिख अभी पडे है, जो निकलना चाहते है। सिंधमे तो अभी वहुत है, हजारो है, जो वहासे निकलना चाहते है। वे सव जवतक नही आ जायगे, हिंद सरकार चुप नही वैठेगी। वह कोशिश कर रही है।

पर आखिरमे तो मै उसी वातपर जमा हू। जवतक सव हिंदू और सिख भाई, जो पाकिस्तानसे आए है, पाकिस्तान न लौट जावे और सव

मुसलमान भाई, जो यहासे गए है, यहा न लौट आवे, तबतक हम शातिसे नही बैठ सकते है। मै तो तबतक शातिसे बैठ ही नही सकता। हो सकता है कि कोई शरणार्थी भाई यहा खुश हो, पैसा भी कमाने लगे, फिर भी, उसके दिलसे खटक कभी नही जायगी। उसे अपना घर तो याद आवेगा ही, दिलमे गुस्सा और नफरत भी रहेगी। हमने दोनोने बुरा किया है। दोनो बिगडे है। इसलिए दोनो भोग रहे है। किसने पहले किया, किसने पीछे, किसने कम, किसने ज्यादा, यह सोचनेसे काम नही चलेगा। हम सब अपने-अपने बिगाडको नही सुधारेगे तो हम दोनो मिट जायगे। जबतक हिंदुस्तान और पाकिस्तानमे दिलका समझौता नही होता हमारा दोनोका दुःख नही मिट सकता। दोनो अपना-अपना बिगाड सुधार ले तो हमारी बिगडी बाजी फिर सुधर जाय।

उन्ही भाईने लिखा है कि शरणार्थियोके कैंपोमे कुछ घरेलू धधे सिखाए जावे तो अच्छा है, जिससे वे कमाकर अपना खर्च निकाल सके। मुझे यह बात बहुत अच्छी लगी। सब चाहेगे तो मै सरकारसे कहूगा और सरकार बडी खुशीसे इसका इतजाम कर देगी। सरकारके तो इससे करोडो रुपये बचेगे। मै चाहता हू कि जिस भाईने खत लिखा है, वह इसके लिए आदोलन करे, सब शरणार्थियोको राजी करे। शरणार्थी खुद यह कहे कि मुफ्तकी मिली खीरसे अपनी मेहनतका रूखा-सूखा टुकडा कही अच्छा है। इससे उनका मान बढेगा, मर्यादा भी बचेगी।

अभी तो एक हिंदू बहन मेरे पास आई थी। कहती थी कि वह अपने घरका ताला बद करके कही गई तो पाच-छ सिखोने आकर ताला तोड लिया और घरमे रहना शुरू कर दिया। बहनने आकर देखा तो पुलिसमे रिपोर्ट लिखाई। सुना है, कुछ सिख पकडे भी गए। एक भाग गया। हिंदुओ और दूसरोने भी ऐसी गदी बाते की है। इससे हमारे धर्मपर बडा कलक लगता है। ऐसी बाते बद होनी चाहिए। उस बहनने मुझसे पूछा, क्या मै घर छोड दू? मैने कहा, कभी नही। सिख भाई अपना मान रखे, अपनी मर्यादासे रहे। हम सब अपनी मान-मर्यादासे रहे तो सारा झगडा खत्म हो जावेगा।

एक और खत आया है उससे मै और भी खुश हुआ। एक भाई

लिखते है कि आपका रोजका भाषण तो सब रेडियोपर सुनते है, लेकिन प्रार्थना और भजन रेडियोपर सबको नही मिलते। वह भी सब सुन ले तो अच्छा हो। रेडियो क्या कर सकता है, मै नही जानता। रेडियो अगर भजन भी ले ले तो मुझे अच्छा लगेगा। वह भाई अपना नाम भी नही देना चाहते। पर मै एक बात यह भी कहना चाहता हू कि मै रोज बोलता हू, जो कुछ करता हू, वह भी प्रार्थना ही है, उसीका हिस्सा है। मेरा यह सब भी भगवानके लिए है। लडकिया जो भजन गाती है, वह भगवानके लिए गाती है। फिर उसमे सुरकी मिठास हो या न हो, भक्ति तो है। जिन्हे सुरकी मिठास चाहिए उनके लिए रेडियोपर बहुतेरे गाने होते है। जिन्हे भक्तिकी मिठास चाहिए, उनके लिए रेडियोपर ये भजन जा सके तो लाभ ही होगा।

कुछ भाइयोने जूनागढ और अजमेरकी बाबत मुझे तार भेजे है। जूनागढमे, जो काठियावाडमे है, तो मै गया था हू। वहाका हाल मै कह चुका हू। अजमेरमे तो बहुत बुरी बाते हुई है, इसमे शक नही। वहा जलाया भी है, लूट भी हुई, खून भी हुआ। पर बुरी बातको भी ज्यादा बढाकर कहनेसे हम अपना मामला कमजोर कर लेते है। इन तारोमे बात बढाकर कही गई है। अजमेरमे दरगाह शरीफ तो ठीक है। जितना है, उतना कहिए। सरकार अमन कायम करनेकी कोशिश कर रही है। हम उसपर भरोसा करें। भगवानपर भरोसा करे। सब अपनी-अपनी गलतियोको ठीक नही करेंगे तो हिंदुस्तान और पाकिस्तान दोनो मिट जावेंगे।

: १९५ :

१ जनवरी १९४८

भाइयो और बहनो,

आज अंग्रेजी सालका पहला दिन है। आज इतने ज्यादा आदमियोको यहा जमा देखकर मै खुश हू। पर मुझे दुख है कि बहनोको बैठनेकी जगह देनेमे सात मिनट लग गए। सभामे एक मिनट भी बेकार

जानेका मतलव है कि करोडो जनताके वहुतसे मिनट वेकार गए। फिर तो हमारा खातमा है न ? भाइयोको चाहिए कि वहनोको पहले जगह देना सीखे। जिस देशमे औरतोकी इज्जत नही, वह सभ्य नही। दोनोको अपनी मर्यादा सीखनी चाहिए। यही मनु महाराजने वताया है। आजादी मिल जानेके वाद, हम सवको और भी मर्यादाके साथ वरतना चाहिए। मै उम्मीद करता हू कि आगे इससे भी ज्यादा लोग आवेगे। पर जितने लोग आवे, वे प्रार्थनाकी भावना लेकर आवे, क्योकि प्रार्थना ही आत्माकी खुराक है। भगवानके पाससे हमे जो खुराक मिल सकती है, वह और जगह नही मिल सकती। मै उम्मीद करता हू कि जो लोग आए है, वे सव यहा भी शाति रखेगे और जाते वक्त घरोको भी अपने साथ शाति ले जावेगे।

यू० पी०मे हालमे एक हरिजन कान्फरेस हुई थी। कहते है, उसमे एक वजीरने हरिजनोको उपदेश दिया कि आप गदे रहना, गदे कपडे पहनना और शराव पीना छोड दे। इसपर कोई हरिजन वोल पडा कि जैसे सरकार ताडीके दरख्तोको उखाड़कर फिकवा सकती है और शरावकी सव दुकाने वद करा सकती है, वैसे ही वह गदे कपडे भी फुकवा दे, हम नगे रहेगे, पर गदे नहीं। मै उस हरिजन भाईकी हिम्मतको सराहता हू। मै तो ताडीका गुड वना लेता हू। पर मै हरिजन भाइयोसे कहूगा कि असली इलाज उनके अपने हाथोमे है। शराव अगर दुकानपर विकती भी हो तव भी उन्हे जहरकी तरह उससे वचना चाहिए। सच यह है कि शराव जहरसे भी ज्यादा वुरी है। मजदूर लोग घरमे आकर जो दु ख देखते है उसे भुलानेके लिए शराव पीते है। जहरसे शरीर ही मरता है, शरावसे तो आत्मा सो जाती है। खुद अपने ऊपर कावू पानेका गुण ही मिट जाता है। मै सरकार-को सलाह दूगा कि शरावकी दूकानोको वद करके उनकी जगह इस तरहके भोजनालय खोल दे जहा लोगोको शुद्ध और हल्का खाना मिल सके, जहा इस तरहकी किताबे मिले जिनसे लोग कुछ सीखे और जहा दूसरा दिल वहलानेका सामान हो। लेकिन सिनेमाको कोई स्थान न हो। इससे लोगोकी शराव छूट सकेगी। मेरा यह कई देशोका तजुरवा है। यही मैने हिंदुस्तानमे भी देखा और दक्षिण अफ्रीकामे भी देखा था। मुझे इसका पूरा यकीन है

कि शराव छोड देनेसे काम करनेवालोका शारीरिक वल और नैतिक वल दोनो बहुत बढ जाते है और उनकी कमानेकी ताकत भी वढ जाती है। इसलिए सन् १९२०से शराबबदी काग्रेसके कार्यक्रममे शामिल है। अव, जव हम आजाद हो गए है सरकारको अपना वादा पूरा करना चाहिए और आवकारीकी नापाक आमदनीको छोडनेके लिए तैयार हो जाना चाहिए। आखिरमे सचमुचमे आमदनीका भी नुकसान नही होगा और लोगोका तो बहुत वडा लाभ होगा ही। हमारे लिए तरक्कीका यही रास्ता है। यह हमे अपने आप, अपने पुरुषार्थसे करना है।

: १९६ :

२ जनवरी १९४८

भाइयो और वहनो,

नोआखालीमे किसान लोग धूपसे वचनेके लिए यह टोप ओढते है।[1] मैं दो वातोकी वजहसे इसकी वडी कदर करता हू। एक तो मुझे यह एक मुसलमान किसानने भेट किया है। दूसरे यह छतरीका अच्छा काम देता है और उससे सस्ता है, क्योकि सव गावकी ही चीजोसे वना है।

प्रार्थनामे जो भजन गाया गया है, आपने सुना कितना मीठा है। पर यह भजन असलमे सुवहका है। इसमे भगवानसे प्रार्थना की गई है कि उठकर इतजारमे खडे भक्तोको दर्शन दो। यह सत्य है कि ईश्वर कभी सोता नही है। भजनमे तो भक्तके दिलकी भावना है।

हालमे इलाहावादसे मेरे पास एक खत आया है। भेजनेवाले भाईने लिखा है कि थोडेसे भले लोगोको छोडकर किसी मुसलमानपर यह एतवार नही किया जा सकता कि वह हिद सरकारका वफादार रहेगा—

---

[1]पानी वरसनेके कारण गाधीजी नोआखालीका टोप पहनकर आए थे जिसे देखकर लोग हँसने लगे। इसलिए गाधीजीने टोपसे ही शुरू किया।

खासकर अगर हिंदुस्तान और पाकिस्तानमे लडाई हुई। इसलिए थोडेमे नेशनलिस्ट[1] मुसलमानोको छोडकर और सब मुसलमानोको निकाल देना चाहिए। मै कहता हू कि हर आदमीको यही चाहिए कि जबतक कोई बात इसके खिलाफ साबित न हो, वह मुसलमानोकी बातका एतबार करे। अभी पिछले हफ्ते करीब एक लाख मुसलमान लखनऊमे जमा हुए थे। उन्होने साफ शब्दोमे अपनी राष्ट्रभक्तिका ऐलान किया। अगर किसीकी बेवफाई या बेईमानी साबित हो जावे तो उसे गोलीसे मारा भी जा सकता है, गो कि यह मेरा तरीका नही है। पर फिजूलकी बेएतबारी जहालत और बुजदिलीकी निशानी है। इसीसे साप्रदायिक नफरते फैली है, खून बहे है और लाखो बेघरबार किए गए है। यह अविश्वास जारी रहा तो देशके अलग-अलग टुकडे हमेशाके लिए बने रहेगे और आखिरमे दोनो डोमिनियन नष्ट हो जावेगी। भगवान न करे, अगर दोनोमे लडाई छिड गई तो मै तो जिदा रहना पसद न करूगा। पर जो मेरी तरह लोगोमे भी अहिंसामे विश्वास होगा, तो लडाई नही होगी और सब ठीक ही होगा।

: १६७ :

३ जनवरी १९४८

भाइयो और बहनो,

मुझे खुशी है कि आज मै अपना बहुत दिनोका वादा पूरा कर सका और इस कैप[2]के शरणार्थियोसे बाते कर सका। मुझे बडी खुशी है कि यहा जितने भाई है, उतनी ही बहने है। मै चाहता हू आप सब मेरे पास इस प्रार्थनामे शामिल हो कि हमारे मुल्कमे और दुनियामे फिरसे शाति और प्रेम कायम हो। शाति बाहरकी किसी चीजसे, जैसे दौलतसे या महलोसे, नही मिलती। शाति अपने अदरकी चीज है। सब धर्मोने इस सचाईका ऐलान किया है कि जब आदमीको

---

[1] राष्ट्रीय; [2] वेवल कैंटीन।

इस तरहकी शाति मिल जाती है तो उसकी आखो, उसके शब्दो और उसके कामो—सबमें वह शाति टपकने लगती है। इस तरहका आदमी झोपडीमे रहकर भी खुश रहता है और उसकी चिंता नही करता। कल क्या होगा, यह भगवान ही जानते है। रामचद्रजी, जो हमारी तरह आदमी थे, यह पता नही था कि ठीक उसी वक्त जब उनके गद्दीपर बैठनेकी आशा थी, उन्हे वनवास दे दिया जायगा। पर वह जानते थे कि सच्ची शाति बाहरकी चीजोपर निर्भर नही है। इसीलिए वनवासके फैसलेका उनपर कुछ भी असर न हुआ। अगर हिंदू और सिख इस सचाईको जानते होते तो यह पागलपनकी लहर उनपरसे फिर जाती, और मुसलमान चाहे कुछ भी करते, वे खुद शात रहते। अगर ये शब्द हिंदुओ और सिखोके दिलोमे घर कर ले तो मुसलमानोपर तो अपने आप उसका असर जरूर होगा ही।

मैने सुना है कि यह कैप कुछ अच्छी तरह चल रहा है। मै यह बात तबतक पूरी तरह नही मान सकता, जबतक सब शरणार्थी मिलकर इस कैपमे उससे ज्यादा सफाई और तरतीबी न रखे जितनी दिल्ली शहरमे दिखाई देती है। आपको जो मुसीबते भोगनी पडी है वह मै जानता हू। आपमेसे कुछ बडे-बडे घरोके लोग थे। पर आपके लिए उतने ही आराम-की उम्मीद यहा करना फिजूल है। आप सबको सीखना चाहिए कि नई जरूरतोके मुताबिक अपनेको कैसे ढाला जाय और जहातक बन पडे उस हालत[1]को ज्यादा अच्छा बनाना चाहिए। मुझे याद है कि सन् १८९९की बोअर वार[2]से ठीक पहले अग्रेज लोग ट्रासवालको छोडकर वहासे नेटाल गए थे। वे जानते थे कि मुसीबतका कैसे सामना किया जावे। वे सब-के-सब बराबरकी हैसियतसे रहते थे। उनमेसे एक इजीनियर था और मेरे साथ बढईका काम करता था। हम सदियोसे विदेशियोके गुलाम रहे है, इसलिए हमने यह बात नही सीखी। अब जब हम आजाद हुए है—और आजादी कैसी अनमोल बरकत है—मै उम्मीद करता हू कि शरणार्थी भाई-बहन अपनी इस मुसीबतमे भी पूरा फायदा उठाएगे। वे अपने इस कैपको एक ऐसा आदर्श कैप बना देगे कि अगर सारी दुनियासे नही तो सारे हिंदुस्तानसे

---

[1] व्यवस्था; [2] बोअर युद्ध।

लोग आ-आकर इसपर फख्र करे। प्रार्थनामे जो मंत्र पढा गया है उसका मतलब यह है कि हमारे पास जो कुछ है, हम सब भगवानके अर्पण कर दे और फिर जितनेकी हमे सचमुच जरूरत हो, उतना ही उसमेसे ले ले। अगर हम इस मंत्रके अनुसार रहे तो इस कैंपमे ही नही, सारी दिल्लीमे, जो हालमे बदनाम हो गई है, फिरसे नई जान आ जावेगी और हमारे सबके जीवन अंदरके सुखसे भर जावेगे।

: १६८ :

४ जनवरी १९४८

भाइयो और बहनो,

आज यहा तो हर जगह लडाईकी ही बात हो रही है। कहते है कि पाकिस्तान और हिंदुस्तानके बीच शायद लडाई छिड जायगी। अगर लडाई छिड जाती है तो हम दोनोका बडा दुर्दिन है, ऐसा मै मानता हू। और बस हम दोनो आपस-आपसमे सुलहसे नही बैठ सकते है। अभी मै हैरान हुआ कि हिंदुस्तानकी यूनियनने, जो सारी प्रजाका या समग्र प्रजाका मंडल बन गया है, पाकिस्तानको लिखा है। ऐसी जब कोई बात हो जाती तो इस मंडलको इन्साफ करने और लडाई रोकनेके लिए कहा जाता है। इसलिए उनको इंडियन यूनियनने लिखा है कि यह जो कुछ भी है, चाहे मामूली चीज ही हो, लेकिन इसमेसे लडाई छिड सकती है। अच्छा लबा-चौडा लिखकर भेजा है और चूकि वह तारमे जा सकता था इसलिए उससे भेज दिया। उसपर पीछे पाकिस्तानसे एक तो जफरुल्ला साहब और दूसरा लियाकतअली साहबने एक बहुत लबा बयान निकाला है। वे दोनो भाई मुझको कहने देगे कि वह मुझको कोई अच्छी बात नही लगी। तब कहो कि यूनियनके जो सचिव है, उन्होने जो चीज भेजी वह अच्छी लगी क्या? मै कहूगा कि मुझको अच्छी भी लगी और बुरी भी। अच्छी तो यो लगी कि आखिर वे करे क्या? उन्होने मान लिया है कि हम जो कर रहे है वह सही कर रहे है। अगर काश्मीरकी सरहदके बाहरसे लडाई

होती रहे तो जाहिर है कि उनके दिलमें यही होगा कि उसमें पाकिस्तानका कुछ-न-कुछ हिस्सा तो है ही। यह नहीं है, ऐसा यह कहते है। लेकिन उनके कहनेसे तो काम नही निपट सकता। काश्मीर हमारे पास आ गया है। एक शर्तसे हमने उनको यूनियनमे ले लिया है। अगर पाकिस्तान उसको नाराज करे और काश्मीरके नेता शेख अब्दुल्ला यह मागे कि हमको मदद दे दो, तो यूनियन तो मदद देनेके लिए मजबूर हो जाता है। इसलिए मदद तो दी, लेकिन यहा तो इस तरहसे हो रहा है कि पाकिस्तानने मिन्नत करते है कि जो हमलावर हैं उनको वहासे निकल जाना चाहिए और कोई आपसी निपटारा हो जाना चाहिए। अगर यह निपटारा नही होता है तो फिर तो लडाईमें ही फस जाना पडेगा। इस लडाईमें न फसनेके लिए ही उन्होने ऐसा कर लिया है। यह सब ठीक है या नहीं, यह तो ईश्वर ही जानता है। न मैं जानता हू, न कोई और जानता है।

पाकिस्तानमे चाहे कुछ भी था, लेकिन मै तो ऐसे करता कि उनको यहा आनेके लिए कहता। वे यहा आ सकते थे या किसीको भेज सकते थे। इस बारेमे कोई समझौता करनेके लिए हम मिल तो लें। सारी दुनियाको जाहिर तो यह करते है कि हम मिलना चाहते है, लेकिन मिलनेका सामान पैदा नही करते, ऐसा मुझको लगता है। इसलिए पाकिस्तानके जो जिम्मेदार आदमी है उनसे मै तो मिन्नत करूगा कि हमारे दो टुकडे तो हो गए, हालाकि मुझको तो अच्छा नही लगा कि दो टुकडे हो गए, लेकिन हो गए, क्योंकि आप लोग चाहते थे। दो टुकडे होनेके बाद अब ऐसा इकरार तो होना ही चाहिए था कि हम आपसमे सुलहसे रहेगे। मान लिया कि हिंदुस्तानमे तो सब बुरे आदमी रहते है, लेकिन पाकिस्तान तो एक नई पैदाइश है और वह भी धर्मके नामपर या इस्लामके नामपर। तब उसको तो साफ ही रहना चाहिए था। लेकिन वह नही है, ऐसा वे खुद भी तो कबूल करते है। पाकिस्तानमे मुसलमानोने ज्यादतिया नही की, ऐसा वे खुद भी नही कहते हैं। की है, इसलिए मै तो उनसे मिन्नत करूगा कि आपका तो परम धर्म हो जाता है कि जहातक हो सकता है हिंदुस्तानके साथ मिल जाना चाहिए और दोनोको साथ-साथ काम चलाना चाहिए। गलतिया हो गई है दोनोसे, इसमे मुझे कोई शक नही है। लेकिन इसका यह मतलब नही है कि हम गलतिया

करते ही रहे। आखिरमे नतीजा तो यही होगा कि हम दोनो आपसमे लडे और मरे। तव तो सारा हिंदुस्तान एक तीसरी ताकतके हाथ चला जाता है। इससे वुरी वात हिंदुस्तानके लिए, या किसी भी हिंदुस्तानीके लिए, कोई और हो क्या सकती है, यह मेरे जहनसे[1] तो वाहरकी वात है। इसलिए दोनो ताकतोको ईश्वरको दरमियान रखकर आपस-आपसमे मिल जाना चाहिए। आखिर यू० एन० ओ०मे तो यह मामला चला ही गया है। उससे तो कौन छीन सकता है। लेकिन एक ताकत तो उनसे भी यह मामला छीन सकती है और वह यह कि अगर हिंदुस्तान और पाकिस्तान दोनो मिल जाते है तव यू० एन० ओ० मे जो वडे-वडे लोग पडे है, वे तो राजी होनेवाले है। वे कोई नाराज थोडे ही होगे। आखिर उनके हाथमे तो कलम पडी है। वे तो यही कहेगे कि हमारे पास जो चीज आती है उसके लिए हम भी कोशिश करेगे कि दोनो आपसमे मिल जाए, ताकि हमे कुछ करना ही न पडे। ऐसी अगर वे कोई कोशिश न करे तो वे भी आखिर खिलौना थोडे ही है कि कोई हरएक वार्त उसमे ले जाई जाय। जव दोनो मजवूर हो जाए कि आपसमे उनका कोई फैसला हो ही नही सकता है तव वे उसको यू० एन० ओ० मे ले जाते है। एक तो मै यह वात आपको कहना चाहता था। इसलिए हम ईश्वरसे प्रार्थना करते है और जो प्रार्थना यहा करे, वही हम हमेशा अपने घरमे भी करे कि किसी-न-किसी तरह भगवान दोनो हकूमतोको लडनेसे वचा ले। लेकिन हर तरहसे लडनेसे वचा ले, वह प्रार्थना भी हम न करे। मै तो कहता हू कि हे ईश्वर! या तो दोनोको आदर और मोहव्वतके साथमे रख या अगर भीतरसे दुश्मन ही रहते है तो वेहतर यही है कि हमको पेटभरके लडने दे। हम भले ही मूर्ख हो, लेकिन लडने तो दो। पीछे कभी-न-कभी तो शुद्ध हो ही जायगे। आप भी यही प्रार्थना करे।

अव कुछ दिल्लीके वारेमे भी कहना मै मुनासिव समझता हू। यहा क्या हो गया, इसका मुझको रातको ही पता चल गया था। मुझको वृजकिशनजीने वता दिया था। मै भी कल उस तरफ प्रार्थना करने चला

---

[1] अक्लसे।

गया था। मैं तो आ गया था, लेकिन वह कैंप[1] देखने और लोगोंसे बात करनेके लिए वहीं ठहर गए थे। वहांसे कुछ फासलेपर ही चार पांच सौ आश्रित दुःखी स्त्रियां, थोड़े बच्चे और बाकी पुरुष गए। उन लोगोंने क्या किया? किसीसे मारपीट तो नहीं की, ऐसा मैं सुनता हूं। कुछ मुसलमानोंके घर थे, थोड़े उनमें खाली भी थे, मगर जो भी खाली हों, उन्हींमें वे जाकर बैठ जाय, ऐसा थोड़े ही है। लेकिन जिन घरोंमे लोग रहते थे उनपर भी जबर्दस्ती कब्जा करनेकी उन्होंने कोशिश की। पुलिस तो नजदीक ही थी। सुनते ही वह वहा पहुंच गई और सात या साढे-सात बजेसे यह शुरू हुआ और ९ बजेके बाद वह तो अखबारोंमें है। मैंने सुना है, ११ बजेके बाद मामला शात हुआ। पुलिस वहीं रही और जो एक नया शस्त्र निकला है न, अश्रु-गैस, वह भी चलाया गया। उससे लोग परेशान हो जाते है, मरते तो नही है, लेकिन परेशानी तो बहुत होती है। पीछे ये लोग वहासे गए और सुना है कि आज दिनमें भी कुछ हो रहा था। वे वहासे चले नही गए थे।

मै तो कहूगा कि इससे हमको लज्जित होना चाहिए। जो आश्रित लोग है वे दु:खमेंसे भी इतना नही सीखे कि हम मर्यादित है। यह कोई मर्यादा नही है कि हम किसीके घरमें जाकर बैठ जाय। उनके लिए घर या कुछ भी चाहिए वह हकूमतका काम है। आज तो हकूमत भी हमारी हो गई है, लेकिन उस हकूमतको भी वे बेकार करे और जो पुलिस है उसकी भी कोई परवा न करे और किसीके घरमें घुसकर बैठ जाय तो इस तरह तो हमारी हकूमत चलनेवाली नही है। और पीछे दिल्लीमें अर्थात् हिंदुस्तानके पाया-तख्त[2] मे ऐसा हो, जहा इतने लोग पड़े है, बाहरसे बड़े-बड़े एलची यहा आए हुए है। क्या उनको यह देखनेको मिले कि लोग जहा चाहे वहा कब्जा करके बैठ जाते है। पुलिस अगर मिन्नत करे कि मेहरबानी करके जाइए तो कोई मेहरबानी करनेका ही नही। इसपर भी औरतो और बच्चोको आगे रखना तो कोई इन्सानियत नही है। मैं तो उसको हैवानियत मानता हू। हम कोई जगली थोड़े ही है। पुरुष

---

[1] बेवल कैंटोन; [2] राजधानी।

स्त्रियोको आगे रखे वह तो ऐसे ही हुआ जैसा कि मुसलमान बादशाहोके वक्तमे गायोको फौजके आगे रखते थे, ताकि हिंदू लडे ही नही। मै तो उसको भी सभ्यता नही, असभ्यता मानता हू। लेकिन उससे भी वडी असभ्यता मै यह मानूगा कि औरतो और बच्चोको आगे रखे ताकि पुलिस उनपर गैस या डडा न चला सके। वह तो औरतका बहुत बडा दुरुपयोग किया है, ऐसा मै मानूगा। इसलिए जितने दु खी लोग, औरत-बच्चे, सब पडे है, उन सबको मै कहूगा और बहुत विनयके साथ कि वे ऐसा न करे। वे सब शातिसे बैठ जाए। अगर नही बैठते है तो दो हकूमतोका लडना तो दरकिनार रहा, हम आपस-आपसमे ही लडकर ख्वार हो जायगे। हम दिल्लीको गवा बैठेगे और सारी दुनिया हमपर हँसेगी कि ये लोग हकूमतको नही चला सकते है। इनका लोगोपर कोई काबू नही है। हिंदुस्तान आजाद रहे, ऐसा अगर हम चाहते है तो जो चीजे आज हिंदुस्तानमे हो रही है उनसे हम बच जाय। यहा किसी किस्मका उपद्रव न हो, इसके लिए कोई और दूसरा चारा हमारे पास नही है।

: १६६ :

५ जनवरी १९४८

भाइयो और बहनो,

अकुश निकल जानेके कारण बाजारमे बेतहाशा ऊनी और रेशमी कपडा आ गया है। ऊनी और रेशमी कपडेकी कीमत कम-से-कम ५० फी सदी गिर गई है। काफी जगह ६६ प्रतिशत गिरी है।

इस आशासे कि सूती कपडे और सूतपरसे भी अकुश जल्दी ही निकल जायगा, कीमते धीरे-धीरे गिर रही है। अगर सूती कपडेपरसे पूरी तरह अकुश उठा लिया जाय तो कीमत कम-से-कम ६० प्रतिशत गिर जायगी और कपडा भी ज्यादा अच्छा मिलने लगेगा। मिल-मालिकोको एक दूसरेके साथ मुकाबला करना पडेगा। रेशमी और ऊनी कपडेकी तरह, अकुश हट जानेसे सूती कपड़ा भी ढेरो मिलने लगेगा। सूती कपडेपरसे अगर

अकुश उठाया गया तो उसे सफल बनानेके लिए कम-से-कम तीन सालतक हिंदुस्तानमे बाहर कपडा भेजनेकी मनाही होनी चाहिए ।

सरकारी दफ्तरोके आकडे तो जादूका खेल-सा रहते है । वे खुराक और कपडेपरसे अकुश उठानेके रास्तेमे नही आने चाहिए ।

पेट्रोलपर अकुश तो युद्धके कारण लगाया गया था, अब उसकी जरूरत नही है । सच्ची बात तो यह है कि इस कट्रोलसे थोडी-सी ट्रासपोर्ट कपनियोको फायदा पहुच रहा है और वे इसे रखना चाहती है । करोडो जनताका तो इसके साथ कोई सबध ही नही है । यह कहनेकी जरूरत नही कि एक भी बस या ट्रामका मालिक, जिसके पास एक ही रास्तेका लाइसेस है, आज दस-पद्रह हजार रुपया हर महीने कमा रहा है । अगर पेट्रोलपर अकुश न रहे, और गाडिया चलानेमे भी किसी एकके इजारे (स्वत्व) का रिवाज न रहे, तो एक गाडीका मालिक महीनेमे ३०० रु० से ज्यादा नही कमा सकता । आज तो पेट्रोलकी चिट्ठियोकी[1] तिजारत होती है । एक लारीकी पेट्रोलकी चिट्ठी आज किसी ट्रासपोर्ट डीलरके पास दस हजारमे बेची जा सकती है । अगर पेट्रोलपरसे अकुश हटा दिया जाए तो खुराक, कपडे और मकानोका प्रश्न और कई दूसरे प्रश्न, जो आज देशके सामने है, अपने आप हल हो जाएगे । पेट्रोलके राशनिगसे ट्रासपोर्ट कपनिया पैसे कमा रही है, और करोडो लोगोका जीवन बर्बाद हो रहा है । अकुश निकलवाकर आप दुखी जनताकी सहायता करे तब यह देश चद खुशकिस्मतोके रहने लायक ही नही, पर करोडो बदकिस्मतोके रहने लायक भी बनेगा । अकुश लडाईके जमानेके लिए थे । आजाद हिंदमे उनका कोई स्थान नही होना चाहिए ।

मुझे लगता है कि इन आकडोके[2] सामने कुछ कहा नही जा सकता । हो सकता है यह बात मेरा अज्ञान मुझसे कहला रहा है । अगर ऐसा है तो ज्यादा जानकार लोग दूसरे आकडे बताकर मेरा अज्ञान दूर करनेकी

---

[1] कूपन ।

[2] गाधीजीने नीचेके भाव बताते हुए कहा कि देखिए, चीनी इत्यादिका भाव सौ प्रतिशत गिर गया है ।

कृपा करे। मैने ये बाते मान ली है, क्योकि जानकार लोगोका मत भी इसी तरफ है।

जब जनता किसी बातको मानती है और कोई चीज चाहती है तब लोकतत्रमे झिझकको स्थान नही रहता। जनताके प्रतिनिधियोको जनताकी माग ठीक स्वरूपमे रखनी चाहिए, ताकि वह पूरी हो सके। जनताका मानसिक सहकार तो बडी-बडी लडाइया जीतनेमे बहुत मदद दे चुका है।

कहते है कि दुनियामे जितना पेट्रोल निकलता है, उसका एक

आजकलका भाव	नवंबरमे अंकुश उठानेसे पहलेका भाव
चीनी ३७॥) मन	८०)से ८५) मन
गुड़ १३)से १५) मन	..३०)से ३२) मन
शक्कर १४)से १८) मन	३७)से ४५) मन
चीनीके क्यूब ॥≡) फी पैकेट	१॥)से १॥।) फी पैकेट
चीनी देशी ३०)से ३५) मन	७५)से ८०) मन
अनाज	
गेहूं १८)से २०) मन	४०)से ५०) मन
चावल बासमती २५) मन	४०)से ४५) मन
मकई १५)से १७) मन	३०)से ३२) मन
चना १६)से १८) मन	३८)से ४०) मन
मूग २३) मन	३५)से ३८) मन
उटद २३) मन	३४)से ३७) मन
अरहर १८)से १६) मन	३०)से ३२) मन
दालें और तेल	
चनेकी दाल २०) मन	३०)से ३२) मन
मूगकी दाल २६) मन	३६) मन
उड़दकी दाल २६) मन	३७) मन
अरहरकी दाल २२) मन	३२) मन
सरसोका तेल ६५) मन	७५) मन

प्रतिशत ही हिंदको मिलता है। निरुत्साह या निराश होनेका कारण नही। हमारी मोटरे तो चलती ही है। क्या इसका यह मतलब है कि क्योकि हम युद्ध करनेवाले लोग नही, इसलिए हमे ज्यादा पेट्रोलकी जरूरत ही नही, और अगर हमे ज्यादा जरूरत पडे और दुनियामे जितना पेट्रोल निकलता है, उतना ही निकले तो दुनियाके लिए पेट्रोल कम पडेगा? टीकाकार मेरे घोर अज्ञानकी हँसी न करे। मै तो प्रकाश चाहता हू। अगर मै अपना अधेरा छिपाऊ तो प्रकाश पा नही सकता। सवाल यह उठता है कि अगर हमारे हिस्सेमे बहुत कम पेट्रोल आता है, तो काले बाजारमे पैट्रोलका अटूट जखीरा कहासे आता है, और गाडियोका अनावश्यक आना-जाना, बिना किसी तरहकी रुकावटके कैसे चलता है?

पत्र लिखनेवाले भाईने जो हकीकत बयान की है वह सच्ची हो तो चौंकानेवाली चीज है। अकुश अमीरके लिए आशीर्वादरूप है और गरीबके लिए शापरूप, और अकुश रखा जाता है गरीबोकी खातिर। अगर इजारेका रिवाज इसी तरह काम करता है तो उसे एक क्षण भी विचार किए बिना निकाल देना चाहिए।

कपडेके बारेमे तो, अगर खादीको, जिसे आजादीकी वर्दी कहा गया है, हम भूल नही गए तो कपडेपर अकुश रखनेके पक्षमे तो एक भी दलील नही है। हमारे पास काफी रुई है और काफी हाथ है जो देहातोमे चर्खा और कर्घा चला सकते है। हम आरामसे अपने लिए कपडा तैयार कर सकते है। न उनके लिए शोरगुलकी जरूरत है, न मोटर-लारियोकी। पुराने जमानेमे हमारी रेलवेका पहला काम फौजकी सेवा था, दूसरे नबरपर बदरगाहोपर रुई ले जाना और बाहिरसे बना कपडा भीतर ले आना। जब हमारी कैलिको, जिसे खादी कहते है, देहातोमे बनती है, और वही खपती है, तब इस केंद्रीकरणकी कोई जरूरत नही रहती। अपने आलस्य या अज्ञान, अथवा दोनोको छिपानेके लिए हम अपने देहातोको गाली न दे।

: २०० :

६ जनवरी १९४८

भाइयो और वहनो,

आज भी मैंने सुना है कि कई आदमी मुसलमानोके घरमे जानेकी कोशिश कर रहे हैं। तो पुलिस अपना फर्ज अदा करती है और रोकनेकी कोशिश करती है। पुलिस आखिर क्या करे? वह अश्रु-गैस चलाती है। आज मैंने सुना कि पुलिसकी तरफसे ऐसी कोशिश हुई। यहा काफी जगह है। दिल्लीमे जगह नही है ऐसा तो नही है। हा, यह है कि दु खी लोग परेशानीमे पडे है। वे लोग आकाशके ही नीचे रहे, यह तो ठीक नही है। पानी पड जाता है उस समय उनके और आकाशके वीच सिर्फ कपडा रहे तो वह काफी नही है। इसलिए परेशानीमे वे लोग सव कुछ कर लेते है। अगर सचमुच इतनी ही वात है तव तो उन्ही घरोमे जाय, मुसलमानो-के ही मकानोका कब्जा ले, यह जमता नही है। तव मैंने एक भाईको कह दिया कि यह वडा मकान है। इसमे तो काफी लोग आ सकते है, मुझको निकाल दो, एक वीमार औरत है उसको भी निकाल दो, पीछे मालिकको निकाल दो, इसको मै समझ सकता हू। तो वह भाई कहता है कि तुमको तो मिल जायगा, लेकिन हमको कहा मिलेगा! मै तो कहता हू कि वे ऐसा करे, लेकिन कव? जव उनके पास जितना इलाज है, वह न चले और दिल्लीवाले कुछ न करे तव। इसको मै समझ सकता हू। तव मै उनमे कुछ शराफत पाऊगा, लेकिन जिनको हमने डरा रक्खा है या जो भाग गए है, उनके घरोपर कब्जा कर ले या जिनके नजदीकके घर खाली हो गए है, उनके घरोपर कब्जा कर ले या उनके घरोमे वैठना चाहे तो वह अच्छी वात नही है। उससे हमारी भलाई नही हो सकती, शरणार्थियोकी भी भलाई नही हो सकती। हिंदू, मुसलमान, सिख या हिंदुस्तान, किसीकी भलाई नही हो सकती।

आज तो पुलिसने ऐसा किया कि किसी-न-किसी तरहसे उन लोगोको कुछ मकान दे दिए, लेकिन उन लोगोने कहा कि ये मकान नही चाहिए, हमे तो वे ही मकान चाहिए। तो मैं तो कहता हू कि साफ कह दो कि हमे

यहा मुसलमान नही चाहिए । यह शराफत तो नही है, लेकिन इतना तो होगा कि टेढी तरहसे निकालनेके वदले सीधे तौरसे निकाल दे । साफ-साफ कह दो कि हम पाकिस्तानमे हलाक हो गए है तो हम तुमको भी हलाक करेगे । हमको तुम्हारा एतवार नही है । इसको तो मै समझ सकता हू, लेकिन आज जेसा हो रहा है वह पागलपन है ।

हमारे मुल्कमे वदकिस्मतीसे ऐसा हो गया है कि विना सोचे-विचारे कई काम इधर-उधर ऊटपटाग कर वैठते है । लोग कुछ ऐसा समझते है कि हमारा मुल्क आजाद हो गया है, हमारा राज हो गया है तो हम जैसा चाहे वैसा करे । ववईसे खवर आई है कि वहा सल्तनत वडी मुसीवतमे पडी है । वदरगाहके मजदूरोने हडताल कर दी है । इस तरहकी हडतालसे हम मरनेवाले है । इससे जो मजदूर हडताल करते है उनका भी कोई भला नही होनेवाला है । उसमे चाहे किसी दलका हाथ हो, चाहे काग्रेसका हो या समाजवादी दलका हो, या कम्यूनिस्टका हो या और किसी दलका हो, मुझे इसकी परवा नही है । मै तो सवके लिए कहूगा कि इस तरहसे कारोवार नही चलेगा । ऐसा करनेसे हम मरनेकी कोशिश कर रहे है । आज हमारे देशकी स्थिति नाजुक है, इसलिए हमे तो ऐसी कोशिश करनी चाहिए, जिससे हम वच जाय ।

मुझको औंधसे वहाके महाराजा साहवने लिखा है । औध महाराष्ट्रमे एक छोटी-सी रियासत है । उन्होने तो जव अग्रेजी सल्तनत थी तभीसे अपनी रियासतका सव काम वहाके लोगोके हाथ सौप दिया था । उनके और उनके पुत्रके दिलमे हुआ कि प्रजाकी सेवा करनी चाहिए तो उन्होने वहाके लिए खासा निजाम वना लिया, पचायत राज वना दिया और सत्ता उसके सुपुर्द कर दी । तो महाराजा साहव लिखते है कि सव ऐसा कहते है कि आप अकेले ऐसा नही कर सकते, सव करे तव आप करे । उन्होने हिंदुस्तानमे अपनी रियासतको मिलानेका तय तो करीव-करीव कर ही लिया है, तो भी राजा तो रह जाते है, लेकिन लोगोका दास होकर रहते है, लोग उन्हे जितना दे उतना ही वे ले सकते है । खालसा हो गया है, उसके माने यह है कि जैसी रैयत है वैसा ही राजा है । उन्होने ऐसा कर दिया है । सरदार साहवने उडीसासे शुरू

किया कि राजा लोगोको भी कुछ पेंशन दे दी जाय, काम करे चाहे न करे । औंधके राजा साहवको भी पेंशन दे दी जाय और वैठ जाय तो इसे मै अच्छा नही समझता । हा, वे दखल न दे । वे कहते है कि पचायत राज दे दिया है तो उसके मुताविक रियासतमे काम चल सकता है या नही, क्योकि उनसे कहा गया है कि हिंदुस्तानसे जैसी अन्य मिली हुई रियासतोमे काम चलेगा वैसे ही वहा चलेगा, अलग कानून नही हो सकता । मै तो कहूगा कि उसमे कानूनकी जरूरत नही । क्यो ? क्योकि राजा तो है नही, तो कानून कौन वनाए । मै तो कहूगा कि जव हमारी हकूमत है—वह खालसा तो है ही, पचायत है—उसका हक तो कोई एक आदमी छीन नही सकता, तव उसमे डरनेकी क्या वात है ! सच्चा हक तो वही है जो छीना नही जा सके । वह तो धर्मके अमलसे पैदा होता है । उनका यह धर्म हो जाता है कि वे अपना फर्ज अदा करे । अगर कुछ लोग मिल जाते है और कोई गिरोह वना लेते है तो भी क्या ? पूछना क्या था ? पचके मार्फतसे न्याय करेगे । जो अदालते वनी है उनमे नही जायगे । अपने आप सव कर लेगे । वहा ज्यादा लोग गुनाह नही करते है—थोडे आदमी करते है । जो करते है वे भी पचायतके वाहर जानेवाले नही है । सभी लोग ऐसा ही चाहते है । इसका नाम सचमुच प्रजासत्ता या प्रजाराज है । प्रजासत्ता वन गई इसका मतलव यह नही है कि राज दिल्लीसे चले । अगर सचमुच वैसी सत्ता वन जाती है तव तो वह प्रजाके मार्फत ही वनेगी और उसमे देहातके लोग रहेगे । ऐसी जो पचायत है वह काम चलाए । उसमे दखल देनेकी गुजाइश नही । उसमे कोई दखल दे नही सकता । दखल देनेका कानून भी नही वनाया जा सकता, नही तो वह लौकिक राज या पचायत राज नही होगा । तलवारके जरिए पचायत राज नही हो सकता ।

तीसरी वात मै और अभी कह देना चाहता हू । एक भाई लिखते है—वह खासा खत है, हिंदुस्तानीमे है—कि सच्ची चीज तो ऐसी है कि जो मुल्क हमेशा सुखी है वही राम-राज्य हो सकता है । वाहरके मुल्कसे कोई माल लेता नही, ऐसा नही है, लेकिन उतना ही लेना चाहिए जितनी कीमतका माल हम भी भेज सके । तव हिसाव सीधा हो जाता है । अगर

हम वाहरसे माल खरीदनेमे पचास रुपए खर्चे तो उतना वाहरसे भी ग्राना चाहिए, तव तो ठीक है। वह कहते है कि हमारा मुल्क हमेशा ऐसा रहा नही है। हमेशा हम कर्जदार रहे है। अभी ऐसा हो गया है कि हम लेनदार हो गए है, लेकिन कवतक रहेगे अगर हम अभी खर्च ही करते रहे? कहनेका मतलव यह है कि हम वाहरसे उतना माल मगाते नही रहे जितना हम भेजते नही। अगर भेजते है तव ठीक हो जाता है, लेकिन नगद भेजकर मगाते है तो ठीक नही। आज तो हमे ऐसा करना चाहिए कि वाहरसे जो माल मगवाते है वह ज्यादा होना ही नही चाहिए—हम वाहरसे कम माल मगवाए और ज्यादा भेजे तव तो हमारा देश लेनदार देश हो सकता है, तव हमारी जमा वढ जाती है, यानी हमारे पास ज्यादा पैसे हो जाते है। अगर हम ऐसा कर सकेगे तव हम जो काम करना चाहते है कर सकते है, नही तो नही।

एक वात यह है कि हम वाहरसे जो मगवाते है वह हमारे कच्चे मालका पक्का माल वनकर आता है। इससे हमारा सिलसिला वदल जाता है। हमे तो अपने देशको ऐसा वना लेना चाहिए कि वाहरसे मगवानेकी जरूरत ही न रहे। अगर मगवाते है तो दूसरोकी सहायता करनेके लिए। कोई कहे कि हमको कुछ पैसेकी दरकार है तो पैसे है तो भेज दो। वह ठीक कहते है कि ऐसे ही अमरीका वना है। हमे अमरीका-जैसे नही वनना है, लेकिन हम इतना तो कर ले कि हम वाहर ज्यादा भेजे नही तो वाहरसे मगवाए भी नही। तभी हमारी खैर है।

: २०१ :

७ जनवरी, १९४८

भाइयो और वहनो,

अभी सुना है कि विद्यार्थी लोग हडताल करनेवाले है—वह ९ तारीखसे शुरू होनेवाली है। मुझको इसके वारेमे इतना ही कहना है कि यह वहुत गलत वात है। इस तरहसे हडताल करना और उससे

अपना काम निकालना कोई बेहतर चीज नही है—यह अहिसक चीज तो है ही नही, इसके बारेमे मेरे दिलमे कोई सदेह ही नही। मैने बहुत अहिंसक हडताल कराई हैं। हरएक हडताल अहिसक है या हरएक हडताल उचित है, यह नही कहा जा सकता। विद्यार्थी जब विद्याभ्यास करते है तब उनको हडताल क्या करना था और इस तरहसे तो हमारा काम बिगडता है। अगर वे लोग मेरी प्रार्थना माने तो अच्छी बात है। इसके बारेमे भी कहूगा कि अनुभव लेते हुए मुझे करीब पचास वर्ष हो गए। यह अनुभव हिंदुस्तानसे नही, दक्षिण अफ्रीकासे शुरू किया और कामयाब हुआ। मुझे ऐसा कोई ख्याल नही है कि जिसमे पडा उसमे कामयाब नही हुआ। ऐसा हो ही नही सकता। अगर वह सचमुच न्याय है और उसके सिवा दूसरा कोई चारा नही है तो कामयाबी मिलती ही है।

मेरे पास आज पजाब, सिध, सरहदी-सूबा और कहा-कहाके नही थे—सब जगहके भाई आ गए थे, लेकिन सब पाकिस्तानवाले थे। प्रतिनिधि मिलने आए। सब थोडे आ सकते थे। वे अपने दुःखकी कहानी सुना रहे थे। कहते थे कि आप इसके बारेमे दिलचस्पी क्यो नही लेते है? बात तो यह है कि वे बेचारे कहासे जान सकते है कि मै क्या कर रहा हू। मै तो यहा इसी कामसे बैठा हू कि किसीके पाससे करवा सकता हू तो करवाऊ। आज तो मेरी दीन हालत हो गई है। एक जमाना था, जब कि मैने कहा कि ऐसा होना चाहिए तो हो जाता था। आज ऐसी बात नही रही। मै तब भी एक अहिसक सेनापति था—अब जब कोई मानता नही है तो सेनापति कैसा? वह जमाना चला गया। लेकिन उस जमानेमे भी मैने ऐसा कभी दावा नही किया कि मै जो कहता था उसको सब मानते थे, लेकिन लोग मानते थे, जगत मानता था। आज मेरी बात कौन मानते है, मै नही जानता हू। मै जो आज कहता हू वह अरण्यरोदन है, लेकिन धर्मराजने तो ऐसा कहा है कि अकेले रहनेपर भी क्या हुआ, धर्मकी बात तो करनी ही चाहिए। लोग कहते है कि हकूमत है, उसमे तो तुम्हारे दोस्त है, तो तुम जो कहोगे उसको तो वे लोग माननेवाले है। उसके मुताबिक उनको चलना ही चाहिए। बात सच्ची है—वे मेरे दोस्त है, लेकिन मेरे कहनेके मुताबिक वे क्यो चले? आप सब मेरे दोस्त है, इसका मतलब

ऐसा थोडा है कि मै जैसा कहू वैसा करे। दिलमे घुसता है, जमता है तब करे और न करे तो आलसी है। हकूमतमे मेरे दोस्त है तो उनसे बहस करूगा और कहूगा। मान जायगे तो अच्छा है, नही तो मै लाचार हू। वे लोग मुझसे कह सकते है कि हकूमत चलानेमे कई मुश्किलोका सामना करना पडता है, तुम भी हकूमत चलाओगे तब भी वैसा नही कर सकोगे। हकूमतमे आज जो मेरे दोस्त है वे करे, पीछे उनके सेक्रेटरी है वे भी मेरे दोस्त है, क्योकि वे लोग जानते है कि मै किसीका शत्रु नही हू, वे माने, पुलिस है वे भी माने, तो पीछे क्या चाहिए? अगर इस तरहसे हो तो आज जो हिंदुस्तानमे हो रहा है वह होनेवाला नही था। हकूमत कह सकती है कि हमारे पास ऐसे सिपाही, कारकून, कहा है? जो अग्रेजोके जमानेमे थे वे ही है। निकल जाय तो भी काम नही चलता है। ऐसा उन्हे कहनेका अधिकार है। चाहे कुछ भी हो, मै आज जो चाहता हू वैसा करवा नही सकता हू। मै तो आप लोगो-जैसे मिस्कीन हू। मै परमेश्वर तो हू नही। मेरी जितनी ताकत है उतना करता हू।

तो भी वे लोग कहते है—ठीक कहते है—कि इसके बारेमे हम क्या करे। रहनेके लिए कुछ तो होना चाहिए, पहननेको चाहिए और खानेके बारेमे होना चाहिए—तीनो चीजे चाहिए। मेरे पास है तब उनके पास क्यो नही होनी चाहिए—सबके पास क्यो नही होनी चाहिए। उन लोगोने कोई गुनाह किया है, ऐसी बात नही है। शरणार्थियोने कोई गुनाह नही किया है, उन लोगोने मारा नही है, पीटा नही है, हकीकतमे उन्हे डराकर मार-पीटकर, भगा दिया है। वे इस तरहसे है, बेगुनाह है। मेरे भाई है, बहन है, उनपर ऐसा दबाव डाला जाय, अन्याय हो और यहा आनेपर भी आरामसे नही रह सके तो उन्हे ऐसा कहनेका हक है कि तुमको तो सब मिलता है, हमको नही मिलता है, यह कहाका न्याय है? मुझको यह कबूल करना होगा कि यह अन्याय है। तो वे क्या करे? यह तो मैने बता दिया है। किसीके मकानमे जाकर बैठ जाय, यह कहाका तरीका है? हमला करनेका तरीका मैने बता दिया है, अहिंसक हमला करे। किस घरपर हमला करे, यह भी बता दिया है।

मै तो कहता हू कि आप सीधी बात करे और कह दे कि जो काम

हमको दिया जायगा उसको करेंगे—आगे न चले तो बात दूसरी है। जैसे एक आदमीको लिखनेका काम दिया, लेकिन लिख नही सकता था तो क्या करे! एकको कुदाली दी तो वह कहे मुझसे कलम चलती है, इसलिए मुझको वही दो। ऐसा मै नही सुन सकता हू। जो काम दिया जाय उसको करना चाहिए। इसी तरहसे जिस जगह मकान दिया जाय, तबू दिया जाय, उसमे रहे। घास-फूसके जो मकान दे उनमे भी रहना चाहिए। हा, मकान होना चाहिए—ऊपर छत होनी चाहिए। मै उसमे रहा हू, इसलिए कहता हू। चारपाईकी कोई दरकार नही। मै तो बताता हू कि घासमे—हरी घासमे नही, सूखी घासमे—भी कोई भी आदमी आरामसे सो सकता है। उसमे हर्ज नही होता है। रुईवाले गद्देमे सोनेसे जितनी गर्मी मिलती है, उतनी गर्मी सूखी घासमे भी मिलती है, यह मै तजुर्बेकी बात कहता हू। किसी एकके पास गद्दा है तो मुझको भी गद्दा चाहिए, नही तो वैसे ही पडा रहूगा, ऐसा कहना नादानी है। जो मिलता है उसको ईश्वरका अनुग्रह मानकर ले ले, तब तो सब काम हो सकता है। ऐसा करे तो आज जो हमारे साथ चद लाख शरणार्थी पडे है, उतना ही नही, अगर करोड भी हो तब भी काम अच्छी तरह चल सकता है। यहा काफी जगह पडी है। सीधी बात यह है कि उनका दिल साफ होना चाहिए, लेकिन होता है उल्टा।

आपने देखा होगा कि कराचीमे क्या हो गया। लोग कहते थे कि सिंधमे ऐसा नही हुआ है, हो नही सकता है। मै तो कहता था कि सिंधमे हिंदू आरामसे रह नही सकते, हिंदूके सिवा दूसरे भी नही रह सकते, उनका भी रहना दुश्वार है—हिंदू और सिख वहा रह नही सकते। वे वहासे निकलनेके लिए गुरुद्वारा आए थे। तो गुरुद्वारापर हमला शुरू कर दिया, उनपर हमला हुआ, चद आदमी मारे गए, चद जख्मी हुए। इस तरहसे सिंधमे हुआ। हकूमत कहती है कि हालत जितनी जल्दी काबूमे की जा सकती थी, कर ली गई। ठीक है, लेकिन मै इस चीजको इसलिए कहता हू कि ऐसा होना ही नही चाहिए था। मै पाकिस्तानकी हकूमतको कहूगा कि या तो ऐसा होने नही देना चाहिए, नही तो हकूमत छोड देनी चाहिए। हा, ऐसा करनेमे कुछ दिन लुटेरोका राज कायम हो जाएगा, लेकिन पीछे

हालत सुधरने लगेगी। जो मै वहाकी हकूमतको कहता हू वही बात यहाकी हकूमतको भी कहता हू। मै हकूमतकी ऐसी बात नही सुनना चाहता कि लोग नही मानते है। मै कहूगा कि लोग नही मानते है तो आप हकूमत मत चलाइए। हकूमत अगर कहे कि मजबूरी है तो मै कहूगा कि मजबूर होनेकी क्या जरूरत है। थोडा यहा किया, थोडा वहा किया, मनको फुसला लिया कि सब चलता है। तो इससे काम बनता नही है, ऐसा मेरा तजुरबा है। हा, मै ऐसा मान सकता हू कि गाडी हमारी चल तो रही है चाहे वह एक ही कदम आगे गई हो। लेकिन आज तो वह पीछे जा रही है, यह खराब है। पाकिस्तानकी हकूमतको कहता हू तो यहाकी हकूमतको न कहू, यह बात नही हो सकती। मेरे लिए तो दोनो बराबर है।

अगर पाकिस्तानकी हकूमत इस तरह लोगोको मरने देगी तो उससे बेहतर है कि हकूमत चलाना छोड दे। सो नही होता तो हकूमतको भी मरना है। मै आप लोगोको भी बता देना चाहता हू कि इसके कारण आप दीवाने न बने। दुखी है तो गुस्सेसे भरे है—गुस्सेके सिवा ऐसा बन नही सकते। इस गुस्सेको पीना इन्सानियत है। गुस्सेका जवाब गुस्सेसे दे और कहे कि कराचीके गुरुद्वारामे ऐसा हुआ तो हम भी मस्जिदोको ढा डाले, उनपर कब्जा कर ले, पीछे मुसलमानोको मार डाले, यह न्याय नही है। इस तरहसे बदला लेनेसे हकूमत रहती कहा है! हकूमतका काम इस तरहसे चलता नही है। ऐसा करनेसे आखिरमे हमे बिगडना होगा। हा, शरणार्थियोके लिए इन्सान जितनी सहूलियते पैदा कर सकता है, करना चाहिए, नही तो शर्मकी बात है। कराचीमे ऐसा हो गया, उससे न डरना है, न घबराहटमे पडना है और न गुस्सा करना है। उसका बदला हम ऐसे ले सकते है कि हम अच्छी तरहसे रहे। हम यहा ठीक तरहसे रहे, मुसलमानोको रखे और शरणार्थी सभ्यतासे रहे तो आज जो दर्द पैदा हो गया है उसको हम मिटा देनेवाले है, इसमे मुझे कोई शक नही है।

: २०२ :

८ जनवरी १९४८

भाइयो और बहनो,

अभी एक भाई लिखते हैं कि मैंने हरिजनोंको शराबके बारेमें लिखा था। मैंने तो हरिजनोंके लिए ही नही, सबके लिए लिखा था। वे लिखते हैं कि क्या हरिजनोंको शराब छोड देनी चाहिए और पीछे फौजी पडे है, धनिक पडे है उनको क्या छोडनेकी जरूरत नही है? सच्ची बात यह है कि यह प्रश्न पूछने लायक नही है। धनिक न छोडे, फौजी न छोडे तो क्या दूसरे भी न छोडे! कानून भी न हो कि शराब न पीए तो वह धर्म थोडे हो जाता है। दूसरे पाप करे तो क्या हम भी पाप करे, ऐसा बन नही सकता है। वे पूछते है तो मैं कहूंगा कि इस तरहसे जो शराब पीते है उनको तो छोडनी ही चाहिए। हरिजन है, मजदूर है वे इसे समझ नही सकते तो कानून बताता है कि मत पीओ। उनके पास आरामकी चीजे नही रहती है तो शराब पीकर दर्द दूर करना चाहते हैं। कगालपन है उसको भी वे इसीसे भुलाना चाहते है। इस तरहसे उनके ऐसा करनेका कुछ सबब हो सकता है, लेकिन धनिक है, फौजी है उनको पीनेकी क्या जरूरत है? मैं धनिकोको क्या समझा सकता हू? फौजी कहे कि इसके बिना काम कैसे चल सकता है, लेकिन मैं तो फौजको मानता ही नही हू तो फिर इसको क्या माननेवाला हू! मेरे दोस्त भी पडे है जो शराब नही पीते है। हमारे यहा सब पीते है, ऐसा नही है। सब फौजी पीते है ऐसा भी नही है। अग्रेजोमे भी ऐसे पडे है जो शराब नही पीते। ऐसे थोडा है कि मैं चाहता हू कि हरिजन ही छोड दे। मैं तो कहता हू कि सबको छोडना चाहिए। कानूनकी बात तो सबके वास्ते है। कानून थोडे कहता है कि धनिक पी सकते है और हरिजन नही।

अभी विद्यार्थियोकी हडतालकी बात करना चाहता हू। सुनता हू कि काग्रेसके विद्यार्थी हडतालमे शामिल नही होगे। यह तो कम्यूनिस्ट विद्यार्थियोकी हडताल है। विद्यार्थियोमे सब होते है—कम्यूनिस्ट, सोशलिस्ट, काग्रेसी—इनमे मेरा वास्ता नही है। मैं तो सबके लिए कहता हू। काग्रेसके

विद्यार्थी हडताल नही करते है तो वे धन्यवादके पात्र है। कम्यूनिस्ट हडताल कर सकते है, ऐसा थोडा है। जैसे शराबके बारेमे कहा है, वैसा यह भी है। काग्रेस क्या, मै तो सबको कहूगा कि उन लोगोको ऐसा नही करना चाहिए। मुझको दर्द होता है कि कम्यूनिस्ट भाई ऐसा कर रहे है। कम्यूनिस्ट भाई होशियार होते है, वे देशकी सेवा करना चाहते है, लेकिन इस तरहसे देशकी सेवा नही हो सकती। फिर विद्यार्थी किसी दलका पक्ष क्यो ले—विद्यार्थियोका पक्ष एक है। विद्यार्थी तो विद्याभ्यास करते है सारे मुल्कके लिए—अपने कामके लिए नही, अपना पेट भरनेके लिए नही। अपना काम निकालनेका तो दूसरी तरहसे हो सकता है—पहले ऐसा होता था, आजतक ऐसा होता था, लेकिन अब तो बागडोर हमारे हाथमे आ गई है तो विद्यार्थी ज्यादा चाहिए और सच्चे विद्यार्थी चाहिए। उनको सबकी सेवा करनी चाहिए, विद्याभ्यास करना चाहिए, उनको उसको हजम करना चाहिए, उसपर अमल करना चाहिए। विद्यार्थियोके लिए समाजवाद है नही, कम्यूनिज्म है नही, काग्रेस है नही—उसका एक काम है विद्याभ्यास करना, जिससे ज्ञानकी वृद्धि हो। हडताल उनके लिए निकम्मी है—यह सबके लिए घातक है।

एक प्रश्न आ गया है, अच्छा है। वे लिखते है कि आप तो बुरी वस्तुका त्याग करवाना चाहते है, आप भी करते है, यह अच्छी चीज है। तो वे कहते है कि आप पाकिस्तानमे जाकर क्यो नही करते ? वहा सत्याग्रह क्यो नही चलाते ? यहा तो काफी कह दिया, अब वहा तो जाओ। मैने तो इसका जवाब दे दिया है। हा, सत्याग्रह करनेका जवाब नही दिया है। मैने तो कह दिया है कि मै किस मुहसे पाकिस्तान जा सकता हू। यहा हम पाकिस्तानकी चाल चले तो कैसे बन सकता है!

ऐसा आप पूछते है तब जवाब देता हू। मै पाकिस्तान तभी जा सकूगा जब हिंदुस्तानमे साफ हो, कहने लायक कुछ चीज नही हो। मुझे तो यहा करना या मरना है। दिल्लीके हिंदू, सिख पागल हो गए है। वे चाहते है कि यहासे सब मुसलमानोको हटा दिया जाय, काफीको हटा भी दिया है। बाकी बचे है वे भी हटा दिए जाए। ऐसेमे मेरा जाना फजूल है। वहा पाकिस्तानमे जितने हिंदू, सिख पडे है वे आना चाहते है तो

सत्याग्रह कौन करे? आज सत्याग्रह कहा रहा? सत्याग्रह नही तो अहिंसा नही। अहिंसाको आज कौन मानता है? सब हिंसाको मानते है। सब फौज मागते है और जब यह मिले तब राजी हो सकते है, चैनसे बैठ सकते है, नही तो चैनसे नही बैठ सकते। आज ऐसा हो गया है कि ईश्वर-का स्थान फौजको मिल गया है। इसका मतलब यह है कि लोग हिंसाके पुजारी हो गए है। तो हिंसाके पुजारी होते हुए सत्याग्रह कैसे चलाए? मेरी सुने तो अखबारोकी शकल बदल जाय। आज हमारे अखबार भी काफी गदगी फैला रहे है। आज तो हम सत्याग्रहको भूल गए है। वह हमेशा चलनेवाली चीज है, लेकिन चलानेवाले सत्याग्रही नही है।

फिर वह भाई कहते है कि जब पाकिस्तानसे इतने हिंदुओ और सिखोको यहा हटा लिया तब मुसलमानोके लिए जगह कहा है? जबतक उतने मुसलमानोको यहासे हटा नही देते तबतक उनको कहा रखोगे? तो जितने हिंदू और सिख पाकिस्तानसे आए है उतने मुसलमान तो यहासे वहा जाय। मै ऐसा मानता हू कि करीब-करीब उतने मुसलमान तो चले गए। बाकी पडे है। पाकिस्तानसे सब हिंदू और सिखोको हटानेकी चेष्टा हो रही है, इसलिए यहासे सब मुसलमानोको हटाया जाय, यह पागलपन है। यहा मुसलमानोकी काफी तादाद रह जाती है। इसलिए मौलाना साहबने लखनऊमे सम्मेलन बुलाया। वहा, कहते है, कम-से-कम सत्तर हजार लोग आ गए थे—काफी तादाद हो गई। इस जमानेमे मुसलमानोकी इतनी बडी सभा नही हुई। उसके बारेमे भली-बुरी बाते निकलती है। उनको मै छोड देता हू। यहा जो मुसलमान पडे है उनके प्रति-निधि उसमे गए। क्या हम इन मुसलमानोको मार डाले या पाकिस्तान भेज दे? भेजे तो किस वास्ते? यह समझने लायक चीज है। आज मै यही कहूगा कि ऐसा कहना कि मुसलमानोको यहासे हटा दे, मुझको लज्जा-स्पद बात लगती है। मेरी जबानसे ऐसी चीज निकलनेवाली नही है। इसमे कोई बहादुरी नही है। तो हिंदुस्तानमे साप्रदायिकता फैल गई, ऐसा कहना पडेगा। ऐसा दुनियामे कहा नही है? है, तो भी मुझको परवाह नही है। दुनियाकी बुराइयोकी नकल थोडी करनी है, हमे नेकियोकी नकल करनी है।

आज मेरे पास बहावलपुरके काफी लोग आ गए थे। मीरपुर काश्मीरके लोग भी आ गए थे। वे परेशान हैं। वे अदबसे बातें करते थे। वे बैठे थे, इतनेमें पंडितजी आ गए। तो मैंने पंडितजीको कहा कि इनकी बातें सुन लें। मीरपुरवाले पंडितजीसे बातचीत कर गए। मेरी उम्मीद है कि कुछ-न-कुछ हो जायगा। पूरा हो जायगा, ऐसा मैं नहीं समझता हूं। आज लड़ाई छिड़ तो नहीं गई है, लेकिन एक किस्मकी चल रही है। तब ऐसा रास्ता निकालना और सबको एकाएक लाना हो नहीं सकता। जितना हो सकेगा, करेंगे, ऐसा मैं मानता हूं। इतना करनेपर भी अगर कोई न बच सका, न लाया जा सका तो क्या करें। हमारे पास, जितनी चाहिए, उतनी गाड़ियां नहीं हैं। आज तो काश्मीरका रास्ता इतना नहीं खुला है कि लाखों आ-जा सकें। है, थोड़ा-सा रास्ता है, उस रास्तेसे इतनी तादादमें लाना मुश्किल है।

बहावलपुरकी बात सुनने लायक है। वहांके जो लोग आज मुझसे मिले, उन्होंने बताया तो मैंने कहा कि मेरेसे जितना हो सकेगा कोशिश करूंगा। वे लोग कहते हैं और ठीक कहते हैं कि जो सूबेसे आए वे भी शरणार्थी और बहावलपुर रियासतसे आए वे भी शरणार्थी, लेकिन सूबेसे आए वे तो नौकरीके लिए दरख्वास्त कर सकते हैं—ऐसा सिलसिला हो गया है कि नौकरी वगैरा दिलानेके लिए नाम रजिस्ट्री करवाते हैं—तो हमारा नाम क्यों न उसके लिए दर्ज किया जाय? इतनी तकलीफ हम क्यों गवारा[1] करें? मैं समझता हूं कि ऐसा है नहीं और होना नहीं चाहिए। लेकिन वे लोग कहते हैं—अच्छे आदमी हैं तो मैंने कहा कि पता लगाऊंगा। हकूमतमें ऐसे पड़े हैं, उनके पास सब पहुंच नहीं सकते हैं। मेरे पास तो सब आ सकते हैं। मैं तो इसी कामके लिए पड़ा हूं। मेरा दूसरा काम नहीं है। तो वे सब आ गए थे, सब अदबसे बातचीत करते थे, वहशियाना बात नहीं करते थे। वे कहते थे कि ऐसा नहीं है तो ठीक है, लेकिन हम इसको बर्दाश्त नहीं करेंगे। हम कुछ नहीं हैं, क्योंकि हम रियासतसे आए और खालसासे आते तो बात दूसरी थी। यह कहांका न्याय है?

---

[1] सहें।

सरहदी सूवा, पजाव, सिधसे आते हे उनकी दरखास्त ली जाती है, नही तो नही। मैंने कहा कि ऐसा हो नही सकता। अगर हुआ है तो गलतीसे हुआ है। सरदारने कहा कि ऐसा हो नही सकता और हुक्म भी यह निकाला तव भी नही होता है। है कि नही, मै पता लगाऊगा, लेकिन मुझको लगा कि इतना भी कह दू तो इतमीनान हो जायगा कि चलो, हमारा काम भी चलता है।

: २०३ :

९ जनवरी १९४८

भाइयो और वहनो,

आज वहावलपुरके मदिरके मुखिया मुझसे मिलने आए थे। उन्होने मुझसे वताया कि वहा उस मदिरमे शरणार्थियोको किस तरह मारा गया। उन्होने कहा कि अव वहाके वचे हिंदुओको लानेके लिए कुछ प्रवध होना चाहिए। तो मैने कहा कि एक इन्सानसे जितना हो सकता है कर रहा हू। आज हकूमत दो हो गईं तो दो राजा हो गए है, इसलिए इस राज्यको उस राज्यमे दखल देनेका ऐसा कोई हक नही है। आजका समय इतना नाजुक है कि लोगोमे धैर्य होना चाहिए और लोगोको मरनेसे डरना नही चाहिए, क्योकि आज नही तो कल आखिर मरना ही है तो वहादुरीके साथ क्यो न मरे? (सत्याग्रही की तरह क्यो न मरें?)

एक भाईका पत्र आया है। वे कहते है कि आप विडला-भवनमे है तो भी प्रार्थना तो होती ही है, लेकिन गरीव वहा नही जा सकते। पहले भगी वस्ती या वाल्मीकि-वस्तीमे रहते थे, उसमे गरीव भी जाते थे; लेकिन अव उनको विडला-भवनमे जानेका मौका नही मिलता। मेरा तो खयाल है कि मै जव यहा आया था तभी इसके वारेमे कह दिया था, लेकिन आज दुवारा कहनेकी आवश्यकता है। मै अवकी वार जव यहा आया उस समय मार-पीट हो रही थी। दिल्ली स्मशान-सी लगती थी। उस समय भगी-वस्तीमे शरणार्थी भी पडे थे। फिर उस समय कहापर क्या

होगा कोई नही जानता था। तो सरदारने कहा कि हम तुमको वहा नही रखेगे, बिडला-भवनमे रखेगे, तो मै यहा आ गया। मैने कहा कि मैने ऐसी कोई शपथ थोडी ले ली है कि मै हर हालतमे वही रहूगा। मुझको किसी जगह एक कमरा देते तो उससे गुजर हो नही सकती, क्योकि मेरे साथ दफ्तर रहता है, रसोई-घर रहता है, और भी लोग रहते है। भगी-वस्तीमे गरीबोके मकान है, फिर उसमे स्कूल है, उसमे एक कमरा मिले तो काम चल नही सकता। इसलिए वहा कैसे जाऊ? मै यह भी नही जानता कि आज वह खाली है या नही। लेकिन मै समझता हू कि वहा रहनेका मेरा धर्म नही है। मै चला जाऊ पीछे शरणार्थी आए तो उनको कहा रखोगे--रखना तो है ही। मै रहूगा तो कोई निकालेगा नही, निकाले तो अच्छा है। वे कह सकते है कि तुम भाग जाओ, यहा रहनेका तुम्हारा क्या अधिकार है, हम बाहरसे आए है। इसलिए मुझको अपनी मर्यादा समझनी चाहिए। मुझे वहा रहनेका शौक है, लेकिन शौक छोडकर यहा पडा हू। फिर ऐसा नही है कि गरीब यहा नही आ सकते। ऐसी मनाही नही है, लेकिन मै मानता हू कि इतनी दूरसे नही आ सकते। वे अगर आना चाहते है तो पैदल ही आ सकते है, मोटरसे तो गरीब आ नही सकते। अमीर मोटरसे आ सकते है।

फिर आज मै यहा पडा हू तो मुसलमानोको तो कुछ मदद पहुचा सकता हू---उस कामके लिए मेरा यहा रहना बडा मुफीद है। मै यहा रहता हू तो हकूमतके लोगोसे जल्दी मिल सकता हू, क्योकि वे पासमे रहते है---वे मुझको नही बुलाते है, खुद आ जाते है, यह उनकी मेहरबानी है। वे लोग यहा दो मिनटमे आ जाते है। भगी-वस्ती जानेमे दस-पद्रह मिनट लगते है। इसलिए यहा पडा हू। मुसलमान भाइयोको भी यहा आनेमे सुविधा है, वहा जानेमे डर रहता है। आज जो रह गए है उनको बचा ले तो अच्छा है। आज तो जिधर सुनता हू उधर ऐसा हो रहा है कि एकाएक लुटेरे निकल आते है और कोई आदमी बाइसिकलमे बैठा हो तो उसको उतार देते है और उसके पास जो कुछ पैसा, रुपया, घडी रहती है उसको ले लेते है। कोई मोटरमे रहता है उसको भी रोककर उसके पाससे सब छीन लेते है। हम आज ऐसे बन गए है। यह हमारे हिदुस्तानके लिए शर्मकी बात है।

: २०४ :

१० जनवरी १९४८

भाइयो और बहनो,

यह देखने लायक बात है कि आज हम कहातक गिर गए है। साधु होनेका, सयमका, गीता आदि पढनेका जो दावा करते है, वे इतना सयम क्यो न रखे ? उन्हे एक बार कहनेसे ही बैठ जाना चाहिए[1]। इतनी दलील भी क्यो ? आजकल प्रार्थना-सभामे आम तौरसे सब लोग इतनी शाति रखते है, वह अच्छा लगता है।

बहावलपुरके भाइयोकी भी ऐसी ही बात है। अपने दु खकी बात कहिए, फिर प्रार्थनामे शात रहिए। मुझसे किसीने कहा था कि बहावलपुर-वाले भाई आज हमला करनेवाले है। प्रार्थनामे चीखते ही रहेगे। मैने कहा, ऐसा हो नही सकता। उनका नमूना सबके सामने रखता हू। उनके दु खका मै साक्षी हू। वे इतमीनान रखे कि वहाके सब हिंदू-सिख आ जायगे। नवाब साहबका वचन है—अगरचे मै नही जानता कि राजा लोगोके वचनपर कितना भरोसा रखा जा सकता है—पर नवाब साहब कहते है, "जो हो चुका सो हो चुका। अब यहापर हिंदुओ और सिखोको कोई दिक नही करेगा। जो जाना ही चाहेगे उन्हे भेजनेका इतजाम होगा। जो रहेगे, उन्हे कोई इस्लाम कबूल करनेकी बात नही कहेगा।" हो सकता है, वहा सब सही-सलामत हो। यहाकी हकूमत भी बेफिकर नही है। मै आशा रखता हू कि अभी वहा सब लोग आरामसे है। आप कहेगे, वे आज ही क्यो नही आते ? आपको समझना चाहिए कि पहले मुल्क एक था। अब हम दो हो गए है। वह भी एक दूसरेके दुश्मन। अपने देशमे परदेशी-से बन गए है। सो जो हो सकता है सो करते है। वहा तो सत्तर हजार हिंदू-सिख पडे है। सिंधमे और भी ज्यादा है। वे वहा सुरक्षित नही।

---

[1] भाषणमे पहले साधुके कपडे पहने हुए एक भाईने जिद की कि वे अपना खत गाधीजीको पढ़कर सुनावेंगे। गाधीजीको काफी दलील करके उन्हे रोकना पड़ा। प्रार्थनाके बाद गाधीजीने भाषण उसीमे शुरू किया।

खबरे जाती है। उससे आगे क्या होगा, सो पता नही। मगर हम इस बारेमे होशियार है।

एक भाई लिखते है—"अनाज वगैराका अकुश हटवा दिया और हटवानेकी कोशिश करते है। कई लोग कहते है, यह अच्छा है। पर दरअसल ऐसा नही। मै आपको जताए देता हू।" मै इन भाईको जानता हू। मैने उन्हे लिखा है—आपने कहा तो अच्छा किया, पर मुझतक लिखकर ही मौकूफ रखेगे तो हारेगे। एक तरफसे मुझे इतने मुवारकवादीके तार आते है, उनको मै फेक नही सकता। मै भविष्यवेत्ता नही और न मेरे दिव्यचक्षु है। जितना इन आंखोसे देख सकू, कानोसे सुन सकू, वही मेरे पास है। मेरे हाथ, पाव, कान, आख, सब जनता है। आप अपने विचार सबसे कहे। धन्यवाद देनेवाले बहुत है, मगर मै दूसरा पहलू भी जानना चाहता हू। मै कहू इसलिए आप कोई बात न माने। अपनी आखोसे देखे सो करे, मेरे कहनेसे नही। २० महात्मा कहे तो भी नही। तजरबेमे गलती करके आप सीखेगे। जो ठीक लगे सो करे। ऐसा करेगे तभी आप आजादीको रख सकेगे और उसके लायक बन सकेगे।

: २०५ :

११ जनवरी १९४८

भाइयो और बहनो,

अभी एक चीज आई है—वह करुणाजनक है। आश्रमे दो खत आए है। एक तो बूढे बुजुर्गका है, मै उनको पहचानता हू। वह हमेशा कहासे खत लिखे, लेकिन इस वक्त लिखा। दूसरा खत एक नौजवान भाईका है, उनको मै नही पहचानता हू। मेरे पास नाम दोनोके है, लेकिन नामको आप जानते नही है तब देनेमे क्या फायदा। दोनोका मतलब यह है कि जबसे पद्रह अगस्त आया है तबसे लोगोके दिलमे ऐसा आ गया है कि अभी हमारा क्या है। अग्रेजोका डर था वह रहा नही, सजाका डर नही है, अब किसीका डर नही है। भगवानका डर कौन

पहचानता है। आध्रमे तो लोग तगडे रहते है। जब ऐसे रहते हैं और आजाद हो जाते है तब काबूके वाहर चले जाते हैं। तो अब ऐसे बाहर चले गए है कि पेट भरनेका काम करते है, दूसरा नही करते। एक भाई लिखते है कि काग्रेसमे ऐसे-ऐसे लोग थे, जिनका कोई स्वार्थ नही था–हिदुस्तानको आजाद करनेके लिए बलिदान कर दिया तो क्या इस कारण किया ? आज काग्रेस गिरती जा रही है। काग्रेसमे जितने हैं वे सब असेम्बलीके सदस्य बनते हैं। सदस्य बनकर देशका काम नही करते, अपना करते हैं । सदस्य बनते हैं तो कम पैसे नही मिलते—मैं भूल गया हू कि कितना मिलता है, लेकिन काफी मिलता हैं जिससे सदस्य बननेवालेका पेट भर जाता है। तो वे लिखते है कि इस तरहसे पैसा खाते है। इतना ही नही, सिविल कर्मचारियोको डराते हैं। कहते हैं कि नही मानोगे तो तुम्हारा ऐसा हो जायगा। बेचारे पेट भरनेके लिए तो काम करते है, क्या करे। इस तरहसे दोनो तरफसे बिगडते हैं—हमारे दफ्तरमे पडे है वे बिगडते है और प्रतिनिधि कहलाते है वे बिगडते है। लोगोको समझना चाहिए कि किसको अपना मत दे, लेकिन आज तो ऐसा है नही। वे दु खसे यह बात लिखते हैं—दोनो ऐसा लिखते है । बुजुर्ग आदमीको बुरा लगता है तो वे कहते है कि यहा तुम रहो कुछ दिन और देखो–यह अच्छा लगता है। मैं आध्र क्या, सबके बीच रहा हू । मैं नही जानता हू कि ऐसा नही है। यह आध्रका है, या मद्रासका है या किसी भी प्रातका है, मुझसे छिपा नही है। मेरे लिए तो सब हिदुस्तानके है। हिदुस्तान-मे पडे है, फिर अलग-अलग भाषा है तो उसमे क्या। कोई कहे कि मै तो आध्रका हू, देशसे मेरा वास्ता नही हो सकता है। तो मुझको भी उनसे वास्ता नही हो सकता। तो मैंने सोचा कि इतना कह तो दू । मेरी आवाज वहातक पहुचे तो अच्छा है, जिससे वे समझ जाय कि किस तरहसे काम करे।

वे लिखते है कि इस तरहसे हमारा दु ख है और यह गदगी हमारेमे फैल गई है। इसको मिटानेके लिए ज्यादा भेजे तो ज्यादा गदगी होती है। दूसरा वे कहते एक जगह एक हजार भेजने है तो हजारमे गदगी फैलती है, यह मेरी निगाहमे ऐसा है कि एक ही आदमीको गदा करने दो, उसको हटानेमे दुश्वारी नही होती है, लेकिन अगर एकके बदलेमे एक हजार भेजे

तो ज्यादा विगडता है। तो वे लिखते है कि जितने सदस्य है उन्हे कम तो करो, इससे कम गदगी होगी—पीछे ज्यादा गदे आदमी जा नही सकते—वे सच्चे प्रतिनिधि तो वनते नही है, वे पेट भरते है, यह वुरी वात है। पीछे काग्रेसपर कब्जा करनेकी कोशिश करते है। फिर और दूसरी वाते पड़ी है, कम्यूनिस्ट है, समाजवादी है, ऐसे लोग पडे है। वे भी आपसमे ऐसा कहते है कि हम वडे हो गए, हम सारे हिंदुस्तानपर कब्जा कर लेगे। तो हिंदुस्तान किसपर कब्जा करेगा। काग्रेसमे भी यही है, समाजवादियोमे भी यही है, कम्यूनिस्टमे भी यही है, तो मै सवसे कहूगा कि हम हिंदुस्तानके वने, हिंदुस्तान हमारा न वने। हिंदुस्तान एक-एकका वने तो हिंदुस्तान कहा जाय। इसलिए हिंदुस्तानको अपनाते है तो अपना पेट भरनेके लिए नही, अपने रिश्तेदारोको पैसा देनेके लिए नही, अपने रिश्तेदारोको नौकरिया देनेके लिए नही। मै तो कहूगा कि यह काम हमारा पहले दर्जेका होना चाहिए, नही तो हमारा काम विगड जाता है।

वहने वाते कर रही है, यह वुरी वात है। ऐसा करना है तो यहा आकर भाषण दे। मै जो यह कह रहा हू उसे शायद सुनती ही नही है—सुननेके लिए यहा थोडे आती है। इतवार है तो गुनाह हो गया। सव आ जाते है, सुननेको नही, जिसको कुछ काम नही यहा आकर वैठ जाते है।

: २०६ :

मौनवार, १२ जनवरी १९४८

भाइयो और वहनो,

सेहत सुधारनेके लिए लोग सेहतके कानूनोके मुताविक उपवास करते है। जब कभी कुछ दोष हो जाता है और इन्सान अपनी गलती महसूस करता है तव प्रायश्चित्तके रूपमे भी उपवास किया जाता है। इन उपवासोमे उपवास करनेवालेको अहिंसामे विश्वास रखनेकी जरूरत नही, मगर ऐसा मौका भी आता है जब अहिंसाका पुजारी समाजके किसी अन्यायके सामने विरोध प्रकट करनेके लिए उपवास करनेपर मजबूर हो जाता है। वह

ऐसा तब ही करता है, जब अहिंसाके पुजारीकी हैसियतसे उसके सामने दूसरा कोई रास्ता खुला नही रह जाता। ऐसा मौका मेरे लिए आ गया है।

जब ९ सितबरको मैं कलकत्तेसे दिल्ली आया था तब मैं पश्चिमी पजाब जा रहा था। मगर वहा जाना नसीबमें नही था। खूबसूरत रौनकसे भरी दिल्ली उस दिन मुर्दोंके शहरके समान दीखती थी। जैसे ही मैं ट्रेनसे उतरा, मैंने देखा कि हरएकके चेहरेपर उदासी थी। सरदार जो हमेशा हँसी-मजाक करके खुश रहते है, वे उस उदासीसे बचे नही थे। मुझे उस समय इसका कारण मालूम नही था। वे स्टेशनपर मुझे लेनेके लिए आए थे। उन्होने सबसे पहली खबर मुझे यह दी कि यूनियनकी राजधानीमें झगडा फूट निकला है। मैं फौरन समझ गया कि मुझे दिल्लीमें ही करना या मरना होगा। मिलिटरी या पुलिसके कारण आज दिल्लीमे ऊपरसे शाति है, मगर दिलके भीतर तूफान उछल रहा है। वह किसी भी समय फूटकर बाहर आ सकता है। इसे मैं अपनी करनेकी प्रतिज्ञाकी पूर्ति नही समझना, जो ही मुझे मृत्युसे बचा सकती है—मृत्युसे, जिसके समान दूसरा मित्र नही। मुझे बचानेके लिए पुलिस और मिलिटरीके द्वारा रखी हुई शाति ही बस नही। मैं हिंदू, सिख और मुसलमानोमे दिली-दोस्ती रखनेके लिए तरस रहा हू। कल तो ऐसी दोस्ती थी। आज उसका अस्तित्व नहीं है। यह ऐसी बात है कि जिसको कोई हिंदुस्तानी देशभक्त, जो इस नामके लायक है, शातिसे सहन नही कर सकता।

मेरे अदरसे आवाज तो कई दिनोसे आ रही थी, मगर मैं अपने कान बद कर रहा था। मुझे लगता था कि कही यह शैतानकी यानी मेरी कमजोरीकी आवाज तो नही है। मैं कभी लाचारी महसूस करना पसद नही करता। किसी सत्याग्रहीको नही करना चाहिए। उपवास तो आखिरी हथियार है। वह अपनी या दूसरोकी तलवारकी जगह लेता है।

जो मुसलमान भाई मुझसे मिलते रहते है उनके इस सवालका कि 'वे अब क्या करे' मेरे पास कोई जवाब नही। कुछ समयसे मेरी यह लाचारी मुझे खाए जा रही है। उपवास शुरू होते ही यह मिट जाएगी। मैं पिछले तीन दिनसे इस बारेमे विचार कर रहा हू। आखिरी निर्णय बिजलीकी तरह मेरे सामने चमक गया है और मैं खुश हू। कोई भी इन्सान, जो पवित्र

है, अपनी जानसे ज्यादा कीमती चीज कुरबान नही कर सकता। मै आशा रखता हू और प्रार्थना करता हू कि मुझमे उपवास करनेके लायक पवित्रता हो। नमक, सोडा और खट्टे नीबूके साथ या इन चीजोके वगैर पानी पीनेकी मै छूट रखूगा। उपवास कल सुवह पहले खानेके वाद शुरू होगा।

उपवासका अर्सा[1] अनिश्चित है और जब मुझे यकीन हो जाएगा कि सब कौमोके दिल मिल गए है, और वह बाहरके दबावके कारण नही; मगर अपना-अपना धर्म समझनेके कारण, तब मेरा उपवास छूटेगा।

आज हिंदुस्तानका मान सब जगह कम हो रहा है। एशियाके हृदयपर और उसके द्वारा सारी दुनियाके हृदयपर हिंदुस्तानका रामराज्य आज तेजीसे गायब हो रहा है। अगर इस उपवासके निमित्त हमारी आखे खुल जाय तो यह सब वापिस आ जायगा। मै यह विश्वास रखनेका साहस करता हू कि अगर हिंदुस्तानकी आत्मा खो गई तो तूफानोसे दु खी और भूखी दुनियाकी आशाकी आखकी किरणका लोप हो जायगा।

कोई मित्र या दुश्मन—अगर ऐसे कोई है तो—मुझपर गुस्सा न करे। कई ऐसे मित्र है, जो मनुष्य-हृदयको सुधारनेके लिए उपवासका तरीका ठीक नही समझते। वे मेरी बर्दाश्त करेगे और जो आजादी अपने लिए चाहते है, वह मुझे भी देगे। मेरा सलाहकार एकमात्र ईश्वर है। मुझे किसी औरकी सलाहके बिना यह निर्णय करना चाहिए। अगर मैने भूल की है और मुझे उस भूलका पता चल जाता है तो मैं सबके सामने अपनी भूल स्वीकार करूगा और अपना कदम वापस लूगा। मगर ऐसी सभावना बहुत कम है। अगर मेरी अतरात्माकी आवाज स्पष्ट है, और मै दावा करता हू कि ऐसा है, तो उसे रद नही किया जा सकता। मेरी प्रार्थना है कि मेरे साथ इस वारेमे दलील न की जाय और जिस निर्णयको बदला नही जा सकता, उसमे मेरा साथ दिया जाय। अगर सारे हिंदुस्तान-पर या कम-से-कम दिल्लीपर, ठीक असर हुआ तो उपवास जल्दी भी छूट सकता है। मगर जल्दी छूटे या देरसे छूटे या कभी भी न छूटे, ऐसे नाजुक मौकेपर किसीको कमजोरी नहीं दिखानी चाहिए।

---

[1] अवधि।

मेरे जीवनमे कई उपवास आए है। मेरे पहले उपवासोके वक्त टीकाकारोने कहा है कि उपवासने लोगोपर दवाव डाला और अगर मै उपवास न करता तो जिस मकसदके लिए मैने उपवास किया, उसके स्वतत्र गुण-दोषके विचारसे निर्णय विरुद्ध जानेवाला था। अगर यह सावित किया जा सके कि मकसद अच्छा है तो विरुद्ध निर्णयकी क्या कीमत है। शुद्ध उपवास भी शुद्ध धर्मपालनकी तरह है। उसका फल अपने आप मिल जाता है। मै कोई परिणाम लानेके लिए उपवास नही करना चाहता। मै उपवास करता हू, क्योकि मुझे करना ही चाहिए।

मेरी सबसे यह प्रार्थना है कि वे शात चित्तसे इस उपवासका तटस्थ वृत्तिसे विचार करे और यदि मुझे मरना ही है तो मुझे शातिसे मरने दे। मै आशा रखता हू कि शाति तो मुझे मिलने ही वाली है। हिंदुस्तानका, हिंदू-धर्मका, सिखधर्मका और इस्लामका वेवस वनकर नाश होते देखना इसकी निस्वत मृत्यु मेरे लिए सुदर रिहाई होगी। अगर पाकिस्तानमे दुनियाके सव धर्मोके लोगोको समान हक न मिले, उनकी जान और माल सुरक्षित न रहे और यूनियन भी पाकिस्तानकी नकल करे तो दोनोका नाश निश्चित है। उस हालतमे इस्लामका तो हिंदुस्तान और पाकिस्तानमे ही नाश होगा—वाकी दुनियामे नही—मगर हिंदू-धर्म और सिख-धर्म तो हिंदुस्तानके वाहर है ही नही।

जो लोग दूसरे विचार रखते है, वे मेरा जितना भी कडा विरोध करेगे, उतनी मै उनकी इज्जत करूगा। मेरा उपवास लोगोकी आत्माको जाग्रत करनेके लिए है, उसे मार डालनेको नही। जरा सोचिए तो सही, आज हमारे प्यारे हिंदुस्तानमे कितनी गदगी पैदा हो गई है। तव आप खुश होगे कि हिंदुस्तानका एक नम्र पूत, जिसमे इतनी ताकत है, और शायद इतनी पवित्रता भी है, इस गदगीको मिटानेके लिए ऐसा कदम उठा रहा है, और अगर उसमे ताकत और पवित्रता नही है तव वह पृथ्वीपर वोझरूप है। जितनी जल्दी वह उठ जाए और हिंदुस्तानको इस वोझसे मुक्त करे, उतना ही उसके लिए और सवके लिए अच्छा है। मेरे उपवासकी खवर सुनकर लोग दौडते हुए मेरे पास न आवे। सव अपने आसपासका वातावरण सुधारनेका प्रयत्न करे तो वस है।

: २०७ :

१३ जनवरी १९४८

भाइयो और वहनो,

मेरी उम्मीद है कि मै पद्रह मिनटमे जो कहना है, कह सकूगा । वहुत कहना है, इसलिए शायद कुछ ज्यादा समय भी लगे ।

आज तो मै यहा (प्रार्थना-सभामे) आ सका, क्योकि जव कोई फाका करता है तव पहले दिन—चौवीस घटेतक—तो किसीको कुछ लगना न चाहिए । मैने तो आज साढे नौ वजे खाना शुरू किया । उसी समय लोग आते रहे, वात करते रहे तो खाना ग्यारह वजे पूरा कर सका । सो आजके दिनकी तो कीमत नही । इसलिए आज प्रार्थना-सभामे आ सका हू तो किसीको आश्चर्य नही होना चाहिए । आज तो आ-जा सकता हू, वैठ सकता हू और सव काम भी किया है । कलसे डर है । मै यहा आऊ और फिर न वोलू, इससे अच्छा तो वही पडा रहकर विचार कर सकता हू । आखिर भगवानका नाम लेना है तो वही लूगा । कलसे आपके सामने प्रार्थनामे आना मेरे लिए मुश्किल मालूम होता है । मै आना चाहू और न आ सकू, लेकिन प्रार्थना आप सुनना चाहते है तो आप आ सकते है । लडकिया तो प्रार्थना करने आएगी— सव नही तो एक आ जायगी । आप प्रार्थना तो कर सकते है । मेरे यहा आनेकी आशासे तो आपको निराशा हो सकती है ।

मैने उपवास किया तो है, लेकिन कई पूछते है कि आप क्या कर रहे है ? मुसलमानने गुनाह किया, हिंदूने गुनाह किया या सिखने गुनाह किया ? किसने गुनाह किया ? फाका कवतक चलनेवाला है ? ठीक है, जो पूछते है कि क्या इल्जाम हमपर है ? मै कहता हू कि इल्जाम किसीपर नही है । मै इल्जाम लगानेवाला कौन हू ? हा, मैने सुनाया तो कि हम गुनहगार वन गए है, लेकिन कोई एक आदमी गुनहगार थोडा है ! हिंदू मुसलमानको हटाते है तो अपने धर्मका पालन नही करते और आज तो हिंदू और सिख दोनो साथ करते है । लेकिन मै सव हिंदुओ या सव सिखोपर भी इल्जाम नही लगाता हू, क्योकि सवने थोडे किया ।

यह समझने लायक बात है। न समझे तो मेरा काम नही होगा और फाका भी बद नही होगा। अगर मैं अपनेको जिदा नही रख सका तो इसका इल्जाम किसीपर नही है। मैं नालायक सिद्ध होता हू तो ईश्वर उठा लेगा। मुझको उठा ले तो कौन-सी बडी बात है? तो मुझसे पूछते हैं कि इसका मतलब यह हुआ कि तुम मुसलमान भाईके लिए करते हो? ठीक कहते है। मैं कबूल करता हू कि मैंने उनके लिए तो किया। क्यो? क्योकि आज मुसलमान यहा तेजी[1] खो बैठे है—हकूमतका एक किस्मका सहारा था कि इतनी जगह मुसलमानोकी है, मुस्लिम लीगकी भी यहा चलती है, वह अब रही नही। आज यहा मुस्लिम लीग नही रही, मुस्लिम लीगका सहारा सच्चा नहीं है— पीछे लडाई करते है, यह बात दूसरी है—बाकी उनकी हकूमत नही रही। लीगने दो टुकडे करवा दिए। इसीलिए दो हिस्से बन गए। इसके बाद भी मुसलमान यहा रहते है। मेरा तो हमेशा ऐसा मत रहा है कि जो थोडे रहते है, उनकी मदद की जाय। ऐसा करना मनुष्यमात्रका धर्म है।

यह आत्म-शुद्धिका उपवास है तो सबको शुद्ध होना चाहिए। सबको शुद्ध होना ही नही है तो मामला बिगड जाता है। सबको शुद्ध होना है तो मुसलमानको भी होना है। सबको साफ-सुथरा और शुद्ध बन जाना है और मुसलमान कुछ भी करें, उनका कोई दोष नही निकालना है। आत्म-शुद्धिका उपवास इस तरहसे नही हो सकता। अगर मैं कहू कि मैंने किसीके सामने गुनाह किया तो वह प्रायश्चित्त है। जिसके सामने हम गुनाह कबूल करते हैं वह प्रायश्चित्त है।

मैं जब कहता हू तब मुसलमानकी खुशामद करने या किसी और दूसरेकी खुशामद करनेके लिए नही कहता हू। मैं तो अपनेको राजी रखना चाहता हू। इसका मतलब यह है कि मैं ईश्वरको राजी रखना चाहता हू। मैं ईश्वरका गुनहगार नही बनना चाहता। मैं तो कहूगा कि मुसलमान-को भी शुद्ध बनना है और यहा रहना है। बात ऐसी है कि चुनावमें—सही हो या गलत— हिंदू-सिखने मुस्लिम लीगको मान लिया, उसके पहले भी

---

[1] (गुज०) हिम्मत, उत्साह।

मानते थे और कहते भी थे। मैं उसके इतिहासमें नहीं जाऊंगा। इसके बाद देशके हिस्से हो गए— उसके पहले दिलके हिस्से हो गए। उसमें मुसलमानोंने भी गलती की। सब गलती उन्हींकी थी, ऐसी बात नहीं है। हिंदू, सिख, मुसलमान— तीनों गुनहगार थे। अब तीनों गुनहगारोंको दोस्त बनना है। इन तीनोंके बीचमें एक चीज पड़ी है। वह है ईश्वरको सब मानें, शैतानको नहीं, तो यह काम बन सकता है। मुसलमान भी काफी पड़े हैं, जो शैतानकी पूजा करते हैं, खुदाकी नहीं। काफी हिंदू भी शैतान-राक्षसकी पूजा करते हैं, सिख भी गुरु नानक और दूसरे गुरुओंकी पूजा नहीं करते— ऐसे हम बन गए हैं। हम तो धर्मके नामपर अधर्मी बन गए। अगर हम तीनों धर्म-पथपर चलें तो किसी एकको डरनेकी आवश्यकता नहीं है।

मैंने मुसलमानोंके नामसे उपवास शुरू किया है, इसलिए उनके सिरपर जबरदस्त जिम्मेदारी आती है। क्या जिम्मेदारी आती है? उनको यह समझना है कि हम हिंदू सिखके साथ भाई-भाई बनकर रहना चाहते हैं इसी यूनियनके हैं— पाकिस्तानके नहीं सही— हम वफादार बनकर रहना चाहते हैं। मैं यह नहीं पूछता हूं कि आप वफादार हैं या नहीं? पूछकर क्या करना है! मैं तो कामोंसे देखता हूं।

पीछे सरदारका नाम आ जाता है। वे कहते हैं कि सरदारको हटा दो, तुम अच्छे हो। पीछे सुनाते हैं कि जवाहर भी अच्छा है। तुम हकूमतमें आ जाओ तो हकूमत अच्छी चले। सब अच्छे हैं, सरदार अच्छे नहीं हैं। तो मैं मुसलमानोंसे कहूंगा कि मुसलमान ऐसा कहेंगे तो कोई बात चलनी नहीं है। क्यों नहीं? क्योंकि आपका हाकिम वह मंत्रिमंडल है। हकूमतमें न अकेला सरदार है और न जवाहर है। वे आपके नौकर हैं। उनको आप हटा सकते हैं। हां, ऐसा है कि सिर्फ मुसलमान तो हटा नहीं सकते हैं, लेकिन इतना तो करें कि सरदार जितनी गलती करते हैं— लोगोंमें आपस-आपसमें बात करनेसे निपटता नहीं है— उनको बताओ। ऐसा नहीं कि उन्होंने यह बात कही, वह बात कही, लेकिन उन्होंने किया क्या, यह बताओ। मुझको बता दो। उनसे मैं मिलता रहता हूं और सुनता भी हूं तो मैं कह दूंगा। वही जवाहर, वही सरदार दोनों हकूमत चलाते हैं।

जवाहर तो उनको निकाल सकते है, लेकिन ऐसा नही करते है तो कुछ है। वे उनकी तारीफ करते है। फिर मन्त्रि-मडल है, वह हकूमत है। सरदार जो कुछ करता है उसके लिए सारी हकूमत जवाबदार है। आप भी जवाबदार है, क्योकि वे आपके नुमायदे है। इस तरहसे हमारा काम चलता है। इसलिए मै कहूगा कि मुसलमानोको बहादुर, निर्भय बनना है। उसीके साथ खुदा-परस्त बनना है। वे ऐसा समझे कि हमारे लिए लीग नही है, काग्रेस नही है, गाधी नही है, जवाहर नही है, कोई नही है, खुदा है। उसके नामपर हम यहा पडे है। मै चाहता हू कि हरएक मुसलमान इस तरहका बने। हिंदू, सिख चाहे कुछ भी करते है, आप बुरा न माने। मै आपके साथ पडा हू। मै आपके साथ मरना या जिदा रहना चाहता हू। मै मरनेकी क्या कोशिश करनेवाला हू ? मै करूगा या मरूगा। अगर आप लोगोको साथ नही रख सकता हू तो मेरा जीना निकम्मा बन जाता है। इसलिए मुसलमानपर बडी जिम्मेदारी आ जाती है। इसे आप भूले नही। ऐसी बात नही करता कि मै मुसलमानकी गलती न निकालू। क्यो न निकालू ?

सरदार सीधी बात बोलनेवाले है। वे बोलते है तो कडवी लगती है। वह सरदारकी जीभमे है। मैने उनसे कहा कि आपकी जीभसे कोई बात निकली कि काटा हो गई। तो उनकी जीभ ही ऐसी है कि काटा है, दिल वैसा नही है। उसका मै गवाह हू। उन्होने कलकत्तेमे कह दिया, लखनऊमे कह दिया कि सब मुसलमानोको यहा रहना है, रह सकते है। साथ ही मुझको यह भी कहा कि उन मुसलमानोका एतबार नही करता हू, जो कलतक लीगवाले थे और अपनेको हिंदू-सिखका दुश्मन मानते थे— वे जब कलतक ऐसे थे तब आज एक रातमे दोस्त कैसे बन सकते है ? पीछे ऐसा है कि लीग रहेगी तो वे लोग किसकी मानेगे— हमारी हकूमतकी या पाकिस्तानकी ? लीग अभी भी वैसा ही कहती है तो उनको शक होता है। उनको शक करनेका अधिकार है। सबको शक करनेका अधिकार है। सरदारने जो कहा है उसका सीधा अर्थ निकाल ले तो काम बन जाता है। जैसे कोई मेरा भाई है, लेकिन उसपर शक है तो क्या करू ? शक साबित हो तब काटू, यही मै कर सकता हू। लेकिन मै पहलेसे ही भाईकी बुराई करू, ऐसा कैसे हो सकता

है ? वे कहते है कि हमारे दिलमे आज मुस्लिम लीगके मुसलमानोके वारेमे एतवार नही है, उनपर कैसे भरोसा रखे ? मुसलमान सबूत दे कि वे ऐसे नही है । ऐसा करे तो सब अजाम पहुच जाता है । पीछे मुझे यह कहनेका हक मिल जाता है कि हिंदू, सिख क्या करे । इस यूनियनमे सरदार क्या करे, जवाहर क्या करे, उसमे कोई भी क्या करे, मै क्या करू ?

इन लडकियोने अभी जो गीत सुनाया है वह गुरुदेवका प्रसिद्ध गीत है । नोआखालीमे पैदल चलते थे तव इस गीत[1] को गाते थे । उसमे एक वात है । अकेला जव कोई आदमी चलता है तो किसीको कैसे बुलाते है आओ ऐ भाई, आओ ऐ भाई, मदद तो दे दो । कोई नही आता है, अधेरा है तो गुरुदेव कहते थे कि अकेला चले तो भी क्या, क्योकि उसका एक साथी— ईश्वर तो साथ है ही । मैने आज लडकियोसे इस गीतको गानेको कहा तो गा दिया, नही तो यहा वगाली गीत क्या गाना था ! हिंदुस्तानी चलता था । उसमे वडा गुण पडा है ।

१

यदि तोर डाक शुने केउ न आसे तवे एक्ला चलो रे,
एक्ला चलो, एक्ला चलो, एक्ला चलो रे ।।
यदि केउ कथा न कय, ओरे, ओरे, ओ अभागा !
यदि सवाई थाके मुख फिराये, सवाई करे भय—
तवे परान खुले
ओ तूई मुख फूटे तोर मनेर कथा, एक्ला बोलो रे ।
यदि सवाई फिरे जाय, ओरे, ओरे, ओ अभागा !
यदि गहन पथे जावार काले, केउ फिरे ना चाय—
तवे पथेर कांटा
ओ तूई रक्तमाखा चरनतले एक्ला दलो रे ।
यदि आलो ना धरे, ओरे, ओरे, ओ अभागा !
यदि झड़ वादले आधार राते दुआर देय घरे—
तवे वज्रानले

तो मैंने कहा कि आज इसे गाओ। गुरुदेवका यह प्रिय भजन है। तो मैं कहूगा कि अगर हिंदू-सिख ऐसा नही बनते है तो सच्चे नही है। उनमे इतनी बहादुरी नही होती कि थोडेवालोको भी नही रहने दोगे— क्या मारोगे-पीटोगे— मारोगे नही, पीटोगे नही, लेकिन ऐसी हवा पैदा कर दो कि सब मुसलमान जानेको मजबूर हो पाकिस्तान जाय, तो काम कैसे बन सकता है? इसलिए कहता हू कि हिंदू-सिखको यहातक बहादुर बनना है कि पाकिस्तानमे मुसलमान चाहे कुछ भी करे, चाहे सभी हिंदू और सिखोको मार डाले तो भी यहा ऐसा न हो। मै वहातक जिदा रहना नही चाहता कि पाकिस्तानकी नकल हो। मैं जिदा रहूगा तो सब हिंदू, सिखको कहूगा कि एक भी मुसलमानको न छूवे, एक भी मुसलमानको मारना बुजदिली है। हमे तो यहा बहादुर बनना है, बुजदिल नही।

फाका छूटनेकी शर्त यह है कि दिल्ली बुलद हो जाय। अगर दिल्ली बुलद हो जाती है तो सारे हिंदुस्तान ही क्या, पाकिस्तानपर भी

आपन बुकेर पाजर ज्वालिये निये एक्ला जलो रे।

अर्थात्—

यदि तेरी पुकार सुनकर कोई नहीं आता तो तू अकेला ही चल!
अकेला चल, अकेला चल, अकेला ही चल!
यदि कोई बात नहीं करता, अरे, अरे, ओ अभागे!
यदि सभी मुह मोड़े रहते है, सभी डरते है,
तो दिल खोल कर तू अपने मनकी बात अकेला ही कह।
यदि तेरे सभी लौट जाय, अरे, अरे, ओ अभागे!
यदि गहन पथमें जाते समय कोई तेरी ओर फिर कर न देखें।
तो राहके काटोको
लोहू लुहान पैरोसे अकेले ही दल,
यदि कोई रोशनी नहीं दिखाता
यदि आधी पानी और अधकार भरी रात में कोई घरका दरवाजा बद कर देता है तो वज्राग्नि से अपने हृदय-पजर को प्रज्वलित करके तू अकेला ही जल।

असर पडेगा। अगर दिल्ली ठीक हो जाती है और यहा कोई मुसलमान भी अकेला घूम सकता है तो मेरा फाका छूट जाता है। इसका मतलब यह है कि दिल्ली पायातख्त है। सब दिन यह हिंदुस्तानका पायातख्त रही है। दिल्लीमे सब ठीक नही होता है तो सारे हिंदुस्तान और पाकिस्तानमे ठीक नही हो सकता। यहा कहे कि हम भाई-भाई बन गए है, यहा हिंदू, मुस्लिम, सिख सब एक-दूसरेसे मिलते-जुलते है। पीछे चाहे सुहरावर्दी साहब हो—गुडोके सरदार माने जाते है तो उससे मुझको क्या—अब वह गुडा बने तो गोलीसे उडा दे। सुहरावर्दीको मै यहा क्यो नही लाता हू? क्योकि डर है कि उनका कोई अपमान न कर दे। अगर कोई उनका अपमान करता है तो मेरा भी अपमान होगा। आज ऐसा थोडा है कि वे दिल्लीकी गलियोमे घूम सकते है। घूमेगे तो काट डाले जायगे। मै तो कहूगा कि उन्हे अधेरेमे भी घूमनेकी आजादी रहनी चाहिए। ठीक है कि कलकत्तेमे मुसलमानोपर आ पडी तो किया, लेकिन बिगाडना चाहते तो बिगाड सकते थे— वे बिगाडना नही चाहते थे। कलकत्तेमे जिस चीज-पर मुसलमान कब्जा लेकर बैठ गए थे उनको उन्होने खीच-खीचकर निकाला और कहा कि मै प्रधान-मत्री था, ऐसा कर सकता हू। मुसलमानोने जिनपर कब्जा किया था वह हिंदुओ और सिखोका था, तो भी उन्होने किया। तो मै कहूगा कि यहा असली शातिके लिए एक दिनके बदले एक महीना लगे तो क्या, मेरा उपवास बीचमे ही छुडवानेके लिए कोई ऐसा काम न करे। इससे सारा हिंदुस्तान तो बच जाता है। आज तो गिरा हुआ है। ऐसा करे तो हिंदुस्तान ऊचा जानेवाला है।

तो मै यही चाहता हू कि हिंदू, सिख, पारसी, ईसाई, मुसलमान जो हिंदुस्तानमे पडे है, यही रहे। हिंदुस्तान ऐसा बने कि किसीके जान-मालको नुकसान न पहुचे। तब हिंदुस्तान ऊचा होगा।

है। उससे फायदा क्या ? कितने ही ऐसे तार आए है। एक किस्मके तार तो ऐसे है कि जिनमेसे लोगोको शिक्षा मिलेगी। ऐसे भी तार है कि हम सव कर लेगे, उपवास छोड दो। उपवास ऐसे कोई छुट सकता है? ईश्वरने करवाया है, ईश्वर ही छुडवा सकता है। दूसरी कोई ताकत नही। वह ताकत तो वही है जो मैंने लिखा है।

मृदुलाबेनका टेलीफोन आया। वह लाहौरमे पडी है। उसके काफी मुसलमान दोस्त है। वह हिंदू लडकी है। वह तो व्याकुल बन गई है। छोटी थी तबसे मेरी गोदमे पडी थी। अब तो बडी हो गई है। हर जगह घूमती है—अकेली। तो कहती है कि सब मुसलमान मुझसे पूछते है, अफसर भी पूछते है—गाधी जो कर रहे है वह हमारे लिए कर रहे है तो पूछो—क्या हमको बता देगे कि हमसे क्या उम्मीद रखते है ? मुझको यह अच्छा लगा। तो उत्तर देनेके लिए कहे देता हू। टेलीफोन वहा पहुचा या नही, एक रातमे क्या होगा, कल तो वहा यह पहुच ही जायगा। और जो तार भेजते है उनको कहूगा कि यह कौन-सी बडी बात है कि आप मेरे बारेमे पूछते है ? पूछनेकी क्या जरूरत है ? यह दिल्लीका यज्ञ तो है, लेकिन सारे देशके लिए भी है। यह यज्ञ अकेलेके लिए है या सबके लिए, ऐसा सवाल ही नही है।

यह उपवास आत्म-शुद्धि करनेके लिए है। जहा आज शैतान बैठा है वहा ईश्वरको बैठा दो कि शैतान उसे हटा न सके। तो उसकी कुछ निशानी होनी चाहिए। इसके लिए सब तो फाका कर नही सकते। यह मेरे शुभ नसीबमे है। सबको ऐसा नसीब मिले तो सब प्रेमसे चले। हिंदू कहता है कि मुसलमानको मारो, मुसलमान हिंदूको मारनेके लिए तैयार होता है, और सिख कहता है कि मुसलमान को मार डालो। इस तरह सिख, हिंदू, मुसलमान झगडा करे तो बुरी बात है। यज्ञमे हिस्सा लेना है, लेना चाहते है तो सब भाई-भाई बन जाय, वैर-भावके बदले प्रेम-भाव करे। हिंदू, मुस्लिम, सिख—सब ऐसा बने तो उस जगह शराब नही देखूगा, अफीम नही देखूगा, व्यभिचारी लोगोको नही देखूगा, व्यभिचारिणी औरतोको नही देखूगा। सब ऐसा समझेगे कि यह मेरी बहन है या मा है या पत्नी है या लडकी है। सब परहेजसे रहे, साफ-सुथरे रहे तो भी अगर

मैं समझूं कि मैं पाकिस्तानका दुश्मन हू, पाकिस्तान पापसे भरा है तो मुझे प्रायश्चित्त करना होगा और कहना होगा कि पाकिस्तान पाप-भूमि नही, पाक-भूमि है। ऐसा बनता है तो अच्छा है। कहनेसे नही बने, करनेसे बने। पाकिस्तानमें जितने मुसलमान पड़े हैं वे ऐसे रहे तो उसका असर इधर भी होगा। पाकिस्तानने हिंदुओंके साथ गुनाह किया है यह मैंने कभी छिपाया नही है।

अभी कराचीमें क्या हो गया? बेगुनाह सिख मार डाले गए, जायदाद लूट ली गई। अब सुनता हू कि गुजरातमें भी हो गया। वे बेचारे बन्नूसे या कहासे, मुझको पता नही, आ रहे थे। सब शरणार्थी थे। वहासे जान बचानेके लिए भाग रहे थे यहा आनेके लिए। रास्तेमें काट डाले गए। मैं सब किस्सा नही कहना चाहता हू। मैं मुसलमानोको कहता हू कि आपके सामने पाकिस्तानमें ऐसा बनता रहे तो पीछे हिंदुस्तानके लोग कहा-तक बर्दाश्त करेंगे? मेरी तरह सौ आदमी भी फाका करें तो भी नही रुक सकता है। मेरे-जैसे मिस्कीनके फाका करनेसे क्या होगा? तो आप ऐसा करें कि सब अच्छे बन जाय। कोई मुसलमान हो, कबीलेवाले हो तो उनको भी अच्छा बनना है। और कहें कि हम सब सिख, हिंदूको यहा लानेवाले है।

कविने कहा—मैंने यह पढा है—कि अगर आपको जन्नत देखना है, तो यहा है, बाहर नही है। वह तो एक बगीचेके लिए कहा है। लिखनेवाले उन्माद रहते है। क्या खूबसूरत चीज है, यह उर्दूमें लिखा है। मैंने इसे वर्षों पहले—बचपनमें पढा था। जन्नत ऐसे आता नही है। अगर हिंदू, मुस्लिम, सिख—सब ऐसे शरीफ बने, सब-के-सब भाई-भाई बने तो कहूगा कि वही शेर सब दरवाजेमें लगाए जाय। पीछे कहूगा कि वही नही, यहा भी लगाए जाय। लेकिन कब लगाया जायगा, जब पाकिस्तान पाक हो जायगा। कहना एक और करना दूसरा तो दोजख हो जायगा। दिलको साफ कर लो, उसमें शैतान नही, खुदाको विराजमान करो। ऐसा करोगे तो जन्नत यही है। जन्नत देखना हो तो वहा देखो। अगर वहा ऐसा हो जाय तो हम यहा मुकाबला करेंगे और उससे भी आगे बढनेकी कोशिश करेंगे। हिंदुस्तानके दो टुकडे है तो क्या, दिल तो एक हो गया है। भूगोलमें टुकडे

रहे तो क्या हुआ, हकूमत अलग है तो उससे क्या? सारी दुनियामे हकूमत अलग-अलग है। हकूमत पचास रहे, पाच-सौ रहे तो क्या? मै तो कहूगा कि सात लाख गाव है तो सात लाख हकूमत बनी ऐसा मानो, तो छोटी वह होगी, अच्छी रहेगी। पीछे देहातोका काम, वहने पडी है उनके हाथ छोट सकते है। यह ऐसी खूबसूरत चीज है।

मुझसे कहते है—कहते-कहते घूट पी लेते है—कि यह पागल है। एक छोटी-सी चीजको लेकर फाका कर लेता है, लेकिन मै क्या करू? मै बचपनसे ऐसा बना हू। जब छोटा था तब अखबार भी नही पढता था। मै सच कहता हू कि अखबार नही पढता था। मै अग्रेजी मुश्किलसे पढ सकता था, गुजराती भद्दी जानता था तो मै अखबार कैसे पढ सकता था? तबसे मेरा खयाल रहा है कि सारे हिंदुस्तानमे—राजकोटमे ही नही—हिंदू, सिख, पारसी, ईसाई, मुसलमान एक बनकर रहे तो पीछे हम यहा आरामसे रह सकते है। मेरा ऐसा ख्वाब रहा है। अभी जो स्वराज आया है वह निकम्मा है। जवानीमे मैने जो ख्वाब देखा है वह अगर सच्चा होता है—मै तो बूढा हो गया हू, मरनेके किनारे हू—तो मेरा दिल नाचेगा, बच्चे नाचेगे और देखेगे कि हिंदुस्तानमे सब खैर हो गया, लडते-भिडते नही, साथ रहते है। आप सब इस काममे मदद करे। पाकिस्तानके लोग सुनेगे तो वे भी नाच उठेगे। सिख, हिंदू, मुस्लिम, पारसी, ईसाई, सब भूल जाय कि हम दुश्मन थे, अलग-अलग थे। अगर हम अपने-अपने धर्ममे कायम रहे और अच्छे बने तो सब धर्म एक साथ चल सकते है। पीछे धर्म नही देखेगे, शरीफ रहेगे। इस तरहसे दोनो हिंदुस्तान और पाकिस्तान बन जाय तो मै नाचूगा। आपको भी नाचना पडेगा। वह तो एक नशा है—ईश्वर ऐसा नशा देग और हमे किसीका डर नही रहेगा। हम ऐसे नही डरनेवाले है कि यह सिख है या ऊचा पठान है। हमे तो सिर्फ ईश्वरसे डरना है। मै ऐसा देखना चाहता हू।

आप अपनेको ऐसा बना सकते है। समाज क्या है? आप सबसे समाज बना है। हम उसमे है तो समाज बनता है। समाज हमको नही बनाता है। हम उसको बनाते है। हम सोए हुए पडे है। इसलिए कहते है कि समाज ऐसा है और हम समाजसे लाचार है। उसी तरह हकूमत है।

(लिखित संदेश)

कल शामकी प्रार्थनाके दो घटे वाद अखवारवालोने मुझे सदेश भेजा कि उन्हे मेरे भाषणके वारेमे कुछ वाते पूछनी है। वे मुझसे मिलना चाहते थे। मगर मैने दिनभर काम किया था, प्रार्थनाके वाद भी काममे फसा रहा। इसलिए थकान और कमजोरीके कारण उन्हे मिलनेकी मेरी इच्छा नही हुई। इसलिए मैने प्यारेलालसे कहा कि उनसे कहो कि मुझे माफ करे और जो सवाल पूछने हो वह लिखकर कल सुवह नौ वजे वाद मुझे दे दे। उन्होने ऐसा ही किया है।

पहला सवाल यह है—"आपने उपवास ऐसे वक्त शुरू किया है जव कि यूनियनके किसी हिस्सेमे कुछ झगडा हो ही नही रहा।" लोग जवरदस्ती मुसलमानोके घरोका कब्जा लेनेकी वाकायदा, निश्चयपूर्वक कोशिश करे, यह क्या झगडा नही कहा जायगा? यह झगडा तो यहातक वढा कि फौजको इच्छा न रहते हुए भी अश्रुगैस इस्तेमाल करनी पडी और, भले ही हवामे हो, मगर कुछ गोलिया भी चलानी पडी। तव कही लोग हटे। मेरे लिए यह सरासर वेवकूफी होती कि मै मुसलमानोका ऐसे टेढी तरहसे निकाला जाना आखिरतक देखता रहता। इसे मै रुला-रुलाकर मारना कहता हू।

दूसरा प्रश्न यह है—"आपने कहा है कि मुसलमान भाई अपने डरकी और अपनी असुरक्षितताकी कहानी लेकर आपके पास आते है, तो आप उन्हे कोई जवाव नही दे सकते। उनकी शिकायत है कि सरदार जिनके हाथोमे गृह-विभाग है, मुसलमानोके खिलाफ है। आपने यह भी कहा है कि सरदार पटेल पहले आपकी 'हा-मे-हा' मिलाया करते थे, 'जी-हजूर' कहलाते थे, मगर अव ऐसी हालत नही रही। इससे लोगोके मनपर यह असर होता है कि आप सरदारका हृदय पलटनेके लिए उपवास कर रहे है। आपका उपवास गृह-विभागकी नीतिकी निदा करता है। अगर आप इस चीजको साफ करेगे तो अच्छा होगा।"

मै समझता हू कि मै इस वातका साफ-साफ जवाव दे चुका हू। मैने जो कहा है, उसका एक ही अर्थ हो सकता है। जो अर्थ लगाया गया है,

[1] अपराध, [2] मुक्त, [3] योग्यता।

और मेरे साथी अहिंसा कहा करते थे वह सच्ची अहिंसा न थी। वह तो नकली चीज थी और उसका नाम है निष्क्रिय प्रतिरोध। हा, किनके हाथोमे निष्क्रिय प्रतिरोध किसी कामकी चीज है? जरा सोचिए तो सही कि एक कमजोर आदमी जनताका प्रतिनिधि वने तो वह अपने मालिकोकी हँसी और वे-इज्जती ही करवा सकता है। मै जानता हू कि सरदार कभी उन्हे सौपी हुई जिम्मेदारीको दगा नही दे सकते। वे उसका पतन वर्दाश्त नही कर सकते। मै उम्मीद करता हू कि यह सब सुननेके वाद कोई ऐसा खयाल नही करेगे कि मेरा उपवास गृह-विभागकी निंदा करनेवाला है। अगर कोई ऐसा खयाल करनेवाला है तो मै उसको कहना चाहता हू कि वह अपने-आपको नीचे गिराता है और अपने-आपको नुकसान पहुचाता है, मुझे या सरदारको नही। मै जोरदार लफ्जोमे कह चुका हू कि कोई वाहरी ताकत इन्सान-को नीचे नही गिरा सकती। इन्सानको गिरानेवाला इन्सान खुद ही वन सकता है। मै जानता हू कि मेरे जवावके साथ इस वाक्यका कोई ताल्लुक नही है। मगर यह एक ऐसा सत्य है कि उसे हर मौकेपर दोहराया जा सकता है।

मै साफ लफ्जोमे कह चुका हू कि मेरा उपवास यूनियनके मुसलमानो-की खातिर है। इसलिए वह यूनियनके हिंदू और सिखो और पाकिस्तानके मुसलमानोके सामने है। इस तरहसे यह उपवास पाकिस्तानकी अकलियत[1]की खातिर भी है। जो विचार मै पहले समझा चुका हू उसीको मै यहा थोडेमे दोहरानेकी कोशिश कर रहा हू।

मै यह आशा नही रख सकता कि मेरे-जैसे अपूर्ण और कमजोर इन्सानका फाका दोनो तरफ की अकलियतोको सव तरहके खतरोसे पूरी तरह वचानेकी ताकत रखे। फाका सवकी आत्म-शुद्धिके लिए है। उसकी पवित्रताके वारेमे किसी तरहका शक जाना गलती होगी।

तीसरा सवाल यह है, "आपका उपवास ऐसे वक्तपर शुरू हुआ है जव सयुक्त राष्ट्र-सघकी सुरक्षा-समिति बैठनेवाली है। साथ ही अभी ही कराचीमे फिसाद हुआ है और गुजरात (पजाव) मे कत्लेआम

---

[1] अल्पसंख्यक।

हुआ है। हम नही जानते कि विदेशके अखबारोमे इन वाकयातकी तरफ कहातक ध्यान दिया गया है। इसमे शक नही कि आपके उपवासके सामने यह वाकयात छोटे लगने लगे है। पाकिस्तानके प्रतिनिधियोके पिछले कारनामोसे हम समझ सकते है कि वे जरूर इस चीजका फायदा उठाएगे और दुनियाको कहेगे कि गाधीजी अपने हिंदू अनुयायियोसे, जिन्होने हिंदुस्तानमे मुसलमानोकी जिदगी आफतमे डाल रखी है, पागलपन छुडानेके लिए उपवास कर रहे है। सारी दुनियाभरमे सच्ची बात पहुचनेमे देर लगेगी। इस दरमियान आपके उपवासका यह नतीजा आ सकता है कि सयुक्त राष्ट्र-सघपर हमारे विरुद्ध प्रभाव पडे।" इस सवालका लबा-चौडा जवाब देनेकी जरूरत थी। दुनियाकी हकूमतो और दुनियाके लोगोको जहातक मै जानता हू मै यह कहनेकी हिम्मत करता हू कि उपवासका असर अच्छा ही हुआ है। बाहरके लोग, जो हिंदुस्तानके वाकयातको निष्पक्षतासे देख सकते है, मेरे फाकेका उल्टा अर्थ नही लगाएगे। फाका यूनियनके और पाकिस्तानके रहनेवालोसे पागलपनको छुडानेके लिए है।

अगर पाकिस्तानमे मुसलमानोकी अकसरियत सीधी तरहसे न चले, वहाके मर्द और औरते शरीफ न बने तो यूनियनके मुसलमानोको बचाया नही जा सकता। मगर मुझे खुशी है कि मृदुला बेनके कलके सवालपर ऐसा लगता है कि पाकिस्तानके मुसलमानोकी आखे खुल गई है और वे अपना फर्ज समझने लगे है।

सयुक्त राष्ट्र-सघ यह जानता है कि मेरा फाका उसे ठीक निर्णय करनेमे मदद देनेवाला है, ताकि वह पाकिस्तान और हिंदुस्तानका उचित पथ-प्रदर्शन कर सके।

: २१० :

१६ जनवरी १९४८

भाइयो और वहनो,

मुझे आशा तो नही थी कि आज भी मै वोल सकूगा, लेकिन यह सुनकर आप खुश होगे कि कल मेरी आवाजमे जितनी शक्ति थी उससे आज ज्यादा महसूस करता हू। इसका मतलव तो यही किया जाय कि ईश्वरकी वडी कृपा है। चोथे रोज मुझमे (पहले) जव मैने फाका किया, तव इतनी शक्ति नही रहती, लेकिन आज तो है। मेरी उम्मीद तो ऐसी है कि अगर आप सव लोग आत्म-शुद्धि करनेका यज्ञ करते रहेगे तो वोलनेकी मेरी शक्ति आखिरतक रह सकती है। मै इतना तो कहूगा कि मुझे किसी प्रकारकी जल्दी नही है। जल्दी करनेसे हमारा काम नही वनता है। मै परम शातिमे हू। मै नही चाहता कि कोई अधूरा काम करे और मुझे सुना दे कि ठीक हो गया है। सारा-का-सारा जव यहा ठीक होगा तो सारे हिंदुस्तानमे ठीक होगा। इसलिए मैं समझता हू कि जव इर्द-गिर्दमे, सारे हिंदुस्तानमे और सारे पाकिस्तानमे, शाति नही हुई है तो मुझे जिदा रहनेमे दिलचस्पी नही है। यह इस यज्ञके माने है।

(लिखित सदेश)

किसी जिम्मेदार हकूमतके लिए सोच-समझकर किए हुए अपने किसी फैसलेको वदलना आसान नही होता। मगर तो भी हमारी हकूमतने, जो हर मानेमे[१] जिम्मेदार हकूमत है, सोच-समझकर और तेजीसे अपना तय किया हुआ फैसला वदल डाला है।

उनको काश्मीरसे लेकर कन्याकुमारीतक और कराचीसे लेकर

---

[१] पाकिस्तानका जो पचपन करोड रुपया निकलता था उसे भारत-सरकारने काश्मीरका मामला तय हो जानेपर दिलानेका निश्चय किया था। गांधीजीके उपवास प्रारभ करते ही भारत सरकारने उसे दे देनेका फैसला कर लिया।

डिवरूगढतक मारे मुल्कको मुवारकवाद देना चाहिए। मै जानता हू कि दुनियाके सव लोग भी कहेगे कि ऐसा वडा काम हमारी हकूमतके जैसी वडे दिलवाली हकूमत ही कर सकती थी। इसमे मुसलमानोको सतुष्ट करनेकी वात नही है। यह तो अपने आपको सतुष्ट करनेकी वात है। कोई भी हकूमत, जो वहुत वडी जनताकी प्रतिनिधि है, वेसमझ जनतासे तालिया पिटवानेके लिए कोई कदम नही उठा सकती है। जहा चारो तरफ पागलपन फैला हुआ है, वहा आकर वडे-से-वडे नेता वहादुरीसे अपना दिमाग ठडा रखकर जो जहाज चला रहे है क्या उसको डूवनेमे न वचावे ?

हमारी हकूमतने क्यो यह कदम उठाया ? इसका कारण मेरा उपवास था। उपवाससे उनकी विचारधारा ही वदल गई। उपवासके विना वे, कानून जितना उनसे करवाता, उतना ही करनेवाले थे। मगर हिंदुस्तानकी हकूमतका यह कदम सच्चे मानेमे दोस्ती वढाने और मिठास पैदा करनेवाली चीज है। इसमे पाकिस्तानकी भी परीक्षा हो जायगी। नतीजा यह होना चाहिए कि न सिर्फ काश्मीरका, वल्कि हिंदुस्तान और पाकिस्तानमे जितने मतभेद है सवका सम्मानजनक आपस-आपसमे फैसला हो जावे। आजकी दुश्मनीकी जगह दोस्ती ले। न्याय कानूनसे वढ जाता है। अग्रेजीमे एक घरेलू कहावत है, जो सदियोसे चली आई है, उसमे कहा है कि जहा मामूली कानून काम नही देता, वहा न्याय हमारी मदद करता है। वहुत वक्त नही हुआ जव कानूनके लिए और न्यायके लिए वहा अलग-अलग कचहरिया हुआ करती थी। इस तरहसे देखा जाय तो इसमे कोई शक नही कि हिंदुस्तानकी हकूमतने जो किया है वह सव तरहसे ठीक है। अगर मिसालकी जरूरत है तो मेकडॉनल्ड एवार्ड (निर्णय) हमारे सामने है। वह सिर्फ मेकडॉनल्डका निर्णय न था, वल्कि सारे ब्रिटिश मत्रिमडलका और दूसरी गोलमेज परिषद्के अधिकतर सदस्योका भी निर्णय था। मगर यरवदाके उपवासने तो रातो-रात वह निर्णय वदल दिया। मुझे कहा गया कि यूनियनकी हकूमतके इस वडे कामके कारण तो अव मैं अपने उपवासको छोड दू। काश कि मै अपने दिलको ऐसा करनेके लिए समझा सकता!

मै जानता हू कि उन डाक्टर लोगोकी चिंता जो अपनी इच्छामे काफी त्याग करके मेरी देख-भाल कर रहे है, जैसे-जैसे उपवास लवा होता जाता है, वढती जाती है। गुरदे ठीक तरहसे काम नही करते। उन्हे इस चीजका इतना खतरा नही कि आज मर जाऊगा, मगर उपवास लवा चला तो हमेशाके लिए शरीरकी मशीनको जो नुकसान पहुचेगा, उससे वे डरते है। मगर डाक्टर लोग कितने ही होशियार क्यो न हो, मैने उनकी सलाहसे उपवास शुरू नही किया। मेरा रहनुमा और मेरा हकीम एकमात्र ईश्वर रहा है, वह कभी गलती नही करता। वह सर्वशक्तिमान है। अगर उसे मेरे इस कमजोर शरीरसे कुछ और काम लेना होगा तो डाक्टर लोग कुछ भी कहे वह मुझे वचा लेगा। मै ईश्वरके हाथोमे हू। इसलिए मै आशा करता हू कि आप विश्वास रखेगे कि मुझे न मौतका डर है, न अपग होकर जिदा रहनेका। मगर मुझे लगता है कि अगर देशको मेरा कुछ भी उपयोग है तो डाक्टरोकी इस चेतावनीके परिणामस्वरूप लोगोको तेजीके साथ मिलकर काम करना चाहिए। इतनी मेहनतसे आजादी पानेके वाद हमे वहादुर तो होना ही चाहिए। वहादुर लोग, जिनपर दुश्मनीका शक होता है, उनपर भी विश्वास रखते है। वहादुर लोग अविश्वासको अपनी शानके खिलाफ समझते है। अगर दिल्लीके हिंदू, मुसलमान और सिखोमे ऐसी एकता स्थापित हो जाय कि हिंदुस्तान और पाकिस्तानके वाकी हिस्सोमे आग भडके तो भी दिल्ली शात रहे तव मेरी प्रतिज्ञा पूरी हो जायगी। खुशकिस्मतीसे हिंदुस्तान और पाकिस्तान दोनो तरफके लोग अपने-आप समझ गए लगते है कि उपवासका अच्छे-से-अच्छा जवाव यही है कि दोनो उपनिवेशोमे ऐसी दोस्ती पैदा हो कि हर धर्मके लोग दोनो तरफ विना किसी खतरेके आ-जा सके और रह सके। आत्म-शुद्धिके लिए इतना तो कम-से-कम होना ही चाहिए।

हिंदुस्तान और पाकिस्तानके लिए दिल्लीपर वहुत ज्यादा वोझ डालना ठीक न होगा। यूनियनके रहनेवाले भी आखिर तो इन्सान है। हमारी हकूमतने लोगोके नामसे एक वहुत वडा उदार कदम उठाया है और उसको उठाते समय उसकी कीमतका खयालतक नही किया। इसका जवाव पाकिस्तान क्या देगा? इरादा हो तो रास्ते तो वहुत है। मगर क्या इरादा है?

: २११ :

१७ जनवरी १९४८

भाइयो और बहनो,

ईश्वरकी ही कृपा है कि आज पाचवा दिन है तो भी मै बगैर परिश्रमके आपको दो शब्द कह सकता हू। जो मुझको कहना है वह तो मैने लिखवा दिया है, जिसे प्रार्थना-सभामे सुशीला बहन सुना देगी।

इतना है कि जो कुछ भी आप करे, उसमे परिपूर्ण शक्ति होनी चाहिए। अगर यह नही है तो कुछ भी नही है। अगर आप मेरा खयाल रखे कि इसे कैसे जिंदा रखा जाय तो बडी भारी गलती करनेवाले है। मुझको जिंदा रखना या मारना किसीके हाथमे नही है। वह ईश्वरके हाथमे है। इसमे मुझे कोई शक नही है। किसीको भी शक नही होना चाहिए।

इस उपवासका मतलब यह है कि अत करण स्वच्छ हो और जाग्रत हो। ऐसा करे तभी सबकी भलाई है। मुझपर दयाकर आप कुछ न कीजिए। जितना दिन उपवासका काट सकता हू काटूगा। ईश्वरकी इच्छा होगी तो मर जाऊगा।

मै जानता हू कि मेरे काफी मित्र दु खी है, और सब कहते है कि आज ही उपवास क्यो नही छोडा जाय। आज मेरे पास ऐसा सामान नही है। ऐसा मिल जाय तो नही छोडनेका आग्रह नही करूगा। अहिंसाका नियम है कि मर्यादापर कायम रहना चाहिए, अभिमान नही करना चाहिए। नम्र होना चाहिए। मै जो कह रहा हू उसमे अभिमान नही है। शुद्ध प्यारसे कह रहा हू। ऐसा जो जानता है वही रहनेवाला है।

(लिखित सदेश)

मै पहले भी कह चुका हू और फिरसे दोहराता हू कि फाकेके दबावके नीचे कुछ भी न किया जाय। मैने देखा है कि फाकेके दबावके नीचे कई बाते कर ली जाती है और फाका खत्म होनेके बाद मिट जाती है। अगर ऐसा कुछ हुआ तो बहुत बुरी बात होगी। ऐसा कभी होना ही

नही चाहिए। आध्यात्मिक उपवास एक ही आशा रखता है, वह है दिलकी सफाई। अगर दिलकी सफाई ईमानदारीसे की जाय तो जिस कारणसे सफाई की गई थी वह कारण मिट जानेपर भी सफाई नही मिटती। किसी प्रियजनके आनेके कारण कमरेमे सफेदी की जाती है तो जब वह आकर चला जाता है तो सफेदी मिट नही जाती। यह तो जड वस्तुकी बात है। कुछ अर्सेके बाद सफेदी मिटने लगती है और फिरसे करवानी पडती है। दिलकी सफाई तो एक दफा हो गई तो मरनेतक कायम रहती है। फाकेका दूसरा कोई योग्य मकसद नही हो सकता।

राजा, महाराजा और आम लोगोके तारोका ढेर बढ रहा है। पाकिस्तानसे भी तार आ रहे है। वे अच्छे है, मगर पाकिस्तानके दोस्त और शुभचिंतककी हैसियतसे मै पाकिस्तानके रहनेवालो और जिनको पाकिस्तानका भविष्य बनाना है उनको कहना चाहता हू कि अगर उनका जमीर[1] जाग्रत न हुआ और अगर वह पाकिस्तानके गुनाहको कबूल नही करते तो पाकिस्तानको कभी कायम नही रख सकेगे। इसका यह मतलब नही कि मै यह नही चाहता कि हिंदुस्तानके दोनो टुकडे अपनी खुशीसे फिरसे एक हो। मगर मै वह साफ कर देना चाहता हू कि जबरदस्तीसे मिटानेका मुझे खयालतक नही आ सकता। मै उम्मीद रखता हू कि मृत्यु-शय्यापर पडे मेरे यह वचन किसीको चुभेगे नही। मै उम्मीद रखता हू कि सब पाकिस्तानी यह समझ जायगे कि अगर कमजोरीकी वजहसे या उनका दिल दुखानेके डरसे मै उसके सामने अपने दिलकी सच्ची बात न रखू तो मै अपने प्रति और उनके प्रति झूठा साबित होऊगा। अगर मेरे हिसाबमे कुछ गलती रही हो तो मुझे बताना चाहिए। मै वायदा करता हू कि अगर मै गलती समझ गया तो अपना वचन वापस लेलूगा। मगर जहातक मै जानता हू, पाकिस्तानके गुनाहके बारेमे दो विचार हो ही नही सकते।

मेरे उपवासको किसी तरहसे भी राजनैतिक न समझा जाय। यह तो अतरात्माकी जबरदस्त आवाजके जवाबमे धर्म समझकर किया

---

[1] विवेक।

गया है। महायातना भुगतनेके बाद मैने फाका करनेका फैसला किया। दिल्लीके मुसलमान भाई इस बातके साक्षी है। उनके प्रतिनिधि करीब-करीब रोज मुझे दिनभरकी रिपोर्ट देने आते है। इस पवित्र मौकेपर मेरा उपवास छुडवानेके हेतु मुझको धोखा देकर राजा, महाराजा, हिंदू, सिख और दूसरे लोग न अपनी खिदमत करेगे, न हिंदुस्तानकी। वे सब समझ ले कि मै कभी इतना खुश नही रहता, जितना कि आत्माकी खातिर उपवास करते वक्त। इस फाकेसे मुझे हमेशासे ज्यादा खुशी हासिल हुई है। किसीको इसमे विघ्न डालनेकी जरूरत नही है। विघ्न इसी शर्तपर डाला जा सकता है कि ईमानदारीसे आप यह कह सके कि आपने सोच-समझकर शैतानकी तरफसे मुह फेर लिया है और ईश्वरकी तरफ चल पडे है।

: २१२ :

१८ जनवरी १९४८

भाइयो और बहनो,

मैने थोडा तो लिखवा दिया है। वह सुशीला बहन आप लोगोको सुना देगी।

आजका दिन मेरे लिए तो है, आपके लिए भी मगल-दिन माना जाय। कैसा अच्छा है कि आज ही गुरु गोविंदसिंहकी जन्म-तिथि है। उसी शुभ तिथिपर मै आपलोगोकी दयासे फाका छोड सका हू। जो दया आप लोगोसे—दिल्लीके निवासियोसे, दिल्लीमे जो दु खी शरणार्थी पडे है, उनसे, यहाकी हकूमतके सब कारोबारसे —मुझे मिली है उसे, मुझे लगता है, कि मै जिदगीभर भूल नही सकूगा। कलकत्तेमे ऐसे ही प्रेमका अनुभव मैने किया। यहापर मै कैसे भूल सकता हू कि शहीद साहबने कलकत्तेमे बडा काम किया। अगर वह नही करते तो मै ठहरनेवाला नही था। शहीद साहबके लिए हम लोगोके दिलमे बहुत शकूक[1] थे। अभी भी है। उससे हमको

[1]सदेह।

क्या ? आज हम सीखे कि कोई भी इन्सान हो, कैसा भी हो, उससे हमको दोस्ताना तौरसे काम करना है। हम किसीके साथ किसी हालतमे दुश्मनी नही करेगे, दोस्ती ही करेगे। शहीद साहब और दूसरे चार करोड मुसलमान पडे है। वे सब-के-सब फरिश्ते तो है ही नही। ऐसे ही सब हिंदू और सिख भी फरिश्ते थोडे ही है! अच्छे और बुरे हममे है, लेकिन बुरे कम है। हमारे यहा जिसको हम जरायम पेशा जातियाँ कहते है, वे भी पडी है। हमारे यहा जिनको जगली जातिया कहते है, वे भी पडी है। उन सबके साथ मिल-जुलकर रहना है।

मुसलमान बडी कौम है, छोटी कौम नही है। यही नही है, सारी दुनियामे पडी है। अगर हम ऐसी उम्मीद करे कि सारी दुनियाके साथ हम मित्र-भावसे रहेगे, दोस्ताना तौरसे रहेगे तो क्या वजह है कि हम यहाके जो मुसलमान है उनसे दुश्मनी रखे ?

मै भविष्यवेत्ता नही हू। फिर भी मुझे ईश्वरने अक्ल दी है, मुझको ईश्वरने दिल दिया है। उन दोनोको टटोलता हू और आपको भविष्य सुनाता हू कि अगर हम किसी-न-किसी कारणसे एक दूसरेसे दोस्ती न कर सके, वह भी यहाके ही नही, पाकिस्तानके और सारी दुनियाके मुसलमानोसे दोस्ती न कर सके, तो समझ ल, इसमे मुझे कोई शक नही है कि हिंदुस्तान हमारा नही होगा, पराया हो जायगा, गुलाम हो जायगा। पाकिस्तान गुलाम होगा, यूनियन भी गुलाम होगा और जो आजादी हमने पाई है उसे हम खो बैठेगे।

आज इतने लोगोने आशीर्वाद दिए है। सुनाया है कि हम सब हिंदू, सिख, मुसलमान भाई-भाई बनकर रहेगे और किसी भी हालतमे, कोई भी कुछ कहे, दिल्लीके हिंदू, सिख, मुसलमान, पारसी, ईसाई सब जो यहाके बाशिदे है और सब शरणार्थी है वे भी दुश्मनी नही करनेवाले है। यह थोडी बात नही है। इसके माने यह है कि अबसे हमारी कोशिश यह रहेगी कि सारे हिंदुस्तान और पाकिस्तानमे जितने लोग पडे है वे सब एक मिलकर रहेगे। हमारी कमजोरीके कारण भले ही हिंदुस्तानके दो टुकडे हो गए, लेकिन वे भी दिलसे मिलाने है। अगर इस फाकेके छूटनेका यह अर्थ नही है तो बडी नम्रतासे कहूगा कि यह फाका छुडवाकर आपने

कोई अच्छा काम नही किया है, कोई काम ही नही किया। अभी फाकेकी आत्माका भलीभाति पालन होना चाहिए। भद क्यो हो ? जो दिल्लीमे हो, वही सारे यूनियनमे हो और जो सारे यूनियनमे होगा तो पाकिस्तानमे होना ही है, इसमे आप शक न रखे। आप न डरे, एक बच्चेको भी डरनेका काम नही। आजतक हम, मेरी निगाहमे, शैतानकी ओर जाते थे। आजसे मै उम्मीद करता हू कि हम ईश्वरकी ओर जाना शुरू करते है। लेकिन हम तय करे कि एक वक्त हमने अपना चेहरा, मुह ईश्वरकी ओर रखा तो वहासे कभी नही हटेगे। ऐसा हुआ तो सारे हिंदुस्तान, पाकिस्तान, दोनो मिलकर इस सारी दुनियाको ढाक सकेंगे, सारी दुनियाकी सेवा कर सकेंगे और सारी दुनियाको ऊची ले जा सकेंगे। मै और किसी कारणसे जिदा रहना नही चाहता हू। इन्सान जिदा रहता है तो इन्सानियतको ऊचा उठानेके लिए। ईश्वर और खुदाकी तरफ जाना ही इन्सानका फर्ज है। जबानसे ईश्वर, खुदा, सतश्री अकाल कुछ भी नाम लो, वह झूठा है अगर उनके दिलमे वह नाम नही है। सब एक ही हस्ती है तो फिर कोई कारण नही है कि हम उस चीजको भूल जाय और एक दूसरेको दुश्मन माने।

आज तो मै आपसे ज्यादा कुछ कहनेवाला नही हू, लेकिन आजके दिनसे हिंदू निर्णय कर ले कि लडेगे नही। मै चाहूगा कि हिंदू कुरान पढे, जैसे वे भगवद्गीता पढते है। सिख भी वही करे। और मै चाहूगा कि मुस्लिम भाई-बहन भी अपने घरोमे ग्रथ साहब पढे, उनके माने समझे। जैसे हम अपने धर्मको मानते है, वैसे दूसरेके धर्मको भी माने। उर्दू-फारसी किसी जबानमे भी बात लिखी हो, अच्छी बात तो अच्छी बात है। जैसे कुरान शरीफ वैसे गीता और ग्रथ साहब है। मेरा मकसद यही है। चाहे आप माने या न माने, अभीतक मै ऐसा करता रहा हू। मै आपको कहूगा और दावेसे कहूगा कि मै पत्थरकी पूजा नही करता हू। मगर मै सनातनी हिंदू हू। पत्थरकी पूजा करनेवालोसे मै नफरत नही करता। खुदा पत्थरमे भी पडा है। जो पत्थरकी पूजा करता है वह उसमे पत्थर नही, खुदा देखता है। पत्थरमे ईश्वर न माने तो कुरान शरीफ खुदाई किताब है, यह क्यो माना जायगा ?

तो यह क्या वुतपरस्ती नही है ? दिलोमे भेद न रखे तो हम सव यह सीख सकते है। ऐसा हो तो फिर यह नही होगा कि यह हिंदू है, यह सिख है, यह मुसलमान है। सव भाई-भाई है, मिल-जुलकर रहनेवाले है। ऐसा होना चाहिए। फिर ट्रेनमे आज जो अनेक किस्मकी परेशानी होती है—लडका फेक दिया जाता है, आदमी फेक दिया जाता है, औरते फेक दी जाती है, वह सव मिट जायगा, हर कोई आसानीसे हर जगह रह सकेगे, कही किसीको डर न होगा। यूनियन ऐसा वने। पाकिस्तान भी ऐसा होना चाहिए। मुझको तवतक परम शाति नही होनेवाली है जवतक यहाके शरणार्थी, जो पाकिस्तानसे दुखी होकर आए है, अपने घरोको वापस न जा सके और जो मुसलमान यहासे हमारे डरसे, मार-पीटसे भागे है और जो वापस आना चाहते है वे आरामसे यहा न रह सके।

वस इतना ही कहूगा। ईश्वर हम सवको, सारी दुनियाको अच्छी अक्ल दे, सन्मति दे, होशियार करे और अपनी ओर खीच ले, जिससे हिदुस्तान और सारी दुनिया सुखी हो।

(लिखित सदेश)

मैने यह उपवास सत्यके, जिसका परिचित नाम ईश्वर है, नामपर किया था। जीते-जागते सत्यके विना ईश्वर कही नही है। ईश्वरके नामपर हम झूठ वोले है, हमने वेरहमीसे लोगोकी हत्याए की है और इसकी भी परवाह नही की कि वे अपराधी है या निर्दोप, मर्द है या औरते, वच्चे है या वूढे। हमने अपहरण व वलात् धर्म-परिवर्तन किए है और हमने यह सव वेहयाईसे किया है। मै नही समझता कि किसीने यह काम सत्यके नामपर किए हो। इसी नामका उच्चारण करते हुए मैने उपवास तोडा है। हमारे लोगोका दु ख असह्य था। राष्ट्रपति राजेन्द्र वावू हिदुओ, मुसलमानो व सिखो, हिंद् महासभा, राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ व शरणार्थियोके सौसे अधिक प्रतिनिधियोको लेकर मेरे पास आए। इन प्रतिनिधियोके दलमे पाकिस्तानके हाई कमिश्नर जाहिदहुसैन साहव, दिल्लीके कमिश्नर व डिप्टी कमिश्नर और आजाद हिद फौजके जनरल शाहनवाज भी शामिल थे। नेहरुजी भी एक मूर्तिकी तरह चुपचाप मेरे पास वैठे हुए थे और ऐसे

ही मौलाना आजाद। राजेन्द्र बाबूने एक दस्तावेज[1] पढ़कर सुनाया, जिसपर

---

[1] वह शाति-प्रतिज्ञा, जिसपर हिंदुओ, सिखो व मुसलमानोके सौसे अधिक प्रतिनिधियोने हस्ताक्षर किए और जिसपर गाधीजीने उपवास समाप्त किया, इस प्रकार है—

हम यह घोषित करना चाहते है कि हमारी दिली खाहिश है कि हिंदू, मुसलमान और सिख और दूसरे धर्मके सब माननेवाले फिरसे आपसमें मिलकर भाई-भाईकी तरह दिल्लीमें रहें और हम उनसे यह प्रतिज्ञा करते है कि मुसलमानोकी जान, धन और धर्मकी हम रक्षा करेंगे और जिस तरहकी घटनाए यहा पहले हो गई है, उनको फिर न होने देंगे।

१ गाधीजीको हम इत्मीनान दिलाना चाहते है कि जिस तरह ख्वाजा कुतुबुद्दीनके उर्सका मेला पहले हुआ करता था, वैसे ही अब भी होगा।

२ जिस तरह मुसलमान दिल्लीके सभी मुहल्लोमें और खास तौर-पर सब्जीमडी, करौलबाग और पहाडगजमें आया-जाया करते थे, वैसे ही बेखटके और बेखतरे फिरसे आ-जा सकेंगे।

३ उन मस्जिदोको, जिनको मुसलमान छोडकर चले गए है, या जो हिंदुओ और सिखोके कब्जेमें है, वापिस दे देंगे। जिन जगहो-को खास मुसलमानोके बसनेके लिए गवर्नमेंटने रख छोडा है, उनपर जोर-जबर्दस्तीसे कब्जा करनेकी कोशिश नही की जायगी।

४. जो मुसलमान दिल्लीसे बाहर चले गए है, वे अगर वापिस आना चाहें तो हमारी तरफसे कोई बाधा न दी जायगी और मुसलमान अपने कारबार जिस तरहसे करते थे, करने पाएगे। हम यह इत्मीनान दिलाना चाहते है कि ये सब चीजें अपनी कोशिशसे पूरी करेंगे और सरकारी पुलिस या फौजकी ताकत इसकी खातिर इस्तेमाल करनेकी जरूरत नहीं पडेगी।

५ महात्माजीसे हमारा अनुरोध है कि वे हमारी बातोपर विश्वास करके अपना उपवास छोड दें और जिस तरह आजतक देशके रहनुमा रहे है, बने रहें।

आगत प्रतिनिधियोके हस्ताक्षर थे। इस दस्तावेजद्वारा मुझसे कहा गया कि उनपर अधिक चिंताका दवाव न डाला जाय और मै अपना उपवास तोड-कर उनके दु खका अत कर दू। पाकिस्तान व भारतीय यूनियनसे भी मेरे पास तार-पर-तार आए थे कि मै उपवास तोड दू। मै इन सव मित्रोकी सलाहका विरोध न कर सका। मै उनकी इस प्रतिज्ञापर अविश्वास नही कर सका कि हर हालतमे हिंदुओ, मुसलमानो, सिखो, ईसाइयो या पारसियो व यहूदियो सवमे मित्रता रहेगी और इस मित्रताको कभी भग नही किया जायगा। इस दोस्तीको तोडनेका मतलव राष्ट्रको तोडना होगा।

जव मै यह लिख रहा हू, मेरे पास सेहत और दीर्घ जीवनकी कामनावाले तारोका ताता लगा हुआ है। ईश्वर मुझे काफी सेहत और विवेक दे जिससे मै मानव-जातिकी सेवा कर सकू। यदि यह आश्वासन, जो आज मुझे दिया गया है, पूरा हो जाता है तो मै आपको विश्वास दिलाता हू कि मै चौगुनी शक्तिसे प्रार्थना करूगा कि वह मुझे अपनी पूरी जिदगी जीने दे और मै अततक मानव-जातिकी सेवा करू। विद्वानोका मत है कि पूरी उम्र कम-से-कम १२५ वर्ष है और कुछ लोग १३३ वर्ष कहते है। मेरी प्रतिज्ञा पूरी होनेमे जितना समय लगनेकी आशा थी वह दिल्लीके नागरिकोकी, जिनमे हिंदू महासभा और राष्ट्रीय स्वयसेवक सघके नेता भी सम्मिलित है, सद्भावनाके कारण उससे पहले पूरी हो गई। मुझे पता चला है कि कलसे हजारो शरणार्थी और दूसरे लोग भी मेरी सहानुभूतिमे उप-वास कर रहे है। तो ऐसी हालतमे इसका परिणाम दूसरा निकल ही नहीं सकता था। हजारो व्यक्तियोने मेरे पास लिखित आश्वासन भेजे है कि लोगोके दिलोमे परिवर्तन हो गया है और वे सवको भाई मानते है। सारी दुनियासे मेरे पास आशीर्वादके तार आए है। क्या इस वातका इससे अच्छा कोई सवूत हो सकता है कि मेरे इस उपवासमे ईश्वरका हाथ था? लेकिन मेरी प्रतिज्ञाके शब्दोके पालनके वाद उसकी आत्मा भी है, जिसके पालनके विना शब्दोका पालन वेकार हो जाता है। मेरी प्रतिज्ञाका उद्देश्य यूनियन तथा पाकिस्तानमे हिंदू, मुस्लिम, सिखमे मित्रता स्थापित करना है। यदि यूनियन (हिंदुस्तान) मे ऐसा हो जाता है तो जैसे रातके वाद दिन होता है वैसे ही पाकिस्तानमे भी ऐसा होना ही चाहिए। यदि यूनियनमे अधेरा

हो तो पाकिस्तानमे उजालेकी आशा करना मूर्खता है, किंतु यदि यूनियनमे रात मिट जानेका कोई शक नही रह जाता तो पाकिस्तानमे भी रात मिट-कर ही रहेगी। पाकिस्तानसे बहुतसे सदेश आए है। उनमेसे एकमे भी इस बातका विरोध नही किया गया है। ईश्वरसे मेरी प्रार्थना है कि जिस तरहसे इन छ दिनोतक हमारा पथ-प्रदर्शन किया है उसी तरह आगे भी हमारा पथ-प्रदर्शन करता रहे।

: २१३ :

१६ जनवरी १९४८

भाइयो और बहनो,

सारी दुनियासे हिंदुस्तानियो और दूसरे लोगोने मेरी सेहतके बारेमे चिंता और शुभेच्छा बतानेवाले अनेक तार भेजे है। उनके लिए मै उन सब भाई-बहनोका आभार मानता हू। ये तार जाहिर करते है कि मेरा कदम ठीक था। मेरे मनमे तो इस बारेमे कोई शक था ही नही। जिस तरहसे मेरे मनमे कोई शक नही कि ईश्वर है और उसका सबसे तादृश्य नाम सत्य है, उसी तरहसे मेरे दिलमे कोई शक नही है कि मेरा फाका गलत नही था। अब मुबारकबादके तारोका ताता लगा है। चिंताका बोझ हल्का होनेसे लोग आरामकी सास लेने लगे है। मित्रगण मुझे क्षमा करेगे कि मै सबको अलग-अलग पहुच नही भेज सकता, ऐसा करना नामुमकिन है। मै यह भी आशा रखता हू कि तार भेजनेवाले पहुचकी आशा भी नही रखते होगे।

तारोके ढेरमेसे मै दो तार यहा देता हू। एक पश्चिमी पजाबके प्रधान मन्त्रीका है और दूसरा भोपालके नवाब साहबका। उन लोगोका आज लोग काफी अविश्वास करते है। तार तो आप सुनेगे ही। उस बारेमे मै कुछ कहना नही चाहता। अगर ये तार उनके दिलोके सच्चे भावको जाहिर करनेवाले न होते तो क्यो वे उपवास जैसे पवित्र और गभीर मौके-पर मुझे तार भेजनेकी तकलीफ उठाते ?

भोपालके नवाब साहब अपने तारमे लिखते है

"सब कौमोके दिली मेलके लिए आपकी अपीलको हिंदुस्तानके दोनो हिस्सोके सब शातिप्रिय लोग जरूर मानेगे। इसी तरहसे, हिंदुस्तानके दोनो हिस्सोमे दोस्ती और समझौता होने की इस अपीलको भी सब लोग जरूर मानेगे। खुशकिस्मतीसे इस रियासतमे, पिछले सालमे हमारी कठिनाइयो-का सामना हम सब कौमोके समझौते, प्रेम और मेलके उसूलपर कर सके है। नतीजा यह है कि इस रियासतमे शाति-भग करनेवाला एक भी किस्सा नही बना। हम आपको यकीन दिलाते है कि हम अपनी पूरी ताकतसे इस मेल-जोल और मित्र-भावको बढानेकी कोशिश करेगे।"

पश्चिमी पजाबके प्रधान मत्रीका तार भी मै पूरा-पूरा देता हू। वे लिखते है

"आपने एक भले कामको बढानेके लिए जो कदम उठाया है, पश्चिमी पजाबकी वजारत[1] उसकी तहेदिलसे[2] तारीफ करती है और सच्चे हृदयसे उसकी कदर करती है। इस वजारतने अकलियतोकी जान-माल और इज्जत बचानेके लिए, जो भी हो सके वह करनेका उसूल[3] हमेशा अपने सामने रखा है। यह वजारत मानती है कि अकलियतोको अन्य नागरिकोके बराबर हक मिलने चाहिए। हम आपको यकीन दिलाते है कि यह वजारत इस नीतिपर अब और दुगने जोरसे अमल करेगी। हमे यही फिकर है कि हिंदुस्तानके भूखण्डमे एक जगह फौरन हालत सुधरे, ताकि आप अपना उपवास छोड सके। आपके-जैसी कीमती जिंदगीको बचानेके लिए इस सूबेमे हमारी कोशिशमे कोई कसर नही रहेगी।"

आजकल लोग बिना सोचे-समझे नकल करने लगते है। इसलिए मुझे चेतावनी देनी होगी कि कोई इतने ही समयमे इस तरहके परिणामकी आशा रखकर इस तरहका उपवास शुरू न करे। अगर कोई करेगा तो उसे निराश होना पडेगा और ऐसे अचूक और शाश्वत उपायकी बदनामी होगी। उपवासकी शर्ते कडी है। अगर ईश्वरमे जीता-जागता विश्वास नही है और अतरात्मासे आवाज, ईश्वरीय हुकम नही निकलता है तो

---

[1] मत्रि-मडल; [2] हृदयसे; [3] सिद्धात।

उपवास करना फिजूल है। तीसरी शर्त भी लगानेकी इच्छा होती है, मगर इसकी जरूरत नही है। ईश्वरका हुकम तभी मिल सकता है जब उपवासका मकसद सच्चा हो, सही हो और बामौका[१] हो। इसमेसे यह भी निकलता है कि ऐसे कदमके लिए पहलेसे लबी तैयारी करनी पडती है, इसलिए कोई झटसे उपवास करने न बैठे।

दिल्लीके शहरियोके सामने और पाकिस्तानसे आए हुए दुखी लोगोके सामने बहुत बडा काम है। उनको चाहिए कि पूरे विश्वासके साथ आपस-आपसमे मिलनेके मौके ढूढे।

कल बहुत-सी मुसलमान बहनोसे मिलकर मुझे निहायत खुशी हुई। मेरे साथकी लडकियोने मुझे बताया कि वे बिरला हाउसमे बैठी हुई है, मगर जानती नही कि अदर आए या न आए। उनमेसे अधिकतर पर्देमे थी। मैने उन्हे लानेके लिए कहा और वे आई। मैने उनसे कहा कि वे अपने पिता और भाईके सामने पर्दा नही रखती तो मेरे सामने क्यो? फौरन हरएकने पर्दा निकाल दिया। यह पहला मौका नही है कि मेरे सामने पर्दा निकाला गया है। मै इस बातका जिकर यह बतानेके लिए करता हू कि सच्चा प्रेम—और मै दावा करता हू कि मेरा प्रेम सच्चा है—क्या कर सकता है।

हिंदू और सिख बहनोको मुसलमान बहनोके पास जाना चाहिए और उनसे दोस्ती करनी चाहिए। खास-खास मौकोपर, त्योहारोपर, उनको निमत्रण देना चाहिए और उनका निमत्रण स्वीकार करना चाहिए। मुसलमान लडके-लडकिया आम स्कूलोकी तरफ खिचे, साम्प्रदायिक स्कूलोकी तरफ नही, वे स्कूलोके खेलोमे हिस्सा ले।

मुसलमानोका बहिष्कार नही होना चाहिए। इतना ही नही, बल्कि उन्हे अनुरोध करना चाहिए कि वे जो धधे करते थे उन्हे फिरसे करने लगे। मुसलमान कारीगरको खोकर दिल्लीने नुक्सान उठाया है। हिंदू और सिखोके लिए यह ख्वाहिश रखना कि वे मुसलमानोसे उनकी रोटी कमानेका जरिया छीन ले, बहुत बुरी कजूसी होगी। एक तरफसे तो कोई

---

[१] समयानुसार।

चीज या कामपर किसी एकका इजारा नही होना चाहिए, दूसरी तरफसे किसीको वाहर करनेकी कोशिश नही होनी चाहिए। हमारा देश वडा है, उसमे सवके लिए जगह है।

जो शाति-कमेटिया वनी है वे सो न जाय। सव मुल्कोमे वहुत-सी कमेटिया दुर्भाग्यसे सो जाया करती है। आप लोगोके वीच मुझे जिदा रखनेकी शर्त यह है कि हिंदुस्तानकी सव कौमे शातिसे साथ-साथ रहे। और वह शाति तलवारके जोरसे नही, मगर मुहव्वतके जोरसे हो। मुहव्वतसे वढकर जोडनेवाली चीज दुनियामे दूसरी कोई नही है।

: २१४ :

२० जनवरी १९४८

भाइयो और वहनो,

पहली वात तो मै आपसे यह कह दू कि जिन लोगोने दस्तखत किए उन्होने, मेरी उम्मीद है, सत्यरूपी ईश्वरको साक्षी रखकर दस्तखत किए है, तो भी कलकत्तेसे ऐसी आवाज आ रही है कि यहा जो काम हुआ है उसमे भी कुछ घोटाला न हो। अगर दिल्लीके निवासी और दिल्लीमे जो दु खी आ गए है, वे सव सावित कदम रहेगे चाहे वाहरमे कुछ भी हो—हिदुस्तानके और हिस्सेमे कुछ भी हो, पाकिस्तानमे कुछ भी हो—तो मेरा दृढ मत है कि आप हिदुस्तानको वचा लेगे और पाकिस्तानको भी वचानेवाले है। आखिर दिल्ली आजकलका नही, पुराना शहर है। आज दिल्लीमे जो काम हो गया है—इतना वडा काम, जो सत्यमय और अहिंसामय है—उसका प्रभाव सारे हिंदुस्तानमे, सारे पाकिस्तानमे और सारी दुनियामे पडेगा।

सरदारने ववईमे क्या कहा, उसे गौरसे पढे तो पता चल जायगा कि सरदार और पडित नेहरू दूर नही है, अलग-अलग नही है। कहनेका तरीका अलग हो सकता है, लेकिन करते एक ही चीज है। वे हिदुस्तान या मुसलमानके दुश्मन नही हो सकते। जो मुसलमानका दुश्मन है वह

हिंदुस्तानका भी दुश्मन है, इसमें मुझे कोई शक नही । इसलिए मैं कहूगा कि हम कम-से-कम इतना तो सीख ले । सारी दुनियामे लोग सीख चुके है । हा, अमरीका एक ऐसा मुल्क है, जहा हब्शी लोगोको मार डाला जाता है । वहा काफी ऐसे गोरे लोग है जो बुरा नही मानते, उनके लिए दिलमे शर्म नही है, लेकिन दुनियाके दूसरे लोग इसे पसद नही करते । उसको हम वहशियाना मानते है । हमारे ही अखबारोने लिखा है कि वे लोग कितने वहशियाना काम करते है । अमरीकाके लोग इतने सुधारक है, तो भी ऐसा करते है । हम ऊचे है, हम ऐसा कर नही सकते । वह तो है, लेकिन आज क्या होता है । तो मैं कहूगा कि आप सब बता दे कि गैर-इन्साफ, बाहर हो या यहा, उसका बदला हम न लेंगे, हकूमतपर छोड देंगे । कम-से-कम इतना करे, तब लोग आरामसे आ-जा सकते है ।

मैंने कहा कि मुमकिन है, मै यहासे पाकिस्तान जाऊ, लेकिन पाकिस्तानको तब जाऊगा जब हकूमत बुलाएगी और कहेगी कि तू तो भला आदमी है, ख्वाबमे भी मुसलमानोका बुरा नही कर सकता, हिंदुओका भी बुरा नही करता, सिखोका भी बुरा नही करता । हर हालतमे तेरी हाजिरी पाकिस्तानमे चाहते है । या तो एक-एक हकूमत कहे—तीन हकूमते है, बलूचिस्तानको छोड दो—या पाकिस्तानकी मरकजी[1] हकूमत है वह कहे तो जा सकता हू । तब आप समझे कि मैं चला गया । हा, डाक्टर कहते है कि फाकेसे जिस्मको इतना नुक्सान पहुचा है कि पद्रह दिन कही नही जा सकता— सूखी चीज भी नही खा सकता—तुमको तो पानी ही पीना है । पीछे पानीमे दूध आ जाता है, फलका रस आ जाता है । दूधसे तो आदमी जिदगीभर रह सकता है ।

दूसरी बात यह है । यहा जितने दुखी लोग है, उनके लिए तो पडितजी—उनको मैं बहुत पहचानता हू—ऐसे है कि दूसरोको सुलाकर सोनेवाले है । मानो एक ही बिछौना है, जो सूखा है, बाकी गीला है, तो वह सूखेमें दुखीको सुलाएगे खुद चाहे घूमते रहे । मै यह पढकर बहुत खुश हुआ । वे कहते है कि उनके घरमे जगह नही है, दूसरे आदमी भी चले आते है,

---

[1] केन्द्रीय ।

इसलिए जगह नही रहती है। वह तो मुख्य प्रधान है। तो मिलनेवाले जाते है, दोस्त है, अग्रेज भी जाते है तो क्या वहासे उनको निकाल दे ? तो भी कहते है कि मेरी तरफसे एक कमरा या दो कमरा, जितना निकल सकता है निकालूगा और दु खी लोगोको रखूगा। फिर दूसरे मुख्य प्रधान भी करे, फिर फौजके अफसर है वे भी ऐसा करे। इस तरहसे सब अपने धर्मका पालन करे तो कोई दु खी नही रहेगा। ऐसा जो जवाहरने किया, उसे देखा तो मै उनको और आपको धन्यवाद देता हू कि हमारे यहा एक रत्न है। पीछे कहते है कि दूसरे धनिक लोग जैसे बिडला या दूसरे है, उनको भी यही करना है। जब प्रधान ऐसा करता है तो और भी क्यो न ऐसा करे ? बडी तेजीसे दु खी लोगोके दु खको दूर करनेकी कोशिश हो रही है। इससे हम सीखे कि हम मुसलमानोसे दुश्मनी नही करेगे।

एक खत आया है। मेरा फाका चलता था तब १५ जनवरीको आया था। लोगोमे बदमाश भी पडे है। उन्होने सोचा कि व्यापार करो। उन्होने बडे-बडे नोट निकाल दिए और गरीबोको बेचने लगे। सस्ते मिलते है, इसलिए गरीब बेचारे ले लेते है। लेकिन इन नोटोकी तो कोई कीमत नही, आखिर मामूली कागजके ही होते है। ऐसे नोट निकालने-वालोसे मै हाथ जोडकर कहूगा कि ऐसा मत करो। क्या सच्चा मार्ग नही मिलता है, जिससे अपना काम चला सके ? मै गरीबोको भी, जो भोले है, कहूगा कि कहातक ऐसे भोले रहोगे ! करोडो भोले रहेगे तो काम नही चलेगा।

मुझको एक तार लाहौरसे आया है। वे भाई काश्मीर स्वातन्त्र्य लीग-के अध्यक्ष है। वे लिखते है कि आप जो कर रहे है वह बहुत बुलद काम है, लेकिन उसमे कामयाबी नही मिल सकती, जबतक काश्मीरका जो मसला है उसका फैसला नही हो जाता। इसके लिए तुमको ऐसा करना चाहिए कि भारत-सरकारने वहा जो फौज भेजी है उसको हटाले, क्योकि उस फौजने काश्मीरमे हमला किया है। और काश्मीर जिसका है उसको दे दो तब फैसला होगा। इससे मुझको दु ख होता है। क्या काश्मीरका फैसला नही होता है तो आज ऐसा ही रहेगा—क्या मुसलमान हिंदू-सिखके, दुश्मन रहेगे और हिंदू-सिख मुसलमानके दुश्मन रहेगे, [illegible] काश्मीर-

के लिए ? पीछे लिखा क्या है उसे समझना चाहिए। मैं तो ऐसा नही मानता हू कि हमारी हकूमतने जो फौज भेजी है वह हमला करनेके लिए है। काश्मीरकी सकटकालीन सरकारके प्रधान शेख अब्दुल्लाने लिखा और महाराजाने लिखा कि हमको इमदाद[1] भेजो, नही तो काश्मीर गया—वह तो उनकी निगाहसे है, लिखनेवालेकी निगाहमे नही सही। तो मै उस भाईको और ऐसे जितने है उन सबको कहूगा कि वे ऐसा न करे। हा, यह ठीक है कि जिसका है उसको दे दो। तो जितने बाँहरसे आए है—अफरीदी हो या कोई भी हो—हट जाय। पुछके लोग बागी बने है तो मुझको शिकायत नही है, वे रहे तो भी बागी बनकर समूचे काश्मीरको ले ले, यह अच्छा नही है। वहासे बाहरके सब लोग निकल जाय, बाहरसे कोई गोलमाल न करे, शिकायत न करे और बाहरसे भीतरवालोको मदद न करे तो मै समझ सकता हू, लेकिन कहे कि हम रहेगे और उनको निकाल दो तो बात बनती नही है। पीछे यह कहना कि काश्मीर जिसका है उसको दे दो, तो किसका है ? मै कहूगा कि अभी तो काश्मीर महाराजाका है, क्योकि महाराजा तो वहा है। आज हमारी निगाहमे, हकूमतकी निगाहमे, महाराजाको निकाल नही सकते। हा, ऐसा समझे कि महाराजा बदमाश है, रैयतके लिए कुछ करता नही है तो मेरा खयाल है कि हकूमतका हक है कि उसे निकाल दे, लेकिन अभी ऐसी बात तो है नही। वहा जो मुसलमान है वे कहे कि हमे महाराजा नही चाहिए, हम सीधा-सीधा पाकिस्तान या हिंदुस्तानमे जाना चाहते है तो इसमे कोई शिकायत नही हो सकती। मै तो फाका करके उठा हू। मै किसीका दुश्मन नही हू तो मुसलमानका दुश्मन कैसे हो सकता हू ! मेरे पास आए और समझाए कि मेरी क्या गलती है। समझा सको तो मै मान जाऊगा।

पीछे एक भाई ग्वालियरसे लिखते है—तार रतलामसे आया है, मुसलमान भाईका है। सही क्या है, मै नही जानता हू। तो वे लिखते है कि हमारे वहा ग्वालियर रियासतमे कोई देहात है—हम वहा मजबूर हो गए तब हिंदुओने हमे ले तो लिया, लेकिन मारना शुरू कर दिया—एक-दो

---

[1] मदद।

मारे गए, अनाज वगैरा लूट लिया। मकानोको जला दिया। पद्रह-सोलह जनवरीको लिखा। उन दिनो मेरा फाका चलता था। फाकासे उसको क्या मतलव हो सकता है ? अगर यह सही है तो मै ग्वालियरके हिंदुओसे कहूगा कि दिल्लीमे जो वन गया है उसको आप लोग विगाडनेवाले है। वे कहते है कि जो हकूमत चलानेवाले है वे भी इमदाद नही देते है। ऐसा कैसे हो सकता है ? हिंदुस्तानके एक कोनेमे भी ऐसा हो तो मै कहूगा कि हकूमतको शर्मिदा होना है और हमको भी शर्मिदा होना है। मेरी उम्मीद है कि ऐसा हुआ हो तो आखिरमे उसको ठीक कर दिया जायगा।

मैने सुना है, अखवारोमे पढा है कि काठियावाडके जितने राजा है—काफी है, दो सौसे ज्यादा है—उन सबने मिलकर इकरार कर लिया है कि हम सव एक रियासत वनाएगे और असेम्वली वना लेगे, प्रजाका भी काम करेगे और अपना भी काम करेगे। अगर अखवारोमे जो वात आई है वह सही है तो वडी चीज है। इसके लिए काठियावाडके सव राजाओको और वहाके लोगोको मै धन्यवाद देता हू। भावनगरमे सव सत्ता प्रजाके हाथ सौप दी और राजा प्रजाका सेवक वन गया। इस वड़े कामके लिए मै उनको धन्यवाद देना चाहता हू।

: २१५ :

२१ जनवरी १९४८

भाइयो और वहनो,

पहले तो मै माफी माग लू कि मै १० मिनिट देरसे आया हू। वीमार हू, इसलिए समयपर नही आ सका।

कलके वम फूटनेकी वात कर लू। लोग मेरी तारीफ करते है और तार भी भेजते है। पर मैने कोई वहादुरी नही दिखाई। मैने तो यही समझा था कि फोजवाले कही प्रैक्टिस[1] करते है। वादमे सुना कि

---

[1] अभ्यास।

बम था। मुझसे कहा गया कि आप मरनेवाले थे, पर ईश्वरकी कृपासे बच गए। अगर सामने बम फटे और मै न डरू, तो आप देखेगे और कहेगे कि वह बमसे मर गया, तो भी हँसता ही रहा। आज तो मै तारीफके काबिल नही हू। जिस भाईने यह काम किया, उससे आपको या किसीको नफरत नही करनी चाहिए। उसने तो यह मान लिया कि मै हिंदू-धर्मका दुश्मन हू। क्या गीताके चौथे अध्यायमे यह नही कहा गया है कि जहा कही दुष्ट धर्मको नुकसान पहुचाते है, वहा उन्हे मारनेके लिए भगवान किसीको भेज देता है। उसने बहादुरीसे जवाब दिया। हम सब ईश्वरसे प्रार्थना करे कि वह उसे सन्मति दे। जिसे हम दुष्ट मानते है और वह दुष्ट है, तो उसकी खबर ईश्वर लेगा।

वह नौजवान शायद किसी मस्जिदमे बैठ गया था। जगह नही थी, तो वह हकूमतको दोषी ठहरावे, पर पुलिसका या किसीका कहना न माने, यह तो ठीक नही।

इस तरह हिंदू-धर्म नही बच सकता। मैने बचपनसे हिंदू-धर्मको पढा और सीखा है। मै छोटा-सा था और डरता था, तो मेरी दाई कहती थी कि डरता क्यो है, राम-नाम ले। फिर मुझे ईसाई, मुसलमान, पारसी सब मिले, मगर मै जैसा छोटी उमरमे था, वैसा ही आज भी हू। अगर मुझे हिंदू-धर्मका रक्षक बनना है तो ईश्वर मुझे बचावेगा।

कुछ सिखोने आकर मुझसे कहा कि हम नही मानते कि इस काममे कोई सिख शामिल था। सिख होता तो भी क्या? हिंदू या मुसलमान होता, तो भी क्या? ईश्वर उसका भला करे। मैने इसपेक्टर जनरलसे कहा है कि उस आदमीको सताया न जाय। उसका मन जीतनेकी कोशिश की जाय। उसे छोडनेको मै नही कह सकता। अगर वह इस बातको समझ ले कि उसने हिंदू-धर्म, हिंदुस्तान, मुसलमानो और सारे जगतके सामने अपराध किया है तो उसपर गुस्सा न करे, रहम करे। अगर सबके मनमे यही है कि बूढेका फाका निकम्मा था, पर इसे मरने कैसे दे, कौन उसका इलजाम ले, तो आप गुनहगार है न कि बम फेकनेवाला नौजवान। अगर ऐसा नही है, तो उस आदमीका दिल अपने आप बदलेगा ही, क्योकि इस जगतमे पाप कभी अपने आप रह नही सकता। वह किसीके सहारे ही टिक

सकता है। सिर्फ भगवान और भगवानके भक्त ही अपने सहारे रह सकते हैं। इसीमेसे हमारा असहयोग निकला। अहिंसात्मक असहयोग यहा भी ठीक है।

आप भी भगवानका नाम लेते है। हमला हो, कोई पुलिस भी मददपर न आवे, गोलिया भी चले और तब भी मै स्थिर रहू और राम-नाम लेता और आपसे लिवाता रहू, ऐसी शक्ति ईश्वर मुझे दे, तब मै धन्यवादके लायक हू।

कल एक अनपढ बहनने इतनी हिम्मत दिखाई कि बम फेकनेवालेको पकडवा दिया। यह मुझे अच्छा लगा। मै मानता हू कि कोई मिस्कीन हो, अनपढ हो, या पढा-लिखा हो, मन है तो सब कुछ है। मन चगा तो भीतरमे गगा। मुझपर तो सबने प्रेम ही बरसाया है।

बहावलपुरवालोने लिखा है कि हमे जल्दी निकालो, नही तो सब मरनेवाले है। मै कहता हू कि वे घबराए नही। वहाके नवाब साहबने आज भी मुझे तार दिया है कि वे सब कोशिश करेगे। मै उस चीजको भूल नही गया हू।

बबईके सिंधी सिख भाइयोकी तरफसे एक तार आया है। वे कहते है कि सिंधमे १५००० सिख है। कुछको तो मार डाला है। ये १५००० इधर-उधर पडे है। उनकी जान और उनका ईमान खतरेमे है। उन्हे वहासे निकालनेकी तजवीज कीजिए—हवाई जहाजसे ही कोशिश कीजिए। मै यहा जो कहता हू, वह बात उन तक जल्दीसे पहुचेगी। तार देरसे पहुचते है। मुझसे यह बरदाश्त नही होगा कि १५००० सिख काटे जाय, या उनके ईमान-इज्जतपर हमला हो। तो मै एक इन्सान जो कर सकता है वह करूगा। दूसरे, पडितजी तो सबका ध्यान रखते ही है। सिंध और पाकिस्तानकी हकूमतको मै कहूगा कि वे सिखोको इतमीनान दिला दे कि जबतक वे वहा है, उनको किसी तरहका खतरा नही। अगर वे यह नही कर सकते, तो सबको एक जगह रखे या हिफाजतके साथ भेज दे। सिख बहादुर है। उनके ईमानपर हमला कौन करनेवाला है। तो सिख भाई इतमीनान रखे। मैने कुछ पारसी भाई वहा देखनेको भेजे है।

एक भाई लिखते है कि जब आप १९४२ मे जेलमे थे तब हमने हिंसाका भी काम कर लिया था। उपवासमे अगर कही आपका अत हो

गया तो देशमे ऐसी हिंसा फूटेगी कि आपका ईश्वर भी रो उठेगा। इसलिए आपका उपवास हिंसक होगा। आप उपवास छोड दीजिए। यह बात प्रेमसे लिखी है और अज्ञानसे भी। यह सही है कि मेरे जेल जानेके बाद हिंसा हुई। उसीका यह नतीजा है। उस वक्त सारा हिंद अहिंसक रहता तो उसका आजका हाल कभी न होता। मेरे मरनेमे सब आपस-आपसमे लडेंगे, इस बारेमे भी मैंने सोच लिया है। ईश्वरको बचाना होगा तो बचावेगा। अहिंसामे भरा आदमी मरता है तो उसका नतीजा अच्छा ही होगा। पर कृष्ण भगवानके मरनेके बाद यादव ज्यादा भले या पवित्र नही हुए। सब कट-कटकर मर गए। तो मैं उसपर रोनेवाला नही। भगवानने इरादा कर लिया है कि इन्हें मरने दो, तो ऐसा होगा। लेकिन मैं दीन, मिस्कीन आदमी हू। मेरे मरनेसे क्या लडना मारना? पर भगवान मिस्कीनको भी निमित्त बनाकर न मालूम क्या-क्या कर सकता है? कहते हैं, अब यहाके हिंदू-मुसलमान नही लडेंगे। मुसलमान औरतें भी दिल्लीमे घरसे बाहर आने लगी हैं। मुझे खुशी है। मैं सबसे कहता हू कि अपने-अपने दिलको भगवानका मदिर बना लो।

: २१६ :

२२ जनवरी १९४८

भाइयो और बहनो,

आप देखते है कि आहिस्ता-आहिस्ता ईश्वरकी तरफसे मुझमे ताकत आ रही है। उम्मीद है कि जल्दी पहले-जैसा हो जाऊगा। पर यह ईश्वरके हाथोमे है।

एक भाई लिखते है कि जवाहरलालजी, दूसरे वजीर और फौजी अफसर वगैरा सब अपने-अपने घरोमेसे कुछ जगह शरणार्थियोके लिए निकालें तो भी उनमे कितने लोग बस सकेंगे? कहनेवाले ज्यादा है, करनेवाले कम।

ठीक है, कुछ हजार ही उनमे रह सकेंगे। काम इतना बडा नही,

पर करनेवाले एक मिसाल कायम करेगे। इगलैडके राजा कुछ भी त्याग करे, एक प्याली शराव भी छोडे, तो भी उनकी कद्र होती है। सव सभ्य देशोमे ऐसा होता है। सव दु खी लोगोपर अच्छा असर होता है। अगर दूसरे लोग भी उनकी तरह करेगे, तो उनके लिए मकान वगैरा वनाने-वालोको तसल्ली मिलेगी। अगर नतीजा यह होगा कि दूसरी जगहसे भी लोग दिल्ली आने लगे, तो काम विगड़ेगा। लोगोने समझा कि दिल्लीमे हमारी पूछ-ताछ ज्यादा होगी।

दूसरी कठिनाई यह है—लोग कहते है कि पहले काग्रेसको एक लाख रुपये जमा करनेमे भी मुसीवत होती थी। लोग देते तो थे, पर हम भिखारी थे। आज करोडो रुपये हमारे हाथमे आ गए है। करोडो लेनेकी ताकत भले आई, पर खर्च तो वही अग्रेजी जमानेवाला है। जितना रुपया उडाना है, उडावे। शानसे न रहे, तव उसका असर देशसे वाहर भी पडेगा। उन्हे समझना चाहिए कि पैसा शौकके लिए खर्चना चाहिए या देशके कामके लिए ? यदि यह वात ठीक है कि हम इगलैडके साथ मुकावला करे तो कर सकते है, पर वहा एक आदमीकी जो आमदनी है, उससे यहा वहुत कम है। ऐसा गरीव मुल्क दूसरे मुल्कोके साथ पैसेका मुकावला करे तो वह मर जावेगा। दूसरे देशोमे हमारे प्रतिनिधि भी यह वात समझे। अमे-रिकाका मुकावला रहने दो। खानेमे, पीनेमे और पार्टिया देनेमे वे जो दावा करते थे कि हमारी हकूमत आवेगी तो हमारा भी रग-ढग वदल जायगा वह उन्हे झुठला देना चाहिए। हमारे त्यागी काग्रेसवाले भी ऐसी गलती करे तो यह सोचनेकी वात है।

फिर लोग कहते है कि ये लोग इतने पैसे लेते है, तव हम हकूमतकी नौकरी करे, तो हमे भी ज्यादा पैसे मिलने चाहिए। सरदार पटेलको अगर १५०० रुपए मिले, तो हमे ५०० तो मिलने ही चाहिए। यह हिंदुस्तानमे रहनेका तरीका नही है। जव हरएक आत्म-शुद्धिका प्रयत्न करता हो, तव यह सव सोचना कैसा ? पैसेसे किसीकी कीमत नही होती।

ग्वालियर रियासतके एक गावमे मुसलमानोपर जो गुजरी है उसे वतानेवाले तारकी वात मैने की थी। उस वारेमे मुझे वहाके एक कार्यकर्ताने सुनाया कि आपको मै एक खुशखवरी देने आया हू। ग्वालियरके

महाराजाने सब सत्ता प्रजाको दे दी है। थोडी जो रखी है उसमे भी हमारा बहुमत होगा। उन्होने मुझसे कहा कि लोगोको जो सत्ता मिलनी चाहिए वह मिली, यह सुनकर आप खुश होगे। हा, मगर प्रजा-मडलवालोमे भेद-भाव आ जाय और वे मुसलमानोको निकाले, तो मुझे क्या खुशी? अगर आप कहे कि भेदभाव नही होगा, क्या हिंदू, क्या मुसलमान, क्या पारसी, क्या ईसाई, किसीके साथ वैर नही करेगे, तब तो वह मेरा ही काम हुआ। उसमे मेरा धन्यवाद और आशीर्वाद मिलेगा ही। महाराजाको लोगोका सेवक बनना है। इस आत्म-शुद्धिके यज्ञमे राजा-प्रजा सबको अच्छी तरह भाग लेना है। तब तो हम सारी दुनियाके सामने खडे रह सकते है। अगर हमे दुनियाकी चालको ठीक रखना है और उसके रक्षक बनना है तो इसके सिवा दूसरा कोई रास्ता नही है।

: २१७ :

२३ जनवरी १९४८

भाइयो और बहनो,

आज मेरे पास काफी चीजे पडी है। जितना हो सकेगा उतना कहूगा।

आज सुभाषबाबूकी जन्म-तिथि है। मैने कह दिया है कि मै तो किसीकी जन्म-तिथि या मृत्यु-तिथि याद नही रखता। वह आदत मेरी नही है। सुभाष बाबूकी तिथिकी मुझे याद दिलाई गई। उससे मै राजी हुआ। उसका भी एक खास कारण है। वे हिंसाके पुजारी थे। मै अहिंसाका पुजारी हू। पर इसमे क्या? मेरे पास गुणकी ही कीमत है। तुलसीदासजीने कहा है न

"जड-चेतन गुन-दोषमय विश्व कीन्ह करतार।
सत-हस गुन गहहिं पय परिहरि बारि विकार।।

हस जैसे पानीको छोडकर दूध ले लेता है, वैसे ही हमे भी करना चाहिए। मनुष्यमात्रमे गुण और दोष दोनो भरे पडे है। हमे गुणोको ग्रहण

करना चाहिए। दोषोको भूल जाना चाहिए। सुभाषबाबू बडे देश-प्रेमी थे। उन्होने देशके लिए अपनी जानकी बाजी लगा दी थी और वह करके भी बता दिया। वह सेनापति बने। उनकी फौजमे हिंदू, मुसलमान, पारसी, सिख सब थे। सब बगाली ही थे, ऐसा भी नही था। उनमे न प्रातीयता थी, न रगभेद, न जातिभेद। वे सेनापति थे, इसलिए उन्हे ज्यादा सहूलियत लेनी या देनी चाहिए, ऐसा भी नही था।

एक बार एक सज्जन, जो बडे वकील थे, उन्होने मुझसे पूछा कि हिंदू-धर्मकी व्याख्या क्या है? मैने कहा, मै हिंदू-धर्मकी व्याख्या नही जानता। मै आप-जैसा वकील कहा हू? मेरे हिंदू-धर्मकी व्याख्या मै दे सकता हू। वह यह है कि जो सब धर्मोको समान माने वही हिंदू-धर्म है। सुभाषबाबूने सबका मन हरण करके अपना काम किया। इस चीजको हम याद रखे।

दूसरी चीज—ग्वालियरसे खबर आई है कि रतलामसे जो आपको एक गावके झगडेके बारेमे खबर मिली थी, वह सर्वथा ठीक नही है। वहा कुछ दगा हुआ तो सही, लेकिन आपस-आपसमे उसमे हिंदू-मुसलमानकी कोई बात न थी। मुझे इससे बडी खुशी होती है। उसपरसे मै मुसलमान भाइयोको जाग्रत करना चाहता हू। मै तो, जो चीज मेरे सामने आती है, उसे जनताके सामने रख देता हू। अगर ऐसी बनी-बनाई बात कहते रहेगे, तो सबके दिलमे गलतफहमी हो जायगी। कोई भी चीज बढाकर न बतावे। अपनी गलती बढाकर बता दे, दूसरोकी कम करके। तब यह माना जायगा कि हम आत्मशुद्धिके नियमका पालन करते है।

मैसूरसे तार आया है कि आपने जो व्रत लिया उसका मैसूरकी जनतापर असर नही पडा। वहा झगडा हो गया है। मै मैसूरके हिंदू-मुसलमानोको जानता हू। जिनके हाथमे हकूमत है उनको भी जानता हू। मैने मैसूर सरकारको लिखा है कि वे, जो कुछ हुआ है, उसे साफ-साफ दुनियाको बता दे।

जूनागढमे मुसलमान भाइयोका तार आया है। वे लिखते है कि जबसे कमिश्नर और सरदारने हकूमत ले ली है, तबसे यहा हमे न्याय ही मिल रहा है। अब कोई भी हममे फूट नही डाल सकेगा। यह मुझे बडा अच्छा लगता है।

मेरठसे एक तार आया है। उसमें लिखा है कि आपके उपवासका नतीजा ठीक आ रहा है। यहांपर जो नेशनलिस्ट[1] मुसलमान है, उनसे हमें कोई नफरत नहीं है। पर लीगी मुसलमान सीधे हो गए है या हो जाएंगे, ऐसा मानोगे तो आपको पछताना पड़ेगा। आपकी अहिंसा अच्छी है, मगर राजनीतिमें नहीं चल सकती। फिर भी हम आपको कहना चाहते हैं कि आजकी जो हकूमत है वह अच्छी है, इसमें किसी तरहकी तबदीली नहीं होनी चाहिए।

मैं तो नहीं समझता कि तबदीलीका सवाल उठता कहां है। मगर तबदीलीकी गुंजाइश हो तो जिनके हाथमें हकूमत है, उन्हें निकालना आपके हाथोंमें है। मैं तो इतना जानता हूं कि उनके बिना आज आप काम नहीं चला सकेंगे।

आज यह कहना कि राजनीतिमें अहिंसा चल नहीं सकती, निकम्मी बात है। आज जो काम हम कर रहे हैं, वह हिंसाका है। मगर वह चल नहीं सकता। मेरठके मुसलमानोंने आजादीकी लड़ाईमें काफी हिस्सा लिया है। आजकलकी राजनीति अविश्वाससे चल ही नहीं सकती। इसलिए हमें मुसलमानोंपर विश्वास रखना ही होगा। यदि हमने तय कर लिया है कि भाई भाई बनकर रहना है, तो फिर हम किसी मुसलमानपर खामखा अविश्वास न करेंगे, फिर भले वह लीगी हो। मुसलमान कहें कि हिन्दू-सिख बदमाश हैं, तो यह निकम्मी बात है। ऐसे ही हरएक लीगीके लिए यह मान लेना भी बुरा है। अगर कोई लीगी या दूसरा कोई भी बुरी बात करता है, तो आप उसकी खबर सरकारको दें। हमारा परम धर्म मैंने सबको बता दिया है कि न्याय हुकूमतके हाथोंमें रहने दें, अपने हाथमें न लें। यह अहिंसाका काम होगा। मेरे पास बहुतसे तार आ रहे हैं। सबका जवाब नहीं दे सकता, इसलिए सभाके मार्फत मैं आप सबका आभार मानता हूं। आपकी दुआ सफल हो।

---

[1] राष्ट्रीय।

: २१८ :

२४ जनवरी १९४८

भाइयो और वहनो,

मैंने आपसे प्रार्थना की है कि सब लोगोको प्रार्थना-सभामे शात रहना चाहिए। आज तो मैंने प्रार्थनाके आरभमे भी कहा था कि सब शात हो जाए। तब तो आप शात हो गए, लेकिन बादमे जब प्रार्थना चलती थी तब कुछ वहने आपसमे वाते भी करती थी और वच्चे चीखते रहते थे। वह कोई अच्छा नही लगता था। मै वार-वार यही कहता हू कि सबको जब वच्चे चीखते हो या रोते हो, तो उनको वाहर ले जाना चाहिए। उन्हे भीतर लेकर वैठनेकी हिम्मत नही होनी चाहिए, अगर वे सभ्यता सीखना चाहती है तो।

आज एक तार मेरे पास है। इसकी वात तो मै कल ही करना चाहता था, लेकिन नही कर सका। वहुत लवा तार है, लेकिन उसमे इतना लिखा है कि दोनो हकूमतोमे यह समझौता तो हो गया है कि जो कैदी एक हकूमतमे हो गए थे, उनको दूसरी हकूमतमे भिज देना। जैसा कि अगर पश्चिमी पजावमे या कहो पाकिस्तानके पजावमे, जो आदमी कैदमे है, वे तो हिंदू और सिख ही हो सकते है, कोई अन्य और तरहसे हो, वह दूसरी वात है। इसी तरहसे जो पूर्वी पजावमे है, वे मुसलमान कैदी है। उनमें वे लडकिया भी है जिन्हे लोग भगा ले गए थे। तारमे वे कहते है कि ऐसा समझौता हो तो गया, लेकिन थोडे अर्सेतक चला। अभी वह टूट गया है और कहा यह जाता है कि जो टूटा उसका कारण यह है कि पश्चिमी पजावकी जो हकूमत है उसने कैदियोको रख लिया और कहा कि यह तभी हो सकता है जब कि पूर्वी पजावमे जितनी रियासते है, या राजा है और जहातक उनका कार-वार चलता है, वहा भी जो कैदी है, वे वापिस आने चाहिए और वहा जो लडकिया है उनको भी वापिस करना चाहिए।

मुझे तो इसमे कोई दिक्कत नही हो सकती है। ऐसे ही पश्चिमी पजावकी जो रियासते है, वहासे होना चाहिए। वहा कम रियासते है और यहा ज्यादा है, उससे क्या हुआ? कही भी हो, इस वारेमे समझौता हो

जाना चाहिए। इसमे दिक्कत आती है, यह तो सही है। पूर्वी पजाबसे जब यह समझौता कर लिया था तब तो यह नही था, ऐसा मै अखबारोसे समझता हू। नही था, तो भी क्या ? जितनी लडकिया उठा ले गए है, इधर या उधर, वे सब वापिस होनी चाहिए। मेरी निगाहमे तो यह नही होता कि पश्चिमी पजाबसे दस लडकी आती है तो पूर्वी पजाबसे भी दस ही जानी चाहिए, ग्यारहवी नही जा सकती। जितनी लडकिया पूर्वी पजाबमे पडी है, औरते है, पुरुष है या दूसरे कैदी है, उन सबको वापस कर देना चाहिए और यह सब विना शर्त होना चाहिए। लेकिन आज ऐसा नही होता है, क्योकि वैमनस्य भरा हुआ है। वे ऐसा करनेमे कठिनाई महसूस करते है। लेकिन यह तो होना ही चाहिए कि पूर्वी पजाबसे तो सबको वापस कर दे। उसमे क्या होगा ? माना कि कुछ ज्यादा तादादमे पश्चिमी पजाबमे और थोडी तादादमे पूर्वी पजाबमे है। मैने कहा है कि मुझको तो इसकी परवा नही है। सब गलती ही है, एकको ले गए वह गलती है और सौको ले गए वह भी गलती है। ज्यादा नही ले सके, उसका कोई दूसरा सबब नही है। दिलमे तो ऐसा नही था कि एक ही लडकीको ले जाए या इतने पुरुष ही कैद रखे। जब सब विगडा तो उसमे पीछे मुकाबला क्या करना था ! जो चलता रास्ता है उसमे तो रुकावट नही होनी चाहिए। मै तो कहता हू कि दूसरी चीजे भी करे, समझौता करके। अगर दोनो हकूमत दोस्ताना तरीकेसे करे और यह समझे कि लडाई हम आपस-आपसमे नही करना चाहते है, तो फिर रास्ता सीधा और साफ हो जाता है। इसीलिए मै दोनो हकूमतोसे बडे अदबसे कहूगा कि जो कुछ भी हो गया है उसे भूलकर अब भी दुरुस्त हो जाए। दिलको दुरुस्त करना है और अगर दिल दुरुस्त हो गया तो ठीक है और नही हुआ तो फिर हमे तो अपने धर्मका पालन करना ही है, लेकिन झगडेका सबब तो रह ही जाता है, फिर चाहे मुझको आप तार भेजते रहे कि हमारे झगडोका कारण कोई रहता ही नही। ये सारी चीजे आत्मशुद्धिमे आ जाती है। आत्मशुद्धिके माने यही है कि हम अपने दिलोको साफ करे।

लेकिन मेरे पास इल्जाम तो यह आ रहा है कि पश्चिमी पजाबमे जो औरतोको उठा ले गए है उनको वे उतनी तादादमे वापस नही करते।

ऐसी शिकायत पूर्वी पजावके वारेमे भी करते है। मैंने तहकीकात तो नही की है कि कौन झूठा है और कौन नही। मै तो जानता नही हू, लेकिन पश्चिमी पजावके वारेमे अगर यह शिकायत सही है तो शर्मकी वात है, पूर्वी पजावके वारेमे भी ऐसा ही है। लेकिन पश्चिमी पजावके वारेमे तो यह शिकायत भी है कि वे कहते है एक चीज, और करते है दूसरी। मै इस वारेमे इतना ही कह सकता हू कि यह सव दुरुस्त होना चाहिए। नही होता है तो वडे शर्मकी वात है। और पीछे मै तो यही कहू कि मैंने जो फाका किया उसके अक्षरोपर तो दिल्लीमे अमल हो भी गया, लेकिन उसमे जो भेद या रहस्य है, उसका पालन नही हुआ।

: २१६ :

२५ जनवरी १९४८

भाइयो और वहनो,

अभी हमारेमे दिलका समझौता हो गया है, ऐसा लोग कहते है। मै मुसलमानोसे पूछता हू और हिंदुओसे भी। सव यही कहते है कि हम सव समझ गए है कि अगर आपस-आपसमे लडते रहेगे तो काम हो नही सकेगा। इसलिए आप अव वेफिक्र रहे। मै यह पूछना तो नही चाहता हू कि इस सभामे कितने मुसलमान है। मगर मै सवको भाई-भाई वननेको कहूगा। किसी भी मुसलमानको अपना दोस्त वना ले, या यह मानो कि जो मुसलमान हमारे सामने आता है वह हमारा दोस्त है और उससे कहो कि चलो, वहा आरामसे वैठो। यहा किसीसे नफरत तो है ही नही। दो दिनसे तो यहा काफी आदमी आ रहे है। अगर सव अपने साथ एक-एक मुसलमान लाते है तो वहुत वडा काम हो जाता है। इसमे हम यही वता सकते है हम भाई-भाई है।

महरौलीमे जो दरगाह है, वहा कलसे मुसलमानोका उर्सका मेला शुरु होगा। वैसे तो वह हर वर्ष होता है, लेकिन इस वर्ष तो हमने उसको ढहा दिया था या विगाड दिया था। जो पत्थरकी चित्रकारीका काम

था वह भी ढहा दिया था। अब कुछ ठीक कर लिया है, इसलिए उर्स जैसा पहले मनता था ऐसा ही अब मनेगा। वहा कितने मुसलमान आते है इसका मुझको कुछ पता नही है। लेकिन इतना तो मुझे मालूम है कि वहा दरगाहमे मुसलमान भी काफी जाते थे और हिंदू भी। मेरी तो उम्मीद है सब हिंदू इस बार भी शातिसे और पक्की भावनामे जाए तो बडा अच्छा है। मुझको पता तो लग जायगा कि कितने हिंदू गए थे और कितने नही। लेकिन वे जो मुसलमान वहा जाते है उनका मजाक न करे और किसी तरहकी निंदा न करें। पुलिसके लोग वहा होगे तो सही, लेकिन कम-से-कम रहने चाहिए। आप सब पुलिस बन जाए और सब काम ऐसी खूबीसे हो कि वह चीज सारी दुनियामे चली जाए। इतना तो हो गया कि आप बडे मशहूर हो गए है। अखबारोमे भी आता है और मेरे पास तो तार और खत दुनियाके हर हिस्सेसे आ रहे है। चीनसे तथा एशियाके सब हिस्सोसे आ रहे है और अमरीका तथा यूरोपसे भी। दुनियाका कोई भी देश बाकी नही बचा है और सब यही कहते है कि यह तो बहुत बुलद काम हो गया है। हम तो ऐसा मानते थे कि अग्रेज तो वहासे आ गए, अब वे तो जाहिल आदमी है और जानते नही है कि अपना राज कैसे चलाना चाहिए और आपस-आपसमे लडते-भिडते थे। १५ अगस्तको यह सारी चीज तो हो गई और हम तारीफ भी कर रहे थे कि हम तलवारके जोरसे नही लडे। हमने शातिसे लडाई की या ठडी ताकत की लडाई की, और उसका नतीजा यह हुआ कि हमारी गोदमे आकर आजादी देवीने रमण करना शुरू कर दिया। ऐसी घटना १५ अगस्तको हो गई।

मै २ फरवरीको वर्धा चला जाऊगा। राजेद्र बाबू भी मेरे साथ जाएगे, लेकिन मै वहासे जल्दी ही लौटनेकी कोशिश करूगा। अखबारोमे प्रकाशित यह समाचार गलत है कि मै वहा एक महीनेतक ठहरूगा। लेकिन मै वर्धा तभी जा सकता हू जब आप लोग आशीर्वाद देगे और यह कहेगे कि अब आप आरामसे जा सकते है, हम यहा आपसमे लडनेवाले नही है।

उसके बादमे मै पाकिस्तान भी जाऊगा, लेकिन उसके लिए पाकिस्तान सरकारको कहना है कि तू आ सकता है और अपना काम कर सकता है।

अगर पाकिस्तानकी एक भी सूबेकी हकूमत बुलाएगी तो भी मै वहा चला जाऊंगा।

जब-जब काग्रेसकार्य-समितिकी बैठक मेरी उपस्थितिमे होती है, तब-तब मै आपको उसके बारेमे कुछ-न-कुछ बता देता हू। आज कार्य-समितिकी दूसरी बैठक हुई और उसमे काफी बाते हुई। सब बातोमे तो आपकी दिलचस्पी भी नही होगी, लेकिन एक बात तो आपके बताने लायक है। काग्रेसने २० सालसे यह तय कर लिया था कि देशमे जितनी बडी-बडी भाषाए है उतने प्रात होने चाहिए। काग्रेसने यह भी कहा था कि हकूमत हमारे हाथमे आते ही ऐसे प्रात बनाए जायगे। वैसे तो आज भी ९ या १० प्रात बने हुए है और वे एक मरकजके मातहत[1] है। इसी तरहसे अगर नए प्रान्त बने और सब दिल्लीके मातहत रहे तबतक कोई हर्जकी बात नही। लेकिन अगर वे सब अलग-अलग होकर आजाद हो जाए और एक मरकजके मातहत न रहे तो फिर वह एक निकम्मी बात हो जाती है। अलग-अलग प्रात बननेके बाद वे यह न समझ ले कि बबईका महाराष्ट्रसे कोई सबध नही, महाराष्ट्रका कर्नाटकसे और कर्नाटकका आध्रसे कोई सबध नही। तब तो हमारा काम बिगड जाता है। इसलिए सब आपसमे भाई-भाई समझे। इसके अलावा अगर भाषावार प्रात बन जाते है तो प्रातीय भाषाओकी भी तरक्की होती है। वहाके लोगोको हिंदुस्तानीमे तालीम देना तो वाहियात है और अग्रेजीमे देना तो और भी वाहियात है।

: २२० :

२६ जनवरी १९४८

भाइयो और बहनो,

आज २६ जनवरी स्वतत्रताका दिन है। जबतक हमारी आजादी-की लडाई जारी थी और आजादी हमारे हाथमे नही आई थी, तबतक इसका

---

[1] अधीन।

उत्सव मनाना जरूर मानी रखता था। किंतु अब आजादी हमारे हाथमे आ गई है और हमने इसका स्वाद चखा है तो हमे लगता है कि आजादीका हमारा स्वप्न एक भ्रम ही था जो कि अब गलत साबित हुआ है। कम-से-कम मुझे तो ऐसा लगा है।

आज हम किस चीजका उत्सव मनाने बैठे है ? हमारा भ्रम गलत साबित हुआ, इसका नही। मगर अपनी इस आशाका उत्सव हमे मनानेका जरूर हक है कि काली-से-काली घटा अब टल गई है और हम उस रास्तेपर है कि जिसपर आते-जाते हुए तुच्छ-से-तुच्छ ग्रामवासीकी गुलामीका अंत आएगा और वह हिंदुस्तानके शहरोका दास बनकर नही रहेगा, बल्कि देहातोके विचारमय उद्योगोके मालकी विज्ञप्ति और बिक्रीके लिए शहरके लोगोका उपयोग करेगा। वह यह सिद्ध करेगा कि वह सचमुच हिंदुस्तानकी भूमिका जायका[1] है।

इस रास्तेपर आगे जाते हुए अंतमे सब वर्ग और संप्रदाय एक समान होगे। यह हर्गिज न होगा कि बहुसंख्या अल्पसंख्यापर—चाहे वह कितनी ही कम या तुच्छ क्यो न हो—अपना प्रभुत्व जमाए या उसके प्रति ऊंच-नीचका भाव रखे। हमे चाहिए कि इस आशाके फलीभूत होनेमे हम ज्यादा देरी न होने दे कि जिससे लोगोके दिल खट्टे हो जाए।

दिन-प्रतिदिनकी हडतालो और तरह-तरहकी बदअमनी जो देशमे चल रही है वह क्या इसी चीजकी निशानी नही कि आशाए पूरी होनेमे बहुत देर लग रही है ? यह हमारी कमजोरी और रोगकी सूचक है। मजदूर-वर्गको अपनी शक्ति और गौरवको पहिचानना चाहिए। उनके मुकाबिलेमे वह शक्ति या गौरव पूजीपतियोमे कहा है, जो कि हमारे श्रमवर्गमे भरा है। सुव्यवस्थित समाजमे हडतालोका बदअमनीके लिए अवसर या अवकाश ही नही होना चाहिए। ऐसे समाजमे न्याय हासिल करनेके लिए काफी कानूनी रास्ते होगे। खुली या छुपी जोरावरीके लिए स्थान ही न होगा। कानपुर या कोयलेकी खानोमे या और कही भी हडताले होनेसे सारे समाज और खुद हडतालियोको आर्थिक नुक्सान उठाना

---

[1] स्वाद—व्यंजन।

पडता है। मुझे यह याद दिलाना निकम्मा होगा कि यह लबा लेक्चर मेरे मुहमे शोभा नही देता, जब कि मैंने खुद इतनी सफल हडताले करवाई है। अगर कोई ऐसे टीकाकार है तो उन्हे याद रखना चाहिए कि उस वक्त न तो आजादी थी और न इस किस्मके कानूनी जाब्ते थे जो कि आजकल है। कई वार तो मुझे ताज्जुब होता है कि क्या हम सचमुच ताकतकी सियासी शतरज और सत्तापर चुगल[1] मारनेकी ववा (बीमारी) से, जो कि पूर्व और पाश्चात्यके सब देशोमे फैल रही है, बच सकते है। इससे पहले कि मै इस विषयको यहा छोडू, मै यह आशा प्रकट किए बिना नही रह सकता कि यद्यपि भौगोलिक व राजनैतिक दृष्टिसे हिंदुस्तान दो भागोमे बट गया, पर हमारे दिल जुदा नही हुए और हम हमेशाके दोस्त बनकर भाइयोकी तरह एक दूसरेकी मदद करते रहेगे और एक दूसरेको इज्जतकी निगाहसे देखेगे। जहातक दुनियाका ताल्लुक है हम एक ही रहेगे।

कपडेपरसे अकुश उठानेके फैसलेका सब तरफसे स्वागत किया गया है। कपडेकी कमी कभी थी ही नही, और हो भी कैसे सकती है, जब कि देशमे इतनी रुई, और कातनेवाले और बुननेवाले मौजूद है। कोयले और जलानेकी लकडीपरसे अकुश उठनेपर भी इतना ही सतोष प्रकट किया गया है। यह बडी देखनेकी चीज है कि अब बाजारमे गुड जरूरतसे ज्यादा आकर जमा हो रहा है, और गुड ही गरीब आदमीकी खुराकमे गर्मी देनेवाली चीजके अशको पूरा कर सकता है। गुडके इन जमा हुए ढेरोको घटाने या जहा गुड बनता है वहासे गुड पहुचानेकी कोई सूरत नही, अगर तेजीसे सामान ढोनेका बदोबस्त न हो। एक मित्र, जो इस विषयको खूब समझते है, एक पत्रमे लिखते है, वह ध्यान देने लायक है

"यह कहनेकी जरूरत नही कि अकुश उठानेकी नीतिकी सफलताका ज्यादा आधार इस चीजपर ही है कि रेलगाडी या सडकसे सामानकी नकली हरकत[2] का ठीक-ठीक बदोबस्त किया जाए। अगर रेलसे माल इधर-उधर ले जानेके तत्रमे सुधार न हुआ तो देशभरमे कहत[3] फैलने और

---

[1] चुगल (गुजराती) पजा; [2] हरकत (गुज०) अडचन।
[3] अकाल।

अंकुश उठानेकी सब योजना अस्त-व्यस्त हो जानेका डर है। आज जिस तरहसे माल ले जानेका हमारा तत्र चल रहा है उससे दोनो, अंकुश चलाने और उठानेकी नीति, सख्त खतरेमे है। हिंदुस्तानके जुदा-जुदा हिस्सोंमे भावोमे इतना भयकर फर्क होनेकी वजह भी माल उठानेके साधनोकी यह कमी ही है। अगर गुड रोहतकमे आठ रुपए मन और बबईमे पचास रुपए मनके हिसाब बिकता है तो यह साफ बताता है कि रेलवे तत्रमे कही सख्त गडबड है। महीनोतक मालगाडीके डिब्बोमेसे सामान नही उतारा जाता, डिब्बो और कोयलेकी कमी और तरह-तरहके मालको तरजीह[1] देनेके बहाने, मालगाडीके डिब्बोपर माल लादनेमे सख्त बेईमानी और घूसका बाजार गर्म है। एक डिब्बेको किरायेपर हासिल करनेके लिए सैकडो रुपए खर्च करने पडते है और कई-कई दिनोतक स्टेशनोपर झक मारनी पडती है। डिब्बोकी माग पूरी करने और डिब्बोको चलते रखनेमे ट्रासपोर्ट-के मत्रीकी भी अभीतक कुछ चली नही। अगर अंकुश उठानेकी नीतिको सफल बनाना है तो ट्रासपोर्टके मत्रीको रेल और सडककी सारी ट्रासपोर्ट-व्यवस्थाकी फिरसे जाच-पडताल करनी होगी। तभी यह नीति जिन गरीब लोगोको राहत देनेके लिए चलाई जा रही है, उनको फायदा पहुचा सकेगी। आज इस ट्रासपोर्टके कसूरसे लाखो और करोडो देहातियोको सख्त तकलीफ उठानी पडती है और उनका माल मडीतक पहुचने ही नही पाता।"

जैसा मै पहले लिख चुका हू, पेट्रोलका राशनिंग बद करना ही चाहिए और सडकसे सामान ढोनेके साधनोका इजारा[2] और परमिटका तरीका बिल्कुल बद होना चाहिए। इजारेमे थोडी ट्रासपोर्ट कपनियोका ही लाभ होता है और करोडो गरीबोका जीवन दूभर हो रहा है। अंकुश उठानेकी नीतिकी ९५ फी सदी सफलता उपरोक्त शर्तोपर ही निर्भर है। जो सूचनाए ऊपर दी गई है उनपर अमल हुआ तो परिणामस्वरूप देहातोसे लाखो टन खाद्य पदार्थ और दूसरा माल देशभरमे आने लगेगा। बेईमानी और घूसखोरीका विषय कोई नया नही है, केवल अब वह पहलेसे बहुत ज्यादा बढ गया है। बाहरका अंकुश तो कुछ रहा ही नही है। इसलिए यह

---

[1] विशेषता, [2] (गुज०) ठेका।

घूसखोरी तबतक बद न होगी जबतक जो लोग इसमे पडे है वे समझ न ले कि वे देशके लिए है, न कि देश उनके लिए। इसके लिए जरूरत होगी एक ऊचे दर्जेके नैतिक शासनकी। उन लोगोकी तरफसे, जो खुद घूसखोरीके इस मर्जसे बचे हुए है और घूसखोर अमलदारोपर जिनका प्रभाव है, ऐसे मामलोमे उदासीनता दिखाना गुनाह है। अगर हमारी सध्याकालकी प्रार्थनामे कुछ भी सचाई है तो घूसखोरीके इस दौरको खत्म करनेमे उससे काफी मदद मिलनी चाहिए।

: २२१ :

२७ जनवरी १९४८

(आज गाधीजीकी प्रार्थना-सभामे एक ही मुसलमान उपस्थित था। गाधीजीने कहा कि मै इतनेसे ही सतुष्ट नही हू। प्रार्थनामे आनेवाले सब हिंदू और सिख भाई-बहन अपने साथ एक-एक मुसलमान लाए।

इसके बाद गाधीजीने महरौलीकी दरगाह शरीफमे मुसलमानोके उर्सके मेलेका जिक्र किया जिसे वे स्वय आज सवेरे देखने गए थे। उन्होने कहा)

किसीको वहा आने-जानेमे झिझक नही थी। मैने जान-बूझकर मुसलमानोसे पूछा कि हमेशा जितने आते थे उतने तो नही आ सके होगे, तो उन्होने कहा कि कुछ डर तो रहा होगा ही। हमारेमे ऐसे लोग भी है न, कि जो डर-सा बता देते है। वे कहते है कि इलाहाबादमे भी कुछ हो गया है, वही यहा हुआ तो हिंदू क्या करेगे। इन्सान इन्सानसे डरे, यह तो हमारे लिए शर्मकी बात है। लेकिन कम-से-कम इतना तो मैने पाया कि जितनी तादाद मुसलमानोकी थी उतनी ही तादाद हिंदुओकी थी और सिख भी काफी थे। पीछे एक दु खद बात भी मैने देखी। वह दरगाह तो बादशाही जमानेकी है, कोई आजकी थोडे ही है। बहुत पुराने जमानेकी है। अजमेरकी दरगाह शरीफसे दूसरे नबरपर है, तो जो मुख्य वस्तु है वह तो वहा नक्काशीका काम ही था और बडा खूबसूरत था। वह सब तो

नही, लेकिन काफी ढहा दिया है और जो नक्काशीकी जालिया थी वे भी काफी तोड डाली। मुझको तो यह देखकर बहुत दु ख हुआ। मैं तो उसे वहशियाना चीज ही कह सकता हू। क्या हम इतने गिर गए है कि एक जगहपर किसी औलियाकी कब्र बनाई गई है और कब्र भी बहुत आलीशान, हजारो रुपया उसपर खर्च किया है—उसको हम इस तरह नुकसान पहुचाए, माना कि इससे भी बदतर पाकिस्तानमे हुआ है। यहा एक गुना हुआ और वहा दस गुना हुआ, इसका हिसाब मै नही कर रहा। मेरे नजदीक तो चाहे थोडा गुनाह करो या ज्यादा, इसकी कोई तुलना मै नही करता। वह शर्मनाक बात है। अगर सारी दुनिया शर्मनाक बात करती है तो क्या हम भी करे? नही करना चाहिए, ऐसा आप भी मानेगे।

मुझको पता चला कि दरगाहमे हिंदू और मुसलमान दोनो काफी तादादमे आते है और मिन्नत भी करते है। उसका बडा दर्जा वे रखते है और जो औलिया हो गए है, यहा या अजमेर शरीफमे, उनके दिलमे भी हिंदू, मुसलमानका कोई भेदभाव नही था। यह तो एक ऐतिहासिक बात थी और सच तो है ही। झूठ बतानेमे तो उनका कोई फायदा नही होता। ऐसे जो औलिया हो गए उनका आदर होना ही चाहिए। पाकिस्तानमे क्या होता है, उस तरफ हम न देखे।

आज ही मैने अखबारोमे देखा है कि पाकिस्तानमे एक जगह १३० हिंदू और सिख कत्ल हो गए है। और पीछे वहा लूटपाट भी हुई। किसने उनको कत्ल किया? सरहदी सूबेके ऊपर जो छोटी-छोटी कौमे मुसलमानोकी रही है, उन्होने बस उनपर हमला किया और उन्हे मार डाला। कोई गुनाह उन्होने किया था ऐसा कोई नही कहता। पाकिस्तानकी हकूमतने जो कुछ लिखा है उसमे यह भी है कि हकूमतने कई हमलावरोको मार डाला। मार डाला या नही मार डाला, लेकिन जब वे कहते है तो हमे मान ही लेना चाहिए। इसपर हम गुस्सा करे और हम भी यहा मारना शुरू कर दे तो वह एक वहशियाना चीज होगी। आज तो आप भाई-भाई होकर मिलते है, लेकिन दिलमे अगर गदगी रखते है और वैर या द्वेष करते है तो फिर आपने जो यह प्रतिज्ञा की थी कि हम दिलमे भी ऐसा नही रखेगे, उसे आप झुठला देते है। पीछे हम सबका खाना खराब होनेवाला

है। यह वहा सबने महसूस किया। किसीसे मैंने पूछा तो नही, लेकिन आखोसे मैं समझ गया। पाकिस्तानमे जो कुछ हुआ, उसका हिसाब लेना तो हमारी हकूमतका काम है, वह जाने। हमारा काम तो यही है कि एक दूसरेका दिल साफ करनेकी जो कसम हमने खाई है, उसे कायम रखे और वही चीज हम करे।

अभी अजमेरमे राजकुमारी बहन चली गई थी। उन्होने वहाकी एक बडी खतरनाक और हमारे लिए तो शर्मकी बात सुनाई। वहा जो हरिजन रहते है, उनसे वहावाले काम लेते है और वे करते भी है। लेकिन जिस जगहमे वे रहते है वह बहुत गदी और मैली है। वहा तो हमारी ही हकूमत है और अच्छी खासी हकूमत है। जो हिंदू और सिख वहा अमलदार है, वे इसी हकूमतके मातहत काम करते है। क्या उन्हे ख्याल नही आता कि ऐसा शर्मका काम हम कैसे करते है? वहा सफेद पोशाक पहननेवाले बहुत हिंदू है। पैसा खासा कमाते है और खुश हालतमे रहते है। वे क्यो नही वहा एक दिनके लिए भी हरिजनोकी बस्तीमे जाकर रहे? वे अगर जाए तो के[1] कर लेगे और कोई तो शायद उनमेसे मर भी जाए। ऐसी जगह इन्सानोको रखना—क्योकि उनका यह गुनाह है कि वे हरिजन पैदा हुए है—बहुत बुरी बात है। यहा दिल्लीमे भी मैं हरिजनोकी बस्तीमे गया हू। वह भी खराब तो बहुत है, लेकिन अजमेर तो इससे भी बदतर है। यह तो बडी शर्मनाक बात है। क्या ऐसी शर्मनाक बाते ही हम लोग करते रहेगे? हमने आजादी तो पाई, लेकिन उस आजादीकी कोई कीमत नही, जबतक हम इस तरहका काम भी नही बद कर सकते। यह तो एक दिनमे हो सकता है। क्या हम इन हरिजनोको सुखी जगहमे नही रख सकते? उनको मैला उठानेका काम करना है, वह तो करे, लेकिन मैलेमे ही पडे रहे, ऐसा तो नही हो सकता। हमारी तो आज अक्ल चली गई है, हमारा हृदय नही रहा है और ईश्वरको हम भूल गए है। इसीलिए तो गुनाहके काम हम करते जाते है। और पीछे हम दूसरोका ऐब निकाले, दूसरोको दोष दे और खुद निर्दोष बने, यह बडी खतरनाक बात है।

---

[1] उल्टी।

अंतमें एक और बात मैं कहना चाहता हूं और वह है मीरपुरके बारेमें। एक दफा तो थोड़ा-सा मैंने कह भी दिया था। मीरपुर काश्मीरमें है। अब वह हमलावरोंके हाथमें चला गया है। वहां हमारी काफी बहनें थीं। उनको वे उठा ले गए हैं। उनमें बुढ्ढी भी हैं और नौजवान भी। वे उनके कब्जेमें पड़ी हैं और उनको वे बेआबरू भी कर लेते हैं, इसमें मेरे दिलमें कोई शक नहीं है। खाना भी उनको बुरा दिया जाता है। चंद बहनें तो पाकिस्तानके इलाकेमें हैं। गुजरात[1] जिलेमें झेलमतक तो शायद पहुंची होंगी ही।

मैं तो कहूंगा कि जो हमलावर हमला कर रहे हैं, उसमें कुछ भी तो मर्यादा या कुछ हद तो होनी ही चाहिए। मैं इन हमलावरोंसे कहता हूं कि आप इस्लामको बिगाड़नेके लिए यह काम कर रहे हैं और कहते ये हैं कि आजाद काश्मीरके लिए करते हैं।

कोई खानेके लिए लूटपाट करे वह मैं समझ सकता हूं, लेकिन जो छोटी लड़कियां हैं, उनको बेइज्जत करना, उनको खाने और पहननेको न देना, वह भी क्या आपको कुरान शरीफने सिखाया है? और जो पीछे पाकिस्तानमें लड़कियोंको उठाकर चले गए हैं, उनके बारेमें मैं पाकिस्तान हकूमतसे मिन्नत करूंगा कि इस तरहसे जो भी कोई लड़कियां हैं, उनको वापस करो और उन्हें अपने घरोंपर जाने दो।

बेचारे मीरपुरके लोग मेरे पास आए हैं। काफी तगड़े हैं और शर्मिंदा होते हैं। मुझको वे सुनाते भी हैं कि क्या वजह है कि हमारी इतनी बड़ी भारी हकूमत पड़ी है, वह इतना काम भी नहीं कर सकती। मैंने समझानेकी कोशिश तो की। जवाहरलालजी खुद कोशिश कर रहे हैं और बहुत दुःखी हैं। लेकिन उनके दुःखी होनेसे और उनके कोशिश करनेसे भी क्या है! जो लोग लुट गए हैं, बरबाद हो गए हैं और जिन्होंने अपने रिश्तेदारोंको गंवा दिया है, उनको कैसे संतोष दिलाया जाय? आज जो आदमी आया उसके पंद्रह आदमी वहां कत्ल हो गए। उसने कहा कि अभी जो वहां बाकी पड़े हैं उनका क्या हाल होनेवाला है? मैंने सोचा कि

---

[1] पंजाबमें 'गुजरांवाला' नामका एक शहर है।

दुनियाके नामसे और ईश्वरके नामसे वे जो हमलावर पडे है, उनको और पीछे पाकिस्तानको भी मैं यह कहू कि आपको बगैर मागे हुए और शोहरतके साथ उन बहनोको वापिस कर देना चाहिए। यह उनका धर्म है। मैं इस्लामको काफी जानता हू और काफी पढा भी है। वह कभी नही सिखाता कि औरतोको उठा ले जाओ और उनको इस तरहसे रखो। वह धर्म नही, अधर्म है। वह शैतानकी पूजा है, ईश्वरकी पूजा नही।

: २२२ :

२८ जनवरी १९४८

(आरभमे गाधीजीने बहावलपुरसे आए हुए कुछ लोगोकी शिकायतका जिक्र किया कि उन्हे उनसे मिलनेका समय नहीं दिया गया। गाधीजीने उनके लिए कुछ समय निकालनेका वचन दिया और उन्हे विश्वास दिलाते हुए कहा) उनके लिए जो भी किया जा सकता है वह हो रहा है। डा० सुशीला नायर और श्री लेसली क्रास बहावलपुर चले गए है और नवाब साहबने उनकी पूरी सहायता करनेके लिए कहा है। भगवानकी कृपासे यूनियनकी राजधानी दिल्लीमे तीनो जातियोमे फिरसे शाति कायम हो गई है। इससे सारे हिंदुस्तानमे हालत जरूर सुधरेगी।

आप जानते है कि दक्षिण अफ्रीकामे हमारे लोग अपने हकोके लिए लड रहे है। यहा तो कोई ऐसे हक छीनते नही है कि लोग कही जमीन न रख सके या कही भी रहना चाहते है, वहा न रह सके। हरिजनोका तो हमने जरूर ऐसा हाल कर दिया है, बाकी हिंदुस्तानमे ऐसा कुछ है ही नही। लेकिन दक्षिण अफ्रीकामे तो ऐसा है, इसका मै गवाह हू। इसलिए वे वहा हिंदुस्तानका मान रखनेके कारण और हिंदुस्तानके हकके लिए लड रहे है। बहुत तरीकोसे वे लड सकते है, लेकिन वे तो सत्याग्रही होनेका दावा करते है। इसलिए सत्याग्रहकी लडाई लड रहे है। उनके तार भी आ जाते है। वे बिना परवानेके कही जा भी नही सकते—जैसे नेटाल, ट्रासवाल, हिल स्टेट, केप कोलोनी वगैरा, ऐसा सिलसिला

वहा रहा है। दक्षिण अफ्रीका एक खड जैसा है, कोई छोटा-मोटा मुल्क नही है। वहुत वडा है। नेटालमे अगर परवाना मिले तो वे ट्रासवाल जाए, नही तो नही। तो उन सवने कहा कि यह हमारा भी मुल्क है, तव क्यो हमारे इधर-उधर आनेमे किसी तरहकी रुकावट हो? वहुतसे तो वहा चले भी गए और मुझको यह तो कहना ही पडेगा कि वहाकी हकूमतने इस वक्त तो कुछ शराफत वताई है। उनको अभीतक पकडा नही। ट्रासवालका जो पहला शहर आता है फाकसेस, वहा वे चले गए है। पीछे कही उनको पकड सकते है, लेकिन अभीतक पकडा नही है। हकूमतके सिपाही तो वहा मौजूद थे, लेकिन वे सव देखते रहे और उनको कुछ नही कहा। वहा तो उन्हे मोटर भी गडी मिली और उसमे वैठकर वे आगे चले गए और वहापर उनका जलसा हुआ, जिसमे उनका स्वागत-सत्कार किया गया। वह सव हुआ। मैने सोचा कि आपको इतनी खवर तो दे दू। यह एक वडी वहादुरीका काम है। वहा हिंदुस्तानी छोटी तादादमे है, लेकिन छोटी तादादमे रहते हुए भी अगर सव हिंदी सत्याग्रही वन जाए तो उनकी जय ही है। कोई रुकावट उनके आगे नही ठहर सकती। लेकिन ऐसा तो नही वना है। हर किस्मके लोग वहा रहते है जैसे यहा भी रहते है। वहा थोडे हिंदू भी है और मुसलमान भी है। वे सव मिल-जुलकर यह काम करते है। वे जानते है कि इसमे कोई गमानेकी वात नही है। और अकेले आदमियोसे तो यह लडाई लडी भी नही जाती। इसलिए वे जोहान्सवर्गमे पहुच तो गए है, लेकिन आखिरतक तो अलग नही रह सकते, ऐसा मेरा खयाल है। उनको चलते ही जाना है, आखिर तक भी जाना है जवतक कि पकडे न जाय। पकडनेका वहाकी हकूमतको हक है, क्योकि सत्याग्रहमे यह चीज तो पडी है कि जव कानून भग किया है तो उनको पकडे और जेलके भीतर जाकर भी वे कानूनकी पावदी करते है। मै तो इतना ही कहूगा कि हमारी तरफसे धन्यवाद तो उनको मिलना ही चाहिए और वह है ही, क्योकि मै जानता हू कि इसमे कोई दूसरी आवाज निकल ही नही सकती। वहाकी हकूमतमे भी मै कहता हू कि जो लोग ऐसे लडते है और इतनी शराफतसे लडते है उनको हलाक क्या करना है? उनकी चीजको समझ ले और फिर आपसमे समझौता क्यो न कर ले? ऐसा

क्यो हो कि जिसकी सफेद चमडी है वह काली चमडीवालेके साथ कुछ वहस नही कर सकता ? या हिन्दुस्तानियोको जो सतोप देना है या इन्साफ करना है तो उसके लिए उनको लडना क्यो पडे ? अगर हिदुस्तानी भी उसी जगहमे रहे तो उन्हे (गोरोको) कौन-सा कष्ट हो सकता है ? उन्हे कोई कष्ट नही होना चाहिए । दक्षिण अफ्रीकाकी हकूमतको उनके साथ सलाह-मशवरा करके सलूकसे रहना चाहिए और उनको सतोष दिलाना चाहिए । आज हम भी आजाद है और वे भी आजाद है और एक ही हकूमतमे हिस्सेदारकी हैसियतमे रहते है । अर्थात् दक्षिण अफ्रीका भी एक डोमीनियन[1] है, इडियन यूनियन भी डोमीनियन है और पाकिस्तान भी डोमीनियन है । तव सव भाई-भाई जैसे वनकर रहे, यह सव उनके गर्भमे पडा है । इसके विपरीत वे आपस-आपसमे लडे और हिदुस्तानको अपना दुश्मन माने—हिदुस्तानियोको जव वहा शहरी हक भी न मिले तो फिर वे दुश्मन नही है तो और क्या हुए ? तो यह समझमे न आ सके, ऐसी चीज है । क्यो ऐसा माना जाय कि जो काली चमडीवाले है वे निकम्मे है या वे जो उद्यम कर सकते है और थोडे पैसेमे रह सकते है, तो क्या यह कोई गुनाह है ? लेकिन वह गुनाह वन गया है । इसलिए इस सभाकी मार्फत मै दक्षिण अफ्रीकाकी हकूमतको कहता हू कि वह सही रास्तेपर चले । मै भी वहा २० वर्षतक रहा हू । इसलिए मेरा भी वह मुल्क वन गया है, ऐसा मै कह सकता हू । यह सव कहना तो मुझको कल ही चाहिए था, लेकिन कह नही पाया ।

मैसूरके मुसलमानोने कुछ दिन पहले एक पत्र भेजा था कि तुम्हारे उपवासका वहा कोई असर नही पडा और मुसलमानोको हलाक किया जा रहा है । इसके वारेमे मैने कुछ कहा भी था । उसके उत्तरमे मैसूरके गृह-मन्त्रीकी ओरसे एक तार मिला जिसमे पहले तारका खडन किया गया और यह वताया गया है कि वहा मुसलमानोके साथ इन्साफ करनेकी पूरी कोशिश की जा रही है । जैसे मै सवसे कहता हू वैसे मै मैसूरके उन मुसलमान भाइयोसे कहूगा कि वे किसी वातमे भी अतिशयोक्ति न करे ।

---

[1] उपनिवेश ।

ऐसा कहनेसे मेरे हाथ-पैर बध जाते हैं और मैं कुछ काम नही कर सकता । मैं पहले भी कह चुका हू और फिर मुसलमान भाइयोंसे कहता हू कि वे किसी चीजको ज्यादा बढाकर न बताए। अगर कर सकते है तो कम करे। यही रास्ता है हिंदू, मुसलमान और सिखोके मिल-जुलकर तथा भाई-भाई बनकर रहनेका। मैं तो इतना बूढा हो गया हू, तो भी सारी दुनियामे दूसरा कोई रास्ता मैंने नही पाया।

हमारे लोग इतने भोले है कि डाकमे ही पैसा भेज देते है। मुझे अपने बापके समयसे तजुर्बा है। उनके पास कुछ जेवर था। एक छोटा-सा मोती था। लेकिन था कीमती। उसे उन्होने डाकसे भेज दिया। तबसे मैं जानता हू कि ऐसा करना नही चाहिए। उसमे कोई चोरी तो नही थी, लेकिन खतरा तो लेना पडता ही है। कोई डाकमे देख ले और खोल ले तो फिर मोती कोई छुपा थोडे ही रह सकता है। और पैसे तो फिर भी देने ही पडे, क्योकि उसकी पहुचका तार मगवाया। तो मेरे पिताको इस चीजका दु ख हुआ। लेकिन आज भी मेरे पिताके जैसे भोले आदमी है। समझ लेते है कि पैसेको भेजना है, तो कौन बीचमे उसको छुएगा ? आजतक तो खैर ऐसे ही पैसे आते रहे। एक भाईने तो एक हजारसे ऊपरके नोट बद करके भेज दिए। उसकी रजिस्टरी भी नही कराई और न बीमा। जो लिफाफेपर मामूली टिकट लगते है वे लगाकर भेज दिया। आजकल तो सब लोग बहुत बिगड गए है, पैसे खा जाते है और रिश्वत भी लेते हैं। तब यह तो अच्छी बात है और हमारे पोस्ट-आफिसके लिए यह कोई छोटी बात नही है कि इस तरहसे इतने सुरक्षित पैसे भी आ जाते है। उसे वे देखना भी नही चाहते कि उसमे क्या भेजा है। ऐसे जब वे मुझको सब कुछ सुरक्षित भेज देते है तो दूसरोको भी इसी तरहसे भेज देते होगे। लेकिन जो लोग पैसा भेजते है वे चाहे इतना पैसा कम करके भेजे, लेकिन तो भी इस तरहसे खतरेमे नही पडना चाहिए, क्योकि कोई बदमाश भी तो रहते है। डाकको खोल ले तब मेरे और जिन हरिजनोके लिए पैसा भेजा है उनके क्या हाल होनेवाले है और जो दान देनेवाले है उनका क्या हाल होगा ? लेकिन डाकखानेमे जो आदमी काम करते है उनको तो मैं मुबारकबाद देता हू कि इस

तरहसे काम करते है कि कोई घूस नही लेते। बाकी जो सब महकमे हैं वे भी सब ऐसा ही करे कि जो लोगोका पैसा हो उसकी हिफाजत करे, किसीसे रिश्वतका पैसा न ले, तो हम बहुत आगे बढ जाते है। ऐसा लालच किसीको होना ही नही चाहिए। इसलिए मै इन दानियोसे कहूगा कि आप मनिआर्डर भेज दे। उसमे कितना पैसा लगता है? ऐसा भी न करे तो रजिस्टरी करा दे। इसमे कुछ थोडा-सा पैसा ज्यादा भी लगता है तो वह खैरियतसे तो पहुच जाता है। ऐसा आप न करे कि मामूली डाकसे हजारो रुपयेके नोट भेज दिए।

: २२३ :

२९ जनवरी १९४८

भाइयो और बहनो,

मेरे सामने कहनेको चीज तो काफी पडी है, उनमेसे जो आजके लिए चुननी चाहिए, वे चुन ली है। छ चीजे है। पद्रह मिनटमे जितना कह सकूगा, कहूगा।

एक बात तो देख रहा हू कि थोडी देर हो गई है—यह होनी नही चाहिए थी। सुशीला बहन बहावलपुर चली गई है। बहावलपुरमे दुखी आदमी है उनको देखनेके लिए चली गई है—दूसरा अधिकार तो कोई है नही और न हो सकता था। फ्रेड्स सर्विसके लेसली क्रॉसके साथ चली गई है। फ्रेड्स यूनिटमे से किसीको भेजनेका मैने इरादा किया था, ताकि वह वहा लोगोको देखे, मिले और मुझको वहाके हाल बता दे। उस वक्त सुशीला बहनके जानेकी बात नही थी, लेकिन जब सुशीला बहनने सुन लिया तो उसने मुझसे कहा कि इजाजत दे दो तो मै क्रास साहबके साथ चली जाऊ। वह जब नोआखालीमे काम करती थी तबसे वह उनको जानती थी। वह आखिर कुशल डाक्टर है और पजाबके गुजरातकी है, उसने भी काफी गवाया है, क्योकि उसकी तो वहा काफी जायदाद है, फिर भी दिलमे कोई जहर पैदा नही हुआ है। तो उसने बताया कि मै वहा

क्यो जाना चाहती हू , क्योकि मै पजाबी बोली जानती हू, हिंदुस्तानी जानती हू, उर्दू और अग्रेजी भी जानती हू तो वहा मै क्रास साहबको मदद दे सकूगी। तो मै यह सुनकर खुश हो गया । वहा खतरा तो है, लेकिन उसने कहा कि मुझको क्या खतरा है, ऐसा डरती तो नोग्राखाली क्यो जाती ? पजाबमे बहुत लोग मर गए है, बिल्कुल मटियामेट हो गए है, लेकिन मेरा तो ऐसा नही है, खाना-पीना सब मिल जाता है, ईश्वर सब करता है । अगर आप भेज दे और क्रास साहब मेरेको ले जाय तो मै वहाके लोगोको देख लूगी । तो मैने क्रास साहबसे पूछा कि क्या आपके साथ सुशीला बहनको भेजू ? तो वे खुश हो गए और कहा कि यह तो बडी अच्छी बात है । मै उनके मारफत दूसरोसे अच्छी तरह बातचीत कर सकूगा । मित्रवर्गमे हिंदुस्तानी जाननेवाला कोई रहे तो वह बडी भारी चीज हो जाती है । इससे बेहतर क्या हो सकता है ? वे रेडक्रासके है । रेड क्रासके माने यह है कि लडाईमे जो मरीज हो जाते है उनको दवा देनेका काम करना । अब तो दूसरा तीसरा भी काम करते है । तो डाक्टर सुशीला क्रास साहबके साथ गई है या डाक्टर सुशीलाके साथ क्रास साहब गए है यह पेचीदा प्रश्न हो जाता है । लेकिन कोई पेचीदा है नही, क्योकि दोनो एक दूसरेके दोस्त है और दोनो एक दूसरेको चाहते है, मोहब्बत करते है । वे सेवा-भावसे गए है, पैसा कमाना तो है नही । वे जो देखेगे मुझे बताएगे और सुशीला बहन भी बताएगी । मै नही चाहता कि कोई ऐसा गुमान रखे कि वह तो डाक्टर है और क्रास साहब दूसरे है। कौन ऊचा है कौन नीचा है, ऐसा कोई भेदभाव न करे, लेकिन क्रास साहब, उनके साथ औरत है तो औरतको आगे कर देते है और अपनेको पीछे रखते है । आखिर वे उनके दोस्त है। मै एक बात और कह देना चाहता हू कि नवाब साहब तो मुझको लिखते रहते है । मुझको कई लोग झूठ बात भी लिखते है तो उसे माननेका मेरा क्या अधिकार है । मैने सोचा कि मुझको क्या करना चाहिए । तो बहावलपुरके जो आए है उनको बता दू कि वे वहासे आएगे तो मुझको सब बात बता देगे ।

अभी बन्नूके भाई लोग मेरे पास आ गए थे—शायद चालीस आदमी थे । वे परेशान तो है, लेकिन ऐसे नही है कि चल नही सकते थे ।

हा, किसीकी अगुलीमे घाव लगे थे, कही कुछ था, कही कुछ था, ऐसे थे। मैंने तो उनका दर्शन ही किया और कहा कि जो कुछ कहना है बृजकिशनजीसे कह दे, लेकिन इतना समझ ले कि मै उन्हे भूला नही हू। वे सब भले आदमी थे। गुस्सेसे भरे होना चाहिए था, लेकिन फिर भी वे मेरी वात मान गए। एक भाई थे, वे शरणार्थी थे या कौन थे, मैंने पूछा नही। उसने कहा कि तुमने वहुत खरावी तो कर ली है, क्या और करते जाओगे? इससे वेहतर है कि जाओ। वडे है, महात्मा है तो क्या, हमारा काम तो विगाडते ही हो। तुम हमको छोड दो, भूल जाओ, भागो। मैंने पूछा, कहा जाऊ? उन्होने कहा, तुम हिमालय जाओ। तो मैंने डाटा। वे मेरे-जितने वुजुर्ग नही है—वैसे वुजुर्ग है, तगडे है, मेरे-जैसे पाच-सात आदमीको चट कर सकते है। मै तो महात्मा रहा, घवराहटमे पड जाऊ तो मेरा क्या हाल होगा। तो मैंने हँसकर कहा कि क्या मैं आपके कहनेसे जाऊ, किसकी वात सुनू? क्योकि कोई कहता है कि यही रहो, कोई तारीफ करता है, कोई डाटता है, कोई गाली देता है। तो मै क्या करू? ईश्वर जो हुक्म करता है वही मै करता हू। आप कह सकते है कि आप ईश्वरको नही मानते है तो इतना तो करे कि मुझे अपने दिलके अनुसार करने दे। आप कह सकते है कि ईश्वर तो हम है। मैंने कहा तो परमेश्वर कहा जायगा? ईश्वर तो एक है। हा, यह ठीक है कि पच परमेश्वर है, लेकिन यह पचका सवाल नही है। दु खीका वेली[१] परमेश्वर है, लेकिन दु खी खुद परमात्मा नही। जव मै दावा करता हू कि जो हरएक स्त्री है, मेरी सगी वहन है, लडकी है तो उसका दु ख मेरा दु ख है। आप ऐसा क्यो मानते है कि मै दुखको नही जानता, आपके दु खोमे मै हिस्सा नही लेता, मै हिंदुओ और सिखोका दुश्मन हू और मुसलमानोका दोस्त हू। उसने साफ-साफ कह दिया। कोई गाली देकर लिखता है, कोई विवेकसे लिखता है कि हमको छोड दो, चाहे हम दोजखमे जाय तो क्या? तुमको क्या पडी है, तुम भागो? मै किसीके कहनेसे कैसे भाग सकता हू? किसीके कहनेसे मै खिदमतगार नही वना हू, किसीके कहनेसे मै मिट नही सकता हू, ईश्वरके चाहनेसे

---

[१] (गुज०) मुरव्वी, सहायता करनेवाला।

मैं जो हू बना हू । ईश्वरको जो करना है सो करेगा । ईश्वर चाहे तो मुझको मार सकता है । मैं समझता हू कि मैं ईश्वरकी बात मानता हू । एक डाटता है, दूसरे लोग मेरी तारीफ करते हैं तो मैं क्या करू । मैं हिमालय क्यो नही जाता ? वहा रहना तो मुझको पसद पडेगा । ऐसा नही है कि मुझको वहा खाने-पीने-ओढनेको नही मिलेगा—वहा जाकर शाति मिलेगी, लेकिन मैं अशातिमेसे शाति चाहता हू, नही तो उस अशातिमे मर जाना चाहता हू । मेरा हिमालय यही है । आप सब हिमालय चले तो मुझको भी आप लेते चले ।

मेरे पास शिकायते आती है—सही शिकायतें है—कि यहा शरणार्थी पडे है, उनको खाना देते है, पीना देते है, पहननेको देते हैं, जो हो सकता है सब करते है, लेकिन वे मेहनत नही करना चाहते है, काम नही करना चाहते है । जो उनकी खिदमत करते है उन लोगोने लवा-चौडा लिखकर दिया है, उसमेसे मैं इतना ही कह देता हू । मैंने तो कह दिया है कि अगर दु ख मिटाना चाहते हैं, दु खमेमे सुख निकालना चाहते है, दु खमे भी हिंदुस्तानकी सेवा करना चाहते है, साथमे अपनी भी सेवा हो जाती है, तो दु खियोको काम तो करना ही चाहिए । दु खीको ऐसा हक नही है कि वह काम न करे और मौज-शौक करे । गीतामे तो कहा है, 'यज्ञ करो और खाओ'—यज्ञ करो और शेष रह जाता है उसको खाओ । यह मेरे लिए है और आपके लिए नही है ऐसा नही है—सबके लिए है । जो दु खी है उनके लिए भी है । एक आदमी कुछ करे नही, बैठा रहे और खाय तो ऐसा हो नही सकता । करोडपति भी काम न करे और खावे, तो वह निकम्मा है, पृथ्वीपर भार है । जिस आदमीके घर पैसा भी है वह भी मेहनत करके खाए तब बनता है । हा कोई लाचारी है—पैर नही चल सकता है या अधा है, या वृद्ध हो गया है तो बात दूसरी है, लेकिन जो तगडा है, वह क्यो न काम करे ? जो काम कर सकता है वह काम करे । शिविरमे जो तगडे पडे है वे पाखाना भी उठाए । चर्खा चलाए । जो काम बन सकता है करे । जो काम नही जानते है वे काम लडकोको सिखाए, इस तरहसे काम ले । लेकिन कोई कहे कि केम्ब्रिजमे जैसे सिखाते है वैसे सिखाए । मैं, मेरा बाबा तो केम्ब्रिजमे सीखा था तो लडकोको भी वहा भेजे, तो यह

कैसे हो सकता है ? मै तो इतना ही कहूगा कि जितने शरणार्थी है वे काम करके खाए। उन्हे काम करना ही चाहिए।

आज एक सज्जन आए थे। उनका नाम तो मैं भूल गया। उन्होने किसानोकी वात की। मैंने कहा, मेरी चले तो हमारा गवर्नर-जनरल किसान होगा, हमारा वडा वजीर किसान होगा, सब कुछ किसान होगा, क्योकि यहाका राजा किसान है। मुझे बचपनमे सिखाया था—एक कविता है, "हे किसान, तू वादशाह है।" किसान जमीनसे पैदा न करे तो हम क्या खाएगे ? हिंदुस्तानका सचमुच राजा तो वही है। लेकिन आज हम उसे गुलाम वनाकर वैठे है। आज किसान क्या करे ? एम० ए० वने ? वी० ए० वने ?—ऐसा किया, तो किसान मिट जायगा। पीछे वह कुदाली नही चलाएगा। जो आदमी अपनी जमीनमेसे पैदा करता है और खाता है, सो जनरल वने, प्रधान वने, तो हिंदुस्तानकी शकल बदल जाएगी। आज जो सडा पडा है, वह नही रहेगा।

मद्रासमे खुराककी तगी है। मद्रास सरकारकी तरफसे दूत यह कहनेके लिए श्रीजयरामदासके पास आए थे कि वे उस सूवेके लिए अन्न देनेका वदोवस्त करे। मुझे मद्रासवालोके इस रुखसे दु ख होता है। मै मद्रासके लोगोको यह समझाना चाहता हू कि वे अपने ही सूवेमे मूगफली नारियल और दूसरे खाद्य पदार्थोके रूपमे काफी खुराक पा सकते है। उनके यहा मछली भी काफी है, जिन्हे उनमेसे ज्यादातर लोग खाते है। तव उन्हे भीख मागनेके लिए वाहर निकलनेकी क्या जरूरत है ? उनका चावलका आग्रह रखना—वह भी पालिश किया हुआ चावल, जिसके सारे पोषक तत्त्व मर जाते है—या चावल न मिलनेपर मजबूरीसे गेहू मजूर करना ठीक नही है। चावलके आटेमे वे मूगफली या नारियलका आटा मिला सकते है और इस तरह अकालके भेडियेको आनेसे रोक सकते है। उन्हे जरूरत है आत्म-विश्वास और श्रद्धाकी। मद्रासियोको मै अच्छी तरहसे जानता हू और दक्षिण अफ्रीकामे उस प्रातके सभी भाषावाले हिस्सोके लोग मेरे साथ थे। सत्याग्रह-कूचके वक्त उन्हे रोजानाके राशनमे सिर्फ डेढ पाउ रोटी और एक औंस शक्कर दी जाती थी। मगर जहा कही उन्होने रातको डेरा डाला, वहा जगलकी घासमेसे खाने लायक चीजे चुनकर

और मजेसे गाते हुए उन्हें पकाकर उन्होंने मुझे अचरजमें डाल दिया। ऐसे सूझ-बूझवाले लोग कभी लाचारी कैसे महसूस कर सकते हैं? यह सच है कि हम सब मजदूर थे। और, ईमानदारीसे काम करनेमें ही हमारी मुक्ति और हमारी सभी आवश्यक जरूरतोंकी पूर्ति भरी है।

: २२४ :

पुण्यदिवस, ३० जनवरी १९४८

आज सायकाल ५ बजकर १० मिनटपर प्रार्थनाके लिए आते समय प्रार्थना-स्थलपर एक व्यक्तिने पिस्तौलसे गांधीजीके तीन गोलियां मारीं और वहीं उनका स्वर्गवास हो गया। गिरनेसे पहले उन्होंने नमस्कार करनेके लिए हाथ उठाये और उनके मुंहसे निकला।

"हे राम"

निर्देशिका

अकलियत–२३०–३१, २५१
अक्सरियत–२३०–३१, २५१
अखिल भारतीय चर्खासघ–५०, ६२, १७०, १८४, १८७–८८, २२७–२८
काग्रेस-कमेटी–५६, ७३–७४ ८५, ८७, ९४, १०१, १७७, ३३८
काग्रेस महासमिति–७५, ७७, ९०
ग्रामोद्योगसघ–६२,१७०,२२७–२८
अजमलखा, हकीम–७६, २४१, २४६
अजमेर–१९०, १९६, २५७ ३४४
अपहृत लडकिया–१३३, १७८, १८६, २४१, ३३५
अफ्रीका, दक्षिण–७७, ८०–८१, ८३–८४,१६२, १६४, ३४६–४७, –पूर्वी २१६, ३५४
अफ्रीदी–६, २१, ३२
अब्दुल्ला, शेख मुहम्मद–१०, १२, २६, ३२, ६६, ९४, १२३, १२९ –३०, २३६, २५१, ३२५
अमरीका–१६३, ३३७
अमलदार–३
अमृतकौर, राजकुमारी–६१, ३८४,
अरविंद–८
अलीभाई–७९, २१६, ३५४
अलीशाह–९५
अल्ला–१९१, २२०,
अशोक, सम्राट–२२७
अहिंसा–१४–१५, १७, २०१, २०३, २३६
अंकुश–१७२,१८२–८३,२०८–०६, २२४,२४६–४७,२६६–२६८ २८६,३४०–४१
अंग्रेजी–१६६, २१८–१९ २२१
असारी, डाक्टर–७९, २४१
आगाखा महल–७५
आजाद, मौलाना अबुलकलाम– २२९, ३१७
–हिन्द फौज–२६
आत्मा–१५, १६३
आरेजिया–८२
आर्यनायकम्–२०३
आर्यावर्त–१००
आशादेवी–२०३

आंध्र—२८६-८७
इस्पहानी—८०
इस्लाम—१८०
इग्लैण्ड—३३०
इण्डियन चेम्बर—१३१
—यूनियन—३४८
ईरानके एलची—२८५
ईश्वर—१६१-६२,३१०,३१६,३५३
(देखिये 'परमेश्वर')
उडिया—२१८
उपनिषद्—१४
उपवास—२८८-६२, ३००, ३०३, ३०६, ३११-१२, ३२१
(देखिये 'फाका')
उर्दू—२१८-१६, २२१
उर्सका मेला—३३६-३७
(देखिये 'दरगाह' और 'महरौली')
एवार्ट, मेकडानेल्ड—३०६
एशिया—३३७
एसोसियेटेड प्रेस—१८५
ओखला—६६, १०१
ओज अविल्ला—११
औंध—२७१-७२
कनाट प्लेस (नई दिल्ली)—१४७
कन्याकुमारी—८६
कन्हाई—१०२
कम्यूनिस्ट—२७१, २८८
कराची—१८२ ३०१
कलकत्ता—१६७
कस्तूरबा ट्रस्ट—१७०
—स्मारक—१८६
कण्ट्रोल—५०, ७७-७८, ८४-८५ ८७, १०५, १२१, १३८, १७०
काठियावाड—१४३, १४६, १६१, १७५, १६६, ३२६
कालाबाजार—६६
काश्मीर—६-१०, २१, २५, २६, ६५, ८६, १२४-२५, १३०, २३८-३६, २५०, ३२४
काग्रेस—७०, २०३, २३१
—कार्यसमिति—७०,७३ (देखिये, काग्रेस कमेटी)
कान्स्टेनटेन—२३१
क्राइस्ट, जीसस—२३७
क्रास, लेसली—३४६, ३५०-५१
किसान—३५४
कृपाण—६२-६३, १११-१३, ११८
कृपालानी, जे० बी०—७०, ६७
—सुचेता—७३, ६६
कृष्ण—२२८, ३२६
क्रिस्मस—२३७
कुरान—१५, १७, २८, १६१, १६५, २२०
कुरुक्षेत्र—२४,७२,५६-५७,६८,१०४
कुंभ—६
कैम्ब्रिज—३५४
केमी—४६
कोयम्बटूर—२२३

कौरव–२४
खन्ना, मेहरचद–१६२
खादी–५०, १८८
–प्रतिष्ठान–१००
–बोर्ड–५०
खुराक २२५
–विभाग–१८३,
गजनफरअली–१७८-७९
गजनवी, महमूद–२४०
गवर्नर जनरल–१२२
गगा–२२१
–ब्रहन–१९९
ग्रथसाहव–३२, ५४, ९३ १४८, १६६, ३१५
गाधी, सावलदास–१२७, १३३, १६४-६५, १६८
ग्रामोद्योग–२२८
ग्वालियर–३२५, ३३०, ३३२
गिरनार–६४
गीता–२०, ३१५, ३५३
गुजरात (पजाव)–३०१, ३४५
गुजराती–२१८
गुडगाव–६२, ८६, १०२, २२२
गुप्त, सतीशचद्रदास–१००
गुप्ता, देशवधु–१५३
गुरुद्वारा–२७६
गुरुदेव (रवीन्द्रनाथ ठाकुर)–२८५, २९६-९७
गुरु नानक–१२६, १३२, १३६, १६५-६६
गोविन्दसिंह, गुरु–१३२, २३६, ३१३
गोशाला–९७, ९९
–सेवा–९७
घूसखोरी–३४२ (देखिये 'रिश्वत-खोरी')
चर्खा–१७२, १८६, १९९–२०१, २२७
चद्रनगर–५९
चादनी चौक (दिल्ली)–९०, ९२, १३२
चीन–३३७
जगजीवनराम–१६१
जपजी–५४
जफरुल्ला, मुहम्मद–८०, २६२
जमनालाल वजाज–५०
जमीदार–२३८
जमुना–२२१
जयरामदास, दौलतराम–३५४
जाकिरहुसेन, डाक्टर–२०३
जामनगर–१३३
जाहिदहुसेन–३१६
जिन्ना, कायदेआजम–३१, ६०
जिहाद–२३९, २५०
जूनागढ–६०, ६३, ६५, १२६-२८, १३३, १४५–४६, १५१, २५७, ३३२
जेन्दावस्ता–२८५

जोहान्सबर्ग—२३०
जोन्स, मेजर हारवे—६०
ट्रांसपोर्ट—३४१
ट्रांसवाल—२३०, २६१, ३४७
डॉन—१२६-२७
ढेवर भाई—६७, १४४, १६४
तारासिंह, मास्टर—१६६
तिबिया कॉलेज—२४१, २४६
तिहाड—५१-५२
तुलसीदास—१०१, २१६, २४७
दरगाह (कुतुबुद्दीन बख्तियार चिश्ती की)—२२६, ३३६, ३४२ (देखिये 'उर्सका मेला' और 'महरौली')
दरहग—१११
दातारसिंह, सर—२२५
दिलीपकुमार राय—८, १८, २१, २३
दिल्ली—६०, १०१, २६४-६५, २८६
दिवाली—५७, ६६, ६८, २३७
दुःखी—२१३ (देखिये 'शरणार्थी' और 'निराश्रित')
देवनागरी—२१८-१९
देहाती जीवन—१८७
नई तालीम—१३०, २०२
नवाब, भोपाल—३१९-२०
नायडू, सरोजिनी—७५
नायर, डा० सुशीला—२४, ३११, ३१३, ३४६, ३५०-५१
नारायणसिंह—९५
नियोगी, के० सी०—४
निराश्रित—५३, ६६-६७, १०४ (देखिये 'दुःखी' और 'शरणार्थी')
निशात टाकीज—९४
नेटाल—२६१, ३४७
नेशनल कान्फ्रेंस (काश्मीर)—९४
नेहरू, जवाहरलाल—३१, ६७, १२२, १५८, २१७, २९५, ३२२-२३, ३४५
नैरोबी—२१७
नोआखाली—१८-१९, १२१, २३५, २५९, २९६, ३५०-५१
पटियाला—२४०
पटेल, सरदार—४, १२६, १८४, २१०, २८९, २९४-९५, ३०४-०५, ३२२
परमेश्वर—१९, ३५२, (देखिये 'ईश्वर')
पंचम स्तम्भ—५९ (देखिये 'फिफ्थ कालम')
पंचायत—२४४-४५
पंजाब, पूर्वी—६२, १२५, १७९, १९३, ३३४
—पश्चिमी—१७९, ३३८
पंजाबी—२८१
पंडित, विजयालक्ष्मी—८०, १६२
प्रह्लाद—२३६

पाकिस्तान—११४, १८५, २०५, २३६, २६३, २७६, ३०२, ३१८, ३२३, ३३७
—टाइम्स—१२६
पानीपत—५७, ६०, ६२, ८६-६०, १५२, १६०
पालद्री—६४
पालमिण्टरी सेक्रेटरी—२११
पाडेचरी ८
प्यारेलाल—२३५, ३०४
प्रार्थना—१३, १७, २४३
पिता—३५०
पुछ—३२५
फाकसेस—२४७
फाका—२६७ (देखिये 'उपवास')
फारसी—२२१
फिफ्थ कालम—११६ (देखिये 'पचम-स्तभ')
फ्रेच भारत—५६
वकरीद—१११
वगैर टिकट—५
वन्नू—१६२, ३५१
वम—३२६
वरतानवी कामनवेल्थ (राष्ट्रसमूह) —८२-८३
वर्नार्ड, डा० एस० पी०—८२
वर्माके प्रवान मत्री—१६६
वहावलपुर—२३३, २५३, २८१-८२, २८४, ३२८, ३४६, ३५०
वगला—२१८
वगाल—१३०
ववई क्रॉनिकल—१२६
व्रजकिशन—२२, २८, ५४, १६६, २०८, २६४, ३५२
व्रह्मदेश—१६६
वाइविल—२२०
वापा, ठक्कर—१०८
वारामूला—६७, ६४—६५
वाल्मीकि-वस्ती—२८२
विडला, घनश्यामदास—१६, ४६, ८६, १३०, १७०-७१
—भवन—२८२-८३
—हाउस—३२१
वीजापुर—१६६
वेनिइज राइल—१००
वोर—१६३
भगवद्गीता—२३, ३१५
भगी—१६०
—वस्ती—२८२-८३
भार्गव, डा० गोपीचन्द—६२, १५३-५४, १६१, २२२
भावनगर—१४५, ३२६
भूख हडताल—२३३
मक्का शरीफ—१३२
मथाई, डाक्टर जान—२२३
मद्रास—३५४
मराठी—२१८

महरौली–२२९, ३४२
(देखिये 'दरगाह' और 'उर्स का मेला')
महादेव भाई–७५, १६३
महाभारत–२४५
माउंटबेटन, लार्ड–९, ६०, १३१
–लेडी–५६
मारवाड़ी चेम्बर–१६५
मृदुला, साराभाई–१७८, ३००
मीरपुर–२८१, ३४५
मीराबहन–७५, २७५
मीराबाई–६०, ७९
मुम्बासा–२१७
मुसलमान–१९४, २०५, ३१८
मुस्लिम चेम्बर आव कॉमर्स–१३०
–लीग–२२९, २३२
मुहम्मद, हजरत–१६१, २३१
मेरठ–३३३
मेव–२२२
मैसूर–३३२, ३४८
यरवदा–५०, ३०९
यादव–२२८
युधिष्ठिर–२८
यूनयान–१९३
यूनियन–२४०, २६२
यू० एन० ओ०–२६४ (देखिये 'राष्ट्रसंघ')
यूरोप–३३७
यूरोपियन चेम्बर–१६६
रचनात्मक कार्यक्रम–११०
रतलाम–३२५
राजकोट–६०, १४३
राजेन्द्रप्रसाद, डा० ४९, २०६, २२५, ३१६
राम–२७, ६६, ६९, ३५५
–चन्द्र–२६१
–राज्य–६७
रामपुर स्टेट–७९, ८१
रामायण–२१९, २४५, २४७
रामेश्वरी बहन–१७८
रावण–२७, ६६, ६९
राष्ट्रभाषा–२१८-१९
राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ–७९-८०, १४४, १४६, १४८, १६१, ३१६, ३१८
रिश्वतखोरी–२०४ (देखिये 'धन-खोरी')
रेडक्रास–३५१
रेडियो–२५७
रोमन कैथोलिक–१०२
रोहतक–१०८
लश्कर–२०१
लाजपतराय, लाला–२१९
लायलपुर–११२, १६९ १७७
लाहौर–३२, १९३-९८, २१५
लियाकतअली खां–२१, ३१, १२२, १२८, १६८, २६२
लोकराज्य–१८१, २१०

लोहिया राममनोहर—५०
वर्ण—२४५
वर्षा—३३७
विचित्रसिंह, बाबा—१२६
विठोबा का मंदिर (पंढरपुर)
—२५४
विद्यार्थी—२७३ २७६
विष्णु, भगवान्—२५४
शरणार्थी—८७, ११४, १५३, १५७, २५६, २६१, ३३५ (देखिये 'दुखी' और 'निराश्रित')
शराब—२७८
शहीद साहब—३१३—१४ (देखिये सुहरावर्दी)
शाहनवाज, जनरल—३१६
शांतिदल—१६३
—प्रतिज्ञा—३१७
—मिशन—१६४
शुभ लक्ष्मी—१७३
शेरवानी, मीर मकबूल—६४-६७
सत्य—१४-१५, १७, २०२-०३
सत्याग्रह—८०, २८०
—कूच—३५४
समाजवादी पार्टी—६७, २७१, २८८
सरस्वती—२२१
सभ्यता—२५३
संतसिंह, सरदार—११२
संयुक्त राष्ट्रसंघ—८०-८१, ३०६ (देखिये 'यू० एन० ओ०')
संस्कृत—२१६, २२१
स्यालकोट—२३४
स्वतंत्रता-दिन—३३८
स्वर्णसिंह, सरदार—१५३-५४, १६१
सिकंदर महान्—१००
सिविल-मिलिटरी गजट—२०५
सिविल सर्विस—१७२, २१०-११
स्मिथ, कर्नल—६६
सीता—७७, १२१
सुखमणि—५४
सुदर्शनचक्र—२२७
सुभाष बोस—२६, ३०, ३३१-३२
सुहरावर्दी—२६८ (देखिये 'शहीद साहब')
सेवाग्राम—१७०
स्टेट्समैन—२३४
सोनीपत—१०३
सोमनाथ (मंदिर)—१३२-३३, १६७' २४०
हक—१०६
हड़ताल—२७१, २७३-७४, २७८
हनुमान—१४७
हब्शी—२१७
हरिजन—१०७—०८, १८५, ३४४
—कान्फ्रेंस—२५८
—निवास—१६६, २०२
—बस्ती—१६२

—सेवक सघ—१०६, १६०-६१, २२८
हिन्दी साहित्य सम्मेलन—२२०
हिन्दुस्तान—२६३, ३०२, ३१८
—टाइम्स—१२६, २०५
हिन्दुस्तानी—२१८, २२१
—तालीमी सघ—२०३, २८८
हिन्दू-धर्म—३२७, ३३२
—महासभा—१४४, १४६, १४८, १६१, ३१६, ३१८
—मुसलमान—६०
हिमालय—२२८, ३५२-५३
हिसा—१०६
हैदराबाद—६५
हैदरी, अकबर—६
होशियारपुर—२१२
होशगाबाद—१६५